ESTD. 1944

Vaish College, Bhiwani

(Affiliated to Chaudhary Bansi Lal University, Bhiwani-Haryana)

Assessment Period: 2018-2023

Supporting Document: 3.3.1

Number of research papers published per teacher in the journals notified on UGC care list during the last five years

Vaish College, Bhiwani

Research Papers serial Number 41-60

OF INDIA- RNI NO. - UPBIL/2014/56766

PAPER 41

शोध सरिता

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

Issue 29 · January to March 202

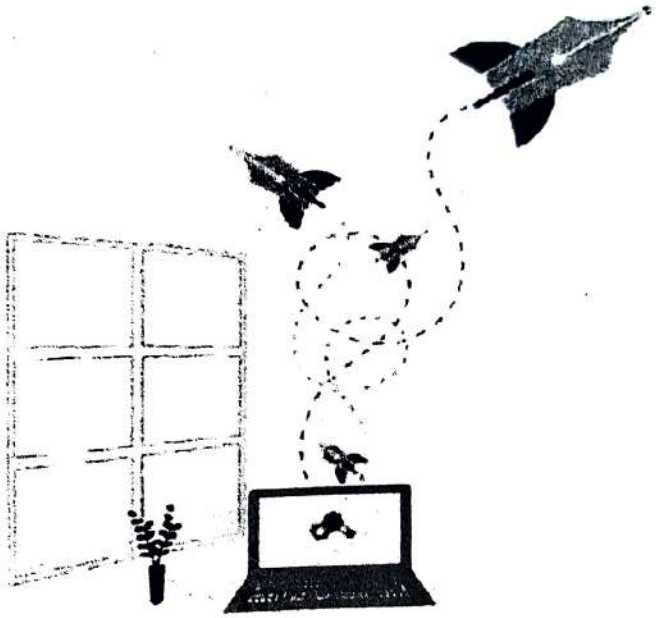

Editor in Chief

. Vinay Kumar Sharma

D.Litt. - Gold Medalist

sancHar
Educational & Research Foundation

Scanned with OKEN Scanner

VT. OF INDIA RNI NO.: UPBIL/2014/56766
GC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

Shodh Sarita

International Multidisciplinary Quarterly
lingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

ol. 8 · Issue 29 · January to March 2021

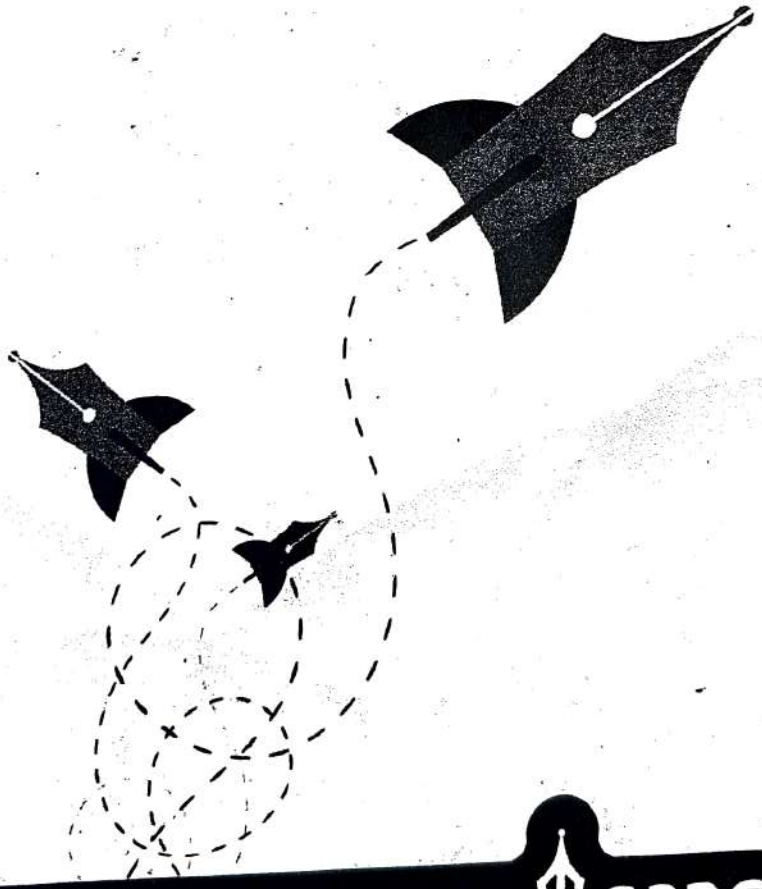

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

Scanned with OKEN Scanner

CONTENTS

No.	Topic		Page No.
1.	NEW PANCHSHEEL OF INDIA-CHINA BORDER STANDOFF	Ritu kothari, Dr Sanjeev	1
2.	Different Pattern of Micro services particular used in Applications	Ramadas Nayak	4
3.	A REVIEW of ALZHEIMER'S DISEASE	Shoubham, Akankaha	9
4.	Rainfall in Mysuru Regional Rhythms	Anita Rani	19
5.	The cyber criminology is an emerging field for research	Nisha Verma	26
6.	A Social Work Perspective Parental Involvement	Angeline, DrEnoch	32
7.	उत्तर भारतीय संगीत की गायन विधाओं में दक्षिण पद्धति के रागों का प्रयोग	अलीशा रानी	34
8.	Strategies and Adopted for Survival Pandemic Time in India	Dr. Anita Malhan	39
9.	महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में मूल्य चेतना	सन्दीप कुमार	42
10.	Studies relating to Parental Involvement in education	Dr. Pooja	45
11.	A design pattern provides a general reusable resolution	Aditi Malik	51
12.	आसनों का स्वरूप – नारायण तीर्थ के सन्दर्भ में	पूनम रानी[1], डॉ० सुषमा नारा[2]	54
13.	Disease Detection Using Neural Network	Prateek Redy	60
14.	शरद सिंह के उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' में चित्रित बेड़िया समाज	रजनी बाई[1], डॉ० आशा रानी[2]	62
15.	Any Type of Gender Discrimination is Domestic Violence	Pankaj Rani	67
16.	द्वैताद्वैतवाद में जीवात्मातत्व	सुमन देवी[1]	71
17.	Modified Features of Wastewater Processes	Hardic Sadafale	75
18.	Anoxic growth of heterotrophic bacteria	Shilpa Rani	80
19.	AN ALGORITHM FOR HIGH DYNAMIC RANGE	AKHIL KUMAR	85
20.	Indian Ethos and Dramatic Craftsmanship – A Fusion in Karnad's Plays	Rakhi Tyagi	88

Scanned with OKEN Scanner

(T-1/04/2023)

ISSN - 2348-2397
UGC CARE Approved Journal

SHODH SARITA

SHODH SARITA
Vol. 8, Issue 29, Jan.- March, 2021

AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

शरद सिंह के उपन्यास 'पिछले पन्ने की औरतें' में चित्रित बेड़िया समाज

❑ रजनी बाई[1], डॉ० आशा रानी[2]

भारत को विभिन्न धर्म, जाति और समुदाय का देश माना जाता रहा हैं। इसलिए भारत को धर्म निरपेक्ष देश भी कहा जाता है। बी.बी.सी (ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोशन) की रिर्पोट के अनुसार भारत में जातियों को 3000 तथा उपजातियों को 25000 में उनके कार्यों के अनुसार विभाजित किया गया है। इसी प्रकार से एक जाति समुदाय जिसे बेड़िया जनजाति या बेड़िया समुदाय के नाम से जाना जाता है। यह समुदाय उत्तर प्रदेश के कुछ इलाकों में निवास करता है। जो मुख्यतः बुंदेलखण्ड प्रान्त के अन्तर्गत आते है। बुंदेलखण्ड क्षेत्र के रनगाँव, पथरिया, विजावत, विदिशा, रायसेन, हबला, फतेहपुर जैसे गाँवों में यह जनजाति मुख्यतः आज भी बड़ी संख्या में निवास करती है।

बेडिया समुदाय एक घुंमतू और अपराधिक प्रवृति वाला समुदाय माना जाता है। भारत में कई ऐसी जनजातियाँ है जिनकी गणना जरायमपेशा जाति के रूप में की जाती है। इन जातियों का प्रत्यक्ष धंधा जो भी हों, परन्तु मूलतः ये चौरी, डकैती, लूटमार जैसी अपराधिक कृत्यों से जुड़ी रहती है। इनके कृत्यों में वे जनजातियों आती है जो पहले घुमक्कड़ी एवं अपराध से जुड़ी हुई थी, किन्तु अब एक स्थान पर बस गई है और अधिकतर ईमानदारी से अपनी आजीविका चलाती है। द्वितीय श्रेणी में वे जनजाति है, जो एक निश्चित स्थान पर बस चुकी है तथा प्रत्यक्षतः कोई न कोई धंधा करती है। तृतीय श्रेणी में वे जनजातियां है जो आज भी घुमक्कड़ है और अवसर पाते ही अपराधिक कृत्य कर डालती है।

बेड़िया जाति का स्वरूप आज भी द्वितीय श्रेणी में आता है। वैसे मध्यप्रदेश में बेड़िया जनजाति के अलावा और भी बहुत–सी जनजातियां है जो अपराधिक कृत्यों से जुड़ी हुई मानी जाती है जैसे–बधिक, बौदिया, जादुआ, कंजर, खंगर, कोल्हासी, कोलो, गरौरी, नट, पासी, पारदी, सांसिया आदि। संविधान में बेड़िया को अनुसूचित जाति के अन्तर्गत माना गया है जिसमें ग्राम पथरिया का बेड़िया समाज भी शामिल है। सन् 1901 की जनगणना में बेड़िया समुदाय को नट समुदाय के साथ गिना गया था। 2011 की जनगणना के अनुसार इनको अनुसूचित जनजाति में शामिल किया गया। इनकी जनसंख्या 46775 है। यह एक घुमक्कड़ जनजाति है जिसे अपराधिक जनजाति अधिनियम के अन्तर्गत अधिसूचित किया गया है।

उपन्यास का अध्ययन करते हैं तो ज्ञात होता है कि बेड़ियों की उत्पत्ति के बारे में बेड़िया समाज में कुछ दिलचस्प कथाएं प्रचलित है। बेड़िया समाज के लोग स्वयं को पृथ्वीराज चौहान के सैनिकों के वंशज मानते है। पृथ्वीराज चौहान और मौहम्मद गोरी के मध्य जब युद्ध हुआ तो युद्ध के दौरान अनेक राजपूत सैनिक मारे गए। उस समय यद्यपि सती–प्रथा का भी प्रचलन था। परन्तु जब सती होने के लिए मजबूर करने वाले परिवारजन भी मारे गए तो ऐसे परिवारों की विधवाओं ने सती होने की बजाय जीवन जीने का निर्णय लिया। यद्यपि वो यह बात अच्छे से जानती थी कि उनका

[1] शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

[2] सहायक प्रवक्ता (हिन्दी), वैश्य पी.जी. कॉलेज, भिवानी (हरियाणा)

विवाह सम्भव नहीं है इसलिए उनमें से कुछ ने न्यास का मार्ग अपनाया तो कुछ ने सहारा प्राप्ति के लए अन्य जातियों के पुरूषों से संबंध स्थापित किए। संबंध समाज द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं कर पाए। नकी अवैध कहलाने वाली संतानों को किसी भी जाति स्वीकार नहीं किया तथा इन्हें समाज से बहिष्कृत या गया। समाज से बहिष्कृत होने के कारण कोई इनकी पुत्रियों से विवाह नहीं करना चाहता था। त: इनकी पुत्रियाँ वेश्यावृत्ति के लिए विवश हुई। ये त्रियां सम्पन्न घरों एवं ऊँची जाति के पुरूषों की ताने होने के कारण इनमें रूप–रंग, सौन्दर्य और ातुर्य की कोई कमी नहीं थी। आर्थिक रूप से सपन्न उच्च वर्ग के पुरुषों को आकर्षित करके न्होंने धन कमाना आरम्भ किया।

बेड़िया समाज की उत्पत्ति के विषय में एक कथा यह भी प्रचलित हैं कि राजस्थान के भरतपुर ाज्य में दो–ढाई सौ वर्ष पहले सैंसमुल और मुल्लानुर नाम के दो भाई रहते थे। सैंसमुल के वंशज सांसी (सांसिया) कहलाए और मुल्लानुर के वंशज बेड़िया या कोल्हासी कहलाए। ये परम्परागत रूप से घुमक्कड़ और लुटेरे थे। ये चटाई की झोपड़ियों में अथवा तंबुओं में रहते थे। बेड़िया समाज में स्वच्छंद यौनाचार की प्रथा प्रचलित है। इनके दल की सभी स्त्रियां दल के सभी पुरुषों के साथ यौन सम्बन्ध बनाती थी। इनके दल में स्त्री–पुरूष के मध्य विवाह की बाध्यता नहीं रहती थी। कोई भी स्त्री आज एक पुरूष के साथ सम्बन्ध बनाती थी तो कल किसी दूसरे पुरूष के साथ संसर्ग करती थी। इसी प्रकार पुरूष भी किसी एक स्त्री के साथ संसर्ग में विश्वास नहीं रखते थे। उन्हें अपने समुदाय की किसी भी स्त्री के साथ यौन–संबंध की स्वतन्त्रता थी। बेड़नियों में स्वच्छंदता के साथ–साथ दायित्व बोध भी रहा। वो जो भी करती वह अपने परिवार एवं समुदाय के लिए करती थी। इसीलिए ये औरतें किसी एक पुरुष के साथ बंधकर बंधन में जीवन व्यतीत करने के बदले यायावर जीवन जीना अधिक पंसद करती है। अंग्रेजी अधिकारी सर एच. रिजले ने सन् 1915 ई. में बेड़ियों के बारे में विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि "बेड़िया खानाबदोश, घुमक्कड़ तथा जिप्सियों के समान एक समुदाय है जो मूलत: आपराधिक प्रवृत्ति का है।"[1]

"1916 में रसेल और हीरालाल ने पहली बार बेड़नी शब्द का प्रयोग उन औरतों के लिए किया जो बेड़िया समुदाय की थी और नृत्य करती थी। बेड़िया समाज में बेड़नी बनने की प्रक्रिया में एक प्रथा प्रचलित है जिसका पालन इन औरतों को करना पड़ता है। बेड़नी बनने की प्रक्रिया में बेड़नी बनने वाली लड़की का 'सिर–ढ़कना' नाम की रस्म की जाती है।"[2]

सिर–ढ़ंकना ही वह प्रथा है जिसे परम्परा का नाम देकर इन बेड़िया औरतों को देह–व्यापार की दलदल में धकेला जाता है। 'सिर–ढंकना' की रस्म अदा करने वाला व्यक्ति निकटवर्ती ग्राम का कोई सम्पन्न व्यक्ति होता है। 'सिर–ढ़ंकने' वाला व्यक्ति आमतौर पर सवर्णजाति का ही आर्थिक संपन्न युक्त लोग होते है। बेड़िया समुदाय में प्रचलित मान्यता के अनुसार– "बेड़िया जाति के लोग जिन जातियों के लोगों के हाथों पानी पीते है उन्हीं जातियों के व्यक्ति को 'सिर–ढ़ंकना' करने का अधिकार होता है। 'सिर–ढ़ंकना' की रस्म में धनिक व्यक्ति अपनी पसंद की बेड़नी पर अपना अधिकार स्थापित करने अर्थात् उसे अपनी रखैल बनाने के लिए पहले एकमुश्त रकम देता है। यह रकम पांच हजार रूपये तक हो सकती है। यह रस्म एक सामाजिक समारोह के रूप में पूरी की जाती है। इस रस्म के अवसर पर मिली प्रथम धनराशी से सामूहिक भोज किया जाता है। यह जाति–भोज होता है। भोज से बची हुई धनराशी उस लड़की की व्यक्तिगत संपत्ति होती है। 'सिर–ढ़कने वाला व्यक्ति भरण–पोषण के लिए वार्षिक राशि की घोषणा भी करता है जिसका भविष्य में भुगतान करता रहता है।"[3] इस रस्म को सिर–ढ़ंकना इसलिए

Scanned with OKEN Scanner

ISSN - 2348-2397
UGC CARE Approved Journal
SHODH SARITA
Vol. 8, Issue 29, Jan.- March, 2021
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

कहा जाता क्योंकि इसके द्वारा बेड़िया लड़की को सिर–ढ़ंकना करने वाले यह करने वाले व्यक्ति का संरक्षण प्राप्त होता, किन्तु इस संरक्षण का अर्थ यह नही है कि वह संरक्षण मिल जाने के बाद देह व्यापार में संलग्न नहीं होती। 'सिर–ढंकना' की रस्म के पश्चात् वह उन्मुक्त भाव से देह–व्यापार प्रारम्भ कर देती है।

बेड़िया स्त्रियां जो बेड़नी कहलाती है, उन्होंने अपना स्थान समाज में निर्धारित करने के लिए लोकनर्तकी के जीवन को अपनाया। इनके समुदाय के पुरुष आलसी एवं निकम्में होते है और आजीविका हेतु बेड़नी लड़की की कमाई पर ही निर्भर रहते है। पुरुषों की इसी अकर्मणयता ने इन बेड़ियां स्त्रियों को आज तक वेश्यावृत्ति के कीचड़ से नहीं निकलने दिया। अपने परिवार तथा समुदाय के भरण पोषण के लिए नाच–गाकर कमाया जाने वाला धन–पर्याप्त नहीं था। इस आर्थिक समस्या को सुलझाने के लिए उन्होंने धन कमाने का आसान तरीका खोजा। वो आसान तरीका था देह–व्यापार। जो परम्परा के नाम पर इस समुदाय की स्त्रियां पीढ़ियों से करती आ रही है। अन्य समाज में वेश्यावृत्ति को हेय दृष्टि से देखा जाता है परन्तु बेड़िया समाज में देह–व्यापार परम्परा के नाम पर अब जीवित है। विशेष बात तो यह है कि इस समाज की वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियां अपने समाज और परिवार में अपेक्षाकृत अधिक अधिकार प्राप्त होती है। उनके लिए देह–व्यापार अपराध बोध से परे है। क्योंकि वह यह बात जानती ही नहीं कि वेश्यावृत्ति अपराध की श्रेणी में आता है। वह तो परम्परा के नाम पर होने वाले इस शोषण को ही अपनी नियति मानकर भोगे जा रही है।

देह–व्यापार के साथ–साथ ये बेड़नियां अपनी देह का प्रयोग चोरी के कार्य में भी करती है। सन् 1907 ई. में जबलपुर के एक अंग्रेज अधिकारी गेयर ने बेड़नियों की चौर्यकला का वर्णन करते हुए लिखा था, "बेड़नियां हीरे–जवाहरात और यहां तक कि सिक्के भी अपने गुप्तांगों में छिपा लेने में प्रवीण होती है। इनमें अभ्यास के द्वारा अपने गुप्तागों में अधिक से अधिक कीमती सामान अंदर रख लेने की पर्याप्त जगह बनाने की आदत शुरू से डाली जाती है। ये बेड़नियां घूम–घूमकर भीख मांगती हैं और अवसर मिलते ही चोरी कर लेती है।"[4] चोरी करने का तरीका ये अपने परिवार के सदस्य यानी माँ, बुआ, बड़ी बहन आदि से ही सीखते है। फुलवा, नचनारी, बिलोटी आदि ने चौर्यकला की प्रेरणा अपनी माँ से ली थी। "फुलवा के दल में बच्चे–बूढ़े मिलाकर कुल सैंतालीस सदस्य थे। जिन दिनों उसके दल ने पनागर में डेरा डाला हुआ था, उन दिनों फुलवा को चोरी करने का एक नया ढंग अपनी माँ से सीखने को मिला।"[5]

चोरी की यह शैली बेड़ियों में बहुप्रचलित थी। उन्हें बचपन से ही ऐसे ढ़ंग में ढाला जाता है कि वो बड़े होते–होते चौर्यकला में पूर्णतः महारत हासिल कर लेते है। "बिलौटी की बात और थी। उसने अपने पहले चौर्य–धन के रूप में लाई हुई सोने की मुंदरी माँ के हाथ में रखी थी। माँ ने उसकी लाख–लाख बलैया ली थी। जब माँ भीड़ से घिरी हुई ठुमके लगा रही थी उसी समय बिलौटी भीड़ में घुसकर किसी आदमी की उंगली से मुंदरी सरका लाई थी।"[6]

बीसवीं सदी के अन्तिम दशक में बेड़िया समुदाय में परिवर्तन होने लगा है परन्तु उनके समाज में बेटी के जन्म का उल्लास मनाए जाने की परम्परा आरंभ से आज तक चली आ रही है। एक बेड़नी आज भी फूली नहीं समाती जब तक एक कन्या को जन्म देती है। वह और उसके परिवारजन कन्या जन्म पर खुशियां मनाते है क्योंकि इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि वह एक बेड़नी को अपनी बेटी के भविष्य में ही अपना भविष्य सुरक्षित दिखाई देती है। वह यह बात भली–भांति जानती समझती है कि जैसे–जैसे वह वृद्धावस्था की ओर बढ़ने लगेगी, वैसे–वैसे वह नाचने

Scanned with OKEN Scanner

या देह–व्यापार में अक्षम हो जाएंगी और स्थिति एक न ऐसी हो जाएगी कि न तो वह नाच सकेगी और देह–व्यापार कर सकेगी। ऐसी स्थिति में एक लड़की होती है जो उसके नक्शे कदम पर चलते हुए नका भरण–पोषण कर सकती है। लेखिका कहती है, ठाकुर को लेकर नचनारी का आचारण अब पूरी तरह शेवर हो चला था, क्योंकि ठाकुर के प्रति उसका मोह ग हो गया था। इसी दौरान वह अपने होने वाली तान के बारे में सोच–सोचकर चिंतित होती रहती। ह भगवान से दुआ करती कि उसकी संतान के रूप बेटी जन्म ले, बेटा नहीं। जिस समाज में पुत्र के न्म को अधिक महत्व दिया जाता है, पुत्री होने पर षाद का अनुभव किया जाता है, उस समाज में चनारी द्वारा बेटी के जन्म लेने की आकांक्षा अपने ाप में एक विचित्र–सी लगने वाली आकांक्षा थी।"[7]

बेड़नियां जब देह–व्यापार की दलदल में तरी तो उनके सामने एक विकट समस्या थी। वो मस्या थी स्वच्छंद यौन–संबंध स्थापित करने के बाद होने वाली नाजायज संतान की समस्या। क्योंकि ड़नियां जिन पुरुषों से यौन–संबंध स्थापित करती थी न पुरुषों से संबंध का आधार सिर्फ अर्थ प्राप्ति था। तः कोई भी पुरुष इन अवैध–संबंधों से प्राप्त होने वाली संतान को अपना नाम नहीं देना चाहते थे। सके पीछे दो प्रमुख कारण थे। पहला कारण तो यह कि उनको अपनी सामाजिक प्रातिष्ठा का बड़ा ध्यान रहता कि कहीं बेड़नियों से इनके नाजायज संबंध गजाहिर न हो जाए और दूसरा ये कि बेड़नी से त्पन्न उनकी संताने स्वयं को उनका उत्तराधिकारी षित करके कहीं उनकी सम्पत्ति न हड़प ले। ड़नियां इस सच्चाई से भली–भांति परिचित है कि नके बच्चे को उनका पिता सामाजिक रूप में स्वीकार हीं करेगा, फिर भी वे बिना किसी हिचक के बच्चों को जन्म देती है और उन्हें पालती–पोसती है। ड़नियां अविवाहित रहकर ही मातृत्व ग्रहण करती है। लेखिका ने जब श्यामा नाम की बेड़नी से पूछा कि अविवाहित रहकर तुम बच्चे पैदा करते हो तो क्या तुम्हारे बच्चे अवैध नहीं कहलाएगें? तब श्यामा दृढ़ता–भरे स्वर में कहा कि 'क्यों अवैध कहलाएगें? वे अनाथ थोड़े है।"[8] लेखिका ने श्यामा को समझाने का प्रयास किया कि वह वैधानिक पितृत्व के बिना अपने बच्चों को समाज में उचित स्थान नहीं दिलवा पाएगी। वह कोई नीना गुप्ता तो है नहीं, वह तो निचले तबके की एक अशिक्षित औरत है। वह भी निपट देहातन। लेखिका श्यामा को समझाते हुए कहती है, "श्यामा, इस समाज में बच्चों को अपने पिता के नाम की आवश्यकता पड़ती है न। तो बच्चों का कोई कानूनी पिता तो होने चाहिए।"[9] जब वे धनिक पुरुष बेड़नियों से उत्पन्न संतान को अपना नाम नहीं दे पाते तो जरूरत पड़ने पर बेड़नियों अपनी संतान के पिता का नाम पैसा लिखता देती है। सही भी है पैसे के लिए ही तो वह इस अभिशाप को झेलने के लिए मजबूर है।

बेड़नियों ने अपने इस कटुयथार्थ को बड़ी सहजता से आत्मसात करते हुए इस समस्या का बड़ा उचित हल निकाला है, वह उन पुरुषों के मुंह पर तमाचे की भांति है जो अपने पौरुष का परिचय देते हुए पैसों के बल पर इनकी कोख में संतान का बीजरोपन करता है परन्तु उसी संतान को अपना नाम देने का पौरूषपूर्ण साहस नहीं जुटा पाता है और अपनी संतान को अवैध अभिशप्त जीवन जीने के लिए छोड़ देते हैं। बेड़नियां सामाजिक बंधन की परवाह नहीं करती है और न ही अपनी जीवन में पुरुष के महत्व की। क्योंकि वे लोग इस बात को अच्छे से जानती हैं कि उनके जीवन में आने वाले पुरुषों से उनका सिर्फ एक ही रिश्ता होता है और वह रिश्ता है ग्राहक के रूप में। क्योंकि कोई भी पुरुष प्रेम के वशीभूत होकर बेड़नियों के पास नहीं जाता। वह मात्र अपनी कामाग्नि को शांत करने के लिए आते है, ये बात बेड़नियां बखुबी समझती भी है और जानती भी है। उन पुरुषों की नजर में बेड़नियां प्रेम से अधिक विलासिता की सामग्री होती है

वे पैसे के बल पर इसका जब चाहे भोग सकते हैं। अतः ऐसे पुरुषों के महत्व को बेड़नियों ने अपने तथा अपनी संतान के जीवन से नकारने का साहस बड़ी सहजता से कर दिखाया है।

काश। बेड़नियां ऐसी ही दृढ़ता अपने जीवन के हर पक्ष में दिखा पाती। वे पौराणिक कथा की शकुंतला की तरह स्वयं को दुष्यंत के सामने खड़ी होकर स्वयं को स्वीकारे जाने की गुहार नहीं लगाती है। बेड़नियों ने अपने जीवन की कटु–सच्चाई को हंसकर पी लिया है। बेड़नियां स्वयं नहीं जानती है कि नारीवाद क्या है, फिर भी वे एक विशेष नारीवादी जीवन जी रही है। उनका यह अस्तित्व संघर्ष यदि कोई मुखर रूप नहीं ले पा रहा है तो सिर्फ इसलिए कि उनके पास पुराने अनुभव है, नए रास्ते नहीं। इस सन्दर्भ में लेखिका लिखती है, "नए रास्ते की खोज में श्यामा का भटकाव अब मैं जान चुकी थी। मंत्री के घर जाकर राई नाचने से लेकर चन्द महीनों की रखैल बनने की कथा श्यामा की उस जिजीविषा को व्यक्त करती है जो अपनी जीवन–धारा बदलने की प्रबल इच्छा के रूप में उसके मन में विद्यमान है।"[10]

सार रूप में कहा जा सकता है कि लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से सामाजिक स्तरों में दबी–कुचली और पिछले पन्नों में दब गई औरतों को मुखपृष्ठ पर लाने का सफल प्रयास किया है। बेड़नियां कहलाने वाली बेड़ियां सामाज की औरतों की स्थिति में सुधार लाने हेतु सबसे पहले उनके प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना अनिवार्य है। इसी परिवर्तन से वे अपने अधिकारों को जान–समझ सकेंगी और अपने लिए बेहतर विकल्पों की तलाश करके समाज में अपनी भूमिका निर्धारित कर पाएंगी। साथ–ही एक बेहतर नागरिक के रूप में देश के विकास में योगदान दे सकेंगी।

सन्दर्भ–सूची

1. शरद सिंह, 'पिछले पन्ने की औरतें', पृ. 6
2. वही, पृ. 150
3. वही, पृ. 150
4. वही, पृ. 68
5. वही, पृ. 55
6. वही, पृ. 37
7. वही, पृ. 102
8. वही, पृ. 18
9. वही, पृ. 18
10. वही, पृ. 262

Scanned with OKEN Scanner

सुनीता जैन की कविताओं में वृद्धों का मार्मिक यथार्थ

*डॉ.अनिल कुमार **कमलेश
*असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, वैश्य कॉलेज भिवानी।
** (शोधार्थी) शोधार्थी, हिन्दी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्विद्यालय, रोहतक।

समकालीन हिंदी रचनात्मकता के परिदृश्य पर पद्मश्री सुनीता जैन (1941-2017) का विशिष्ट स्थान है। व्यास सम्मान से सम्मानित सुनीता जैन ने उपन्यास, कहानी, कविता, निबंध, आत्मकथा अर्थात् तमाम साहित्यिक विधाओं को अपनी लेखनी के संस्पर्श से न केवल हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि की है, अपितु आंग्ल भाषा एवं साहित्य को भी समृद्ध किया है। उनकी पचास वर्षों तक की गई निरंतर साहित्य साधना इस बात का द्योतक है कि उन्होंने जीवन के प्रत्येक पल को जीने के साथ-साथ उसे साहित्य की विभिन्न विधाओं में संजोकर आने वाली पीढ़ी के लिए धरोहर के रूप में सुरक्षित रख छोड़ा है।

अपने सम्पूर्ण जीवन काल में एक कवयित्री के रूप में डॉ. सुनीता जी ने तेरहपन काव्य संग्रह लिखे जो विषय की विविधता और कला की उत्कृष्टता के कारण हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके भीतर उमड़ने वाली भावनाओं और विचारों का ज्वार इतना तीव्र रहा होगा कि उन्होंने एक-एक वर्ष में कई-कई काव्य संग्रह प्रकाशित करवाये। देश-विदेश तक के अपने अनुभव संसार में देशीयता के आंचल को पकड़ने वाली सुनीता जी की कविताओं मे व्यक्त भावनाओं का संबंध प्रेम, प्रकृति, परमात्मा, परिवार से रहा है। उनकी कविताएं आधुनिक युग में बदलते रिश्ते-नातों की गंभीर एवं तीक्ष्ण संघर्षों से परिपूर्ण मनःस्थित को व्यक्त करती है। डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर के शब्दों में-"सुनीता जैन की कविता एक संवेदनात्मक एवं भावसमृद्ध कवि-मानस का गहरा स्पर्श देती है। उनकी कविता विचारोत्तेजक बौद्धिकीकरण का रूप लेकर नहीं आती बल्कि जीवन जीते समय पग-पग पर होने वाले अवरोध, सम्बन्धों की अमानुषिकता तथा मूल्यभ्रष्टता के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक तकलीफ और तज्जन्य करुणा की हार्दिक प्रतीतियाँ देती है।"[1]अतः सुनीता जी अपनी कविताओं में उन सरोकारों को बड़े ही मार्मिक ढंग से अभिव्यक्ति प्रदान करती है जो वृद्धावस्था से जुड़े हैं।

वृद्धावस्था जीवन काल की तीन अवस्थाओं में से एक अंतिम अवस्था है जिसे स्वाति तिवारी ने अपनी पुस्तक 'अकेले होते लोग' में "सम्पूर्ण शारीरिक क्षमताओं में उतरोत्तर कमी"[2] के रूप में परिभाषित किया है । वहीं प्रमोद त्रिवेदी इसे भारतीय परिवारों के "बिखराव का त्रासद और सबसे भयावह पहलू"[3] मानते है। आज वृद्ध जीवन अपने ही घर की दहलीज पर भविष्य की संभावनाओं से भयग्रस्त खड़ा है। असुरक्षा की भावना,मानसिक संताप, जीवन से अलगाव बोध, अकेलेपन, उपेक्षा जैसी विकट समस्याओं से घिरे वृद्धों के त्रासदीपूर्ण जीवन का अंकन सुनीता जैन यथार्थ रूप में करती है। क्योंकि उन्होंने-"देखा था/चढ़ी हुई उम्रों में/मन को बेबस गिरते।"[4] सुनीता जी की 'मैंने देखा था' कविता वृद्धों की इस बेबसी को बयां करती है कि उन्हें शारीरिक अक्षमताओं के कारण खाने के लिए बेटे-बहुओं पर आश्रित रहना पड़ता है। उन्हें बार-बार मांगकर खाने में शर्म महसूस होती है;परंतु जब पेट भरना हो तो यह शर्म उन्हें खाना चुराने तक के लिए विवश कर देती है। वृद्धों के इस मार्मिक यथार्थ को सुनीता जी अपनी 'तश्तरी-1'कविता में व्यक्त करते हुए बताना चाहती है कि -

"एक बार में खा नहीं सकते बूढ़े
इसीलिए खाते हैं थोड़ा-थोड़ा।"[5]

वृद्धों का भोजन चुराकर खाना घर के बेटे-बहुओं को पसंद नहीं होता। वे उनकी इस स्थित को समझने की बजाय उन पर खीजते हैं। उनकी इस खीज को सुनीता जी अपनी 'तश्तरी-2' कविता में चित्रित करती है -

"बूढ़ों का जीवन है बस, 'छी...छी...'
'ओह माई गॉड...'
'फिर वही...'
'मैं और नहीं कर सकती अब
तुम जानो और तुम्हारे बाबू जी,"[6]

बेटे-बहुओं की यह खीज वृद्धों को आत्मग्लानि से भर देती है;परंतु वे कुछ भी कर सकने में स्वयं को असमर्थ पाते है। ऐसे में सब कुछ सहन करने के लिए विवश उनका व्यथित मन कह उठता है –

"राम जी, क्यों रखे हो जीवित
झिड़की खा-खा कर मरने को ?"[7]

Copyright © 2020 Authors

Scanned with CamScanner

आज अपने व्यथित जीवन से अपराधबोध का शिकार हुए वृद्ध अकेलेपन की स्थिति से संघर्ष कर रहे हैं। यह अकेलापन और तनाव उन्हें भय से ग्रस्त करता हुआ लगातार मृत्युबोध की ओर धकेलता है। अपनी युवावस्था में व्यक्ति सोच भी नहीं सकता कि जीवन की सांध्यवेला में वह इतना अकेला हो जायेगा कि उसे टी.वी.देखते हुए एवं पालतू कुत्ते के साथ अपने पूरे दिन को गुज़ार देना होगा । सुनीता जी की 'अवकाश' कविता की पंक्तियाँ इसी अकेलेपन का मर्मभेदी चित्र उपस्थित करती है –

"सिवा खाने और सोने के कुछ नहीं
बेटा-बेटी ऑफ़िस में
पोता-पोती स्कूल में
बस बचा एक टीवी
या पालतू कुत्ता कोई
आप जितना चाहे
जी लगा लें उनमे"[8]

माता-पिता के लिए तो उनके बच्चे ही उनका सब संसार होते हैं। वे उनके सुख-दुख का हर परिस्थिति में ध्यान रखते हैं । उनके जीवन की चरम सार्थकता तो इसी में रहती है कि वे सदैव सुखी रहें ;परंतु यही बच्चें अपनी गृहस्थी में, कामकाज में इतना उलझे होते है कि आज –

"उनकी समस्यांए दर्ज हैं लैपटॉप में,
उनके समाधान इन्टरनेट पे,
उनका भविष्य बैंकों के खाते हैं,
उनका अतीत व्यर्थ की बातें हैं।"[9]

आज की इस जीवन शैली ने वृद्धों की समाज में कोई जगह नहीं छोड़ी ;बल्कि उन्हें उनकी उस जगह से भी विस्थापित कर दिया है जहाँ पर उन्हें आदर, मान-सम्मान के अधिकारी होना चाहिए । वृद्धों को विकास की अबाध गति ने आज असहाय बना दिया है । आज का समाज सेवानिवृत होते ही व्यक्ति की उपस्थित को नकार देता है। सेवानिवृत होने से केवल उसकी नौकरी ही नहीं जाती अपितु उसके साथ ही चली जाती है उनकी शानों-शौक़त, रोब-दाब सब के सब। जितना चाहे साधन सम्पन्न होने पर भी सेवानिवृत वृद्ध की बात का वज़न कम हो जाता है फिर चाहे –

"बाबा को प्यास लगी या जरूरत है चाय की
घर को जानने फुर्सत नहीं
आते जाते परिजन देखते हैं उन्हें
आंगन के वृक्ष सा
जो यदि वहाँ नहीं होता
तो पोते कि मोटर साइकिल खड़ी हो सकती"[10]

आज अधिकांश परिवारों में वृद्धों की स्थित ऐसी हो गई है कि उनके पोता-पोती भी उनसे बिना बोले ही, बिना नमस्ते किये ही उनके पास से निकल जाते है, ऐसे में 'मूल से प्यारा सूद' कहावत की सार्थकता पर संदेह व्यक्त करती हुई कवयित्री कहती है कि आज –

"न मूल, न सूद कुछ भी नहीं।
न विगत न आगत हम वृद्धों के।"[11]

आज के बच्चे यह नहीं समझ पाते कि जिन दादा-दादी के साथ खेल कूदकर वे बड़े हुए हैं "वे ही दादा /रोते हैं क्यों / छिप-छिप"[12]कर आज बेटे-बहुओं के द्वारा ज़मीन-जायदाद, धन-सम्पत्ति का बंटवारा करने के साथ ही माँ-बाप का बंटवारा भी कर लिया जाता है। यह आज के समाज का सर्वाधिक मार्मिक पहलू है क्योंकि –

"जब दो में से एक
रह जाते हैं-माता या
पिता तो मरने से पहले
वे कई बार मरते हैं।"[13]

जिस घर परिवार को माता-पिता अपने परिश्रम, प्रेम, स्नेह, विश्वास से सींचते हैं उसे टुकड़े-टुकड़े होते देखना उनके लिए असहनीय होता है। यह पीड़ा तब और भी सघन हो जाती है जब –

"वह महसूसता है
बेटे की उपेक्षा
बहू का क्षोभ

Scanned with CamScanner

बच्चों का डर
वह दिन-दिन
होता जाता है
चुप से चुपतर"[14]

उसकी चुप से चुपतर की यह स्थिति आगे चलकर समाज के उस भयावह एवं मार्मिक यथार्थ को दर्शाती है जब एक वृद्ध अपने अंतिम पल में -

"लेटा है /वैसे ही /बिस्तर पर निश्चल
किंतु घर के /जानेंगे यह
जागेगा जब कमरे में /नौकर उसका /खाना लेकर।"[15]

आज के सम्वेदनहीन समाज में वृद्धों की इस तरह तिल-तिल कर मरते जाने की घटनाएं न केवल किसी के भी ध्यान को अपनी ओर केन्द्रित करती है; अपितु यह सोचने पर भी विवश कर देती है कि आखिर हमारे बड़े-बूढ़े हमसे चाहते क्या हैं? शारीरिक असमर्थता और अंगों की शिथिल होते जाने पर भी -

"बूढ़े नहीं चाहते किसी का पैसा
न ही सेवा। बूढ़े जो चाहते हैं
वह कोई नहीं कहता
'बाबूजी, हम है न।'
कोई नहीं कहता, माँ
उदास मत होना, हम हैं न...?
बूढ़े हैरान हैं इस
'हम हैं न ' के कहीं भी
नहीं होने से।"[16]

बूढ़े सब अपमान, उपेक्षा को सहते हुए अगर कुछ चाहते हैं तो वह है केवल अपनों के अपने करीब होने का एहसास।"बूढ़े बचाना चाहते हैं एक ऐसा नाता /जो सचमुच में अब है ही नहीं"[17]परंतु बूढ़ों को तब अत्यधिक हैरानी होती है जब उनके अपने ही उनसे उनके हर नाते को झुठलाते हुए उन्हें अपने से दूर कर देते है । इस यथार्थ की अभिव्यक्ति सुनीता जी की अनेक कविताओं में देखने को मिलती है। 'देसी माँ विदेस में' उनकी एक ऐसी ही कविता है जो वृद्धों को समर्पित है। जिनके बच्चें उन्हें विदेश में अपने बच्चों की देखभाल के लिए ले जाते है और फिर उन्हें सरकारी अनुदान के भरोसे जीवित रहने के लिए छोड़ देते हैं। 'श्रीमती रेड्डी' कविता में बुजुर्गों की बदतर स्थिति को दर्शाया गया है, जिसमें एक पंचानवे वर्ष की बुजुर्ग महिला अपने बेटों के साधन-सम्पन्न होने पर भी अकेले रहने को विवश है। 'लाल तिपहिया रेहड़ी' कविता अपने परिवार से दूर रहकर असहाय, अकेलेपन के दंश को सहती बुजुर्ग की दिनचर्या को दर्शाती है। आज देश-विदेश में वृध्दाश्रमों का बिछाता हुआ जाल मानवीय सम्वेदनशून्यता का परिचायक है। इन वृद्धाश्रमों में न जाने कितने वृद्ध अपनों के आने की प्रतीक्षा में दम तोड़ देते हैं। सुनीता जी की 'कहते-कहते' कविता वृद्धों के इसी यथार्थ का अंकन करती है। उनकी 'आधा संसार' कविता एक माँ के संघर्ष और बेटों के शर्मनाक व्यवहार की पोल खोलती है -

"अरे, जिस पेट में पसरने
जगह मिल गई सात को
उस पेट में रोटी डालने
का वक्त नहीं किसी एक को,
नोट भिजवा देते हैं सारे
जैसे नोट चबा लूँ
जगह अनाज के..."[18]

वृद्धों की इस मारक स्थिति पर चिंता व्यक्त करती हुई सुनीता जैन अपनी 'फ़िलहाल' कविता में कहती भी है कि -

"मेरी चिंता है
मेरे घर के आसपास
ऐसे घरों की
जिनमें बैठा रहता है
कोई वृद्ध कुर्सी पर
खिन्न सा -

Copyright © 2020 Authors

Scanned with CamScanner

और कोई वृद्धा
सुबह सुबह ही
अनमनी।"[19]

वृद्धों की यह दुखद स्थिति जीवन का अर्थ समग्रता में समझा जाती है कि दुख से चाहे हम जितना भी छुटकारा पा लेना चाहे वह किसी न किसी रूप में हमारे सम्मुख आन खड़ा होता है । चाहे वह शारीरिक दुख हो या मानसिक दुख उसके आने का कारण होता है- मोह-माया , आशा-तृष्णा। यदि इनका परित्याग कर दिया जाए तो दुख में भी सुख की अनुभूति होने लगती है। सुनीता जी हमें इसी सुखद एहसास की ओर प्रेरित करती हुई कहती है कि –

"यह तृष्णा अब छोड़, हिरणी
नाता सबसे तोड़, हिरणी
कौन गया संग किसके, बोलो-
हुई साँझ की बेर, हिरणी।"[20]

यह उन वृद्धों को समझने की आवश्यकता है जो अपनों से अत्यधिक अपेक्षा रखते हैं। ऐसे में जब भी वे अपने अतीत को याद करते है तो उन्हें अत्यधिक कष्ट की अनुभूति होती है। आज वृद्धों को स्वयं के प्रति जागरूक होना होगा। इसके साथ ही हमें भी यह समझना होगा कि वृद्धों के सबसे बड़े दुख का कारण जीते जी उनकी अहमियत को ना समझा जाना है। मरने पर उनके श्राध्द किये जाते है, तस्वीर पर माला पहनाई जाती है परंतु जीते जी उनसे कोई बोलता तक नहीं। सुनीता जी की 'जब तक वह' कविता इसी सामाजिक आडम्बर पर प्रहार करती है। इसके साथ ही वे वृद्धों की महत्ता के प्रति चेताते हुए 'माँओं को' कविता में कहती है कि –

"माँओं को /मखमल पे रखो
झूला दो /फूलों पे
वे हैं आज /मगर कल होंगी न
सोचो तब /क्या-क्या न
खो जाएगा /जीवन से ?
सोचो । फिर सोचो ।"[21]

सुनीता जी के 'जाने लड़की पगली' काव्य संकलन में 76 कविताएं हैं ये कविताएं उनके जीवन का वह अनुभव संसार है जिसमें वृद्धों के दुखों का, उदासी का, निराशाओं का मार्मिक यथार्थ चित्रण तो हुआ ही है साथ में अपने माता-पिता को आदर मान-सम्मान के अधिकारी मानने, उन्हें श्रध्दा से याद करने व नई पीढ़ी को परम्परागत जीवन मूल्यों से जोड़ने का संदेश मिलता है। सुनीता जी की कविताओं में माँ तो केवल प्रतीक भर है। वे माँ के माध्यम से तमाम वृद्धों के मार्मिक यथार्थ को अभिव्यक्ति प्रदान करती हुई सामाजिक सम्वेदनशून्यता और आत्मकेन्द्रित सोच के विरुध्द खड़ी नजर आती है –

"तुमने जो /सहा /सहा /सहा
मैंने जब उसको /कहा /जरा /जरा
अंगारों का /आकाश फटा
किस-कसने /विष उगला
वे मुझ को /झुलसा भी देंगें /तो क्या
तेरे जीतने आंसू थे /समझूंगी उनका
कुछ तो /मोल चुका"[22]

अत:निष्कर्ष तौर पर कहा जा सकता है कि आज वृद्धों की घर, परिवार, समाज में उपेक्षा एवं प्रताड़ना की जो स्थिति बनी हुई है वह एक गम्भीर विषय है। आज एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के बीच जो भावात्मक फ़ासला बढ़ा है। उसे दूर करने की आवश्यकता है;ऐसा तभी संभव हो सकता है जब हम वृद्धों को सम्मान दें, उनके अनुभवों की कद्र करें। एक व्यक्ति अपनी पूरी सामर्थ्य के साथ जिस घर को बनाता है उसी घर में उसे उपेक्षा की नज़र से देखा जाना, उसे वृद्धाश्रमों में छोड़ा जाना, उसका तिरस्कार किया जाना। यह व्यवहार हमारे मरते हुए संस्कारों का ही सूचक है। कवयित्री सुनीता जैन हमारे संस्कारों को मरते जाने से रोकने की एक पहल अपने विचारों और भावनाओं को कविता के माध्यम से व्यक्त करके करती है। वे अपनी कविताओं में ना केवल वृध्द जीवन के मार्मिक यथार्थ का चित्रण करती है;अपितु वृद्धों के प्रति समाज को चेताने का प्रयास भी करती है ।

Copyright © 2020 Authors

Scanned with CamScanner

ISSN: 2249-6661
Vol-43 No.-04 (I-S) October-December (2020)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.हरेराम पाठक, 'कविताओं के दर्पण में सुनीता जैन', प्र. सं.2016, पृ.-49
2.स्वाति तिवारी, 'अकेले होते लोग', प्र. सं. 2006, पृ.-31
3.प्रमोद त्रिवेदी, 'सुनीता जैन शब्द होने का अर्थ', प्र. सं. 2004, पृ.-52
4.सुनीता जैन, 'सौ टंच माल', प्र. सं. 2004, पृ.-26
5.पुष्पाल सिंह, सुनीता जैन समग्र:खण्ड-13(ओक भर जल-2008), प्र. सं. 2010, पृ.-73
6.वहीं, पृ.-75
7.वहीं, पृ.-75
8.वहीं(रसोई की खिड़की में-2008), पृ.-148
9.वहीं (ओक भर जल-2008, पृ.-77
10.सुनीता जैन ,'टेशन मारे', प्र. सं. 13 जुलाई, 2013, पृ.-37
11.पुष्पाल सिंह, सुनीता जैन समग्र:खण्ड-13(ओक भर जल-2008), प्र. सं.-2010, पृ.-73
12.वहीं,खण्ड-7(गंगा तट देखा-1998), , पृ.-135
13.वहीं,खण्ड-5 (जाने लड़की पगली-1996), पृ.-256
14.वहीं,खण्ड-6 (इतना भर समय-1996), पृ.-227
15.वहीं, पृ.-227
16.वहीं,खण्ड-9 (चौखट पर-2003), पृ.-148
17.वहीं,खण्ड-12 (लुओं के बेहाल दिनों में-2007), पृ.-90
18.वहीं,खण्ड-10(खाली घर में-2006), पृ.-194
19.वहीं,खण्ड-5(जाने लड़की पगली-1996), पृ.-197
20.सुनीता जैन, 'कॉटों भरी बेल में', प्र. सं.2015, पृ.-68
21.वहीं, पृ.-97
22.पुष्पाल सिंह, सुनीता जैन समग्र:खण्ड-5(जाने लड़की पगली-1996), प्र. सं.2010, पृ.-189

Copyright © 2020 Authors

Scanned with CamScanner

PAPER 43

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-23 **VOLUME- 1** IMPACT FACTOR-**SJIF-6.424,** GIF-**2**-3588

ISSN-2454-6283 जनवरी–मार्च, 2021

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकि सम्पादक

अनिल जाधव,मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–43160

References-

(1) James Mitchell (General Editor): op. cit., p. 102. **(2)** P.C. Chatterji : Broadcasting in India, p. 39. **(3)** Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting & Information Media, 1966, p. 15. **(4)** Ibid. **(5)**P.C. Chatterji: op.cit., p. 39. **(6)** Ibid, p. 41. **(7)**File Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow. **(8)** P.C. Chatterji: op.cit., p. 41. **(9)**,p.44. **(10)** Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting and Information Media, 1966, pp.15-**16. (11)** File Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow. **(12)**Swarna Jayanti Smarika, Akashvani, Lucknow, dated April 2, 1988.*Note: Station Directors of A.I.R., Lucknow* **1.** A.A. Advani :27-1-1938 to 6-6-1938 **2.** 2. Jugal Kishore Mehra: 17-9-1938 to 2-4-1939. **3.** N.A.S. Lakshmana : 13-6-1939 to 26-4-1940 **4.** A.K. Sen : 06-07-1940 to 31-05-1941. **5.** S.N. Chib :04-6-1941 to 29-7-1943 **6.** K.S. Malik :2-8-1943 to 14-6-1944 **7.** Jugul Kishore Mehra : 14-6-1944 to 18-8-1945 **8.**K.S. Malik:18-8-1945 to 14-6-1948 **13.** File :Facts and Figures 2000, compiled by All India Radio. Audience Research Unit, Lucknow.**14.** Ibid.**15.** Radio and Television Report of the Committee on Broadcasting and Information Media, 1966, p. 16.**16.** R.A.U.P., 1940, pp. 21-22.**17.** R.A.U.P., 1941, p. 6.**18.** Ibid.**19.** R.G.A.U.P., 1943, p. 13. **20.** R.G.A.U.P., 1944, p. 11.

38.वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सूफी काव्य का मूल्यांकन

–डॉ.अनिल कुमार
एसोशिएट प्रोफेसर,
स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी (हरि.)

भारत विविधताओं का देश है। अनेक धर्म को मानने वाले यहाँ सदियों से रहते आये हैं और कोई भी धर्मावलम्बी किसी भी धर्म की अच्छाइयों को ग्रहण करने में संकोच नहीं करता। सूफी कवियों में यही भावना आरम्भ से अंत तक दिखाई देती है। उनकी ये रचनाएँ हिन्दू कथाओं पर आधारित हैं। नायक–नायिका हिन्दू राजघरानों से ही हैं। मौलाना दाऊद ने सन् 1380 में चन्दायन की रचना की। इस रचना में व्यथा–कथा, प्रेम–विरह, सुख–दुःख की अनुभूतियों के जीवन्त चित्र हैं, इस काव्य का नायक लोरिक और नायिका चंदा है। सन् 1504 में कुतुबन कृत मृगावती में चन्द्रगिरी के राजा गणपति देव के पुत्र राजकुवंर और कंचनपुर की राजकुमारी मृगावती की प्रेमकथा का वर्णन है। कवि मंझन ने मधुमालती की रचना सन् 1545 में की। हिन्दू नायक राजकुमार मनोहर व नायिका मधुमालती के प्रगाढ प्रेम की कहानी पर आधारित है। कवि सम्राट जायसी ने अपनी कालजयी रचना पद्मावत में सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती और चितौडगढ़ के राजा रत्नसेन के प्रेम को चित्रित किया है। इन सूफी कवियों के अध्ययन से पता चलता है कि ये कवि मुस्लिम होते हुए भी इस्लामी कट्टरता, हठधर्मिता से सर्वथा दूर रहे। भक्तिकाल की अन्य धाराओं में भी रहीम, रसखान जैसे मुस्लिम कवि हैं जो साम्प्रदायिक एकता की भावना के प्रबल समर्थक है, संस्थापक है। इन्होने राम और अल्लाह को एक ही बताया। जिस समय सूफी कवियों के काव्य ग्रन्थ भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत होकर लोगों तक पहुँचे। उस समय देश में विभिन्न प्रकार के मतभेद फैले हुए थे। सूफी कवियों के कार्यों का यह फल हुआ कि भारतीय सभ्यता की रक्षा हुई और वेद–शास्त्र डूबने से बच गए। समाज को ज्ञान एवं प्रेम की नवीन दिशा प्राप्त हुई। जिसमें सूफियों ने लौकिक प्रेम के साथ अलौकिक प्रेम की भी अभिव्यंजना कर समाज को एक सूत्र में बांधा है, इससे साम्प्रदायिक झगड़े मिट गए। जाति–पाति की लड़ाई कम हो गई।

अलाउद्दीन खिलजी के समय 'नूरक और चन्दा की कहानी' के लेखक मूल्ला दाउद (1440ई0) प्रेम काव्य के पहले कवि माने जाते हैं।'मृगावती' के लेखक कुतबन (1500ई0) सिकन्दर लोदी के राजस्वकाल में हुए। जिस समय आक्रमणकारियों की तलवार अपनी रक्त पिपासा बूझा रही थी, उसी समय दोनों जातियों को मिलाने के लिए प्रेम काव्य सबसे अधिक आवश्यक था। इसी आदर्श पर मंझन ने 'मधुमालती', जायसी ने 'पद्मावत' तथा असमान ने 'चित्रावली' लिखकर उस प्रेम सूत्र को और भी दृढ़ किया। जायसी इन्हीं शेरशाह के सम–सामयिक थे, जिन्होंने कि उल्माओं की कट्टरता की अवहेलना की

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed Journal

थी। जायसी की उदारता इसी भावना के अनुकूल है। सूफी कवियों की भाषा में अन्य लोगों की भाषा की अपेक्षा अधिक परिमार्जन और साहित्यकता है। निर्गुण संतो के प्रभाव से लोगों के हृदय में कुछ रुखापन तथा संसार से उदासीनता आ गई थी। इसे दूर कर प्रेम के उच्च रूप को सामने रखकर जनता के हृदय में गृहस्थ जीवन के प्रति अनुराग तथा प्रेम की सरस धारा बहाना इन्हीं कवियों का काम था। प्रेम के महत्त्व को तो कबीर, रैदास आदि सभी ने माना था, किन्तु उसे जीवन का अंग प्रेम–मार्गी कवियों ने ही बनाया।इसके अतिरिक्त लोकहित समाज कल्याण भी इनके काव्य का एक प्रमुख आदर्श था। हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित करने के लिए इन कवियों ने दोनों को प्रेम पद्धति एवं संस्कृतियों में समन्वय कर दिया है। यथा–ईरानी प्रेम पद्धति में नायक के प्रेम का वेग अधिक तीव्र रहता है और भारतीय प्रेम पद्धति में नायिका का, किन्तु सूफी कवियों ने दोनों में समन्वय स्थापित कर दिया।

लोक हित एवं समाज कल्याण को काव्य का आदर्श मानने के कारण ही सूफी कवियों ने जन समाज के भोगों को अपनाया। इनकी प्रेम–गाथाओं में प्रेम भावना का सम्बन्ध यद्यपि राज–परिवार से है, किन्तु इसमें जन साधारण की भावनाओं की अवहेलना नहीं की है। इसमें राज–रानियों के पति का विरह एक साधारण नारी के समान है। उदाहरणार्थ–'पुष्य नखंत सिर ऊपर उनावा,/ हौ विनू नाह मन्दिर को छावा।'[3] सूफी सन्तों से पहले हिन्दू–मुस्लिमों ने जो देश की स्थिति बना रखी थी उससे लोग भयभीत थे, देश में ऊँच–नीच, जाति–पाति तथा बाह्य आडम्बरों का बोलबाला था। डा0 ताराचन्द्र ने इसकी व्यापकता का वर्णन लिखते हुए कहा–'लिंगांगत, शंकराद्वैत सन्त कवियों एकेश्वरवाद एवं चैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं में इस्लाम के महान प्रभाव का जो स्वरूपांकन किया है।'[4] उसमें से प्रथम तीन को तत्थहीनता को दिनकर जी ने भली भांति प्रभावित कर दिया है। कबीर, नानक आदि निर्गुण धारा के सन्तों पर सूफी–प्रेमतत्व का प्रभाव अवश्य एक सीमा तक पड़ा जिसे प्रायः विद्वानों ने स्वीकार भी किया है।[5] इसके अतिरिक्त नामदेव के शिष्यों जो इस्लाम से उनके सम्प्रदाय में आये उन पर इस्लाम का प्रभाव प्रतिष्ठित रहा।' वे रमजान और एकादशी दोनों मानते एवं मक्का तथा पंढरपुर दोनों की तीर्थयात्रा करते हैं। इसी प्रकार दत्तात्रेय सम्प्रदाय पर भी यह बाह्य प्रभाव परिलक्षित रहता है कि उनके अराध्य देवता का पहनावा मुसलमान फकीर जैसा है। बंगाल में किसी सीमा तक प्रचलित सत्यपीर की पूजा, जिसका कि प्रवर्तक वहाँ का शासक हुसैन शाह माना जाता है, हिन्दू तथा मुसलमान दोनों में प्रचलित हुई जो कि एक प्रकार से मुस्लिम प्रभाव को स्पष्ट करती है।[6] इसके अलावा सामान्य हिन्दू जनता में अलौकिक शक्तियों तथा उनसे सम्पन्न माने जाने वाले सन्यासियों के प्रति प्रतिष्ठित अन्धविश्वास मुसलमान पीरों तथा मजारों की ओर भी उन्मुख हुआ तथा उनकी पूजा होने लगी। यह भी मुस्लिम प्रभाव का एक रूप है जिसके पीछे कोई सैद्धान्तिक अथवा इस्लाम साधनागत तत्व नहीं, अपितु भारतीय जनता की अन्धविश्वास प्रवृत्ति काम करती है।[7] वैसे तो इस्लाम धर्मी समाज के धर्ममतों में से सूफी मत तो भारतीय प्रभाव का ज्वलन्त उदाहरण है किन्तु इसके अतिरिक्त अन्य धार्मिक विश्वासों का भी प्रभाव प्रायः समस्त वर्गों की मुलसमान जनता पर इस युग में पड़ा था। सूफीमत की आधार भूमि का विचार करने से ज्ञात होता है कि उसके मूल में भारतीय वेदान्त का अप्रत्यक्ष किन्तु महत्वपूर्ण प्रभाव तो था ही जिसके साथ ही उस पर दुहरा प्रभाव 'हिन्दू और बौद्ध सन्तों और पंडितों द्वारा पड़ा और इसलिए तसब्बूफ पर सबसे अधिक प्रभुत्व हिन्दुत्व का ही माना जाना चाहिये।'[8] ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करते हुए दिनकर जी ने यह प्रमाणित किया है कि अरब, बगदाद और बलख में भारतीय चिन्तन का प्रभाव तो था ही किन्तु इसके साथ ही अनेक सूफी सन्त ज्ञान लाभ के लिए भी भारत की यात्रा करते थे।[9] भारत में आवागमन के पश्चात् एक और प्रभाव योगमार्गी नाथ पंथी साधना का भी पड़ा। कहना न होगा उस युग के धार्मिक वातावरण के अन्तर्गत चमत्कारी एवं आश्चर्य–जनक तत्त्वों के प्रति विश्वास सामान्यतः हिन्दू मुस्लिम जनता की प्रवृत्ति बन चुका था और जिसके लिए ये सूफीसन्त की प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन प्राप्त करने के लिए हिन्दू साधुओं, सन्यासियों एवं योगियों के पीछे–पीछे घूमा करते थे।

डॉ0अशरफ के अनुसार 'गुरु का भारतीय आदर्श पीरों अथवा शेखों से सम्बन्धित मुस्लिम अवधारणा द्वारा अभिव्यक्त हुआ और उसे भावों के नैतिक पतन के फलस्वरूप उनका स्थान आध्यात्मिक आचार्य अथवा उपदेशक के रूप में प्रतिष्ठत हो गया। कालान्तर में, यह महत्त्व उनकी संतानों को प्राप्त होने लगा जिसके परिणामस्वरूप उन्हें वह धार्मिक सम्मान तथा स्थान प्राप्त हो गया जो कि हिन्दू जनता के बीच ब्राह्मणों का था।[10] यह प्रसिद्ध है कि मुसलमानों में हज्ज तो पहले से ही प्रचलित था। किन्तु उसके अतिरिक्त अब प्रसिद्ध सन्तों के मजारों पर प्रायः तथा विशेषकर 'उर्स' के अवसर पर जाना मुसलमान जनता के बीच प्रचलित हो गया था। उपर्युक्त परिस्थितियों के कारण जनता में ही नहीं अपितु मुसलमान शासकों ने भी हिन्दू तथा मुसलमान सन्तों के प्रति इतनी आस्था एवं अंध–श्रद्धा प्रतिष्ठित हो गयी थी कि वे अपनी इच्छा पूर्ति के लिए उनके पास जाते थे। बंगाल का मुसलमान सुबेदार जो हिन्दुओं पर निर्मम अत्याचार करने के लिये प्रसिद्ध था, चैतन्य महाप्रभु का आध्यात्मिक चमत्कार सुनकर स्वयं उनके पास आया तथा अपने अनाचारों पर पश्चाताप प्रकट करता है, किन्तु चैतन्य का अनुयायी बनकर सरकारी नौकरी छोड़ने को तैयार हो जाता है। राजनीतिक रूप में बादशाह अकबर के दरबार में मनोहर, बीरबल, गंग, नरहरि आदि हिन्दू कवियों को विशेष सम्मान प्राप्त था। यह हिन्दू–मुस्लिम एकता का प्रत्यक्ष प्रमाण है, किन्तु जिस शिद्दत से, तन्मयता से, सूफियों ने भारतीय मूल्यों को अभिव्यक्ति प्रदान की, उसे अनुभव कर आश्चर्य होता है। सूफी कवियों में ईश्वर की कल्पना प्रेम

के रूप में प्राप्त होती है। यह प्रेम लौकिक न होकर अलौकिक है, आध्यात्मिक है। प्रणय के द्वारा आत्मा का परमात्मा से मिलन माना गया है। इनकी अलौकिक प्रेम की अभिव्यजंना करने वाली ये लौकिक प्रेम कथाएँ प्रबन्ध काव्य की श्रेणी की है। उन्होंने अपने प्रेम आख्यानों में माशूक के रूप सौन्दर्य को ज्योति पुंज के रूप में प्रस्तुत किया है। जीवसत्ता इस ज्योति पुंज पर अपना सर्वस्व अर्पित करने की इच्छा से प्रेम के कठिन मार्ग पर अग्रसर हो जाती है इस प्रकार प्रेमी युगल को आपस में मिलने के लिए प्रेम–मार्ग की भयंकर बाधाओं से जूझना पडता है, लेकिन वो फिर भी अपने लक्ष्य की सिद्धि की ओर बढ़ते हैं।

प्रायः सभी धर्मों में परमात्मा के प्रति प्रेम–श्रद्धा को अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उस परम सत्ता को प्राप्त करने के जितने मार्ग बताए गए हैं उनमें प्रेम का मार्ग श्रेष्ठ है। मानव में श्रद्धा एवं विश्वास की उत्पत्ति प्रेम के द्वारा ही होती है, ऐसा इन सूफी सन्तों का विश्वास है। प्रेम के द्वारा इस संसार में सब कुछ संभव है यहाँ तक परमात्मा संबंधी वेदना व्यथा, ज्ञान प्राप्त करना, प्रेम के द्वारा ही संभव है। प्रेम के द्वारा ही मनुष्य स्वर्ग का अधिकारी होता है। अगर उसने प्रेम नही किया तो वह एक मुट्ठी राख के सिवाए और क्या है।[11] सूफियों के अनुसार जब जीव प्रेम मार्ग पर चलकर प्रभु से मिलने जाता है तो उसके साथ इस नश्वर संसार से धन्धा–पोथी जैसी कोई भी वस्तु नहीं जाती केवल प्रेम ही जाता हैः–''धन्धा पोथि जाइन नहिं साथ''[12] जायसी ने प्रेम के जानकार को ज्ञानी पुरूष माना हैः– 'कोटिक पोथी पढ़ि भरे पण्डित माने कोई।/एके अच्छर प्रेम का पढ़े सो पण्डित होई।'[13] सूफियों ने प्रेम का विस्तार उस समय किया जब देश में विविध सम्प्रदाय अपने–अपने मत का प्रचार अपने–अपने ढंग से कर रहे थे। कबीर अपनी डॉट–फटकार से धर्म, जाति और सम्प्रदाय के बीच फैली रूढियों को मिटाने की कोशिश कर रहे थे किन्तु इससे सम्पूर्ण समाज लाभान्वित न हो सका। ठीक उसी समय सूफियों ने हिन्दू राजघरानों की प्रेम कथाओं को आधार बनाकर जीवात्मा और परमात्मा के मिलन को मार्ग 'प्रेम' की खोज की।[14] अतः हम कह सकते हैं कि जो कार्य कबीर अपनी झाड़ फटकार की शैली से नहीं कर पाए, उसे सूफी प्रेम के माध्यम से सहज ही कर गए। इस प्रकार विविध जातियों और सम्प्रदायों में बटे इस देश को एकता के सूत्र के बाँधने का सफल प्रयत्न तत्कालीन सूफी कवियों ने किया।

आज हम बाजारवादी भावना से ग्रस्त हैं, उपभोक्तावाद हम पर हावी है साम्प्रदायिकता, क्षेत्रवाद, अलगाववाद, आंतकवाद, जातिवाद जैसी ज्वलंत समस्याएँ इस देश की अखंडता और एकता को छिन्न–भिन्न करने का प्रयत्न कर रही हैं। राष्ट्र को एक बार फिर आज सूफीवाद जैसे सांस्कृतिक आंदोलन की आवश्यकता है। सूफियों ने अपने साहित्यिक आंदोलन द्वारा साम्प्रदायिक सद्भाव स्थापित किया। इस देश की अंखडता में अपना अहम योग दिया। निःसन्देह सूफी काव्य स्तुत्य और अनुकरणीय है।

सन्दर्भ सूची–(1)जायसी ग्रंथावली पृष्ठ 152 कवित्त संख्या–4. (2)डा0ताराचन्द्र, इनफ्लूयेन्स आफ इस्लाम आन इण्डियन कल्चर, सं0 1954, पृष्ठ.118. (3)रामचन्द्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ. 61. (4)डा0ताराचन्द, पृष्ठ.217. (5)डा0सत्यकेतु विद्यालंकार–भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास पृष्ठ.627. (6)डा0रामधारी सिंह दिनकर, संस्कृति, पृष्ठ.253–54.(7)वहीं, पृष्ठ.257. (8)डा0के0एम0अशरफ, लाइफ एण्ड कन्डीशन आफ दि पीपुल आफ हिन्दुस्तान, पृष्ठ.73, भाग–1,सं01959. (9)संपादक शिवसहाय पाठक, चित्ररेखा पृष्ठ.135. (10)जायसी ग्रन्थावली, पृष्ठ.71. (11)वही, पृष्ठ.145. (12)वही, पृष्ठ.1.

ISSN-2454-6283 PEER Reviewed JOURNAL

PAPER 44
International Journal of Engineering& Scientific Research
Vol.9Issue 7, July 2021,
ISSN: 2347-6532 Impact Factor: 6.660
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gage as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

A study on Synthesis and Characterization of Magnesium Iron Nitrate Mixed Nano Composites

Narender Kumar
Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021, India
Corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com

Abstract

Cobalt substituted nickel ferrites, Ni1-XCoXFe$_2$O$_4$, have been synthesized by using oxalic de-hydride as a fuel. Nano composites (ferrite particles) can be synthesized by using solution combustion method. As the combustion process involves exothermic reaction and a large amount of heat is released, the ferrites can be synthesized at lower temperature. X-ray diffraction studies reveal the formation of single phase spinel structure. Magnetic studies show variation of coercively and saturation magnetization with cobalt substitution and show higher coercively and saturation magnetization than pure nickel ferrites. From the Mossbauer recording, presence of two well resolved Zeeman sextets, which is due to Fe^{3+} ions distribution in tetrahedral and octahedral sites, ferri magnetic nature of ferrite materials is revealed.

Keywords: *Ferrites, Magnetic, synthesize, saturation, magnetization, chemical composition*

Introduction

For the first calculated amount of salts of Mn, Fe and Ni were dissolved in deionized water and stirred for a few minutes. 0.1 M NH_4OH solution was then slowly added drop-wise under vigorous stirring. The alkali addition was continued till the pH of the solution was 10 and was left undisturbed for 1hour for complete digestion. The precipitate was then washed thoroughly till pH 7 and then heated to 600 ^{0}C. For the next series "x" was kept fixed at 0.5 and the same synthesis steps were repeated. The sample was divided into three batches and heat treatment was performed at 600 ^{0}C, 900 ^{0}C. The samples were checked for their phase purity by x ray diffraction which confirmed the spinel phase without any impurity.

Dielectric measurements were performed within a frequency window of 1 Hz to 1 MHz the dielectric dispersion can be well explained by Koops and Maxwell – Wagner theory. Raman spectroscopy also gave detailed information about the structural order of the samples.The advance made in physics of solids has led too much of the recent progress in science and technology. Physics of condensed matter draw attention to chemical

composition, atomic configuration, electrical, crystal structure, magnetic ordering and saturation magnetization and the special preference of metallic ions for interstitial sites in the spinel lattice etc. of the solids. It also helps to co-relate the physical and chemical properties of solids and their use in technological applications.

In the recent years, solid state physics mainly concentrates on crystal structure, chemical and physical properties of solids. A proper understanding of the nature and properties of solids form the basis for developing new tailor made nano composites with the desired properties that can be used in many electrical and electronic devices.

Ferrites are in general ferromagnetic ceramic materials consisting of ferric oxide in major portion and metal oxides. On the basis of their crystal structure they can be grouped in to three categories namely, spinel ferrite, cubic garnet and hexagonal ferrites. The molecular formula of ferrites is $M^{2+}O.Fe^{3+}2O_3$, where M stands for the divalent metal such as Fe, Mn, Co, Ni, Cu, Mg, Zn or Cd. There are 8 molecules per unit cell in a spinel structure.Spinel Ferritesare also called cubic ferrite. Spinel is the most widely used family of ferrite. High values of electrical resistivity and low eddy current losses make them ideal for their use at microwave frequencies. The spinel structure of ferrite as possessed by mineral spinel $MgAl_2O_4$ was first determined by Bragg and Nishikawa in 1915.

Electrical properties of prepared samples were studied by dielectric studies and porosity of the samples derived from x-ray densities which utilizes structural parameters obtained through XRD measurement.

Synthesis and Characterization of doped Nano Composites

Cobalt ferrites nano composites are prepared by burning cobalt oxalate with iron oxalate using poly (vinyl alcohol) as a fuel for the combustion reaction in 1: 5 ratio. The burning process takes place in a separate container to the particular temperature which results into the possible formation of partial metal oxides *i.e.*(Co-O and Fe_2O_3). These oxides are mixed properly with PVA, grinded and burned again in a separate container at ratio 1: 1: 5, respectively. This process starts with formation of froth, evolution fumes and burns with flame; finally it was completed at particular temperature. The product cobalt ferrite obtained after the complete combustion process and is grinded in the pestle and motor for half an hour. It is washed with acetone and concentrated action to get rid of carbon particles in the final product.

Cobalt ferrite nano composites are doped with the silver metal nanoparticles using the combustion method. The process starts with burning of cobalt ferrite with silver metal nanoparticles, and PVA keeping the molar ratio as 2: 1: 5, respectively. Initially, it burns

with sooty flame followed by reduced non sooty flame for complete reaction. This reaction was arrested at a particular temperature around 500^0C to form the phase formed Ag doped cobalt ferrite nanoparticles. Later it is washed with acetone and concentrated action to remove the carbon particles and other organic impurity.

Nano composites are corner stones of nano-science and nanotechnology which are broad and interdisciplinary area of research and developmental activity that has been growing explosively worldwide in the past few years. Nanotechnology is based on the science that deals with tweaking of the matter at the atomic and molecular scale and the size range between 1- 100 nm [1].

Recently researchers are attracted much towards nano composites due its enhanced properties and applications [2]. The latest physical properties and advancement in sample preparation of the materials at nanosize accounts the progress of nanoscience [3-4]. The man in his quest for knowledge has been conceiving and developing physical world and its components in bigger than the biggest and smaller than the smallest dimensions of mass, length and time [5]. Sometimes the changes in particles size are in such extent that the completely new transpiration is digging up which helps in flowering of the world [6-7]. However the title is known about how the biological activity takes place for certain materials when it is reduced into nanoscale dimensions. In this world of elaboration nanotechnology, one of the main primary concerns should be the potential environment impact of nanoparticles (Nps).

A proper way of estimating the nanotoxicity is to monitor the response of the bacteria against these nanoparticles [8-9].

Discussion

The nanocrystalline mixed spinel nano composites and ferrites materials used in various technological issues like nano ferrite doped microstrip patch antenna for improved the overall antenna performance, microwave dielectric property study and antenna miniaturization. Application of nano ferrites are in fashion these days because of its simple preparation, compatibility with electrical circuits, low overall cost and light weight these have numerous application in almost every field some of them like medical, electric, power, communication, mechanical etc.

Doping rare earth ions into spineltypes ferrites, the occurrence of 4f-3d couplings which determine the magneto-crystalline anisotropy in spinel ferrite can also improve the electric and magnetic properties of spinel ferrites. The rare earth ions commonly reside at the octahedral sites by replacing Fe3+ ions and have limited solubility in the spinel ferrite

lattice due to their large ionic radii.There is absence of relaxation in Mn rich concentration due to the unavailability of hopping charges, for manganese nickel ferrite conductivity and resistivity can be explain on the basis of hopping of electron and hole charges on the octahedral site.

On relative intensity and peak position can be explained considering alloy effects, resulting from the introduction of a new ion at increasing content. Further, the Raman frequency depends on the Fe(Ni)–O and bond length. The intensity of the highest wavelength Raman mode (initially around 693 cm^{-1}) decreases with increasing Mncontent the intensity of the Raman mode peaking around 617 cm- 1 increase proportionally.

The Raman intensity of the signal increases as the sintering temperature is increased, as shown in figure (h) the intensity of Raman mode 617 cm^{-1} increases at 900C and mode 693 cm^{-1} is disappeared at 900C

The shift toward lower wave number is attributed to the crystalline disorder and also to the presence of grain boundaries, which are large in small-sized nano composites. Bandwidth, shows broadening for the small-sized nano composites (~20 nm), which also supports the crystalline disorder. Raman shift toward lower wave number and the line broadeningare generally observed in polycrystalline materials and are attributed to the confinement of optical phonons in a small crystalline particle**.**

Nanocrystalline manganese Nickel ferrite particles for x=0 to x=0.5 and europium and terbium doped Nickel ferrite for x= 0.02, 0.05, 0.1 were prepared using wet chemical co-precipitation technique.Particles were found to be exhibiting a spinel structure with sizes varying from 21nm - 51nm. Overall result of xrd pattern confirms the spinel cubic structure with high high degree of crystallinity of prepared ferrites. Of the two types of liners viz. soil and synthetic liners commonly used in waste disposal facilities, soil liners seems to be indicative of the extensive use of clay soils as pollution barriers.

Result of Raman modes confirms the five Raman modes and distribution of cation distribution in octahedral and tetrahedral sub lattices in agreement with the as-synthesized samples. The mechanism of dielectric polarization was found to be similar to that of conduction process involving the hopping of charge carriers. The decrease in ε with Mn substitution point to the decrease in availability of Ni2+/Ni3+ and Fe2+/ Fe3+ pairs with increasing Mn. The tanƧ and exhibit strong relaxation peaks and relaxation time (Γ) was estimated from these relaxations.

Applications

Applications being developed for nano composites include adding antibodies to nanotubes to form bacteria sensors, making a composite with nanotubes for aircraft, adding boron or gold to nanotubes to trap oil spills, include smaller transistors, coating nanotubes with silicon to make anodes the can increase the capacity of Li-ion batteries by up to 10 times. In addition to this, applications being developed for nano composites include a nanotube-polymer nano composite to form a scaffold which speeds up replacement of broken bones etc. Transition metal ferrites, both doped and undoped, are magnetic candidates in a huge range of applications considering catalysis, sustainable hydrogen production application and electronic and magnetic devices, with others.

Cobalt ferrite material have attracted a great interest in fundamental and applied research due to their various properties like mechanical, hardness, thermal stability and anisotropy constant. All these characteristics encourage their use in wide range of applications from medicine to electronics. Relating to all these possible applications, different research groups performed various studies on the influence rare earth cations on the properties of $CoFe_2O_4$ in bulk form thin films and nanoparticles [11]. Cobalt ferrite as a magneto-strictive material has recently become of interest to many researchers due to its promising magneto-strictive properties. It has been proposed to be a suitable magneto-strictive material for some applications in the area of sensors and actuators. In such applications, speed of response with accurate displacements is important. Although cobalt ferrite has shown a small magneto-strictive coefficient, which is a disadvantage, it has also shown a very small hysteresis characteristic. It follows that, the results of using this material should lead to a smaller amount of energy loss and higher displacement accuracy at high frequencies, and these benefits may compensate this disadvantage.

Conclusion

Presented data to show that the water content – dry density criterion for compacted soil liners can be formulated in a manner that is different from the currently used approach in which the adequate strength and permissible compressibility is ensured. The approach recommended by them is based on defining water content – dry density requirements for a broad, but representative, range of capacitive energy and relating those requirements to hydraulic conductivity.

Grouting is very popular but at one time, it was supposed to be very mysterious task in civil engineering. For the grouting to be more effective, needs a lot of skill, understanding and perception.

Refrences

[1] Veena Gopalan E. “on the synthesis and multifunctional properties of some Nano crystalline spinel ferrites and magnetic Nano composite” Ph.D. thesis (department of Cochin university of science and technology) 14, 16, 18

[2] Sakurai j and Shinjo T.J phys. Soc. Japan 23 (2014) 1426 S.A Oliver, H.H Hamdesh, J.C Ho; phys. Rev. B60 (1999)3400

[3] JeongKeunJi, Won Ki Ahn, Jun Sig Kum, Sang Hoon Park, Gi Ho Kim, and Won Mo Seong “Miniaturized T-DMB Antenna With a Low–Loss Ni–Mn– Co Ferrite for Mobile Handset Applications”(IEEE MAGNETICS LETTERS, Volume 1 (2010) Soft Magnetic Materials By Research and Development Center, E.M.W. Antenna Company,

[4] John Jacob, M Abdul Khadar, Anil lonappan and K. T Mathew “Microwave dielectric properties of nanostructure nickel ferrite” (Bull. Mater. Sci., Vol. 31, No. 6, November

[5] G..Nabiyouni et al., “Characterization and Magnetic Properties of Nickel Ferrite Nanoparticles Prepared by Ball Milling Technique”, CHINS PHYS. LETT.Vol. 27, No. 12 (2010) 126401.

[6] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).

[7] White WB, DeAngeli BA (2014). “Interpretation of vibrational spectra of spinels” SpectrochimActa 23A:985–995. doi: 10.1016/0584- 8539(67)80023-0.

[8] Y.Qu, H.Yang, N. Yang, Y.Fan, H Zhu and G. Zou Mater, Lett. 60, 3548 (2016).

[9] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).

[10] T.Yu, S.C Tan, Z.X Shen, L.W Chen, J.Y Lin and A.K See, Applied physics Lett. 80, 2266(2012).

[11] Jitendra Pal Singh, et al. “Micro-Raman investigation of nanosized zinc ferrite: effect of crystallite size and fluence of irradiation”,J. Raman Spectrosc.(2011) (wileyonlinelibrary.com) DOI 10.1002/jrs.2902.

A Study on Synthesis and Characterization of Cobalt Nickel Mixed/Doped Nano Ferrites

[1]Bharti Yadav, [2]Narender Kumar,
[1]*Department of Physics, Govt College, Kanina 123027, India*
[2]*Department of Physics, Vaish College, Bhiwani 127021, India*

**corresponding author, E-mail: nk.physics15@gmail.com*

ABSTRACT

Cobalt substituted nickel ferrites, Ni_1-x$CoxFe_2O_4$, have been synthesized by using oxalic dihyrazide as a fuel. Nanoscale ferrite particles can be synthesized by various methods like Wet Chemical method, Co-Precipitation method Ball milling method out of which we are using solution combustion method. As the combustion process involves exothermic reaction in which a large amount of heat is released. The prepared sample can be synthesized from lower temperature to higher temperature. X-ray diffraction studies reveal the formation of single phase spinal structure. Magnetic studies of prepared sample shows variation of corecivity, saturation magnetization with cobalt substitution, show higher corecivity and saturation magnetization than pure nickel ferrites. From the Mössbauer recording, the presence of two well resolved Zeeman sextets, which is due to Fe^{3+} ions distribution in tetrahedral and octahedral sites. As a ferrimagnetic nature of prepared ferrite materials is revealed.

KEYWORDS: Ferrites, Particle, Magnetic, X-ray Diffraction,

INTRODUCTION

For the first calculated amount of salts of Mn, Fe and Ni were dissolved in deionized water and stirred for a few minutes. In this process a 0.1 MnH_4OH solution was slowly added drop-wise under vigorous stirring. The alkali addition was continued till the pH of the solution should not becomes 10 and then left undisturbed for one hour of complete digestion. The precipitate was then washed thoroughly till pH becomes 7 upto the temperature reached 600 ^{0}C. For the next series “x” was kept fixed at 0.5 and the same synthesis process steps were repeated again. The sample was divided into three batches and heat treatment was performed at 600 ^{0}C to 900 ^{0}C. The characterization of prepared samples were checked for their phase purity by X-ray

diffraction method, which confirmed the spinel phase without adding any impurity. Dielectric measurements were performed within a frequency window of 1 Hz to 1 MHz. So the dielectric dispersion can be well explained by Koops and Maxwell – Wagner theory. Raman spectroscopy also gave detailed information about the structural order of the samples. The advance made in physics of solids has led too much of the recent progress in science and technology. Physics of condensed matter draw attention to chemical composition, atomic configuration, electrical, crystal structure, various magnetic properties like magnetic ordering and saturation magnetization and the special preference of metallic ions for interstitial sites in the spinel lattice etc. of the solids. It also helps in co-relate the physical and chemical properties of solids and also their various uses in technological applications.

In the recent years, solid state physics mainly concentrates on crystal structure, chemical and physical properties of solids. A proper understanding of the nature and properties of solids form the basis for developing new tailor made materials with the desired properties so that we can be used in many electrical and electronic devices. Ferrites are in general ferromagnetic ceramic materials consisting of ferric oxide in major portion and metal oxides. On the basis of their characterization of crystal structure they can be mainly grouped into three categories as spinel ferrite, cubic garnet ferrite and hexagonal ferrites. The molecular formula of ferrites is $M^{2+}O.Fe^{3+}2O_3$, where M stands for the divalent metal such as Fe, Mn, Co, Ni, Cu, Mg, Zn or Cd. There are 8 molecules per unit cell in a spinel structure. Spinel Ferrites are also called cubic ferrite. Spinel is the most widely used family of ferrite. High values of electrical resistivity and low eddy current losses make them ideal for their use at microwave frequencies. The spinel structure of ferrite as possessed by mineral spinel $MgAl_2O_4$ was first determined by Bragg and Nishikawa in 1915. Electrical properties of samples were studied by dielectric studies and porosity of the samples derived from x-ray densities which is utilizes as structural parameters obtained through XRD measurement.

SYNTHESIS AND CHARACTERIZATION OF DOPED/MIXED NANO FERRITES

Cobalt ferrites nanomaterials are prepared by burning cobalt oxalate with iron oxalate using poly (vinyl alcohol) as a fuel for the combustion reaction in 1: 5 ratio. The burning process takes place in a separate container at the particular temperature which results into the possible formation of

partial metal oxides *i.e.*(CoO_4 and Fe_2O_3). These oxides are mixed properly with PVA, grinded and burned again in a separate container at ratio 1: 1: 5, respectively. This process starts with formation of froth, evolution fumes and burns with flame; finally it was completed at particular temperature. The product cobalt ferrite obtained after the complete combustion process and is grinded in the pestle and motor for half an hour. It is washed with acetone and concentrated action to get rid of carbon particles in the final product. Cobalt ferrite nanomaterials are doped with the silver metal nanoparticles using the combustion method. The process starts with burning of cobalt ferrite with silver metal nanoparticles, and PVA keeping the molar ratio as 2: 1: 5, respectively. Initially, it burns with sooty flame followed by reduced non sooty flame for complete reaction. This reaction was arrested at a particular temperature around 500^0C to form the phase formed Ag doped cobalt ferrite nanoparticles. Later it washed with acetone and concentrated action to remove the carbon particles and other organic impurity. Nanomaterials are corner stones of nanoscience and nanotechnology which are broad and interdisciplinary area of research and developmental activity that has been growing explosively worldwide in the past few years. Nanotechnology is based on the science that deals with tweaking of the matter at the atomic and molecular scale and the size range between 1- 100 nm [1].

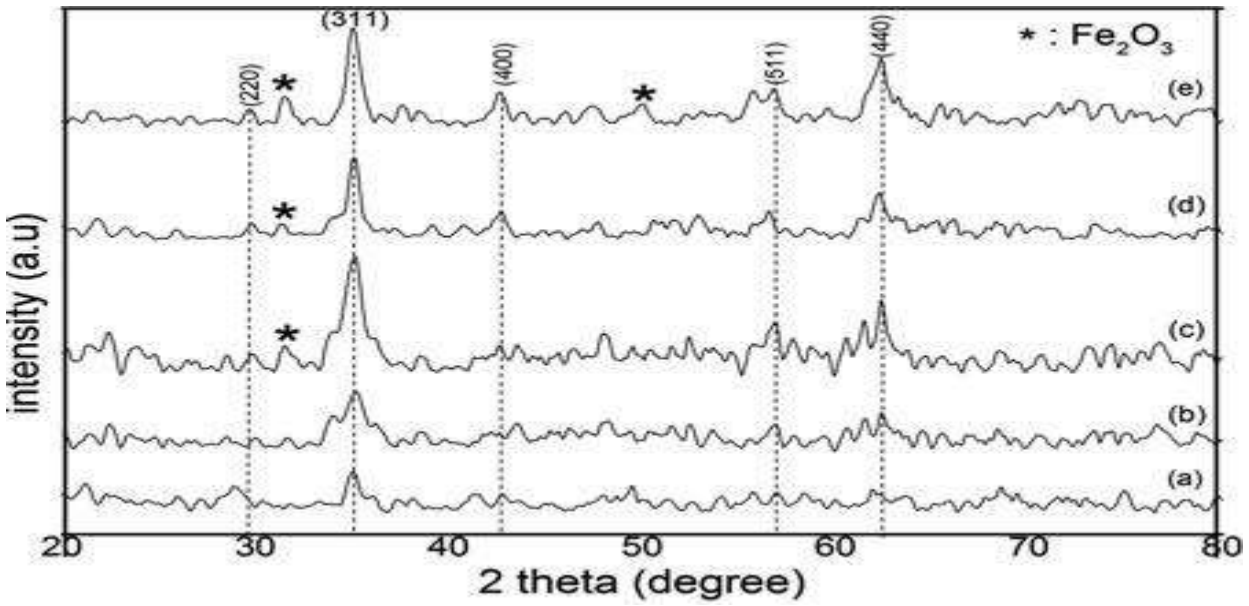

Fig- XRD patterns of Ni_1-*x*Co*x*Fe_2O_4 nanoparticles (a) *x* = 0.1, (b) *x* = 0.2, (c) *x* = 0.3, (d) *x* = 0.4 and (e) *x*= 0.5

Recently researchers are attracted much towards nanomaterials due its enhanced properties and applications [2]. The latest physical properties and advancement in sample preparation of the materials at nano size accounts the progress of nanoscience [3-4]. The main in his quest for knowledge has been conceiving and developing physical world and its components in bigger than the biggest and smaller than the smallest dimensions of mass, length and time [5]. Sometimes the changes in particles size are in such extent that the completely new transpiration is digging up which helps in flowering of the world [6-7]. However the title is know about how the biological activity takes place for certain materials when it is reduced into nanoscale dimensions. In this world of elaboration nanotechnology, one of the main primary concerns should be the potential environment impact of nanoparticles (Nps). A proper way of estimating the nanotoxicity is to monitor the response of the bacteria against these nanoparticles [8-10]. Applications being developed for nanomaterials include adding antibodies to nanotubes to form bacteria sensors, making a composite with nanotubes for aircraft, adding boron or gold to nanotubes to trap oil spills, include smaller transistors, coating nanotubes with silicon to make anodes the can increase the capacity of Li-ion batteries by up to 10 times. In addition to this, applications being developed for nanocomposites include a nanotube-polymer nanocomposite to form a scaffold which speeds up replacement of broken bones etc.

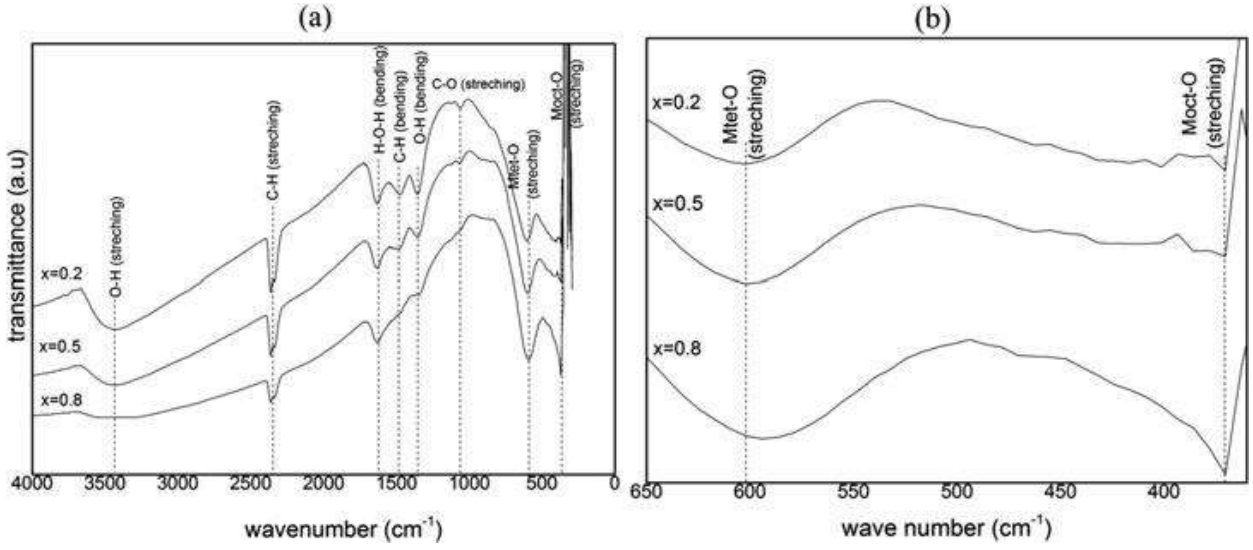

Fig:- FTIR spectra of as prepared Ni_1-xCo$x$$Fe_2O_4$ nanoparticles; (b) the partially enlarged wave number indicating presence M–O stretching vibration

Transition metal ferrites, both doped and undoped, are magnetic candidates in a huge range of applications considering catalysis, sustainable hydrogen production application and electronic and magnetic devices, with others. Cobalt ferrite material have attracted a great interest in fundamental and applied research due to their various properties like mechanical, hardness, thermal stability and anisotropy constant. All these characteristics encourage their use in wide range of applications from medicine to electronics. Relating to all these possible applications, different research groups performed various studies on the influence rare earth cations on the properties of $CoFe_2O_4$ in bulk form thin films and nanoparticles [11]. Cobalt ferrite as a magnetostrictive material has recently become of interest to many researchers due to its promising magnetostrictive properties. It has been proposed to be a suitable magnetostrictive material for some applications in the area of sensors and actuators. In such applications, speed of response with accurate displacements is important. Although cobalt ferrite has shown a small magnetostrictive coefficient, which is a disadvantage, it has also shown a very small hysteresis characteristic. It follows that, the results of using this material should lead to a smaller amount of energy loss and higher displacement accuracy at high frequencies, and these benefits may compensate this disadvantage.

DISUSSION

The nanocrystalline mixed spinel ferrites materials used in various technological issues like nano ferrite doped micro strip patch antenna for improved the overall antenna performance, microwave dielectric property study and antenna miniaturization. Application of nano ferrites are in fashion these days because of its simple preparation, compatibility with electrical circuits, low overall cost and light weight these have numerous application in almost every field some of them like medical, electric, power, communication, mechanical etc. Doping rare earth ions into spinel types ferrites, the occurrence of 4f-3d couplings which determine the magneto-crystalline anisotropy in spinel ferrite can also improve the electric and magnetic properties of spinel ferrites [20-23]. The rare earth ions commonly reside at the octahedral sites by replacing Fe3+ ions and have limited solubility in the spinel ferrite lattice due to their large ionic radii. There is absence of relaxation in Mn rich concentration due to the unavailability of hopping charges, for

manganese nickel ferrite conductivity and resistivity can be explain on the basis of hopping of electron and hole charges on the octahedral site.

On relative intensity and peak position can be explained considering alloy effects, resulting from the introduction of a new ion at increasing content. Further, the Raman frequency depends on the Fe(Ni)–O and bond length. The intensity of the highest wavelength Raman mode (initially around 693 cm-1) decreases with increasing Mn content the intensity of the Raman mode peaking around 617 cm- 1 increase proportionally.

The Raman intensity of the signal increases as the sintering temperature is increased, as shown in figure (h) the intensity of Raman mode 617 cm-1 increases at 900C and mode 693 cm-1 is disappeared at 900^{0C}. The shift toward lower wave number is attributed to the crystalline disorder and also to the presence of grain boundaries, which are large in small-sized nanomaterials. Bandwidth, shows broadening for the small-sized nanomaterials (~20 nm), which also supports the crystalline disorder. Raman shift toward lower wave number and the line broadening are generally observed in polycrystalline materials and are attributed to the confinement of optical phonons in a small crystalline particle**.** Nanocrystalline manganese Nickel ferrite particles for x=0 to x=0.5 and europium and terbium doped Nickel ferrite for x= 0.1 to 0.5 were prepared using wet chemical co-precipitation technique. Particles were found to be exhibiting a spinel structure with sizes varying from 21nm - 51nm. Overall result of xrd pattern confirms the spinel cubic structure with high degree of crystallinity of prepared ferrites. Of the two types of liners viz. soil and synthetic liners commonly used in waste disposal facilities, soil liners seems to be indicative of the extensive use of clay soils as pollution barriers.

Result of Raman modes confirms the five Raman modes and distribution of cation distribution in octahedral and tetrahedral sub lattices in agreement with the as-synthesized samples. The mechanism of dielectric polarization was found to be similar to that of conduction process involving the hopping of charge carriers. The decrease in ‘ε’ with Mn substitution point to the decrease in availability of Ni_2^+/Ni_3^+ and Fe_2^+/ Fe_3^+ pairs with increasing Mn. The tanδ and exhibit strong relaxation peaks and relaxation time (Γ) was estimated from these relaxations.

CONCLUSION

Presented data to show that the water content-dry density criterion for compacted soil liners can be formulated in a manner that is different from the currently used approach in which the adequate strength and permissible compressibility is ensured. The approach recommended by them is based on defining water content-dry density requirements for a broad, but representative, range of compactive energy and relating those requirements to hydraulic conductivity. Grouting is very popular but at one time, it was supposed to be very mysterious task in civil engineering. For the grouting to be more effective, needs a lot of skill, understanding and perception.

REFERENCES

[1] Veena Gopalan E. “on the synthesis and multifunctional properties of some Nano crystalline spinel ferrites and magnetic Nano composite” Ph.D. thesis (department of Cochin university of science and technology) 14, 16, 18

[2] Sakurai j and Shinjo T.J phys. Soc. Japan 23 (2014) 1426 S.A Oliver, H.H Hamdesh, J.C Ho; phys. Rev. B60 (1999)3400

[3] JeongKeunJi, Won Ki Ahn, Jun Sig Kum, Sang Hoon Park, Gi Ho Kim, and Won Mo Seong “Miniaturized T-DMB Antenna With a Low–Loss Ni–Mn– Co Ferrite for Mobile Handset Applications”(IEEE MAGNETICS LETTERS, Volume 1 (2010) Soft Magnetic Materials By Research and Development Center, E.M.W. Antenna Company,

[4] John Jacob, M Abdul Khadar, Anil lonappan and K. T Mathew “Microwave dielectric properties of nanostructure nickel ferrite” (Bull. Mater. Sci., Vol. 31, No. 6, November

[5] G..Nabiyouni et al., “Characterization and Magnetic Properties of Nickel Ferrite Nanoparticles Prepared by Ball Milling Technique”, CHINS PHYS. LETT.Vol. 27, No. 12 (2010) 126401.

[6] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).

[7] White WB, DeAngeli BA (2014). “Interpretation of vibrational spectra of spinels” SpectrochimActa 23A:985–995. doi: 10.1016/0584- 8539(67)80023-0.

[8] Y.Qu, H.Yang, N. Yang, Y.Fan, H Zhu and G. Zou Mater, Lett. 60, 3548 (2016).

[9] P. Chandra Mohan, M.P Srinivasan, S Velmurugan and S.V Narasimhan J. Solid State chemistry 184, 89(2011).

[10] T.Yu, S.C Tan, Z.X Shen, L.W Chen, J.Y Lin and A.K See, Applied physics Lett. 80, 2266(2012).

[11] Jitendra Pal Singh, et al. “Micro-Raman investigation of nanosized zinc ferrite: effect of crystallite size and fluence of irradiation”,J. Raman Spectrosc.(2011) (wileyonlinelibrary.com) DOI 10.1002/jrs.2902. .

Jijnasa
ISSN : 0337-743X

GENDER DIFFERENCES AMONG COLLEGE LECTURERS IN RELATION TO THEIR PSYCHOLOGICAL WELLBEING AND QUALITY OF WORK LIFE

Sonal Shekhawat
Research Scholar, Shri JJTU, Rajasthan, sonusonalrathore787@gmail.com

Dr. Harikesh
Assistant Professor,Vaish College, Bhiwani(Haryana)

ABSTRACT
The present study is designed to find the gender differences among college lecturers in relation to their Psychological wellbeing and quality of work life. Psychological wellbeing and Quality of Work Life are the two Concepts of high interest in the modern work environment. Data was collected from 100 college lecturers 50 male and 50 female from different Colleges of Bhiwani District. Data was collected by Psychological Wellbeing scale designed by Dr. .Carol Ryff & Keys(1989) and Quality of working life scale Designed by Angus S McDonald(2001). T-Test was used for comparative analysis among male and female college lecturers. Findings revealed there is no significant differences among male and female college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work life.
Keywords: Psychological wellbeing, Quality of work life, lecturers,

INTRODUCTION
PSYCHOLOGICAL WELLBEING-
Psychological wellbeing is a personal experience and it can be defined as a person's cognitive and affective evaluation of his or her life and the extent that a person feels healthy satisfied with and even happy about life. Ryff(1989) examined Psychological wellbeing as "the existentials challenges of life as : pursing meaningful goals, growing and developing as a person, and establishing equalities to others." Ryff(1989)gives a multidimensional model of psychological wellbeing. All dimensions of this model included wellness in it. Dimensions are

1. SELF-ACCEPTANCE-
   Positive evaluations of oneself and his/her past life.
2. PERSONAL GROWTH-
   Continued growth and development of his/her self.
3. PURPOSE IN LIFE-
   A positive belief and attitude towards meaningful and purposeful life.
4. POSITIVE RELATION WITH OTHER-
   Quality relation with others
5. ENVIRONMENTAL MASTERY-
   Manage effectively one's life and surroundings the world.
6. AUTONOMY-
   A sense of personal authority.

QUALITY OF WORKING LIFE
Now a days Quality of Working Life is a very important aspects in every organization. Organizations are increasingly realizing that their employees are one of their most valuable resources. The concept of quality

of work life developed rapidly over the last half of the 20th century, and has evolved from focusing almost exclusively on financial rewards to its present, much broader definition.
Quality of working life encompasses the characterstics of the work and work environment that influence employees work lives.
Huang et al.(2007) stated that quality of work life is the favourable conditions and environments of the workplace that addresses the welfare and wellbeing of employees. But Knox and Irving stated that quality of work life is all not about strength and favourableness of work place but it has weakness also.

REVIEWLITERATURE
Morever most of the researches did not explore the Psychological wellbeing and Quality of work life among male and female employees. Most of the Studies only focus on the Relationship of Psychological wellbeing and Quality of Work Life with some of the other variable like job satisfaction, performance and productivity etc. Some of the researches related to this study are;
Elias and Saha(1995) found in their research that female workers Quality of Work Life was significant lower than that of their male counterparts in the tabacco industry.
Wadud(1996) found that Quality of Work life was notably higher among the private sector women employees than their counterparts in the public sector.
Akram, Muhammad(2019), done a research in Pakistan to compare the Psychological wellbeing of public and private university teachers. The study found that male and female teachers perceived similar level of psychological wellbeing.

PURPOSE OF THE STUDY
1. To Study the Gender differences among College Lecturers in Relation to their Psychological wellbeing.
2. To Study the Gender differences among College Lecturers in Relation to their Quality of Working Life.

RESEARCH HYPOTHESIS
1. There is no significant differences among College Lecturers in Relation to their Psychological Wellbeing.
2. There is no significant differences among College Lecturers in Relation to their Quality of Work Life.

METHODOLOGY
RESEARCH DESIGN
T-test was used to study the comparison between male and female college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work life.

PARTICIPANTS
The study involved lecturers from different colleges of Bhiwani district. A sample of 100 lecturers 50 male and 50 female was collected through convenient sampling method.

INSTRUMENTS
The researcher adopted two research instruments to collect data of the study.

The 1st instrument Psychological wellbeing Scale developed by Dr. Carol Ryff &Keys(1989). Instrument was used to assess psychological wellbeing of the respondents. It consisted 42 items and included the following measures and indicators-Self acceptance, personal growth, purpose in life, positive relation with others and environmental mastery. All the items in psychological wellbeing scale were structured on a 6 point scale i.e. Strongly disagree to strongly agree.

The second Instrument was the quality of working life scale designed by Angus S.McDonald. It consisted 53 items and was used to measure quality of work life of the respondents. The items were related to working environment, feedback, responsibility, job security, supervision, stress, benefits, job significance etc. All the items in this instruments were structured on a 6 point scale and the reliability coefficient of the scale is .94.

PROCEDURE

All the participants were approached personally. Participants was made to sit comfortably and after that rapport was established with the subject. When the subject was feeling comfortable and ready for testing, the following instructions were given to the subject. "I am going to administer a test having some statements regarding your psychological wellbeing and quality of work life. Please answer frankly and honestly as the information provide will be kept confidential and would only to be used for research purpose. There is no right and wrong answer. There is no time limit to complete it but complete it fast. If there is any doubt you can ask or shall we start?"

After giving the necessary instructions to the subject test was administered. After the completion of the test it was taken back and it was ensured that subject was responded each and every in the prescribed way. After completion of the testing, the subject was duly thanked for his/her cooperation. All the items were scored as per the scoring pattern. The obtained data was statistically analyzed by using SPSS Software. Pearson Coefficient of correlation was computed for this study.

RESULTS AND DISCUSSION

The present study is designed to study the gender differences among college lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of work life. The result of the study revealed that in case of both male and female lecturers the degree of satisfaction about the Psychological wellbeing and Quality of work life in the Institutions is the different. The null hypothesis of the study is that there is no significant differences among male and female lecturers in relation to their Psychological Wellbeing and Quality of Work Life.

TABLE-1. PSYCHOLOGICAL WELLBEING OF MALE AND FEMALE COLLEGE LECTURERS.

GROUPS	MEAN	SD	t-value
Male(N=50)	169.86	30.644	1.118
Female(N=50)	213.62	275.084	1.118

Table 1 showed that the value of t= 1.118 which is less than the table value of 2.576 at 5% level which is statistically insignificant and hence the null hypothesis is accepted. Hence it indicates that male (M=169.86) and female (M=213.62) are not equally satisfied with their Psychological wellbeing in an Institutions. It means female lecturers have high wellbeing as compare to male lecturers

TABLE-2. QUALITY OF WORK LIFE OF MALE AND FEMALE COLLEGE LECTURERS.

GROUPS	MEAN	SD	t-value
Male(N=50)	168.82	22.69	1.042
Female(N=50)	194.10	169.98	1.042

Table 2 showed the value of t= 1.042 which is also less than the table value, which is statistically insignificant and hence second hypothesis also accepted. And male (M=168.82) and female (M=194.10) on Quality of Work Life indicates that females also have high quality of work life than male.

The research showed that female lecturers are continuously making an afford to manage a proper balance between their personal and professional work life. In the same way institutions are also putting their best to retain the female employees as the study revealed that there was no difference in the Psychological wellbeing and Quality of work life of male and female lecturers.

Some of the previous research by (Pratibha Barik,2011, Akram, Muhammed,2019) also support the result of this study. These all study found no significant differences in male and female lecturers in relation to their Psychological wellbeing and Quality of work life.

CONCLUSION AND SUGGESTIONS

Results show that there is no significant differences between male and female college lecturers in relation to their Psychological wellbeing and Quality of work life. The t value of Psychological wellbeing and Quality of Work life is 1.118 and 1.042 respectively which is non significant at 5% level of significance. This shows that male and female employees have equal level of wellbeing and quality of work life. Further researches can be done in case of other variables like job satisfaction, workaholism, work life balance etc. Comparative study on the Psychological wellbeing among permanent and -temporary college lecturers can further be undertaken.

REFERENCES

- Barik,P.(2011). Quality of Life of Female Professionals: A Comparative Study Of Male vs Female. *International Journal Of Research In Commerce And Managements*, Vol.2(10), 148-151.
- Elias, M.S. and Saha,N.K.(2005).Environmental Pollutions and Quality Of Working life in Tobacco Industries, *Journal of Life Earth Science*, Vol.1(1), 21-24.
- McDonald, S.A.(2001).User's Guide Quality of Work Life. Published by the *NFER-NELSON* Published Company Ltd. Darville House,UK.
- Muhammad.A.(2019). Psychological Wellbeing of University in Pakistan. *Journal Of Education and Educational Development,* Vol.6(2), p235-253.
- Ryff, C.D.(1989a).Beyond Ponce de Leon and Life Satisfaction: New Directions in quest of successful aging ,*International Journal of Behavioral Development,* 12(1), 33-55.
- Ryff, C.D.(1989b). Happiness is everything, or is it? Exploration on the meaning of Psychological wellbeing. *Journal of Personality and Social Psychology*,57(6), 1069-1081.

Jijnasa
ISSN : 0337-743X

IMPACT OF STRESS ON HAPPINESS IN COLLEGE STUDENTS

Sunita Nimbria
Research Scholar, Shri JJTU, Rajasthan, sunitanimbria697@gmail.com

Dr. Harikesh
Assistant Professor, Vaish College, Bhiwani(Haryana)

ABSTRACT

This paper investigates the impact of stress on happiness in college students. For this purpose 170 college students (102 females & 68 males) were randomly selected from the colleges of NCR Bhiwani (Haryana, India). Data was collected through self-reported Stress Scale by Dr. (Mrs.) Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain and Happiness Scale by Dr. Himanshi Rastogi & Dr. Jaanki Moorjani. Proper instructions were given to the students before filling the questionnaires. Simple linear regression and t-test were used for data analysis by using SPSS 20. Results revealed that there is a significant negative relationship between stress and happiness in college students. Gender differences were found significant only on stress.

Keywords: Stress, Happiness, Relationship, College students

INTRODUCTION

Today's life is full of demands, frustrations, challenges and stress. Stress is a natural thing and everyone experiences it. When a situation enters in our life, our body responds to it physically and mentally. This mechanism of responding to situation is called stress. Although we face stressful situations all over the life but there is a certain period of time when people face more stress. College life is one of such period. It feels so rewarding to attend college but it can also cause anxiety and stress also (Dyson & Renk, 2006). Some students feel their college life more stressful than others. This is the time when they experience new surroundings, away from parents and home, meeting new friends, and independency. It is the time of great development, challenge and opportunity. Some students feel overwhelmed with these new things and fail to adjust with the new environment. This failure in adjustment causes stress with multiple problems both mental and physical. Physically they suffer from sleeping disorders, changes in eating habits, fatigue and even they start use of drugs and alcohol. At metal level, they feel depressed, mood swings, bad temper and irritability etc. These stressful symptoms affect their college and further life. These mental health problems are not only affecting the student's life but also the lives of their family members and friends.

STRESS

Stress is an unavoidable part of life which affects a wide range of population without discriminating them on age, gender, socio-economic status and educational levels. Stress, depression and anxiety are prevailing mental health issues among college students (Kitzrow, 2003; Marthoenis, Meutia, Fathiariani & Sofyan, 2018). College students face a number of educational, social, emotional and psychological difficulties which can affect their well-being and academic outcomes. This happens because this tertiary educational system has a big difference from secondary education systems. In this system, students are more independent, new to the college environment and classmates and more concerned about their future career etc. (Thawabieh & Qaisy, 2012). Stress can be even healthy if a person learns to fight rightly with the stressors (Khan, Lanin & Ahmad, 2015). A certain level of stress is very much essential for the

Scanned with OKEN Scanner

students to motivate them. Many researchers have also said that stress is not always negative.
Hans Selye (1936) was the first person to introduce the concept of stress. Stress is derived from the Latin word 'stringere' which means 'to draw tight'. The term referred to strain, hardship and pressure etc.
"Stress is the non-specific response of the body to any demand made upon it" (Selye, 1956)
"Stress can be described as "any influence which disturbs the natural equilibrium of the body that includes within its reference, physical injury, exposure, deprivation, all kinds of diseases and emotional disturbance." (Wingate, 1972)
"Any state that causes people to lose their equilibrium whether it be mentally, physically or emotionally is called stress." (Rosenberg, 2005)
Stress has two aspects:

1. Positive aspect: Eu-stress
2. Negative aspect: Dis-stress

Types of stress:

1) Acute stress: The most common form of stress. It comes from the demands and pressure of recent past and near future. It can be existing in small quantity but excessive can be dangerous.
2) Episodic acute stress: It is same as acute stress but happens more frequently. The individuals with episodic acute stress are always in a hurry and feel pressure. The people of type 'A' personality are more susceptible to episodic acute stress.
3) Chronic stress: This is the most harmful type of stress. If it is not treated over a long period of time, it can damage both physical and mental health.

HAPPINESS

In recent years, Positive Psychology has commenced to bring cognizance to the role of psychology in making life more fulfilling, enhancing human functioning and increasing happiness (Seligman, 2002). As happiness increases, it gives multiple benefits. Based on the common thought that stress obstructs happiness, it would be appeared that reduction of stress level is an important way to increase happiness. Happiness is the experience of pleasure (positive emotion) and life satisfaction, as well as the lack of depression and anxiety (negative emotion) (Argyle, 2013). The World Health Organization insinuated happiness as a critical health factor in individuals' daily life (Cohn et al., 2005). Happiness is a factor contributed to subjective well-being (Raibley, 2012; Veenhoven, 2010). It is known as a personality feature which helps to protect health and can play a vital role in future success (Lyubomirsky et al., 2005). Happiness has been defined in various ways, but Diener (1984) has given the most widely accepted definition, He defined happiness as the presence of positive affect, life satisfaction and absence of negative affect. Diener favored to use the term subjective well-being rather than happiness. Both the terms have been used synonymously over the three decades since this definition. Subjective happiness belongs to subjective, global evaluation of happiness (Lyubomirsky & Lepper, 1999).
Happiness is perceived differently by different people (Vaingankar et al., 2012). Many factors like social norms, social rule and demographic characteristics affect happiness (Hori and Kamo, 2017). Happy individuals are more creative, successful, healthier and enthusiastic in comparison to unhappy individuals. When a student enjoys his/her college life with happiness, he/she can be more successful in all aspects of college life and even after college life (Hoggard, 2005; Lyubomorsky et al., 2005). The increase in happiness is observed as an important human goal (Lyubomirsky, 2001).

Ading C.E. et al. (2012) in University in Malaysia investigated the religion and gender differences in

Scanned with OKEN Scanner

stress, happiness and life satisfaction. 178 university students were selected for sample. Spiritual involvement and Beliefs Scale (Hatch et al. 1998), The satisfaction with life scale (Diener et al., 1985) and The oxford happiness inventory (Argyle, 2001) were used for data collection. ANOVA, t-test and regression analysis were used for data analysis. Results revealed that level of happiness and life satisfaction were low in females than male students. University students were found suffering from stress and trying to adjust themselves as a student. **H. H. Schiffrin & S.K. Nelson (2010)** studied the relationship between happiness and perceived stress among 100 college students. Three questionnaires were used to assess happiness of the students: The Satisfaction with Life Scale (SWLS) for assessing overall life satisfaction, The Subjective Happiness Scale (SHS) for assessing subjective sense of global happiness and The Authentic Happiness Inventory (AHI) for assessing current state of happiness. The Perceived Stress Scale (PSS) was used for assessing the stress. The results of the research supported the hypothesis that there would be an inverse relationship between happiness and perceived stress. **Anjali Devvrat Singh & Dr. Harminder Kaur Gujral (2019)** assessed happiness of students of higher educational institutions. 402 UG students (152 males & 250 females) were involved in the study from three academic years of private university through convenience sampling. Oxford Happiness Questionnaire was used to assess happiness. No significance difference was noticed between male and female happiness which showed that happiness is not affected by gender. No significance difference was found in happiness for different academic years.

OBJECTIVES

1. To examine the gender differences in stress and happiness of college students.
2. To examine the impact of stress on happiness in college students.

HYPOTHESES

1. H0: There is no significant gender difference in stress and happiness of college students.
2. H0: There is no significant impact of stress on happiness in college students.

RESEARCH METHODOLOGY

SAMPLE & DATA COLLECTION

Sample consisted of 170 college students (68 males & 102 females). Participants ranged in age from 18 to 24 years with the mean age of 21 years. All the students of undergraduate and postgraduate level are included in the research population. All the willing students were enrolled in the study. Stress scale by DR. (Mrs.) Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain and Coping Strategies scale by Prof. A.K.Srivastava were used to collect the data. All the necessary instructions were given to the students before filling the questionnaires.

DESCRIPTION OF THE TOOLS

Stress Scale (SS-LVNS): Stress Scale by Dr. Vijaya Laxmi & Dr. Shruti Narain measures four dimensions like; Pressure, Physical stress, Anxiety & Frustration.SS consists of 40 items related to all above four dimensions. Inter-dimension correlations were also calculated, which were found to be sufficiently low and not significant. This scale is meant for adolescents in the age range of 12 to 24 years. The scale can be administered either by self or by the investigator. It may be used in groups as well as individual condition. There is no fixed time limit as such. However it generally takes about 10 to 15 minutes to complete. For smooth administration of stress scale clear instructions are printed at the top of

Scanned with OKEN Scanner

the first page. The answers of those items which tally with the answers given in the scoring key are given a score of +1. If they don't tally, they are given a score of zero. Positive items are given a score of +1 on 'yes' and zero on 'no' and negative items are given +1 on 'NO' and 0 on 'YES'. Higher the score, greater is the level of stress. The test-retest reliability is found .82, which is significant at .01 level. The validity coefficient is calculated .72 with Singh's personal stress source inventory and .83 with Stress dimension of anxiety, depression and stress scale by Bhatnagar et al.(2011). Percentile norms for Stress Scale for adolescents have been developed. Qualitative interpretation of SS score will be as 'High Stress', 'Moderate Stress' and 'Low Stress'.

Happiness Scale (HS-RHMJ): This scale is developed by Dr. Himanshi Rastogi & Dr. Janki Moorjani. It consists of 62 items which are responded as 'Strongly Agree', 'Agree', 'Undecided', 'Disagree', and 'Strongly Disagree' and the scoring is done by giving points of 5,4,3,2,1 respectively. The five factors are measured through this scale which are: Career well-being, Subjective well-being, Social well-being, Spiritual well-being & Emotional well-being.It can be applied in the age range of 18 to 40 years. The reliability of the scale was calculated on the basis of Split-half (odd-even method). It was calculated to be r=0.88, which is significant at .01 level of significance. Items were validated with an external criterion test Subjective Happiness Scale, which is likert scale as well, the correlation was found to be r=0.91. The test had been subjected to item analysis and as such has content validity. The Happiness Scale measures happiness on the level of "Extremely High", "High", "Above Average", "Average", "Below Average", "Low" and "Extremely Low".

RESULTS

Table 1: ***Showing Mean, SD and t-value of stress and happiness according to gender***

	Gender	N	Mean	SD	t-value	Sig. level
Level of stress	Male	68	11.02	6.03	-2.60	.010 (P<0.05)
	Female	92	13.70	6.72		
Happiness	Male	68	231.17	35.65	-.714	.476 (p>0.05)
	Female	92	235.26	35.86		

Table 1 shows the comparison of stress scores between male and female students. Female students have scored significantly high (female mean= 13.70, SD= 6.72; male mean= 11.02, SD= 6.03; t= -2.60) than their counterpart male students. Both genders were not found significantly different on happiness level. However, female scored higher (female mean= 235.26, SD=35.86; Male mean= 231.17, SD= 35.65; t= -.714) than male students.

Table 2: ***Showing predictive value of stress on happiness in college students***

Model	R	R square	Adjusted R square	F value	DF	Beta value	Standard Beta	T-value	Sig. level
1	.583	.340	.335	81.265	1	Constant 273.441	-.583	54.792	.000 (p<0.01)

Scanned with OKEN Scanner

						-3.176			

Table 2 shows the value of happiness as predicted by stress, which was estimated by using linear regression method, significant model emerged (Model 1: F= 81.265, $p<0.01$, R square= .340). When stress was entered in the equation, it accounts for 34% variance in predicting happiness (F= 81.265, $p<0.01$) which is significant. The obtained data value is -3.176 ($p<0.01$), it reveals that unit change in stress will result in .583 unit change in happiness in opposite direction.

DISCUSSION

The present study revealed that female college students reported higher stress than make college students. The findings are consistent with past studies and provide support for women college students report of greater stress. The finding is in line with the results of previous study where women reported a higher level of overall stress than college men (Ruby R. Broughman et al.). Results are contrary to the studies in which no gender difference was found on stress (Marie Dahlin et al., Ading C.E. et al., 2012). On the findings of happiness no gender differences were observed. A previous study supported the findings that happiness is not affected by gander (Anjali Devvart Singh & Dr. Harminder Kaur Gujral, 2019). Some studies resulted contrary to the present study that male students were found more happier than female students (Hassan Mehmoodi, 2019; Perez, 2012 & Akhter, 2015). The hypothesis stated that there is no significant gender difference in stress and happiness of college students, is rejected on the stress level not on the happiness level.

The main objective of the study was to investigate the impact of stress on happiness in college students. Findings state that participants who perceived higher levels of stress reported being less happy than those with lower level of stress. The result supported the study that there was inverse relationship between stress and happiness (Holly H. Schiffrin & S. Katherine Nelson, 2010). The finding is in line with the results of a previous study that academic stress had a negative relationship with self-efficacy and was a determinant for low happiness among college students (Hassan Mehmoodi et al., 2019). Another study also supported the results (King et al., 2014). Thus, the hypothesis stated that there is no relationship between stress and happiness, is rejected.

CONCLUSION

Considering the significant associations between stress and happiness among college students, the colleges are recommended to conduct stress workshop for freshman orientation. Parents should be included in these workshops because they are a primary and continuous source of social support for college students. Parental participation in the workshop is also supported by Jo Lohman and Jarvis (2002) and Lopez and Brennan (2000). These workshops will result in increase of adaptive coping skills that will help to lower physical problems, better psychological adjustments and increase in happiness and academic success for college students.

REFERENCES

- Ading, C.E., Seok, C.B., Hashmi, S.I., & Maakip, I. (2012). Religion and gender differences in stress, happiness and life satisfaction. Southest Asia Psychology Journal. Volume 1. 46-55.
- Dahlin, M., Joneborg, N., & Runeson, B. (2005). Stress and depression among medical students: a cross-sectional study. Blackwell Publishing Ltd Medical Education; 39; 594-604.

Scanned with OKEN Scanner

- Freire, C., Ferradas, M.D.M., Valle,A., Nunez, J.C. & Vallejo, G. (2016). Profiles of psychological well-being and coping strategies among university students. Original Research, Volume 7, Article 1554.
- Gupta, S. & Khokhar, C.P. (2018). Behavioral approach coping styles as a function of happiness and personality trait. Journal of Emerging technologies and innovative research (JETIR), Volume 5, Issue 8.
- Heng, T.T. (2018). Coping strategies of Chinese international undergraduates in response to challenges in U.S. colleges. Teachers college record, 120(2), 1-42.
- Ickes, M. J., Brown, J., Reeves, B. & Zephyr, P.M.D. (2015). Differences between undergraduate and graduate students in stress and coping strategies. California Journal of health promotion, Volume 13, Issue 1, 13-25.
- Latha K.S. (2006). Pattern of stress, coping styles and social supports among adolescents. Indian association of child adolescents mental health, 3(1): 5-10
- Mahmoodi, H., Nadrian, H., Javid, F., Ahmadi, G., Kasravi, R., Chavoshi, M. & Golmohammadi, F. (2019). Factors associated with happiness among college students: Do academic self-efficacy and stress predict happiness? Int. J. Happiness and Development, Vol.5, No.1.
- Majumdar, B. (2010). Stress and coping strategies among university students: A phenomenological study. Indian journal of social science researches, vol. 7, no. 2, pp. 100-111. ISSN 09749837.
- Martinez I.M. et al. (2019). Does gender affects coping strategies leading to well-being and improved academic performance. Revista De Psicodidactica, 24(2), 111-119.
- Persaud, N. & Persaud, I. (2015). The relationship between socio-demographics and stress levels, stressors, and coping mechanisms among undergraduate students at a university in Barbados. International Journal of higher education, Vol.5, No.1.
- Salavera, C., Usan, P., Peraz, S., Chato, A. & Vera, R. (2016). Differences in happiness and coping with stress in secondary education students. Procedia- Social and behavioral sciences, 237, 1310-1315.
- Schiffrin H.H. & Nelson, S.K. (2010). Stressed and Happy? Investigating the relationship between happiness and perceived stress. J Happiness stud, 11:33-39 DOI 10.1007/s 10902-008-9104-7.
- Singh, A.D. & Gujral, H.K. (2019). Happiness: Is it prevalent amongst students of higher education institution. International Journal of Psychosocial Rehabilitation, Vol 23, Issue 04, ISSN: 1475-7192.
- Yikealo, D., Tareke, W. & Karvinen, I. (2018). The level of stress among college students: A case in the college of Education, Eritrea Institute of Technology. Open Science Journal. 3(4).
- Zareipour, M.A., Amirzehni, J., Moharooni, F. & Abbasi, S. (2018). Evaluation of happiness and its relationship with academic achievement in Urmia Midwifery students. Mintage Journal of Pharmaceutical & Medical Sciences. Vol 7, Suppl 4. ISSN: 2320-3315.

Scanned with OKEN Scanner

© 2021 IJRAR March 2021, Volume 8, Issue 1 www.ijrar.org (E-ISSN 2348-1269, P- ISSN 2349-5138)

Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders

Indu

Research Scholar

JJTU, Rajasthan, India

Dr. Satish Kumar

Department of Pychology

Vaish College, Bhiwani, Haryana

Abstract:

Human Values and Ethics describe the idea of an individual or an affiliation or society running free. Specialists of characteristics and ethics get to know these models through self-began attempts, through the useful experience that is the best lab of learning, and through the informative associations, those they participate. In this way, the informative foundations themselves ought to be characteristics and ethics addressed. It is pointless to highlight that guidance is the principle pillar of a developed and honorable society. The entire development of society or nation depends upon the strength of this segment. In case this segment is strong, society would remain merciful and would prosper. If this section cultivates a couple of breaks, the overall population may go into sub-human stage. Therefore, there is a need to keep on underlining the meaning of human characteristics in informative foundations. Human characteristics and ethics disdain motor capacities, which once overwhelmed stay with until the cows come home. They are not capacities, they have a spot not even to the space of basic data, they honestly have a spot with the space of subtler plan and practice. The present paper is an honest attempt to attract the attention of the readers towards the **Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders.**

Kew-Words: observation, incongruities, life, artistic, expression, humorist, alive, discrepancy entertainment.

Introduction:

Aadi Shankar suggested that subtler pieces of human characteristics ought to be upheld and guaranteed with care, as a mother gets the gut. Characteristics and ethics have nature of camphor – they disperse if not saved carefully. Thusly there is a need to inspect and streamline the communication that helps with blending the lifestyle of human characteristics and ethics in informative associations. Data is power anyway practice and execution of human characteristics and ethics demand movement bearing, maintained with good for dynamic culture in associations.

The current game plan framework rehashes the need and association to set up extraordinary practices and environment supported with human characteristics and master ethics in associations of high-level training. In its underlying fragment, the record sufficiently clarifies the objections and expected consequences of setting up a value-based environment blamed for master ethics. In the resulting part, it plunges into the hypothetical

arrangement of human characteristics and master ethics. An educational establishment depends on the backbo of various accomplices. The third part clarifies the value based and moral demonstrations of various inside external accomplices. The fourth part, while suggesting the utilitarian guidelines, underlines on the execution checking of the significant tasks. Characteristics and ethics need nurturance and fortification. In this light, the piece of the record shows methods of developing the lifestyle of characteristics and ethics in the establishm Various foundations are asked to recognize their innovative practices to make such culture.

Objectives

The objectives of this technique framework to show human characteristics and master ethics in higher inform foundations are the going with:

(1) To re-establish the rich social legacy and human potential gains of which we are the overseers.

(3) To put down more broad principles of characteristics and ethics for inside and outside accomplices.

(4) To propose useful standards for regard based and moral practices in the higher educational found provoking execution and noticing.

(5) To show the consequences of making a value based and moral culture in SSE.

(6) To propose definite help programs for supporting human characteristics and ethics in SSE.

Research Methodology:

The original text-books will be used for the present research paper. For the collection of **secondary sour** large number of related reference books, research articles, research thesis, periodicals, journals, newspaper a and online web-based sources will be used.

Human Values:

Human civilization is known for the characteristics that it esteems and practices. Across various conditions blessed individuals and diviners, drawing on their experience, made practices that put crucial import human characteristics, but the names used by them differentiated, as their tongues moved at this point th was same. Human characteristics are valuing that individuals regard and hold in like way deliberate regardless in most of the spots and times and practice them. Human characteristics are the yield of the fiel human intuition.

Truth (Satya): Truth is ageless and ceaseless, as it oversees outrageous and consistent reality. In the T Upanishada, the teacher, while passing on the gathering message to the adherent, says, 'Satyam vada reality). It is separate by veracity, dependability and validity, perfection, accuracy and fairness, bold uprightness. It may have various angles as enthusiastic or relative truth that why people adhere to 'my e and 'your world' provoking battle once in a while.

Serenity (Ahimsa): Ahimsa suggests non-killing. Serenity is an outcome of impediment from purposefully doing any harm through one's insights, talk or movement to any component, living or nonliving. It requires being sensitive to the way that there is life in a wide range of essence and they are interconnected. Quietness demands restriction from scorn and supporting worship and sympathy for all animals.

Excellent nature (Dharma): Righteousness is the establishment of focus human characteristics and moreover of human existence. It incorporates direct of life and movement by practicing decency and respect at each stage. In clear language, it is separate by 'right lead'. It covers moral principles, moral lead and moral uprightness. Its encapsulation is peddled in the saying: Do incredible, see extraordinary, and be satisfactory. Indian culture pivots around the possibility of Dharma which implies 'dhaarayate yasya sa dharma' ('what justifies doing or keeping up with') in which action is coordinated by authenticity of time (kaal), place (desh) and position or status (kula).

Renunciation or Sacrifice (Tyaaga): Renunciation has two preconditions: care similarly as love for all living animals went to by nonattendance of immaturity. Renunciation begins when conceit closes. Renunciation isn't an escape from the issues of life. Additionally, renunciation without movement infers a parasitic life. Also, organization is considered, when renunciation with action begins. Renunciation in its most straightforward design is found in seriousness, sense control, and unselfishness.

Organization (Sevaa): When love and compassion toward others and status to relinquish for others out of worship show up as movement, it becomes organization. Organization is possible exactly when one loves others as one's own, not as other. The value of organization demands serenity without any conditions or detachment on the lines of rank, conviction, race, region or religion.

Professional Ethics:

Human characteristics and master ethics are interlaced. Characteristics are stressed over near and dear conviction with the middle conviction or need that guide or stir mindsets and exercises. Ethics has been portrayed as rules of lead that show how one should act reliant upon honest convictions and morals arising out of guidelines spot on and wrong. Capable ethics is stressed over the thought and arrangement of moral unchangeable as applied to a specialist affiliation, execution procedures and practices. Anyway, preparing in its most certifiable sense is positively not a specialist, for common sense explanation here we would address it to be a calling so an institutional design of ethics in high level training may be propounded.

Human characteristics, capable ethics, and authentic framework are three basic constituents those direct the helpful human practices and dynamic guidelines in an affiliation. In the occasion that authentic framework alone could organize human practices and dynamic association, there would have been no prerequisite for characteristics and ethics to exist in progressive reference. Being real is least need, regardless, it isn't sufficient. Law is base and plinth of various levelled practices yet we need to build a plan over it. Not becoming unlawful on account of a neurotic dread of discipline is the coarse level of human existence. It is reliably alluring over notice laws in soul and not just in words. Over the universe of authenticity, there is the open sky of ethics and

characteristics where human undertakings are done to make the world more prosperous, stacked with wor value, and blamed for both of elegant sense and delight.

Results and Discussions:

In the discussion on ethics, it may be relevant to look at how misleading practices take after. One review in of Indian affiliations, some shifty practices saw by Human Resource Managers are: utilizing, getting re progressing on inclination; allowing contrasts in pay in view of connections; improper conduct; sex part headway; using discipline conflictingly; not staying aware of protection; sex division in pay; non-ex factors used in assessments; plans with traders inciting individual increments, and; sex isolation on enl and selecting. A couple of rules reliant upon considers in Indian affiliations suggest that: association oug clear; decision ought to be taken transparently interest; supervisors should leave behind their p neighbourhood, language in their own homes; corruption ought to be rebuked; uncalled for benefits shoul given to specialists; individuals at all levels ought to be encouraged to think and to offer their d energetically, and; entire association ought to be equipped to deal with without any other person or various affiliations the risk - destitution. Various assessments in Indian setting recommend that affiliat stimulate moral lead by: bestowing presumptions that delegates will act ethically and portray what that s enrolling at the top who set real models; repaying moral practices and rebuking shifty works on; s specialist crucial gadgets of moral dynamic, and; engaging discussion of moral issues.

Outcomes:

The as an issue of first significance aftereffect of this endeavor is to make foundations with the characteristics and ethics. All of the genuine establishment, mental structure, data system and financial ought to be glimmering with qualities and moral practices. It is crucial to have the colossal things at put have the most diminutive things at the spot. To set up such an environment, following five systems ou made:

(1) The learning measure for far reaching new development

(2) Impeccable organization

(3) Effective institutional organization

(4) Well laid game plan of compensations and censure

(5) Institutional climate where 'opportunities' appreciate and 'wrongs' are weaken.

Education is not limited to the imparting of information or training of skills. It has to give the educated sense of values

Summing Up:

To sum up; the research scholar comes to the point that the ethical decision depends on how one searches oneself, periods of moral new development and various leveled environment. Blanchard and Peal recommend that ethical direct is related to certainty. People, who have a nice point of view toward themselves, have the stuff to withstand outside pressure and to settle on the shrewdest choice instead of do what is just impetus, notable, or beneficial. Nevertheless, for moral practices, just individual(s) can't be considered trustworthy. Beside moral development and certainty, definitive environment is a third factor adding to moral stand or practices or decisions. That is the clarification there is a need to build up an ethical environment in an affiliation. In case legitimate environment progresses moral practices, individuals accept more upright decisions just as the reverse way around. Researches show that every one of the more disastrously communicated moral statements offer less towards moral practices in affiliations and obviously communicated concretized moral verbalizations offer more to moral practices in affiliations.In the present paper; the research scholar tries to explain about the importance of **Importance of Values and Ethics for students and Stakeholders because Values and Ethics are priceless words and virtues.**

References:

Primary Sources:

- ✓ Aikenhead, G. S. (2005). Research into STS science education. Educacion Quimica, 16, 384-397.
- ✓ Alavi, H. R. (2007). Al-Ghazāli on moral education. Journal of Moral Education, 36(3), 309-319. doi: 10.1080/03057240701552810
- ✓ Allchin, D. (1998). Values in sciences and science education. In B. Fraser & K. Tobin (Eds.), International handbook of science education. Dordrecht, The Netherlands: Kluwer.
- ✓ Allchin, D. (1999). Values in science: An educational perspective. Science & Education, 8(1), 1-12. doi: 10.1023/A:1008600230536
- ✓ Althof, W., & Berkowitz, M. W. (2006). Moral education and character education: Their relationship and roles in citizenship education. Journal of Moral Education, 35(4), 495-518. doi: 10.1080/03057240601012204

SECONDARY SOURCES:

- ✓ Anderson, D. R. (2000). Character education: Who is responsible? Journal of Instructional Psycho 27, 139. Arthur, J., & Carr, D. (2013). Character in learning for life: A virtue-ethical rationale for r research on moral and values education. Journal of Beliefs & Values, 34(1), 26-35. 10.1080/13617672.2013.759343
- ✓ Batterham, R. (2000). The chance to change: Final report. Department of Industry, Science and Reso Commonwealth of Australia. Retrieved from http://ict-industry-reports.com content/uploads/sites/4/2013/10/2000-Chance-to-Change-Robin-Batterham-Final-Report- PMSEIC
- ✓ Bell, R. L., & Lederman, N. G. (2003). Understandings of the nature of science and decision maki science and technology-based issues. Science Education, 87(3), 352-377. doe: 10.1002/sce.10063
- ✓ Berkowitz, M. W. (1999). Obstacles to teacher training in character education. Action in Te Education, 20(4), 1-10. doe: 10.1080/01626620.1999.10462930 Bullough, R. V., Jr. (2011). Ethic moral matters in teaching and teacher education. Teaching and Teacher Education, 27(1), 21-28. http://dx.doi.org/10.1016/j.tate.2010.09.007
- ✓ Campbell, E. (2003). The ethical teacher. Maidenhead, UK: Open University Press/McGraw- Campbell, E. (2008). Teaching ethically as a moral condition of professionalism. In D. Narvaez Nucci (Eds.), The international handbook of moral and character education (pp. 601-617). New York Routledge.
- ✓ Car, D. (2014). Metaphysics and methods in moral enquiry and education: Some old philosophical for new theoretical bottles. Journal of Moral Education, 43(4), 500-515. 10.1080/03057240.2014.943167
- ✓ Chowdhury, M. A. (2013). Incorporating a soap industry case study to motivate and engage stude the chemistry of daily life. Journal of Chemical Education, 90(7), 866-872. doe: 10.1021/ed300072
- ✓ Chowdhury, M. A. (2014). The necessity to incorporate TQM and QA study into the undergra chemistry/science/engineering curriculum. The TQM Journal, 26(1), 2-13. doe: 10.1108/TQM-06- 0043
- ✓ Chewning, J. T. (2005). How to have a successful science and ethics discussion. The Science Te 72(9), 46-50.

Acknowledgements

We consider it is my moral duty to pay honour, regards and thanks to the authors, Learned Researchers, R Scholars, librarians and publishers of all the books, Research papers and all other sources which I have co during the preparation of the present paper.

PAPER 49
International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 07, July 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

Application of Biological Mathematics in Medical Science

Sanjay Goyal
S/o Sh. TrilokChand Goyal
Associate Professor in Mathematics
Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

Mathematics plays a role in many disciplines of science, primarily as a mathematical modelling tool. In this paper, we study the role played by mathematics in medical science and analysis that the real-life application of calculus, especially in the medical field. This is important because calculus can be used to solve and analyse real-life problems, but also to make medical procedures more efficient and beneficial to the public.
Applications of mathematics in medical science using calculus can be used not only in drug sensitivity. Also, the Right dosage of medicines produces the desired effect but to minimizes the negative side effects.

KEYWORDS

Mathematics, Biological, Calculus, Mathematical models, Bio-mathematics, mathematically modeling.

INTRODUCTION

Mathematics for biosciences helps us to understand many biological and medical phenomena from those topics such as population growth, biology oscillations, pattern formation, and the spread of disease, human physiology, systems and organs, the development of tumour's, etc. It also produces new mathematical questions.
The use of mathematics in biology for the raw data mass is in tracking change over time. Bio-statistics uses statistical analyses to form biological phenomena such as drawing balancing or connections between biological-Variables.One of the applications of mathematics in biomedical is the use of probability and statistics, invalidating the effectiveness of drugs. Along with this mathematical field in medicine is to evaluate the survival rate of cancer patients under the treatments.

THE ROLE OF MATHEMATICS IN BIOLOGY FIELDS.

Mathematical in biological or bio-mathematics is a fast-growing and the most modern application of mathematics. Mathematics is a need in the medical profession.The aim of the new discipline has mathematics to represent modelling of biological problems to use a variety of mathematical thesis and methods. The pharmaceutical mathematics curriculum includes measurements and calculations required to impose and allot medication.
This new discipline has applications in biological, biomedical, and biotechnology. Mathematical biology has both theatrical and practical applications in research on bio, biomedical and biotechnology fields.

Biological scientists need mathematical models

Mathematical and computational models are increasingly used to help clarify bio-medical data produced by high-throughput genome and proteome projects.
Mathematical models are tools that we can use to describe the past accomplished and forecast the future performance of biotechnological processes. Bio -mathematical models can affect the tools in both fundamental research and applied research fields and development.

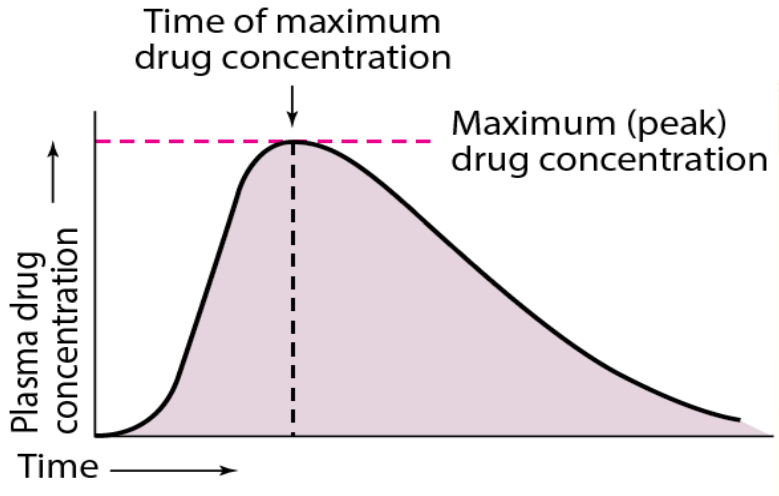

In this graph x-axis showing a change in time.

And the y-axis showing plasma drug concentration.

The *graph* above representing a solution to the differential equation.

Article and analysis of *how calculus* impacts the *medical research field.*

METHODOLOGY

Calculus is a branch of mathematics that is applied to real-life problems. Calculus is a mathematical study of continuous change, and it can be broken down into two types:

Differential and Integral calculus. calculus can be used in fields such as engineering, economics, and medicines.

The purpose of this presentation is to explain the real-life application of calculus, especially in the medical field. Calculus has many vital applications in medicine when considering drug dosages, blood flow, and tumour growth. This is important because calculus can be used not to solve and analyse real-life problems, but also to make medical procedures more efficient and beneficial to the public.

Calculus is often used in medicine to determine the right dosage of a drug to be administered to a patient. This is very important when taking into consideration drug sensitivity, rate of dissolution, and blood pressure.

Calculus can be applied to drug sensitivity

The concept of derivatives can be applied to determine the patient's sensitivity to a specific drug, to prevent too much of that drug from being administered. for example, if a drug's potency is given by P(t) where t is a dosage, the derivative P'(t) given the sensitivity of the body with respect to t. P'(t) gives the sensitivity of the body with respect to t. P'(t) also represents the change in P as a result of the change in the dosage of the drug.

Another topic covered in calculus that can be applied to medicines is optimization. Doctors have to prescribe the right dosage of medicines to not only produce the desired effect but also to minimize negative side effects. In order to do this, optimization is used to determine the correct dosage to produce the best result in each patient.

Exponential Growth/Decay

This calculus topic can be used in the medical field to analyze the growth of bacteria in a patient, so that doctors may combat the bacteria with antibiotics.
A patient has been exposed to bacteria in her workplace. Her lab results showed 350 bacteria in her bloodstream at time t=2 hours and 780 bacteria at time t=4 hours. Find the rate at which the bacteria multiplied. How many bacteria were present initially? Set up an equation that shows the exponential growth of this bacteria and use it to find how many bacteria were present at time t=24 hours.

Exponential Growth Formula: $y = Ce^{kt}$
C = Initial Value
K = Rate of growth/decay
T = Time

Rate of Exponential Growth

$350 = Ce^{2k}$ $780 = Ce^{4k}$
$C = 350/e^{2k}$, $C = 780/e^{4k}$
$350e^{4k} = 780e^{2k}$
$E^{4k} = 2.229e^{2k.}$
$Ine^{4k} = In2.229e^{2k}$
$4k = In2.229 + 2k$
$2k = In2.229$
$K = 0.4008.$
The rate of exponential growth is 0.4008 bacteria per hour.

Bacteria present initially

$C = 350/ e^{2(0.4008)}$

$C = 157.021$

There were 157.021 bacteria present initially.

Exponential growth equation

$Y = 157.021e^{0.4008t}$ ------ Equation of exponential growth

$Y = 157.021e^{0.4008\ (24)}$

Y = 2,363,323.749 --------There is 2,363,323.749 bacteria present at time t =24 hours.

CONCLUSION

- Calculus has many real-world applications in a variety of fields.
- Calculus also holds significant importance in the medical field, especially when analysing problems.
- The use of calculus is to solve a problem and make medical procedures more efficient.

This research project work impacted my perception of how calculus is important to the medical field. Before my research,
I thought calculus was only crucial for a job in engineering and architecture.
To my surprise, calculus involved almost every aspect of medicine. It realized me grateful that school push for students to take calculus when they plan on working in the medical field instead of just allowing them to take the basics and not have a deeper understanding of the field they plan.

REFERENCES

1). MURRAY. J.D. (2002) Mathematical Biology-I An Introduction, Interdisciplinary Applied Studies, Vol.17, Springer.
2). Karp R. Mathematical challengesfrom genomics and molecular Biology .Notices of the AMS 2002;94(5):544-553

3). HANNA KOKKO (2007) Modelling for Field Biologists and Other Interesting People, Cambridge University Press.
4). AVNER FRIEDMAN (2010) What is mathematical biology and how useful is it? Notices of the AMS, pp. 851-857.
5). Hood L, Heath JR, Phelps EW, Lin B. Systems biology and new technologies enable predictive and preventive medicine. Science 2004;306:640-64

6). R. Gonzalez, R. Woods Digital image processing Prentice Hall, New Jersey (2002)
7). . Cherniack NS. Mathematics and medicine: Does it all add up? *Al Ameen J Med Sci.* 2009;2:2–3.

8). Clairambault J. Commitment of mathematicians in medicine: A personal experience, and generalisations. ActaBiotheoretica.

International Research Journal of Management and Commerce
ISSN: (2348-9766)
Impact Factor 5.564 Volume 8, Issue 8, August 2021
©Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

GENERALIZED DERIVATIONS IN PRIME RINGS

Sanjay Goyal
S/o Sh. Trilok Chand Goyal
Associate Professor in Mathematics
Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

To study the derivations which satisfy certain differential identities on the general derivation of the prime ring. If a derivation exists as d: R→R where F (a, b) = F(a) b + a d(b)holds for all a, b ∈ R. Here in this paper, we have proved that V ⊆ Z (R) or d = 0, for all x ∈ I. Then, d(x) = λ [x, a], for all a ∈ Z. or x ∈ I.

KEYWORDS:

Generalized derivative, Abelian group, Prime ring, Derivation, commutative

INTRODUCTION

An algebraic structure of a rings are generalize field even multiplicative inverse and commutative need not exist. A ring is associated with two binary operations which satisfies the properties of addition and multiplication of an integers.
An element of a rings can be complex or integer numbers or non-numerical objects such as polynomials, functions, power series and square matrices.

R is a commutative ring with unity a belongs to R is called prime ring if,

- a is not equal to zero.
- a non-unit
- If a / bc in R then, a/b in R, a/c in R.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

This property is called prime property

Prime ring is a derivation, then one of them is zero,

If d is a derivation of a. prime ring

i.e, for all elements of the ring

x y (x) – d(x)x is Central,

Then either d = (0) or the ring is commutative.

By definition we know that A ring R is called prime if and only if (xay) = 0,

Implies that x = 0 or y = 0.

Thus, R will be a ring with Centre Z.

Now Let x and y belong to R.

The commentator x y or y x will be denoted by [x, y].

Therefore, a ring is prime, if x (R) y = 0

implies x = 0 or y = 0.

Now, an additive mapping ∂: R → R is called a derivation.

If ∂ (a, b) = ∂(a) y + a ∂(b) for all a, b ∈ R.

The study of commutability of prime rings with derivation.

The current analysis states that there has been an ongoing interest concerning the relationship between the commutative ring and the existence of certain special types of derivations of R.

Bresar, defined the following symbol.

By derivation of a ring, there exists d: R→R

i.e, F (x, y) = F(x)y + x d(y) for all x, y ∈ R.

Here in this paper,

R will be a prime ring with Martindale ring of quotients as Qr(R),

which extended centroid C and central closure RC = RC,

Prime ring generalized that the ring derivation can be uniquely extended to a generalized ring derivation of Qr(R).

Albas, E. and Argac, N. showed that R is a non-commutative ring and a generalized ring derivation

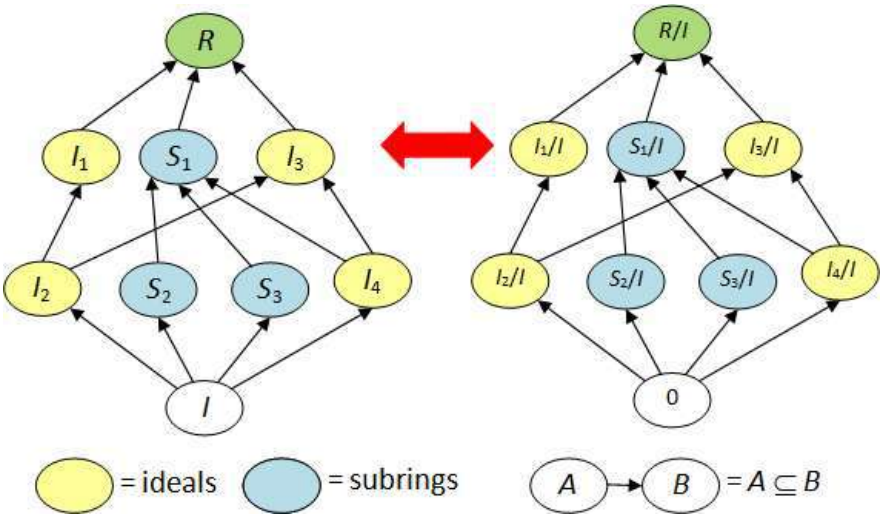

Correspondence for the lattices of ideals and subrings between those of *R* which contain I, and those of *R*/*I*.

In general, an idea can be contained in a subring, the ideal is the whole ring *R*

recollected that R is prime ring if a R b = 0

This implies, a = 0 or b = 0.

By an additive map of ring d: R→R is called a derivation

if d(x, y) = d(x)y + x d(y) for all x, y ∈R.

By Generalized derivation additive function of F: R→R.

If there exists a derivation d: R→R

Which holds F(x, y) = F(x)y + x d(y) for all x, y ∈R.

By analysis, we have the study of generalized derivation in the context of algebras on certain normed spaces.

As U is an additive subgroup of R then U is called an ideal of R

for all u an element of U and r element of R of the ring R.

Methodology

To prove theorems following known results which will be used considerably.

Theorem 2.1.1. If V is a Lie ideal of R such that V2 ∈V for all v ∈ V,

then 2 v u ∈ V for all v and u ∈V.

Proof. For all w, u and v ∈ V,

we have u v + v u = [(u + v) 2− v2 − u2]∈V

On the other hand,

foru v – v u ∈ V.

On adding both expressions,

we have 2 u v ∈ U for all u and v ∈ V

Theorem 2.1.2. If suppose V Z(R) is a Lie ideal of R,

then C R (V) = Z(R)

where R is whole ring.

Theorem 2.1.3. If suppose V is a Lie ideal of R,

then C R ([v, v]) = C R (V).

Theorem 2.1.4. If U ⊆ Z(R), then V Z(R) for Set U = {v ∈ V | d(v) ∈ V}.

Proof. Assume that for V ⊆ Z(R) and R is a ring

Because [v, v] ⊆ V and d([v, v]) ⊆ V,

Thus we have [v, v] ⊆ U ⊆ Z(R).

Hence C R ([v, v]) = R. by theorem 2.1.2 C R (V) = Z(R). where R is whole ring

But (V) belongs to the whole ring R. by theorem 2.1.3, C R ([v, v]) = C R (V).

That is, R = Z(R) is a contradiction.

Theorem 2.1.5. If V Z(R) is a Lie ideal of R also, if x U y = 0, then x = 0 or y = 0.

Theorem 2.1.6. A group G of ring R cannot be a union of two of its proper subgroups of a

group G. If V ⊆Z(R), So U ⊆Z(R) of group G.

Proof: By theorem 2.1.4. for all x and y ∈ V we have d(x) * F(y) = 0.

By theorem 2.1.1 on Changing 2yz and by taking R=2,

we obtained d(x) ◦ F(y z) = 0 for all x, y and z∈ V

$[d(a) \circ b]d(z) - b\,[d(a),d(z)] + [d(a) \circ F(b)]\, z - F(y)\,[d(a), z] = 0$

By definition of field of ring R it shows that

$[d(a) \circ b]\, d(z) - b\,[d(a), d(z)] - F(b)\,[d(a), z] = 0.$

Now by replacing z by d(a)

$[d(a) \circ b]\, d^2(a) - b\, d(a), d^2(a) = 0$ for a $\in V$

Next, Replacing y by 2zy

$[d(x) \circ (z\, y)]\, d^2(x) - z\, y\,[d(x), d^2(x)] = 0$ for all x, y and z $\in$ V

This implies that

$z\, d(x) \circ y\, d^2(x)\, d(x), z\, y\, d^2(x) - z\, y\, d(x), d^2(x) = 0$

Now on solving the above equations,

we obtained

$[d(x), z]\, y\, d^2(x) = 0$ for x $\in$ U and y$\in$ V and z $\in$ V

Here in this case,

$[d(x), x]\, y\, d^2\,(x) = 0,$

Therefore,

either $[d(x), x] = 0$ or $d^2(x) = 0$ of ring R

Now let us suppose $V_1 = \{x \in V\ [d(x), x] = 0\}$

And $V_2 = \{x \in U\ d^2(x) = 0\}$.

Therefore,

Additive subgroups of U are $U_1$and U_2

Also, $U_1 \cup U_2 = U$.

Thus, either $U = U_1$ or $U = U_2$of group G by theorem 2.16.

Now by taking $U = U_1$, then by Theorem 2.1.6 we have $V \subseteq Z(R)$

On the other hand, if we take $U = U_2$ of a prime ring R

The following known results will be used considerably to prove theorems.

*Theorem 2.1.7.*Let us suppose V be a Lie ideal of R in such a way that V2 ∈V for all v an element of V,

then 2 v u ∈ V for all v and u an element of V.

*Proof.*As we have u v + v u = (u + v) 2 − v2−u2 ∈V for all w, u and v ∈V

On the other hand, u v − v u ∈V.

Now on adding both expressions, we have 2 u v ∈ U for all u and v ∈ V,

Thus, by theorem 2.1.2. Now let us supposeV Z (R) be a Lie ideal of R,

then we get C R (V) = Z (R)

where R is the whole ring.

Now again, by theorem 2.1.3. as V is a Lie ideal of R,

then CR([V, V])=CR(V) and by theorem 2.1.4. Set U = {v ∈ V |d(v)∈v} if U Z(R), then V⊆ Z(R).

By commutativity sigma prime ring R.

A generalized derivation F satisfies

Either d(x) *F(y) = 0 or [d(x), F(y)] = 0 or d(x) *F(y) x *y = 0 or [d(x) ◦ F(y)][x, y] = 0 or (d(x) *F(y))[x,y] = 0 and

[d(x) *F(y)] x *y = 0

For all x, y in an appropriate subset of R,

where R is a 2-torsion prime ring, U a non-zero sigma lie ideal.

REERENCES

[1] B. Hvala, "Generalized derivations in rings," Communications inAlgebra, vol. 26, no. 4, pp. 1147– 1166,1998.

[2] M. Ashraf, A. Ali, and R. Rani, "On generalized derivations of prime rings," Southeast Asian Bulletin of Mathematics, vol. 29, no. 4, pp. 669–675,2005.

[3] Herstein, I. N. Rings with Involution, Chicago Lectures in Mathematics,The University of Chicago Press, Chicago, Ill.-London,1976

[4] J. Bergen, I. N. Herstein, and J. W. Kerr, "Lie ideals and derivationsof prime rings," Journal of Algebra, vol. 71, no. 1, pp. 259–267,1981.

[5] P. H. Lee and T. K. Lee, "Lie ideals of prime rings with derivations," Bulletin of the Institute of Mathematics. Academia Sinica, vol. 11, no. 1,pp. 75–80,1983.

[6] I. N. Herstein, "On the Lie structure of an associative ring," Journal of Algebra, vol. 14, no. 4, pp. 561–571,1970.

[7] Albas, E. and Arga¸c, N., Generalized Derivations of Prime Rings,Algebra Colloquium, 11:3, (2004),399-410.

[8] Bresar, M., On the distance of the composition of two derivations to the generalized derivations, Glasgow Math. J., 33, (1991), 89-93. Generalized Derivations of Prime Rings23

[9] Havala, B., Generalized derivation in prime rings, Comm. Algebra, 26 (4), (1998),1147-1166..

[10] Passman, D., Infinite Crossed Products, Academic Press, SanDiego,1989.

[11] Posner, E. C. Derivations in prime rings, Proc Amer. Math. Soc., 8, (1997), 1093-1100.

PAPER 51

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

EFFECT OF DERIVATIONS ON ANALYTIC FUNCTIONS

Sanjay Goyal
S/o Sh. Trilok Chand Goyal
Associate Professor in Mathematics
Vaish College, Bhiwani

ABSTRACT

To study derivations satisfying certain analytic function of region R of domain D. By Cauchy's Integral and Riemann Equations of an analytic in the region R at any point z=a. Taylor's Series expansion of an analytic function determine.

KEYWORD

Analytic function, Taylor Series expansion, Region R, Cauchy's.

INTRODUCTION

In the complex plane, let boundary behaviour of functions be as $(1-z^2)f^{(n)}(z)$ Where f is an analytic function defined on the open unit disk and $n > 0$ .By taking an example let $(1-z^2)f'(z)$

be bounded on D for Block Space B, set of analytic function f on D.

Also, $(1-z^2)f'(z) \to 0$ as for Block Space B0. $z \to 1$ be the set of analytic function f on D

Let Lebesgue area denoted by dA measure on the complex plane.

By the Bergman Space p

$$\int_D f^p \, dA < \infty \qquad \text{for } p \in [1, \infty),$$

Where p_a is the set of analytic function f on D.

Next, if $f \in L^1$ then

$$f(z) = \frac{1}{\pi} \int_D \frac{f(w)}{(1-zw)} dA(w), \qquad \text{for every } z \in D$$

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

Let us define an analytic function $P(f)$ on D then,

$$P(f)(z) = \frac{1}{\pi}\int_D \frac{f(w)}{(1-zw)} dA(w) \quad for \quad f \in L^1(D, dA)$$

Let us suppose P restricted to $L^2(D, dA)$ then,

Again, $L^2(D, dA)$ is the orthogonal project of $L^2(D, dA)$ onto L^2.

Let us suppose P restricted to $L^p(D, dA)$ then,

$L^p(D, dA)$ is a bounded projection of $L^p(D, dA)$ onto L^p.

By the, Analytic Function following lemma exist:

Lemma 1: Let us suppose f be an analytic function on D then by an analytic function as an area integral of its equivalents are as follow:

$(a)\ f \in B$

$(b) \sup\{(1-z^2)^n f^{(n)}(z) : z \in D\} < \infty, \quad for\ every\ \forall\ n > 0;$

$(c) \sup\{(1-z^2)^n f^{(n)}(z) : z \in D\} < \infty, \quad for\ some\ \forall\ n > 0;$

Lemma 2: Let us suppose $f \in B$ such that, f has a zero of order at least 2n at 0 then

$$f(z) = \frac{1}{n!\pi}\int \frac{(1-w^2)^n f^{(n)}(w)}{(1-zw)^2 (w)^n} dA(w), \quad \forall\ n > 0\ z \in D$$

Lemma 3: Let us suppose $h \in u$ and $t > 0$ then $\exists$ $b > 0\ st$

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

$h(b_z(\lambda)) - h(b_z(\lambda')) < \in \quad \forall\, z \in D$ $L^{\infty}(D, dA)$ generated

For the need of

$\lambda, \lambda' \in D$ and $d(\lambda, \lambda') < \delta$ Where u is the closed subalgebra

by the Complex Conjugate $H^{\infty}(D)$.

Lemma 4: Let us suppose f be an analytic function on D. then its equivalents are:

$(a)\ f \in P(u)$

$(b)(1 - z^2)^n \quad f^{(n)}(z) \in u, \quad$ *for* every $\forall\ n > 0$;

$(c)(1 - z^2)^n \quad f^{(n)}(z) \in u, \quad$ *for some* $\forall\ n > 0$;

Proposition (1) $p(u)$ is properly contained in the Block Shape B.

Proposition (2) Let u∈ C(D then u is bounded on D .

Lemma 5: Let u be a bounded, continuous, complex-valued function on D in such a way that

$$\sup \left\{ (1 - z^2 \quad \limsup_{w \to z} \frac{u(w) - u(z)}{z}\, w - \ : z \in D \right\} < \infty$$

for u∈ C(D

Cauchy's Integral Theorem:

Let $f(z)$ is an analytic function on D by supposing D as a bounded domain with piecewise smooth boundary, then

$$\int_D f(z)dz = 0$$

Cauchy's Integral Formula:

Let $f(z)$ is an analytic function on D over C at a is then,

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

$$f(a) = \frac{1}{2\pi i}\int_C \frac{f(z)}{z-a}dz$$

Cauchy's Riemann Equations:

Let $f(z)$ is an analytic function on D over C at a over a complex plane satisfies Cauchy's Riemann Equations throughout D.

$$\frac{\partial u}{\partial x} = \frac{\partial v}{\partial y} \quad \text{and} \quad \frac{\partial u}{\partial y} = -\frac{\partial v}{\partial x}$$

To check weather f has a complex derivative and to compute that derivative. Cauchy's Riemann Equations uses the partial derivatives of u and v.

Taylor series :

The Taylor Series of a function is an infinite sum of terms

also known as Maclaurin Series if zero is the point of derivative that are expressed in terms of the function's derivatives at a single point.

A real or complex-valued function $f(x)$ of Taylor Series for complex or real number a is the power series of n! is

$$f(a) + \frac{f'(a)}{1!}(x-a) + \frac{f''(a)}{2!}(x-a)^2 + \frac{f'''(a)}{3!}(x-a)^3 + \ldots\ldots\ldots$$

Then it can be written as $\sum_{n=0} \frac{f^{(n)}(a)}{n!}(x-a)^n$

where derivative of f is $f^{(n)}(a)$.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

METHODOLOGY

If a function is having complex derivative $f'(z)$ then a function

$f(z)$ is analytic. Real derivative of a Real function is too much similar as Complex derivative of Complex function.

$$f'(z_0) = \lim_{z \to z_0} \frac{f(z) - f(z_0)}{z - z_0}$$

$\therefore \quad \exists \quad f$ *is analytic and differentiable at* z_0

By Cauchy's Integral Formula

Let $f(z)$ is an analytic in region R then its derivation at any point z = a is also analytic in R

$$F'(a) = \frac{1}{2\pi i}\int \frac{f(z)}{(z-a)^2} dz \qquad (1)$$

By Analytic functions and the necessary Cauchy's Riemann.

A function of z defined a single valued function of z i.e. $w = f(z)$ is same domain D, then the function is differentiable at $z = z_0$

if $\lim_{z \to z_0} f(z) - f(z_0)$ (2)

By using equation (1) and (2) in Taylor Series expansion of an analytic function.

$$\Rightarrow f(z) = \frac{1}{2\pi i}\int_c \frac{f(z')}{z' - z} dz'$$

$$\Rightarrow \frac{1}{2\pi i}\int_c \frac{f(z')}{(z' - z_0) - (z - z_0)} dz'$$

Thus,

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

f is analytic in R

$\Rightarrow \frac{1}{2\pi i} \int_c \frac{f(z')}{(z'-z)} dz'$ $- (z - z_0)$

$0 \quad 1 \quad (z' - z_0)$

where $(z' - z_0) > (z - z_0)$

By an analytic function Cauchy's Riemann, $f(z)$ is a complex

By the theorem of complex line integral if analytic function then,

$$\int_c f'(z)dz = f(z_1) - f(z_0)$$

The Cauchy-Riemann equations

$$f(z) = \sum_{n=0}^{\infty} a_n (z - z_0)$$

Taylor's Series expansion $f(z)$ about z_0

Derivative of all order exist if $f(z)$ is analytic function.

Thus $\lim_{n\to\infty} \frac{h^n}{n!} f^n(x) = 0$

A Taylor-series expansion is available for functions which are analytic within a restricted domain.

CONCLUTION

In analytic function $f(z)$ of bounded domain D over a complex plane. $\frac{du}{dx} \cdot \frac{du}{dy} = \frac{dv}{dy} \cdot \frac{dv}{dx}$ over C at a point a i.e ($z - a)dz$ then real and complex valued function $f(x)$ is a power series of (n!). Series expansion $f(z)$ about z_0 of analytic series of expansion by Taylor-series are Shower.

International Research Journal of Natural and Applied Sciences
ISSN: (2349-4077)
Impact Factor 5.46 Volume 8, Issue 8, August 2021
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

REFERENCES

1. J. M. Anderson, J. Clunie, and Ch. Pommerenke, On Bloch functions and normal functions, J. Reine Angew. Math. 270 (1974), 12—37.
2. S. Axler, Bergman spaces and their- operators, Surveys of some recent results in operator theory, v. l (J. B. Conway and B. B. Morrell, eds.), Pitman Res. Notes Math. Ser., 171, pp. l —50, Longman Sci. Tech., Harlow, 1988.
3. S. Axler and P. Gorkin, Sequences in the maximal ideal space of H^∞ Proc. Amer. Math. Soc. 108 (1990), 731—740.
4. L. Brown and P. M. Gauthier, Behavior of normal meromorphic function on ∞, the maximal ideal space Of H Michigan Math. J. 18 (1971), 365—371.
5. E. F. Collingwood and A. J. Lohwater, The theory of cluster sets, Cambridge Univ. Press, Cambridge, 1966.
6. P. L. Duren, Theory of H^p spaces, Academic Press, New York, 1970.
7. J. B. Garnett, Bounded analytic functions, Academic Press, New York, 1981.
8. K. Hoffman, Bounded analytic functions and Gleason parts, Ann. of Math. (2) 86 (1967), 74—111.
9. P. Lappan, Some results on harmonic normal functions, Math. Z. 90 (1965),155—159.
10. G. McDonald and C. Sundberg, Toeplitz operators on the disc, Indiana Univ. Math. J. 28 (1979), 595—611.
11. K. Zhu, The Bergman spaces, the Bloch space, and Gleason's problem, Trans. Amer. Math. Soc. 309 (1988), 253—268.
12. Krantz, Steven; Parks, Harold R. (2002). A Primer of Real Analytic Functions (2nd ed.). Birkhäuser.
13. A holomorphic function with given almost all boundary values on a domain with homomorphic support function. J. Convex Anal. 14(4), 693–704 (2007).
14. Homogeneous polynomials on strictly convex domains. Proc. Am.

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

Math.

Soc. 135, 3895–3903(2007).

15. Bounded holomorphic functions with given maximal modulus on all circles.

Proc. Am. Math. Soc. 137, 179–187 (2009).

IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

TO STUDY OF THE PATHOLOGICAL OR THE SICK FAMILY MODEL

PAPER 52

INDU AND DR. ANITA KUMAR, DR. HARIKESH
RESEARCH SCHOLAR AND RESEARCH GUIDE, CO-GUIDE
SHRI JJT UNIVERSITY

Abstract-When dealing with the impact of a special needs kid on various family members, one of the difficulties is figuring out what issues come as a result of having a special needs child and what conflicts develop as a result of the employment, marriage, economics, and other factors. A fundamental assumption of the Pathological Model of the family is that any problem or difficulty in the family's structure is caused by the presence of a disabled kid in the family. The pathological perspective may be traced back to at least the seventeenth century. Back then, there was a widespread notion among the general public that moral depravity and corrupt parenting were the root causes of reproductive incompetency. As a result of this conception of impairment, there was a societal stigma attached to it. As Joanna Ryan points out in her historical account of mental disability, this concept persisted into the twentieth century and is still articulated by parents today in the form of shame and mortification.

Keywords- FAMILY, Difficulties

Introduction:-The National Health Services (NHS) were established in 1949, and the field of disability was brought under their jurisdiction. Disability was considered as a medical condition that required the support of medically based therapies for persons who were physically or mentally challenged it was once believed that a family with a disabled kid was automatically classified as a 'handicapped household.' The presence of a handicapped kid was regarded as an anomaly, and his or her life was expected to have a detrimental impact on the family. They were occasionally institutionalised in order to prevent them from causing stress and problems for their siblings or for their families. It was sometimes necessary to organise psychotherapeutic meetings in order to assist the immediate families dealing with the myriad of challenges that come with having a differently-abled kid in the home. With this approach, it is possible to analyse the negative consequences of having a kid with special needs in the household. When it comes to matters of mental and physical health, studies have revealed that the general public is feeling more tension and fear than ever before.

Families under Stress:-In the first place, the researches were carried out on 'group populations' and took place at a ‘single point in time. Afterwards, 'the idea of stress in the earlier experiments was frequently misunderstood,' says the author. Stress was measured in these researches by the degrees of depression and stress experienced by the participants' family members. These investigations were conducted on mothers as the subjects. They anticipated that family members would be subjected to some form of mental mutilation. Mothers of impaired children, according to research, "had substantial levels of stress and had 'critically high levels of despair' following the birth to a disabled child." "A research did not discover a bigger difference in depression ratings between mothers of children with Down's syndrome and moms of non-disabled children in the first two years following the children's birth, in contrast to the findings stated above." It has been the goal of researchers to investigate the relationship between the presences of many elements, such as "socio- economic" factors, "family size," "mother's age," and other similar considerations, and the effects of these factors on stress levels in mothers. The outcomes are inconclusive. They have come to the conclusion that "vulnerability to stress is multi-dimensional.

Fathers:-Several research have been undertaken to determine the impact of special needs children on dads, and it has been concluded that fathers were 'less stressed' than mothers in these investigations. On the other hand, according to research conducted in the United States and the United Kingdom, dads are more anxious, unhappy, and suffer from 'poor self-esteem' than other family members. In most cases, they 'get success by utilising an escape-avoidance technique.' In turn, this has a 'negative' impact on the family, resulting in increased duties and difficulty being placed on the family, as well as sentiments of' resentment and anger' among other people in the family.

Brothers and Sisters:-Some feel that having a disabled sibling has a negative impact on the psychology of the 'typical child.' The findings of another study found that there has been a significant increase in 'anti-social' behaviour among 'older sisters of children with Down's Syndrome.' Numerous factors contribute to children's feelings of 'resentment' towards their siblings and parents, including the additional burden placed on 'normal' children, particularly 'older sisters,' their parents' preoccupation with the special needs child, their parents' suppression of strong and negative feelings, and broken 'expectations of the future.' Aside from a lack of "understanding regarding impairment," youngsters "may lack the understanding of how to deal with their impaired brother," according to the report. In general, it has been noted that 'older siblings' are better at coping with adversity than their younger siblings. The siblings of chronically unwell children have been shown to be well adjusted, according to the researchers. "They demonstrate maturity and demonstrate an attitude of responsibility that is in keeping with their chronological age." A number of studies have examined 'specific behaviours within the sibling relationship' in order to determine whether or not there are any significant variations in the "dynamics" of the sibling relationship as compared to "normal sibling" relationships. Comparing ten control children with ten siblings of a child with severe learning difficulties in a study conducted by "direct interview study with ten school-aged siblings of a child with severe learning difficulties," there appeared to be no evidence of conflict, of sharing household chores, and of other responsibilities. According to the findings of the Manchester research, the difficulties were associated with "certain behaviours of the kid with Down's syndrome." Sibling sessions held in Nottingham and Leicester for children with autism were attended by youngsters who expressed their 'pain' at the 'lack of empathy' displayed by the autistic kid.To put it another way, some youngsters adapt well to their circumstances while others do 'poorly.' What we do know is that a variety of elements play a role in attempting to understand how siblings 'grow' and live with youngsters who have differing abilities.

Review of literature

Chaubey, Dhani& Kala,Devkant. (2012) In transforming students into business professionals, academicians need to play a pivotal role by enriching students' knowledge and enhancing their emotional intelligence levels. EI skills have been strongly associated with dynamic leadership, satisfying personal life experiences and success in the workplace.

Sabir, Shibila& Thomas,Sannet. (2020) Emotional intelligence is the ability to perceive emotions, to access and generate emotions so as to assist thought, to understand emotions and emotional knowledge, and to reflectively regulate emotions so as to promote emotional and intellectual growth.

SanjyothPethe and UpinderDhar in 2002.t-test analysis conclude that there is no significant difference between emotional intelligence among joint and nuclear families ($p > 0.05$), gender and residential arê.

Alhashemi, Suhaila. (2015) Emotional intelligence (EI) is being recognised to be a vital element in many educational institutions today. Tuning into one's feelings and understanding others help to build and strengthen relationships in classrooms.

Objectives

1. To compare the Pathological college students on the basis of their gender.
2. To find Sick Family Model'of college students.

METHOD OF THE STUDY:-The purpose of this study was to investigate the link between stress and coping strategies, as well as emotional intelligence, in students from Bhiwani who were studying at the secondary level. It was aimed to collect a wide and really representative sample of data from all throughout Bhiwani in order to acquire a thorough sense of the problem's analytics dashboard and scope. Because of this, the investigator chose to conduct the current investigation using a survey approach.By conducting a thorough review of the theoretical aspects and related literature, as well as by distributing it to experts in the fields of teacher education and psychology for their feedback and suggestions, and making necessary modifications in response to their suggestions and opinions, the content validity of the tool was established

Result

Summary of Analysis of Variance of the Influence of Emotional Intelligence on Stress of Students with respect to the Levels of Emotional Intelligence

Source of Variance	Sum of Squares	df	Mean of Squares	F
Between groups	119800.20	2	59890.30	62.56*
Within groups	768300.50	792	969.51	
Total	888100.11	794	-	-

* Significant at 0.01 level

In the case of 2 and 792 degrees of freedom, the computed 'F' value is 62.56, which is greater than 4.52, which is the calculated 'F' value at the 0.01 threshold of significance. As a result, the theory is unsupported.It follows from this that, when the three levels of Emotional Intelligence are compared, there is a considerable effect of Emotional Intelligence on the stress levels of college students. Therefore, the considerable "F" score shows that Emotional Intelligence is important in determining the level of stress experienced by students in a given situation.An examination of the Scheff Post Hoc test was conducted in order to determine the relationship between the three levels of Emotional Intelligence. Using the three degrees of Emotional Intelligence, Table 4.5a depicts the relationship between stress and the three levels of Emotional Intelligence.

Data and Results of Test of Significant Difference in the Mean Scores of Emotional Intelligence, Stress and Coping Strategies of Students on the Basis of Gender

Variables	Gender	N	Mean	Standard Deviation	Critical Ratio
Emotional Intelligence	Male	150	106.23	9.42	1.60
	Female	150	150.29	11.52	
Stress	Male	150	181.23	33.4	0.30
	Female	150	180.90	34.5	
Coping Strategies	Male	150	169.50	36.03	2.10
	Female	150	178.54	35.70	

The crucial ratios derived for male and female students' Emotional Intelligence, Stress, and Coping Strategies are 1.60, 0.30, and 2.10, respectively, for the three variables. In this study, the critical ratio for Emotional Intelligence was found to be 1.60, which is lower than the table value of 1.96 at the 0.05 level of significance. This suggests that there is no statistically significant difference between male and female pupils in terms of Emotional Intelligence.At the 0.05 level of significance, the critical ratio for Stress was found to be 0.30, which is also less than the table value of 1.96, indicating that male and female students do not differ substantially in their stress levels before participating in teaching practise.As for Coping Strategies, the derived critical ratio 2.10 is similarly smaller than the table value at 0.05 level of significance, indicating that male and female students do not substantially differ in their Coping Strategies while coping with Stress prior to participating in instructional activities.

So the hypothesis that there is no statistically significant difference between male and female students in terms of their emotional intelligence, stress, and coping strategies is acknowledged as being correct is accepted.

CONCLUSIONS OF THE STUDY

Conclusions Related to the Influence of Emotional Intelligence on Stress and Coping Strategies of Student Teachers

It was discovered that when the three levels of Emotional Intelligence were examined, that the emotional intelligence of student instructors had a significant impact on their stress levels. Because of this, Emotional Intelligence plays a crucial part in regulating the level of stress experienced by student teachers When the mean differences in stress among the High, Average, and Low Emotional Intelligence groups were calculated, it was discovered that the mean score of the Low Emotional Intelligence group differed significantly from the mean scores of the average and high Emotional Intelligence groups, indicating that low emotional intelligence is associated with higher levels of stress. As a result, it may be stated that students with low Emotional Intelligence experience more stress than students with high or medium levels of Emotional Intelligence. The fact that these factors have an inverse connection means that an improvement in Emotional Intelligence will have an impact on a decrease in the stress experienced by student instructors.

Reference

1. Alhashemi, Suhaila. (2015) emotional intelligence as predictor of academic achievement among university students: an implication for the educational managers. HamdardIslamicus: quarterly journal of the Hamdard National Foundation, Pakistan. 43. 132-142.
2. Chaubey, Dhani& Kala, Devkant.(2012) EMOTIONAL INTELLIGENCE OF STUDENTS BELONGING TO SC/ST COMMUNITIES. 3. 19-25.
3. Fida, Asfandyar&Ghaffar, Abdul &Zaman, Amir &Satti, Asif. (2018). Gender Comparison of Emotional Intelligence of University Students.Journal of Education and Educational Development. 5. 172. 10.22555/joeed.v5i1.2046.
4. Sabir, Shibila& Thomas, Sannet. (2020) The Relationship between Emotional Intelligence and Marital Status in Sample of College Students. Procedia - Social and Behavioral Sciences. 84. 1317-1320. 10.1016/j.sbspro.2013.06.749.
5. SanjyothPethe and UpinderDhar in 2002Investigating the Correlation between Emotional Intelligence and Academic Performance.Pacific Science Review B Humanities and Social Sciences. 13. 01-09.

An Analysis of the Development of Education and the Library System Under the Mughal Dynasty

Dr. Surender Kumar

(Associate Professor, Vaish College, Bhiwani, Haryana)

PAPER 53

Abstract: *During the Turko-Aryan dynasty (1206–1526 A.D.), Delhi was under the rule of the Sultans, whose cultural heritage influenced the development of their own educational system. The educational system of the Delhi Sultanate was founded upon religious principles, as makhtabs and madrasahs were established within mosques. Makhatabs served as the residences of scholarly establishments, whereas madrasahs were where primary education was conducted. Both were supported monetarily, by the government, or both. Makhtabs were publicly funded establishments whose mission was to propagate Islam by means of teaching the recitation and composition of the holy Quran. Madrasahs additionally imparted knowledge in secular subjects and Islamic philosophy and religion, with the intention of augmenting the intellectual prowess and expertise of the general public. Subjects that were fascinating to the majority of Indians were disregarded. As a result of calligraphy's continued prevalence among Muslims, madrasas persisted in employing handwritten texts. Educational establishments of the modern Hindu tradition have made substantial contributions to the dissemination of education and the progression of knowledge. An immense collection of manuscripts from diverse fields, including medicine, science, history, and philosophy, was housed in libraries. Patan, Nadia, and Mithila were acknowledged as epicentres of instruction regarding Brahmanical culture. The Nyaya institution Mithila flourished during the period spanning from the twelfth to the fifteenth centuries. Established in Bengal, Nadia was an esteemed academic establishment in eastern India. It remained a preeminent centre of Hindu scholarship until the middle of the eighteenth century. The Buddhist educational institution Vikramshila and the renowned Nalanda were both destroyed during the reign of the Musalmans. Neither the religious nor cultural practices of the Bengali people nor educational institutions were affected. The cessation of the Hindu kingdom in North India occurred as a consequence of the Muslim conquest that was initiated at the start of the thirteenth century. Numerous educational establishments in South India, which were under the patronage of numerous Hindu monarchs, imparted knowledge relevant to their culture and way of life. An authority on the Telegu language and an esteemed patron of education and culture, King Krishnadevaraya of Vijayanagar was regarded as an Andhra-Bhoja.*

Keywords: *Education System, Mughal Period, Delhi Sultanate, Liberary System.*

Content

During the early thirteenth century, specifically commencing in 1206 A.D., under the Muslim rule, India experienced a period of political decline. Educational institutions were not exempt from the political and cultural fragmentation that characterised the society at the time. While certain instructors of the Brahmanic and Buddhist educational systems attempted to uphold their traditional methods by conducting lectures orally with a limited number of students in their homes or institutions affiliated with monasteries and temples, their endeavours were abruptly halted when Muslim invaders wreaked havoc and destroyed their educational

centres on a massive scale. Devastation and destruction on a grand scale rendered the education and library systems of ancient India obsolete. Indeed, it was impossible for them to reconstruct their libraries and educational institutions and reclaim their former splendour.

Commencing with the historical period of the Turko-Aryan dynasty (1206–1526 A.D.), during which the Sultan ruled over Delhi, is imperative. Due to their cultural background being entirely distinct, they were not in favour of the traditional Indian educational system. They established their own educational system, which was implemented for many years in their native land. In fact, religion formed the basis of the educational system of the Delhi Sultanate. Various makhtabs and madrasahs were established within the mosques of the nation. Primary education was conducted in madrasahs, whereas makhatabs housed institutions of higher learning. Both were supported financially by the nobles, the state, or both. The majority of makhtabs were state-funded institutions whose mission was to promote Islam through the instruction of recitation and composition of the sacred Quran. It is well-known that madrasahs also provided instruction in Islamic philosophy and religion alongside secular subjects, with the intention of enhancing the intellectual capacity and expertise of the populace. In the same way, they disregarded topics that the majority of Indians found intriguing. As a result of calligraphy's popularity among Muslims, madrasas also incorporated instruction in this art form and continued to utilise handwritten texts. Madrasah admission was exclusively granted to Muslim pupils; individuals of non-Muslim faith were not permitted to attend. The instructional curriculum was conducted in Arabic, which was a mandatory subject. While a few sizable establishments existed, comparable in stature to universities, the vast majority of madrasahs affiliated with mosques were quite modest in size. Based on the fact that madrashas served as scholarly establishments specialising in Islamic studies, it is possible to deduce the existence of library facilities affiliated with them, albeit with limited information available.

An additional category of academic establishments emerged under Muslim rule; these were known as khanaqah. Additionally, some mystic philosophers were born in the thirteenth century. Shaikh Qushairi, Iman Ghazzali, Shaikh Shihabaldin Suhrawardi, Shaikh Muhyi-Din Ibn Arabi, and Shaikh Jalal al-Din Rumi are notable esoteric thinkers. They once resided in khanquahs with their adherents and were enthusiastic about disseminating their beliefs throughout society. Limited information is available regarding the course offerings and textbooks utilised by the madrasahs and khanqahs. Barani asserts that the curriculum included instruction in Tafsir (Quranic exegesis), Hadis (prophetic tradition), and Fiqh (Muslim jurisprudence). Very little is known regarding the instructional methodologies employed in these institutions. In general, they imparted spiritual instruction with the objectives of purifying oneself and others. Khanqahs espoused a comprehensive, liberal perspective unrestricted by religious affiliation. Without a doubt, they contributed significantly to the literary and cultural advancement of all individuals, regardless of their religious affiliation. Scholars affiliated with khanqahs contributed to the composition of an extensive body of philosophical literature.

India was replete with numerous minor kingdoms that played a significant role in advancing education and establishing libraries. An essential component of a comprehensive examination of the mediaeval education system and libraries in India is an investigation into the educational systems and libraries of those lesser kingdoms. Hasan Gangu Bahamani established the Bahamani kingdom in 1347 A.D., and it remained under his dominion until 1526 A.D. He did not gain widespread acclaim for his literary associations or support of

other authors. It is documented that he was the initial Brahman to accept the services of a Musalman prince; prior to that, Brahmans were exclusively obligated to engage in Vedic study and perform religious duties. Mhuammad Shah Bahmani, who succeeded Hasan Gangu twenty years later, was an eminent patron of education. In addition to possessing fluency in Persian and Arabic, he also composed poetry. 1378 A.D. saw the establishment of a madrasah in Decan for the instruction of orphans. In addition to offering complimentary lodging and food, the professor was actively involved in the dissemination of knowledge. Additionally, numerous orphanage-oriented institutions were established in the various locations of his state. Numerous locations, including Viz Gulbargah, Bidar, Qandhar, Ellichpur, Daulatabad, Chaul, and Dabul. Significant bequests were established to ensure the upkeep of these establishments.

Firuz Shah was an intellectual. His understanding of literature is said to be comparable to that of the imperial dynasty of Delhi's Mahammad Tughlaq. In the past, he attended lectures on logic, geometry, and botany. Among his courtiers, he used to spend the majority of his time in the company of divines, poets, historian reciters, Shah-Namah readers, and other erudite and humorous individuals. Firuz Shah, an astronomy enthusiast, initiated construction of an observatory in 1407 AD; however, the endeavour remained unfinished as the project superintendent, the astronomer Hakim Husain Gilani, passed away. Near Gulbargah, Ahmad Shah Bahamani constructed a magnificent college. However, upon his assault on Bijapur, he toppled a number of Brahmana colleges within the city. As the minister of Muhammad Shah Bahamani II, Mahmud Gawan founded the renowned Bidar College. A mosque was connected to the college. A well-appointed and satisfactory library was available for student use. In total, 3000 volumes comprised the library's collection.

Jaunpur was widely recognised as an intellectual hub during the reign of its illustrious monarch, Ibrahim Sharqi. Jaunpur produced a number of religious reformers and scholars who led men and movements during his reign. It was referred to as India's Shiraz. He bestowed altamgahs and jagirs upon scholars and instructors, enabling them to dedicate themselves to the pursuit of knowledge without regard for material necessities. Many scholars ascribed the works of Ibrahim Sharqi to themselves. The establishment of over twenty schools of thought and the cultivation of several hundred academics ensued. Since the city's inception, scholars from various regions of Hindustan, including Oudh and Illahabad, have reportedly congregated at this renowned epicentre of learning to pursue their academic pursuits. Due to its abundance of excellent libraries, Jaunpur became a centre of learning, attracting numerous academics from across India. Additionally, eminent scholars maintained personal libraries. Particular mention should be given to the libraries of Maulavi Maasuq Ali and Mufti Syed Abul Baqa. Maasuq Ali possessed a library that boasted a substantial collection of five thousand volumes.

The Sultans of Delhi were benefactors of education. In addition to constructing mosques, they also established madrasahs and makhtabs in close proximity to these mosques across the nation. Concurrently, the Muslim authorities of India engaged in both demolition and construction. In order to facilitate both general and religious education, maktabs and madrasahs, libraries, and literary societies were established. The capital being transferred from Ghazni to Lahore and from Lahore to Delhi respectively, rendered both cities renowned centres of learning in the style and tradition of Ghazni. As a result, Delhi emerged as a renowned epicentre of learning, attracting academicians from various regions of the globe. Sultan Firuz Tulaq, Iltutmish, Sultana Raziya, Nasiruddin, and Balban were renowned throughout the Slave dynasty for their support and

encouragement of learning and scholarship. Iltutmish was an eminent advocate for education. Delhi became a centre of learning during his reign, and numerous learned men fled Central Asia in search of refuge in the city. His patronage extended to scholars including Amir Khusrau, Fkhr-ul-Mulk, and Amir Kuhani. It has been learned that he constructed a madrasah and a mosque. Sultan Nasiruddin cherished Persian literature immensely. The magnum opus Tabaqati-Nasiri was composed by Minhaz-i-Siraj during his reign. It is a reference book for historians interested in India and Persia's histories. By reading and copying the Quran on a regular basis, Sultan Nasiruddin contributed to the development of exceptional calligraphy. Reportedly, he funded his personal expenditures through the sale of his exceptional handwriting. Additionally, he established Nasirryya College in Jalandhar, where he intermittently designated Minhaj-i-Siraj as principal. Additionally, Balban was a close companion of an erudite individual. Sixteen men, including Amir Khusrau, Sheikh Usman Tirmizi, Amir Hasan, Sayyed Manla, and Qutb-Uddin Bakhatiyar, sought refuge in Delhi as a result of Changiz Khan's unprecedented destruction. Additionally, he organised stipends for them. At this time, numerous literary societies were emerging in Delhi. The Sultan's eldest son provided financial support to these societies. A total of twenty thousand couplets were gathered by him. His second son founded a distinct society comprised of performers, dancers, musicians, and storytellers. A regal library served as a venue for organising recurring gatherings with poets. Amir Khusrau compared Delhi to Bukhara, the preeminent university city of Central Asia, during this time.

Thus, it can be deduced that Delhi was a renowned epicentre of scholarship during the reign of the slave dynasty, thanks to the direct support of the sultans. Society acknowledged that penmanship was not only utilised by the Sultans and nobles, but was also put to use. Subsequently, numerous works were duplicated and meticulously conserved within the libraries. The induction of a new dynasty elevated the status of Delhi as a hub for cultural and literary endeavours. The progenitor of the Khilji dynasty, Jalaluddin Khilji, possessed an exceptional literary bias. Numerous literary figures, including Amir Khusrau, Tajuddin Iraqi, Khajah Hasan, Myyid Diwanah, Amir Arslan Quli, Ikhtikharuddin Razi, and Baqi Khatir, were court guests of his. He was an author and poet himself. Sultan Jalaluddin Khilji perhaps founded an imperial library in Delhi, according to available information. Amir Khusrau, a renowned poet and intellectual, was designated as the librarian by him. Sultan placed the ideal individual in the ideal position. Sultan placed significant significance on the librarian position, and he honoured Amir Khusrau with this honour. In addition to his role as the librarian of the imperial library, Sultan Jalaluddin bestowed upon him the responsibility of safeguarding the sacred Quran. The Sultan held the librarian, Amir Khusrau, in such high regard that he elevated him to the peerage and granted him permission to don white vestments, a practice typically reserved for the court's royals and nobles. Upon being appointed Arizi-Mamalik, the sultan was granted a pension and rewarded with twelve hundred tankas, even when he was a prince. Thus, it can be deduced that the librarian held a highly esteemed position during the sultanate period, which was perceived as a valuable and accountable role.

Modern Hindu educational institutions have significantly contributed to the advancement of knowledge and the dissemination of education. The libraries housed an extensive assortment of manuscripts encompassing a wide range of disciplines, including medicine, science, history, and philosophy, among others. Such centres include Patan, Nadia, and Mithila. Mithila was widely recognised as a centre of Brahmanical culture education. It evolved into a renowned Nyaya institution that thrived between the twelfth and fifteenth

centuries. Numerous eminent intellectuals resided in that region, including Jagaddhara, Gangesha, Vardhamana, Vachaspati Misra, and Sankara Mishra. Jagadhara authored commentary on a variety of sacred scriptures, including the Malati Madhavi, Devi Mahatya, Gita Govinda, and Meghduta. The poet Vidyapati, an additional renowned Mithila scholar, authored a significant number of Maithali melodies and Padavalis. His Padavali contributed to the dissemination of Vaishnavism in Bengal and served as a generational inspiration for Vaishnava writers in Bengal. Gangesa Upadhyay established the Navya Nyaya school of logic and authored "Tattva-Chintamani." Padartha Chandra, an original work by Misarumisra, was devoted to Vaisesika. A renowned academic institution in eastern India was Nadia, located in Bengal. It thrived as a highly regarded intellectual hub between 1063 and 1106 A.D., when it was designated as the capital by King Lakhmana Sena. Despite the conquest of Lakshmana Sena's dynasty by Bakhtiyar Khilji and his subsequent exile to Vikrampura in 1197, Nadia maintained its status as a preeminent hub of Hindu scholarship until the mid-18th century. The destruction of Nalanda and Vikramshila, a renowned Buddhist educational facility, by Bakhtiyar Khilji had no impact on the religious and cultural practices of the Bengali people or educational institutions under the Musalman rulers. Nadia was thus granted the opportunity to continue its mission. Abdihodha Yogi, Basudev Sarbabhauma, Pakshadhar Misra, Raghunath Siromoni, Raghunandan Smarta Bhattacharya, and numerous others were erudite scholars in Nadia. Krishnanda Agambagis gained notoriety for his Tantra philosophy, while in the sixteenth century, Gauranga, also known as Chaitanya, presided over the Vaishnava sect.

The establishment of the Muslim dominion in North India occurred at the onset of the thirteenth century. As a result, the Hindu kingdom had ceased to exist in this region. Conversely, South India was governed by numerous Hindu monarchs. As a result, the authorities supported a multitude of educational institutions that provided instruction pertinent to their culture and way of life. Vijaynagar's name must be mentioned in relation to this. King Krishnadevaraya of Vijayanagar was a notable patron of education and culture. He was regarded as an Andhra-Bhoja. He considered himself an authority on the Telegu language. His retinue comprised eight poets of renown who were known as Ashtadiggajas. According to the writings of Allasani Peddana and Tenali Ramkrishna, two palace poets, King Krishnadevaraya and other monarchs maintained an extensive library. Tenali Ramkrishna identified four adversaries of library literature. They include theft, fire, decay (caused by insects and the elements), and misplacement of books.

References:

- Datta, B.K. (1960) Libraries & Librarianship in ancient and medieval India. Delhi: Atmaram& Sons
- Keay, F.E.(Rep. 1954). Indian education in ancient and later times: an inquiry into its origin, development and ideals (2nd ed.). Calcutta: Oxford University Press.
- Law, N.N. (1916). Promotion of learning in India: during Muhammadan rule. Calcutta: Longman and Green.
- Nizami, K. A. (1956). Studies in medieval Indian history and culture. New Delhi: Cosmopolitan Publisher.
- Srivastava, A.L (1964.). Medieval Indian culture. Agra: Shivlal Agarwal.
- Wali, M. A. (1969, October). Library development in Kashmir. Herald of Library Science.

PAPER 54

ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 5.859

Volume 8, Issue 6, June 2021

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects

e-ISJN: A4372-3088
p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study

Published By: SK Publisher *(www.skpublisher.com)*

Impact of Imperialism on Modern Indian History Writing: A Research Review

Dr. Surender Kumar
Associate Professor,
Vaish College,
Bhiwani, Haryana, India.

Abstract: ***Following their military triumphs over the indigenous population, the Aryans proceeded to invade India, renaming them the Dasas or Dasyus and asserting that the Dravids were the initial inhabitants, with Europeans being their descendants. Additionally, non-Aryans were categorised as Dasas or Dasyus. It was their conviction that the Indian civilization did not predate all others and that early Homo sapiens subsisted in forests and ingested flesh. The composition period of the Vedas was estimated to be between 1500BC and 1200 BC. An synthesis of a nation's social, religious, political, and literary conditions ought to comprise its history. Contemporary understandings of Indian history have been manipulated to undermine Indian sources by means of selective foreign evidence, arbitrary interpretation, and temporal adjustment of inferences. This has been accomplished through the falsification of ancient evidence and arbitrary interpretation. The Indian youth are filled with national pride due to this deficiency in quality. In order to establish dominion over the region, the British proceeded to reacquaint themselves with the history, traditions, and culture of India. The purpose of establishing organisations such as the Archaeological Survey of India and the Sanskrit Asiatic Society of Bengal was to gain knowledge about Indian languages and literature. Initiating a reassessment of their historical identity as a British reactionary faction, Indian academicians were granted the privilege of researching the nation's past. An abundance of recent revelations regarding India instilled a sense of national pride and magnificence in the Indian people, resulting in a resurgence of self-assurance and patriotism.***

Keywords: ***Modern India, History of India, Imperialism, Indian History Writings.***

Content:

The Aryans invaded India from beyond subsequent to their military victories over the indigenous population. The Aryans refer to them as Dasas or Dasyus, and they assert that the Dravids were the first inhabitants of India and that Europeans are their progeny. Non-Aryans were designated Dasas or Dasyus by the Aryans, who also classified them as Shudras. Further, according to one of them, the Indian civilization was not the eldest in the world, and early Homo sapiens consumed flesh and lived in forests. They estimated that the Vedas were composed between 1500 and 1200 BCE. Indian time calculations were scientifically erroneous and exaggerated. Historical facts being manipulated in the name of science.

The Vikram era was established by King Vikramaditya of Ujjain, a figure who was categorically denied by Europeans. It was stated that the River Sarswati existed. Only during the British colonial period did the entirety of Bharat come under the control of a central power; pre-Bharat, India had never existed as a distinct nation. The Europeans yearned for their once-civilized ancestry. European nations originated more than two millennia before they attained the status of nations. This was prior to their engagement with untamed communities. Once a mere tribe, their primary objective upon conquering the land from

© 2021, SK Publisher All Rights Reserved

other planets was to establish their claim to a more advanced lineage. For this reason, they appropriated Aryan terms from ancient Hindu literature; consequently, the notion of writing history was conceived; to achieve their objective, they began to distort ancient Indian history. Their persecution commenced with the derogatory designation of the Aryans (civilised, white-skinned people). However, Hindus hold that the excellent qualities and civilised disposition of Indians are unrelated to their facial features, skin pigment, or body structure.

Commencing in the 4th century BC, numerous foreign invaders and travellers have penned annals of India. Even today, these memoirs remain in circulation; however, none of them contain any references to the Aryan invasion or the subsequent establishment of the Aryan culture in India. This theory was recently formulated and lacks any foundation. Such criticism is indisputable evidence that the British may have maintained the identical strategy until the moment of independence. However, even after seven decades of Indian independence, objectionable questions remain unanswered. The solutions can be found in emerging research trends, such as India's purported mastery of the science or art of preserving its distinctive national attributes. The Indian historical tradition was notably distinct in that it was composed with a specific objective in mind. The objective has been achieved. Numerous contemporary scholars agree that the recently published recensions of the Puranas and epics were finalised at the start of the Christian era; however, this date has been traced back to the early Kali era according to tradition. Despite the passage of approximately two millennia since their inception and numerous modifications, contemporary scholars agree that these recensions continue to be highly practical and efficacious in illuminating the thoughts of Hindus. Gandhi desired Ramrajya following independence. At that juncture, numerous ideologies had emerged, and the countries that adopted them were similarly prosperous. Although this was the case, Mahatama Gandhi favoured Rama during the Ramayana period. What a profound, enduring impact and influence do historical texts from India hold?

They held the conviction that the contents of this book represented the nation's history. They believed it was of the utmost importance to society and therefore dedicated their careers to transferring it to the people. Not only did they compile the history, but the calibre of the compilation also established a link between their usefulness and a number of life-dedicating recipients. The aforementioned accounts demonstrate the significant regard in which they placed the discipline of historiography. We must now comprehend the change or impact in writing. Present-day circumstances in the world have drastically altered the situation. In the past two to three centuries, the world has undergone erratic and sudden transformations that have not been seen before, not even in the millennium cycle. The development of innovative technologies has facilitated communication. Access to any information is as simple as placing a fingertip.

In addition to facilitating the acquisition of desired knowledge, scientific progress has engendered confidence. Under such circumstances, the authenticity and currency of Indian history texts assume critical importance. The confined annals of Indian history are presently accessible not only to the nation of India, but to every history buff. The world is interested in the authentic and genuine history of India, which is authored solely from the perspective of Indian historians. A considerable duration has elapsed since the compilation of historical literature in accordance with Bhartiya historiography. A renewed effort has been made by numerous historians at this time. Given the altered circumstances, consideration should also be given to this recent development. In conjunction with the inherent merits of Indian historiography, certain supplementary particulars, such as a chronology spanning several millennia, could be appended to enhance fidelity, comprehension, and to avert the detrimental effects of history. It is now more important than ever to support those who are laboriously advancing the cause of history and to ensure that our own history is written. It is necessary that we devise a quest for our ancient past. The study of Indian history requires revitalization and reinvigoration. Divergent viewpoints may exist; nevertheless, the overarching objective should be to rewrite the annals of history and impart this revised account to future generations. This is the sole approach to eliminating this type of imperialism. The time has come to censure and condemn the voluminous historical works authored by imperialist historians.

© 2021, SK Publisher All Rights Reserved

The historical account that contradicts Indian traditions and factual data is in no way representative of India. As stated in the preceding discourse, we consider the history of a nation to be a synthesis of its social, religious, political, and literary circumstances. The chronicles of a nation ought to be composed utilising the documents that are readily accessible in its immediate vicinity. When history is written, evidence is present in that specific location; only citizens of that nation can take pride in that. Modern interpretations of the History of India have been crafted to discredit Indian sources through the falsification of ancient evidence, arbitrary interpretation, temporal adjustment of inferences, and the adoption of selective foreign evidence. Therefore, they are devoid of every quality that would inspire national pride in our people.

Presently, our nation is liberated; we are endowed with absolute liberty of expression and writing by our formidable constitution. Currently, what is necessary is the emergence of a sense of unity and affection for the nation. India is a multifaceted nation. Since ancient times, our nation has been renowned globally for its ability to embrace diversity while maintaining its ancient traditions. We must abandon our self-centered agenda in order to surmount the challenges that our nation is presently confronting and enduring. We are currently residing in an era characterised by profound despair and disarray. At this critical juncture, every individual in India ought to internalise the sentiment of being an indigenous resident of this nation and take pride in the fact that their predecessors did not engage in nomadic existence, wanderlust, invasion, or plunder. It is imperative that the Indian people develop a profound sense of pride for their civilization. It is imperative that they possess a comprehensive understanding of the abundant culture and traditions that characterise their nation. They must be informed that India has bestowed upon the globe an abundance of treasures. It has furnished the universe with ultimate knowledge. The game of chess, yoga, and meditation, which originated in India, were all innovations that propelled our predecessors to the pinnacle of their modern civilization. They imparted to the world the importance of modelling one's character after that of their predecessors.

As previously mentioned, a significant consequence of imperialism was that the British rediscovered the history, customs, and culture of India in order to exert effective control over the region. In order to comprehend Indian literature and its languages, a multitude of institutions were established. The establishment of the Sanskrit Asiatic Society of Bengal, an organisation that educated British scholars in Sanskrit and other related languages, promoted the study of Sanskrit. The Sanskrit instructor of William Jones was an Indian Brahaman. In addition to translating Manusmriti and Bhagwatgita, Jones also undertook the translation of the Vedas. The establishment of the Archaeological Survey of India was a collaborative endeavour between John Marshal and Alexander Cunnigham to unearth the history of India. Indian scholars initiated a reevaluation of their historical identity as a British reactionary faction. They were given the opportunity to study our nation's history. Numerous new discoveries regarding India inspired Indians with national pride and grandeur. Their confidence was reclaimed, and subsequently, their eloquent writings concerning the illustrious history of India inspired a sense of nationalism among the Indian populace.

The national perspective on the history of India has evolved. It fostered the development of nationalistic sentiments and brought together the people of India, regardless of caste, class, or creed, despite the numerous linguistic and class distinctions that existed. The field of nationalistic history primarily examines the historical events of ancient and mediaeval India. The reevaluation of historians' perspectives regarding the fundamental aspects of Indian history resulted in significant disruptions to the historical record. Their civilization was held in high regard and heaped praise and grandeur in western historical literature. The act of glorification compelled the Indian people to look to the past for an object worthy of glorifying India. Moreover, we can deduce that British visitors who were well-versed in Indian history fostered unity and cohesion among the Indian people. Western influence on the Nationalist Intelligentsia inevitably and significantly resulted in the development of a burgeoning interest in international current events. Over time, they came to understand that colonialism and imperialism possessed a global nature and ultimately had far-reaching consequences. Nationalism and anti-imperialism emerged as ideologies among the Indian

© 2021, SK Publisher All Rights Reserved

populace. Presently, the effects of British imperialism in India are readily apparent due to the proliferation of nationalistic historical writings.

Either the Indian government or Indian historians ought to undertake the task of composing an authentic history of the Indian people. The Indian government must proactively strategize the revision and preservation of India's history for future generations. The majority of individuals are irritated and troubled by the current state of affairs and are solely concerned with the nation's role. My understanding and analysis indicate that only we have the ability to assist. Whether we reside in India or elsewhere, we must never forget that distorted and imperialistic history influences the development of a nation and its people; it shapes our nationalistic sentiments and identities, determines our interactions with one another and other countries, and, most significantly, influences how other nations perceive us.

References

1. B.K. Majumdar, 'Vincet Arthur Smith' in S.P. Sen (ed.), Historians and Historiography in Modern India.
2. Basham, Modern Historians of Modern India in Philips, ed., Historians of India, Pakistan and Cylon.
3. Majumdar, Historiography of Modern India.
4. S.P. Sen, Historians and Historiography of India, p.viii
5. Swami Vivekanand, Karm Yogi.
6. William Hunter, Indian Musalman.

© 2021, SK Publisher All Rights Reserved

OUR PUBLICATIONS

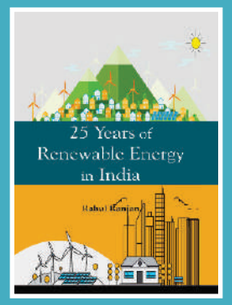

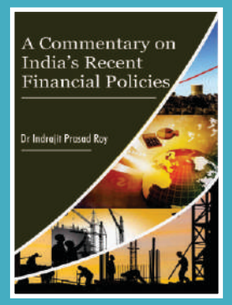

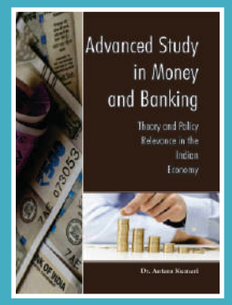

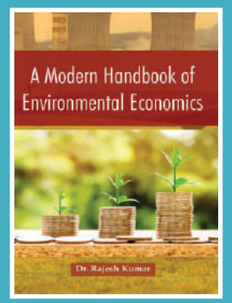

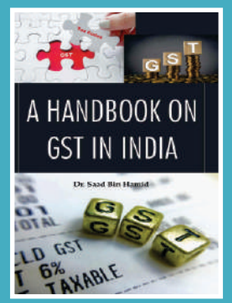

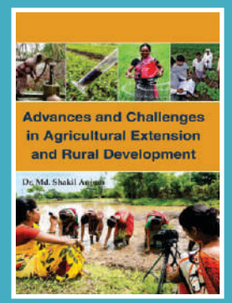

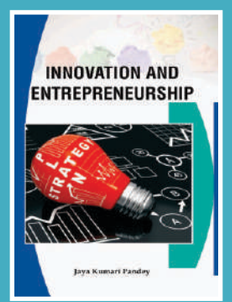

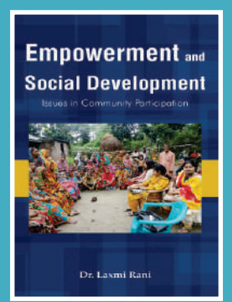

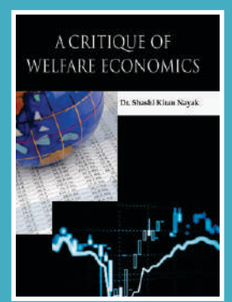

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

ISSN 0975-119X

UGC-CARE GROUP I LISTED

वर्ष 13 अंक 1 जनवरी-फरवरी 2021

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

India's Leading Refereed Hindi Language Journal

IMPACT FACTOR : 5.051

OUR PUBLICATIONS

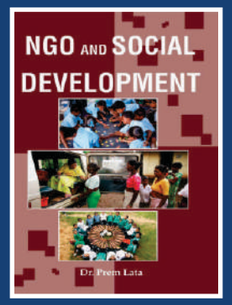

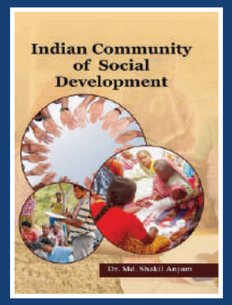

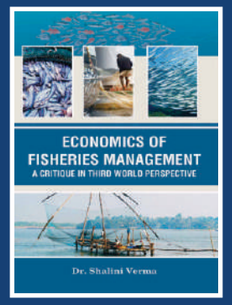

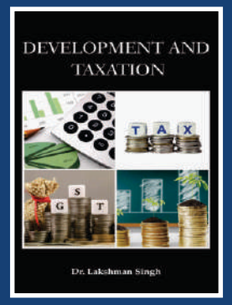

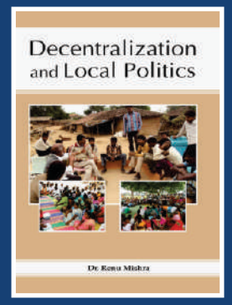

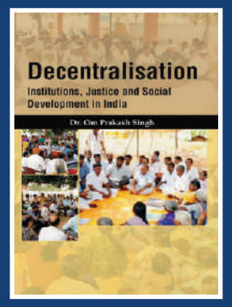

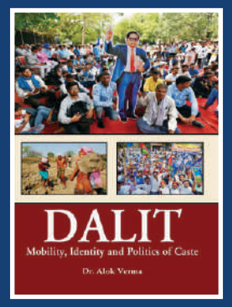

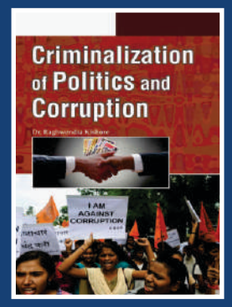

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

OUR PUBLICATIONS

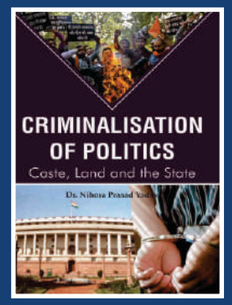

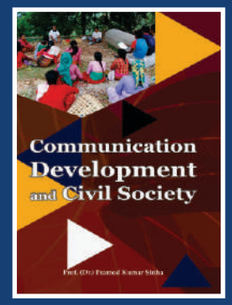

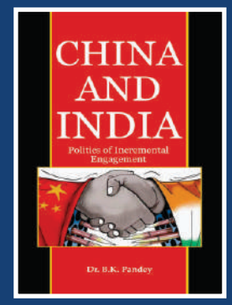

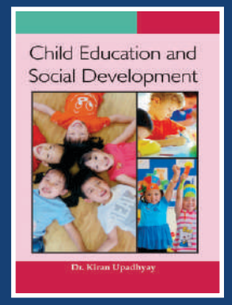

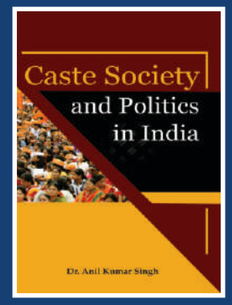

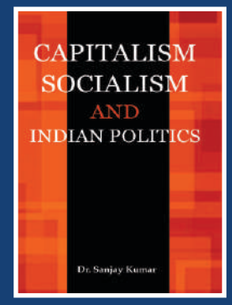

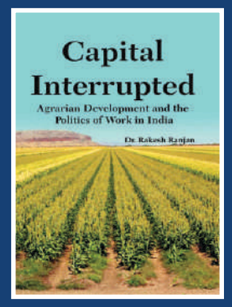

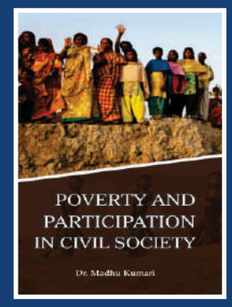

Iobus Press

448, Pocket-V, Mayur Vihar, Phase-I, Delhi-110091 (INDIA)
Ph.: 011-22753916

दृष्टिकोण

कला, मानविकी एवं वाणिज्य की मानक शोध पत्रिका

प्रधान संपादक

डॉ. अश्विनी महाजन

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

संपादक

प्रो. प्रसून दत्त सिंह

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

डॉ. फूल चन्द

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

दृष्टिकोण प्रकाशन

वर्ष : 13 अंक : 1 ❑ जनवरी–फरवरी, 2021

दृष्टिकोण

संपादक मंडल

डॉ. अरुण अग्रवाल
ट्रेन्ट विश्वविद्यालय, पीटरबरो, ओंटारियो

डॉ. दया शंकर तिवारी
दिल्ली विश्वविद्यालय

डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी
काशी विद्यापीठ विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ. प्रकाश सिन्हा
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

डॉ. दीपक त्यागी
दीन दयाल उपाध्याय विश्वविद्यालय, गोरखपुर

डॉ. अरुण कुमार
रांची विश्वविद्यालय, रांची

डॉ. महेश कुमार सिंह
सिद्धू कान्हू विश्वविद्यालय, दुमका

डॉ. हरिश्चन्द्र अग्रहरि
अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा

डॉ. पूनम सिंह
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

डॉ. एस. के. सिंह
पटना विश्वविद्यालय, पटना

डॉ. अनिल कुमार सिंह
जे.पी. विश्वविद्यालय, छपरा

डॉ. मिथिलेश्वर
वीर कुंअर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

डॉ. अमर कान्त सिंह
तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर

डॉ. ऋतेश भारद्वाज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. स्वदेश सिंह
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. विजय प्रताप सिंह
छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर

संपादकीय सम्पर्क:

448, पॉकेट–5, मयूर विहार, फेज–I, दिल्ली–110091
फोन : 011–22753916, 40564514, 35522994 Mobile: 9710050610, 9810050610
e-mail : editorialindia@yahoo.com; editorialindia@gmail.com; delhijournals@gmail.com
Website : www.ugc-care-drishtikon.com

©Editorial India
Editorial India is a content development unit of Permanence Education Services (P) Ltd.

ISSN 0975-119X

नोट: पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार अपने हैं। उसके लिए पत्रिका/संपादक/संपादक मंडल को उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। पत्रिका से सम्बंधित किसी भी विवाद के निपटारे के लिए न्याय क्षेत्र दिल्ली होगा।

सम्पादकीय

पूरे देश की निगाहें एक फरवरी 2021 को संसद में पेश होने वाले बजट पर लगी हैं। यूं तो बजट के बारे में हर बार ही उत्सुकता होती है, कि वित्तमंत्री के पिटारे में विभिन्न वर्गों के लिए क्या योजनाएं हैं? क्या सरकार आयकर में कोई छूट देगी? कारपोरेट टैक्स के बारे में सरकार का क्या नजरिया रहेगा? देशी और विदेशी निवेशकों पर क्या कर प्रावधान होंगे? बजट का शेयर बाजारों पर क्या असर पड़ेगा? शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, बैकिंग आदि के बारे में क्या नजरिया होगा? कौन सी नई जनकल्याणकारी योजनाएं होंगी?

लेकिन हमें समझना होगा कि इस बार का बजट एक महामारी के बाद का बजट है। पिछली एक सदी के बाद पहली बार ऐसी महामारी आई, जिसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले लिया। हालांकि भारत में इस बाबत हालात (केरल और महाराष्ट्र को छोड़कर) सुधरे हुए दिखाई देते हैं, लेकिन इस महामारी के कारण हुए नुकसानों की भरपाई बहुत जल्द होने वाली नहीं है। पिछले वर्ष हमने देखा कि कैसे महामारी के कारण आवाजाही बाधित हुई, जिसके कारण न केवल मांग बाधित हुई, काम-धंधों पर भी जैसे ब्रेक लग गया। कुछ व्यवसायों में घर से काम (वर्क फ्रॉम होम) थोड़ी-बहुत मात्रा में चला, लेकिन अधि कांश मामलों में आर्थिक गतिविधियां पूरे या अधूरे तौर पर बाधित रही। मजदूरों का बड़े शहरों से पलायन, कामगारों का काम से निष्कासन या उनके वेतन में भारी कटौती, इस महामारी के कालखंड में सामान्य बात बन गई। ऐसे में जीडीपी के प्रभावित होने के साथ-साथ, सरकार का राजस्व भी प्रभावित हुआ।

महामारी से पूर्व भी अर्थव्यवस्था कई कारणों से मंदी की मार झेल रही थी। पूर्व में बैकों द्वारा दिए गए ऋणों की वापसी नहीं होने के कारण, बैंकों के बढ़ते एनपीए के चलते बैंकों का मनोबल ही नहीं गिरा था, लोगों का बैंकों पर विश्वास भी घटने लगा था। उसके साथ ही साथ आईएलएफएस सरीखे गैरबैंकीय वित्तीय संस्थानों में घोटालों के कारण वित्तीय क्षेत्र के संकट और अधिक बढ़ गए थे। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों पर नकेल कसने के प्रयासों में बैंकों द्वारा कार्य निष्पादन भी प्रभावित हो रहा था और व्यवसाय भी। बैंकों द्वारा ऋण भी कम मात्रा में दिए जा रहे थे। कुल मिलाकर नए निवेश भी घटे और चालू आर्थिक गतिविधियां भी। कठिन परिस्थितियों में जब पिछले साल वित्तमंत्री ने बजट पेश किया था, वर्ष 2019-20 में राजस्व उम्मीद से कम दिखाई दिया था लेकिन यह अपेक्षा जरूर थी कि इसकी भरपाई 2020-21 में हो सकेगी।

लेकिन उसके पश्चात वर्ष 2020-21 में भी महामारी के प्रकोप ने राजस्व में सुधार की सभी अपेक्षाओं पर पानी फेर दिया है। वित्तीय वर्ष 2020-21 के पहले 9 महीनों में जीएसटी से कुल राजस्व 7,79,884 करोड़ रूपए ही प्राप्त हुआ है, जबकि इस कालखंड में अपेक्षा न्यूनतम 10 लाख करोड़ रूपए की थी। जीएसटी में इस कमी का असर हालांकि केन्द्र और राज्य, दोनों के राजस्व पर पड़ा है, लेकिन राज्यों के हिस्से की भरपाई (14 प्रतिशत वृद्धि के साथ) देर-सबेर केन्द्र सरकार को नियमानुसार करनी ही पड़ेगी। इस कारण केन्द्र को इसका नुकसान राज्यों से कहीं ज्यादा होगा। दूसरे इस वर्ष वैयक्तिक आयकर और निगम (कारपोरेट) कर भी उम्मीद से कम रहने वाला है। सरकार के इस वर्ष का विनिवेश का लक्ष्य भी पूरा होने की दूर-दूर तक कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

एक तरफ जहां महामारी के चलते सरकारी राजस्व में भारी नुकसान हो रहा था, रोजगार खोने के कारण भारी संकट से गुजर रहे मजदूरों और अन्य प्रभावित वर्गों के जीवनयापन की कठिनाईयों के कारण उन्हें खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने हेतु सरकार का दायित्व तो था ही, गांवों में लौट रहे मजदूरों को रोजगार दिलाने का भी दबाव था। 80 करोड़ लोगों को लगभग 9 महीने तक मुफ्त भोजन उपलब्ध कराया गया। महामारी से निपटने हेतु सरकार का स्वास्थ्य पर खर्च भी बढ़ चुका था। महामारी से पार पाने हेतु कोरोना योद्धाओं, शिक्षकों एवं अन्य वर्गों को वैक्सीन उपलब्ध कराने की भी आवश्यकता है।

महामारी के कारण बाधित गतिविधियों को दुबारा शुरू करने की भी जरूरत थी। यह सरकार की मदद के बिना नहीं हो सकता था। पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हुई आर्थिक गतिविधियों को पुनः पटरी पर लाना, महामारी की मार झेल रही आम जनता को राहत देना, रोजगार खोने वालों के लिए राहत और रोजगार की व्यवस्था करना, पहले से ही मंदी की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को सही रास्ते पर लाना, यह सरकार का दायित्व भी है और प्राथमिकता भी।

दुनिया भर में सरकारों ने इस महामारी से निपटने के लिए राहत पैकेजों की व्यवस्था की है। उसी क्रम में भारत सरकार ने भी अपने सभी राहत उपायों की घोषणा की है। ये सभी राहत उपाय कुल मिलाकर देश की जीडीपी के लगभग 10 प्रतिशत के बराबर बताए जा रहे हैं। इन राहत अथवा प्रोत्साहन पैकेजों में सरकार ने लघु, सूक्ष्म और मध्यम उद्यमों को प्रोत्साहन, प्रवासी मजदूरों एवं किसानों के लिए राहत पैकेज, कृषि विकास, स्वास्थ्य उपायों, व्यवसायों को अतिरिक्त ऋणों की व्यवस्था, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस समेत कई उपायों की घोषणा की गई है। सरकार ने हाल ही में रियल ईस्टेट क्षेत्र को राहत एवं प्रोत्साहन देने, इलैक्ट्रॉनिक्स, टेलीकॉम, मोबाईल फोन और एक्टिव फार्मास्यूटिकल उत्पादों के उत्पादन को प्रोत्साहन देने हेतु 'प्रोडक्शन लिंक्ड' प्रोत्साहनों की भी घोषणा की है।

पिछले साल का बजट प्रस्तुत करते हुए, वित्तमंत्री ने वर्ष 2020-21 के लिए राजकोषीय घाटे का लक्ष्य जीडीपी को 3.5 प्रतिशत रखा था। लेकिन बदले हालातों में घटे सरकारी राजस्व और बजट अनुमानों से कहीं ज्यादा खर्च के दबाव के चलते इस वर्ष का राजकोषीय घाटा अनुमान से कहीं ज्यादा हो सकता है। माना जा रहा है कि इस महामारी का बड़ा असर राजकोषीय घाटे पर पड़ सकता है। माना जा रहा है कि वर्ष 2020-21 के लिए यह राजकोषीय घाटा जीडीपी के 8 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

महामारी से निपटने हेतु राहत के प्रयासों की अभी शुरूआत भर हुई है। आगामी वर्ष में इन प्रयासों को और आगे बढ़ाने की जरूरत होगी। सरकार द्वारा आत्मनिर्भरता के संकल्प और अर्थव्यवस्था में सुधार हेतु तमाम प्रयासों के चलते अंतराष्ट्रीय मुद्रा कोष ने भी इस वर्ष भारत की जीडीपी में 11.5 प्रतिशत संवृद्धि का अनुमान दिया है। इसके चलते राजस्व में वृद्धि तो होगी, लेकिन सरकार को जीडीपी ग्रोथ की इस गति को बनाए रखने के लिए और अधिक प्रयास करने की जरूरत होगी। ऐसे में केन्द्र सरकार का राजकोषीय घाटा अधिक रहेगा। लेकिन इसके साथ ही साथ केन्द्र सरकार ने कोरोना से उपजी समस्याओं से निपटने हेतु राज्य सरकारों को भी अतिरिक्त ऋण लेने के लिए अनुमति दी है। विशेषज्ञों का मानना है कि इस वर्ष राज्यों के बजट में भी राजकोषीय घाटा जीडीपी के 4 से 5 प्रतिशत के बीच रह सकता है। ऐसे में देश में कुल राजकोषीय घाटा 10 से 11 प्रतिशत तक पहुंच सकता है।

लेकिन समय की मांग है कि अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु सभी प्रकार के प्रयास किए जाएं। कुछ समय तक एफआरबीएम एक्ट को स्थगित रखते हुए देश की अर्थव्यवस्था को गति देना जरूरी होगा। वित्तमंत्री इस बात को समझती हैं और आशा की जा सकती है कि जहां महामारी से प्रभावित वर्गों को सरकारी बजट का समर्थन मिलेगा, अर्थव्यवस्था को गति देने हेतु प्रयासों में कोई कंजूसी नहीं की जाएगी। वर्षों से चीन से सस्ते आयातों की मार झेल रही अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता और 'वोकल फॉर लोकल' का संकल्प एक नई दिशा और ऊर्जा देगा और यह बजट उस दिशा में मील का पत्थर साबित होगा।

संपादक

इस अंक में

स्वामी विवेकानंद का व्यंजन प्रेम–डॉ० अमरेन्द्र कुमार 1

महात्मा गाँधी के भारत में शुरूआती दौर के आन्दोलन (1917-1918)–मोहन लाल 4

अमरकांत का उपन्यास साहित्य : अभिव्यक्ति कौशल संबंधी परम्परागत एवं नवीन प्रयोगों की अवधारणा
–डॉ० यदुवीर सिंह खिरवार; श्रीमती रेणु बाई 8

नई शिक्षा नीति में संस्कृत भाषा की उपादेयता–डॉ० उषा नागर 13

पुलिस प्रशासन-संगठन, समस्या और सुझाव–डॉ० शेषाराम मीणा 18

वैदिक वाङ्मय में अर्थचिन्तन–डॉ० आशा सिंह रावत 23

नाटककार भवभूति की कृतियों में पर्यावरण चिन्तन–डॉ० बाबूलाल मीना 30

गाँधी के सर्वोदय दर्शन में विकेन्द्रीकरण की अवधारणा–आशीष कुमार सिंह 36

राजनीतिक सामाजीकरण एवं विकास : एक अध्ययन–कृष्णा बैठा 39

सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में पारिवारिक वातावरण का छात्रों की अध्ययन आदतों के संबंध का अध्ययन–मनु सिंह; डॉ० मंजू शर्मा 44

ग्रामीण महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता की समीक्षा–किरण कुमारी; डॉ० संजय बुंदेला 48

महिलाओं द्वारा अपने प्रति होने वाले अपराधों के प्रतिकार की स्थिति–श्रीमती श्वेता चतुर्वेदी; डॉ० श्रीमती रीना तिवारी 51

बौद्धिक सम्पदा का अधिकार और इसके संरक्षण के प्रयास–जितेन्द्र भारती 55

वेदों में ज्योतिर्विज्ञान–डॉ० भगवानदास जोशी 58

नई शिक्षा नीति में गृह विज्ञान शिक्षा का भविष्य–डॉ० आभा रानी 63

शैक्षिक नीतिशास्त्र का स्वरूप और विचार–अजय कुमार पटेल 66

अमरकंटक अंचल में पर्यटन की संभावना एवं विकास–निर्मला तिवारी; डॉ० रीता पाण्डेय; प्रो० आभा रूपेंद्र पाल 69

बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास–शशि शेखर द्विवेदी; मनीष कांत 78

मुगलकालीन विदेशी यात्रियों की दृष्टि में भारतीय महिलाओं की स्थिति–आशु त्यागी 84

स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 88

मुक्ति प्राप्ति का भक्ति-मार्ग–डॉ० सुनील कुमार शुक्ल 90

विश्वशान्ति: स्वधर्म एक माध्यम–डॉ० क्षमा तिवारी 93

उ०प्र० में बौद्ध स्थलों पर पर्यटन प्रतिरूप का एक प्रतीक अध्ययन–डॉ० अनूप कुमार सिंह 97

संयुक्त राष्ट्रसंघ और सामूहिक सुरक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० लवलेश कुमार 101

हिन्दी उपन्यासों में चित्रित जनजातीय जीवन में बंधुआ मजदूरी एवं बेगारी की समस्या–डॉ० उमेश कुमार पाण्डेय 103

प्राथमिक शिक्षक एवं कक्षा-कक्ष : एक चुनौती–डॉ० राकेश कुमार डेविड; डॉ० संजीत कुमार साहू; डॉ० शोभना झा 106

कोरोना वैश्विक महामारी के काल में भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–अर्चना कुमारी 109

'समकालीन सामाजिक परिदृष्य में प्रत्ययवाद का महत्व'–डॉ० ब्रिजेन्द्र कुमार त्रिपाठी 112

आधुनिक समाज में माता-पिता की महत्वाकांक्षा और बच्चों की मानसिक स्थिति: एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० रूमा कुमारी सिन्हा 114

लाल शकरकंद : अनाज का विकल्प–डॉ० शिखा चौधरी 116

कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न–डॉ० ज्योति गौतम 119

बौद्ध वाङ्मय और बुद्ध की प्रासंगिकता–अर्चना 122

लोक साहित्य में विरहाभिव्यक्ति–श्रीमती अर्चना वर्मा; श्रीमती लक्ष्मी देवी 125

इतिहास के आइने में स्त्री विमर्श–डॉ० शैलेन्द्र सिंह 129

स्वयंभू रचित पउमचरिउ में स्त्री चेतना–कुमकुम पाण्डेय 132

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ और दलितों की भागीदारी–लाल चन्द पाल 135

शोषण मुक्ति हेतु संघर्षरत : स्त्री जीवन (दलित आत्मकथाओं के संदर्भ में)–आशीष खरे; डॉ० ज्योति गौतम 139

सोनांचल की जनजातीय संस्कृति : समस्याएँ एवं समाधान–अवन्तिका 143
वैदिक भूगोल के आलोक में संसाधन संरक्षण की संकल्पना की विवेचना–डॉ० रत्नेश शुक्ल; रोहणी तिवारी 147
वैज्ञानिक सामाजिक व्यवस्था में सांस्कृतिक संघर्ष–डॉ० शाद अहमद 152
हिन्दी आलोचना में डॉ. देवीशंकर अवस्थी का कथा क्षेत्र में योगदान–पवन कुमार वर्मा 155
प्रेमचन्द की पत्रकारिता और जीवन दृष्टि–डॉ० नलिनी सिंह 158
उदयपुर जिले की देवास परियोजना का जनजातिय जनसंख्या के सन्दर्भ में पारिस्थितिकीय अध्ययन–रणवीर ठौलिया 161
पश्चिमी राजस्थान के आदिमवर्गों के आर्थिक विकास में इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना का योगदान (विशेष संदर्भ : भील) –डॉ० अश्वनी आर्य; गजेन्द्र शेखावत 166
भारत में बाल मानव अधिकारों का संरक्षण: एक अनुशीलन–सहदेव सिंह चौधरी 171
70 वर्षों में मानव अधिकार की उपलब्धियां एवं चुनौतियां–डॉ० ऋतेश भारद्वाज 176
शिक्षा और समाज का अन्त:सम्बंध–डॉ० निशा वालिया 181
बिहार में सामाजिक आन्दोलन के उभरते लहर (1960-2015) : एक अध्ययन–विजया वैजयंती 184
स्वास्थ्य सुविधाओं के क्रियान्वयन में भौगोलिक परिदृश्य की भूमिका–आशीष कुमार शुक्ल 188
कोविड-19 के दौर में भारत-नेपाल संबंध–आशुतोष कुमार 190
भारत एवं हिन्द महासागर की भू-राजनीति–सत्येन्द्र सिंह 194
भारतीय संस्कृति और तुलसीदास–डॉ० संजय कुमार; डॉ० सरिता 198
भवानी प्रसाद मिश्र की प्रतिनिधि कविताओं में गाँधी-दर्शन–डॉ० (श्रीमती) सविता मिश्रा; अंतिमा गुप्ता 201
वर्तमान परिदृष्य में हरियाणा के परम्परागत माध्यमों के प्रति सामाजिक प्रतिक्रिया–डॉ० दिलावर सिंह 205
कोरोना संकट में सेक्स वर्कर्स के मानवाधिकार–डॉ० पिंकी पुनिया 209
रायपुर संभाग में कृषि उपज मंडियों की कार्य प्रणाली का अवलोकन–डॉ० गिरजा शंकर गुप्ता 214
श्रीमद्भागवत के अनुसार ऋषियों की कथाओं का अध्ययन–सीमा चिनप्पा; डॉ० वेदप्रकाश मिश्र 217
देश के युवाओं के लिए आई.टी.आई. एवं पॉलिटेक्निक पाठ्यक्रमों का महत्व–शिवानी सिंह 222
नारी शोषण के विविध आयाम: संदर्भ गुनाह बेगुनाह–काजल 225
मध्य प्रदेश की गोड़ जनजाति चित्रकला में सूर्योपासना–डॉ० शैलेन्द्र कुमार 227
कुषाण काल में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी–डॉ० प्रदीप कुमार 229
भारतीय लोकतंत्र के लिए खतरा : पेड न्यूज–अनिल कुमार यादव 233
21वीं सदी के नवगीतकारों में सामाजिक चेतना : वीरेन्द्र आस्तिक, रामनारायण रमण एवं रमाकांत के संदर्भ में–डॉ० रामरती; ममता 237
वर्तमान में संयुक्त राष्ट्रसंघ की प्रासंगिकता–मिथिलेश 242
भारत में नगरीय जीवन एवं सांस्कृतिक चुनौतियां : एक भौगोलिक अध्ययन–गोविन्द सिंह 244
इक्कीसवीं सदी के उपन्यासों में महानगरीय जीवन–डॉ० निशा जम्वाल 250
पंचायती राज में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता–एक विमर्श : समस्या, समाधान–अनिता कंवर 252
माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन (मुजफ्फरपुर जिले के विशेष संदर्भ में) –प्रतिभा सिंह; डॉ० पी० एन० मिश्र 257
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की हिन्दी भाषा में उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन –वैशाली उनियाल; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 260
राजा राममोहन राय के सामाजिक सुधारों की मानवीय चेतना–अनिकेत पीयुष सिंह 266
औद्योगिक विकास एवं पर्यावरण प्रदूषण (अलवर जिले के संदर्भ में)–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 269
पैतृक संपत्ति में उत्तराधिकार पर हिंदू महिलाओं के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन–आभा मिश्रा; डॉ० विजय कुमार वर्मा 272
उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् छात्रों के शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम के प्रति दृष्टिकोण पर शिक्षण रूचि के प्रभाव का अध्ययन –ज्योत्सना रमोला; प्रो० (डॉ०) सुरेश चन्द्र पचौरी 278
बिहार के राजनीतिक इतिहास में सत्येन्द्र नारायण सिंह का योगदान–डॉ० संदीप कुमार 285
अखिलेश कृत 'निर्वासन' उपन्यास में विस्थापन की समस्या–सपना रानी 289

पूर्वोत्तर की आदिवासी कहानियों में अभिव्यक्त सामयिक प्रश्न–चेतन कुमार 291
बाल-मनोविज्ञान और विज्ञापन : व्यावहारिक अंत: संबंध–शुभांगी 293
मंजूर एहतेशाम के उपन्यासों में असामाजिक तत्त्व और साम्प्रदायिकता–सुमन देवी 302
कोविड़ 19 के दौरान मोहल्ला क्लास के प्रति प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों का प्रत्यक्षीकरण–डॉ० चन्द्रा चौधरी 305
हिन्दी व्यंग्य और आधुनिक व्यंग्यकार–बिन्दु डनसेना; डॉ० बी० एन० जागृत 308
गुणात्मक शिक्षा के उन्नयन में शिक्षकों के व्यावसायिक अभिवृत्ति की भूमिका–सुदर्शन सिंह; डॉ० स्वीटी श्रीवास्तव 310
लोक अदालत का गठन एवं कार्यकरण : एक विश्लेषण–वकील शर्मा 314
पुरुषार्थ अर्थ का स्वरूप और महत्त्व–डॉ० योगिता मकवाना 319
अपराध भूगोल के अध्ययन में भौगोलिक सूचना प्रणाली का उपयोग–राजकिरण चौधरी 322
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 326
सामाजिक उपन्यासकार के रूप में : नागार्जुन–डॉ० रेखा दुबे; ज्योति नरवाल 330
जलियांवाला बाग हत्याकांड के विविध आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ० कुमारी ज्योति 332
चौरी चौरा जनज्वार का राष्ट्रीय आयाम : एक पुनर्मूल्यांकन–डॉ० सर्वेश चंद्र शुक्ल 335
चौरी चौरा जनक्रांति में स्थानीय जनता तथा स्वयं सेवकों की भूमिका–अभिषेक कुमार तिवारी 339
पर्यावरण दर्शन और नैतिकता–मुकेश कुमार 342
गांधीवादी दृष्टि और आधुनिक राज्य की अवधारणा : एक अनुशीलन–डॉ० अभय कुमार सिंह 346
राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की चुनौतियां–सुनीता जांगिड 350
बुक्सा जनजाति और उनके असंतोष के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अवधेश कुमार; किन्नर विमर्श; सनोज पी आर 357
मुगलकाल में कार्यरत महिला शिल्पी वर्ग : कतनी/कत्तिनों के विशेष संदर्भ में–मनीषा मिश्रा; डॉ० अमिता शुक्ला 359
सुभद्रा कुमारी चौहान के साहित्य में सामाजिक एवं राष्ट्रीय चेतना की प्रासंगिकता–ललिता देवी 363
मृणाल पाण्डे के कथा साहित्य में सामाजिक एवं पारिवारिक संस्कारों का मूल्यांकन–आलोक कुमार तिवारी 366
नागार्जुन के रचना संसार में सौंदर्यबोध की प्रासंगिकता–संदीप कुमार 369
मानवता का उद्घोष और छायावादी रचना संसार–संजीव कुमार पाण्डेय 371
रमेशचन्द्र शाह का सबद निरंतर में आलोचनात्मक दृष्टि का मूल्यांकन–कृपा शंकर 374
महिला सशक्तिकरण मे राष्ट्रीय महिला आयोग की भूमिका : एक अध्ययन–डॉ० अजित कुमार पाठक 376
स्त्री विमर्श: अर्थ एवं अर्थव्याप्ति–कुमारी अंजना 379
भारत में मानवाधिकार और लोकतंत्र: एक राजनीतिक विश्लेषण–फरीद आलम 381
संत कवि रैदास की वाणी में मानवतावाद–डॉ० मुकेश कुमार 385
प्रवासी हिंदी साहित्य में स्त्री कथाकारों की मानवीय चेतना–प्रो० रमेश के० पर्वती 389
छत्तीसगढ़ के श्रमिकों में कोविड माहामारी के दौरान पलायन एंव चुनौतियां (रायपुर संभाग के विशेष संदर्भ में)
–संजय कुमार जांगडे; श्रीमति डॉ० रीना तिवारी 391
राम की शक्ति-पूजा : निराला व राम के संघर्ष की गाथा–प्रो० मन्जुनाथ एन० अंविग 397
कोरोना काल में उत्पन्न तनाव को दूर करने में योग करने की भूमिका–तिलकराज गौड़; डॉ० शालीनी यादव 400
भारत एक कल्याणकारी राज्य के रूप में : एक अनुशीलन–मो० जाहिद शरीफ 405
भारतीय समाज में वृद्ध लोगों की दशा–घनश्याम 408
पर्यावरण संरक्षण एवं भारतीय दर्शन–मयंक भारती 411
दक्षेस : महत्वपूर्ण पड़ाव व वर्तमान प्रासंगिकता–संजय कुमार 414
प्राणायाम : सर्वांगीण विकास का आधार–सुशील कुमार 418
ओटीटी प्लेटफॉर्म का युवाओं पर प्रभाव (एक अध्ययन: दिल्ली के विशेष संदर्भ में)–हर्षवर्धन 422
भूमण्डलीकरण के दौर में लोकधर्मी कविता का संघर्ष–रंजना कुमारी गुप्ता 426
समाज सुधार की दृष्टि से तंज कसती भारतेंदु युगीन व्यंग्य–काजल कुमारी सिंह 431
संस्कृतसाहित्ये व्यक्तिविवेकस्य स्थानम्–डॉ० सुमन कुमारी; डॉ० रामजी मेहता 434

आज का पूँजीवाद और उसका उत्तर आधुनिकतावाद–मन्नु कुमार शर्मा 437
पुरुष एवं महिला बी.एड. प्रशिक्षुओं के आत्मसम्प्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन–अभिषेक दुबे; डॉ० (श्रीमती) स्मिता मिश्रा 441
भारत की संसद और राष्ट्रपति मिलकर क्या धारा 370 और आर्टिकल 35A को हटाने की शक्ति रखते हैं?–डॉ० रीता कुमारी 444
काव्य प्रयोजन की साहित्यिक अवधारणा का अध्ययन–डॉ० हेमन्त सिंह कंवर 448
लोक व मिथकीय संरचना में गिरीश करनाड का नाटक हयवदन–सुनील कुमार 451
छत्तीसगढ़ी लोकगाथा की परम्परा में वीरांगना बिलासा केंवटिन–श्री मिथलेश सिंह राजपूत; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 455
सामाजिक न्याय : अवधारणा एवं सिद्धान्त–डॉ० पूरण मल बैरवा; महेन्द्र प्रताप बाँयला 460
प्राचीन भारत में स्त्री-शिक्षा (प्रारम्भ से बारहवीं शताब्दी ईस्वी तक)–सीमा जांगिड़ 468
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत लोकप्रिय एवं एकाकी विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों का अध्ययन–प्रमोद कुमार वर्मा; डॉ० मृदुला भदौरिया 476
हास्य एवं व्यंग्य का प्रतिरूप सिरमौरी लोक गायन शैली शिटणा–प्रो० पी०एन० बंसल; विनोद कुमार 482
भारत में आत्मनिर्भरता से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का उन्नयन–डॉ० सौरभ मालवीय 487
वैश्वीकरण एवं बदलते सामाजिक सांस्कृतिक प्रतिमान (एक विश्लेषणात्मक अध्ययन)–डॉ० मंजु नावरिया 491
सिद्धरामेश्वर : वीरशैव आंदोलन के प्रभावी शिवशरण–डॉ० अंबादास केत 496
हिन्दी कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन–डॉ० रमेश एस० जगताप 500
बाल श्रम-एक विश्लेषण–सतीश कुमार 503
भूमण्डीलकरण और जल, जंगल, जमीन का प्रश्न–डॉ० विनोद मीना 512
आधुनिक वैश्विक परिस्थितियों में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता–डॉ० हरदीप सिंह 516
एम.एन. राय का नव मानववाद: एक विश्लेषण–सोनी कुमारी 520
नारी-स्वातंत्र्य के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर की कहानियाँ–सुधा कनकानवर; डा० श्रीनिवास मूर्ति 523
गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के सन्दर्भ में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० सुषमा सिंह; राजपाल सिंह यादव 526
मनोहर श्याम जोशी का उपन्यास शिल्प : यथार्थवादी बिम्ब का जादुई-अवबोध–डॉ० संजय कुमार लक्की; रमेश चन्द सैनी 531
लोकपाल की भ्रष्टाचार निवारण में सार्थकता–डॉ० योगेन्द्र कुमार धुर्वे 535
दलितों के शैक्षिक उत्थान में डॉ. भीमराव अम्बेडकर का अवदान–सरिता; प्रो० बी०एल० जैन 538
गाँधीवादी दर्शन में शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का स्थान–सोमेश गुंजन 541
आचार्य क्षेमेन्द्र द्वारा प्रतिपादित औचित्य विमर्श–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; गुंजन 543
आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन-अहिंसा एवं विश्व शांति और लोकतंत्र सुधार–डॉ० इन्दु तिवारी 547
पंडित विद्यानिवास मिश्र के निबन्धों में ग्रामीण संस्कृति–अनिरुद्ध कुमार 550
ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना से बदलता परिदृश्य का एक अध्ययन: आलीराजपुर जिले के सन्दर्भ में –डॉ० डुंगरसिंह मुजाल्दा 553
जूनियर हाईस्कूल में अध्ययनरत दृष्टिबाधित एवं सामान्य बालकों के समायोजन एवं व्यक्तित्व का उनकी शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्ध का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रशान्त शुक्ला 563
हिदी कथा साहित्य में अभिव्यंजित दिव्यांग या विकलांग पात्रों की समस्याओं का विश्लेषण–डॉ० प्रेरणा गौड़ 568
हेमचंद्राचार्य कृत योग-शास्त्र में आसन विमर्श–डॉ० धीरज प्रकाश जोशी 571
प्राकृतिक आपदाओं का कृषकों के जीवन पर प्रभाव : मनरेगा एक विकल्प – समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सौम्या शंकर; सुनील कुमार 573
शैक्षिक उपलब्धि परसंवेगात्मक बुद्धिका प्रभाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० वन्दना चतुर्वेदी; शिव नारायण 584
भारतीय अर्थव्यवस्था में ई-व्यवसाय की भूमिका एवं प्रभावशीलता का अध्ययन–पूजा जैन 588
मालती जोशी की कहानियों में नारी चित्रण–डायमंड साहू; डॉ० रमणी चंद्राकर 591
युवाओं में नए मीडिया की भूमिका का अध्ययन–डॉ० मधुदीप सिंह; हिमांशु छाबडा 594
किशोर अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों में शैक्षिक समस्याओं पर एक अध्ययन–डॉ० रिया तिवारी; श्री डोमार यादव 600
वैश्वीकरण और इलैक्ट्रानिक बैंकिग सेवाओं की उपयोगिता–डॉ० संजय खत्री 606
छत्तीसगढ़ी भाषा : दशा एवं दिशा–डॉ० आंचल श्रीवास्तव; विवेक तिवारी 608

तुलसीदास की समन्वय भावना–डॉ० राजमोहिनी सागर 613
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गौं का महत्व–डॉ० चन्द्र कान्त पांडा 617
वैयक्तिक अनन्यता की समस्या (Problem of Personal Identity)–ऋषिकेश चौहान 626
वर्तमान परिवेश में ई-गवर्नेंस द्वारा प्रशासनिक सुधार एवं सुशासन पर प्रभाव–चन्दना शर्मा 629
वाल्मीकि महिलाओं का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक परिदृष्य; हरियाणा के नूंह जिले के विशेष सन्दर्भ में–दीपक 632
आज की आलोचना के समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० आस्था दीवान 638
जम्मू - कश्मीर के क्षेत्र के लिए विकास की संभावनाएं–डॉ० अभिषेक आनन्द 640
संस्कृत साहित्य में वर्णित मानव चक्र–डॉ० दीप्ति बाजपेयी; कु० संजू नागर 644
हिन्दी काव्य और उत्तरआधुनिकता–डॉ० तारु एस० पवार 647
शिक्षा के क्षेत्र में न्यू मीडिया का उपयोग: एक अध्ययन (सिरसा के महाविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों के सन्दर्भ)
–डॉ० अमित सांगवान; विनोद कुमार 650
काव्य प्रक्रिया में दिवास्वप्न से गुजरता हुआ कवि नरेंद्र मोहन–डॉ० सुभाष चंद्र डबास 'चौधरी' 655
भारतीय जीवनाधार: कर्मवाद:–डॉ० हिमा गुप्ता 657
आई०एम० क्रौम्बी के अनुसार धार्मिक भाषा का स्वरुप : एक विश्लेषण–डॉ० स्मिता सिंह 660
हिमालय के खस : उत्तराखंड में आर्य जातियों में समाहित होते खस इतिहास के पन्नों में हाशिए पर–डॉ० हरीश चंद्र लखेड़ा 665
स्वच्छ भारत अभियान के प्रचार प्रसार में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० अनिल कुमार 668
आधुनिक भारत में डॉ. अम्बेडकर के धर्मान्तरण का औचित्य–डॉ० युवराज कुमार 672
आरटीआई: प्रभावी शासन का एक औजार–डॉ० ऋचा सिंह 679
"..किसी के जाने के बाद, करे फिर उसकी याद, छोटी-छोटी सी बात" (फिल्मकार बासु चटर्जी से गोकुल क्षीरसागर की बातचीत)
–डॉ० गोकुल क्षीरसागर 684
करोना महामारी और प्रसाद के काव्य की मानवतावादी भावना–डॉ० बिजेंद्र कुमार 687
गंगाराम राजी के कथा साहित्य में चित्रित सामाजिक सरोकार–सुनीता; डॉ० रामरती 692
गोंड जनजाति के प्रमुख संस्कार–डॉ० पियुष कुमार सिंह 695
जयश्री रॉय के उपन्यासों में नारी शोषण–भावना देवी 697
पुरुष की संक्रीण मानसिकता के कारण विवाहोपरांत दाम्पत्य-संबंधों में बिखराव को मार्मिक ढ़ंग से चित्रित करता
सुनीता जैन का उपन्यास "बिंदु"–नीलम देवी 699
बाल धरोहर एवं समाज कल्याण–डॉ० शिवसिंह बघेल; डॉ० के० बालराजु 703
गीतांजलि श्री के माई उपन्यास में चित्रित समस्याएँ–वीना 707
जिला रीवा के उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के सामाजिक प्रेरकों एवं शैक्षिक आकांक्षा के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन
–राजेश कुमार यादव; डॉ० पतंजलि मिश्र 709
नई कविता में सौंदर्य-चेतना–डॉ० संतोष धोत्रे 713
भारत - राष्ट्र राज्य बनाम सभ्यतामूलक राज्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश खरे 717
मध्य एशिया में चीन-रूस संबंध: सहयोग और अविश्वास–गुरदीप सिंह 720
मानवाधिकार और आदिवासी–प्रो० प्रशांत देशपांडे 724
महाविद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक प्रशिक्षकों की सेवा संतुष्टि की भूमिका–अश्वनी कुमार मिश्र; डॉ० सुनील कुमार सेन 729
रीवा जिले में बी०एड० एवं डी०एल०एड० प्रशिक्षुओं की मानवाधिकार जागरूकता का उनकी जीवन शैली से सम्बन्ध का अध्ययन
–अरूण कुमार; डॉ० पतंजलि मिश्र 732
भारतीय बैंकिंग में ग्राहक शिकायत निवारण नीति–रमनदीप कौर 736
विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना के लिए शिक्षा का महत्त्व–डॉ० श्रवण कुमार; डॉ० गिरीश कुमार द्विवेदी 740
वेदों के विषय में आचार्य सायण एवं महर्षि दयानन्द का दृष्टिकोण–सुनील कुमार 743
जूड़ो में स्थिर संतुलन पर वजन वर्ग का प्रभाव–चन्द्रशेखर बांधें; डॉ० राजीव चौधरी 749
बंगला काव्य और गांधी जी–डॉ० राम बिनोद रे 754

मानव जीवन में वनस्पतियों का महत्व (वैदिक साहित्य के आलोक में)–डॉ० दीप्ति वाजपेयी; कु० मोनिका सिंघानिया 760
वैदिक काल में स्थानीय - प्रशासन का विकास–डॉ० रितु तिवारी 764
साहित्य में थर्ड जेंडर: हाशिये की दुनिया–कृष्णा कुमारी 767
निराश्रित एवं पारिवारिक किशोर विद्यार्थियों में "आत्मविश्वास"–श्रीकृष्ण जांगिड़; डॉ० अखिलेश जोशी 770
सांसद निधि के उपयोग में पारदर्शिता का अध्ययन–यशोदा पटेल; डॉ० आयशा अहमद 774
मन्नू भंडारी की कहानियों में नए जीवन मूल्यों का चित्रण–प्रा० डॉ० दिग्विजय टेंगसे 777
आधुनिक जीवन शैली में योगाष्टाङ्गों का महत्व–डॉ० चंद्रकांत पंडा 780
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का अनुशीलन–अजय कुमार 788
हिन्दी साहित्य में ललित निबंधों की मौलिकता–प्रदीप कुमार तिवारी 792
घनानंद काव्य का भाषा-शिल्प सौन्दर्य–डॉ० तृप्ता 795
भारत में सु-शासन और उसके समक्ष चुनौतियाँ–डॉ० सुरेन्द्र मिश्र 798
आर्थिक विकास बनाम संस्कृति और पर्यावरण : भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–एन राजेन्द्र सिंह 804
महात्मा गांधी की ग्राम-स्वराज्य की अवधारणा : एक अध्ययन–मोनिका भाटी 808
समकालीन काव्य सृष्टि में पर्यावरण दृष्टि–शाहिद हुसैन; डॉ० श्रद्धा हिरकने 811
योग-शिक्षा की अभिनव विधियाँ: हिंदी-भाषी यौगिक-वर्णमाला-चार्ट की रचना एवं परिवर्धन–मनीष कुमार; पूनम पंवार; परन गौड़ा 816
जगदीश चंद्र माथुर के नाटकों में समाज में नारी का महत्व–स्मिता शर्मा; डॉ० चित्रा 826
बेरोजगारी की राजनीतिक-यथार्थ (अखिलेश के 'अन्वेषण' उपन्यास के संदर्भ में)–बर्नाली नाथ 829
भारतीय उपभोक्ता और उत्पाद एवं सेवा प्रदाता कंपनियों के अंर्तसंबंधों में डिजिटल मीडिया की भूमिका–डॉ० आदित्य कुमार मिश्रा 832
भारतीय लोकतंत्र में दल और दलबदल की राजनीति–डॉ० रविन्द्र सिंह राठौड़; प्रो० अनिल धर 836
उत्तराखण्ड राज्य में पर्यटन शिक्षा, कौशल विकास एवं क्षमता संवर्धन- वर्तमान परिदृश्य, भावी चुनौतियां एवं अवसर
–डॉ० संजय सिंह महर; डॉ० हेमंत बिष्ट 840
छत्रपति शिवाजी महाराज के दृष्टिकोण से स्त्री–डॉ० हेमलता काटे 854
भ्रष्टाचार से लड़ाई और अन्ना हजारे का नेतृत्व–आलोक तिर्की 857
राजनीतिक-जागरुकता की शक्ति एवं महत्त्व–हामिद अली 860
भारतीय लोकतंत्र में मतदान प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक: एक अध्ययन–डॉ० जोनी इम्मानुएल तिरकी 863
बिहार की राजनीति में बदलाव की अपेक्षाएँ: एक अध्ययन–कृष्णदेव राय 866
बिहार में सुशासन और दलित सशक्तिकरण : एक अध्ययन–प्रभात आनन्द 868
केन्द्र - राज्य सम्बंध : बदलते परिदृश्य–चन्द्रभान सिंह 872
विमर्श एवं विद्या केंद्रित आलोचना–श्रीमति मीतू बरसैंया; डॉ० श्रीमती आँचल श्रीवास्तव 878
विकसित और विकासशील राष्ट्रों में बुजुर्गों की देखभाल: एक तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य–डॉ० स्मिता राय; डॉ० भूपेन्द्र बहादुर सिंह 881
भिण्ड अंचल की सामाजिक व्यवस्था का इतिहास : एक अध्ययन–डॉ० शालिनी गुप्ता 886
जनजातीय समुदाय में तीज त्यौहार एवं परिवर्तन का विश्लेषण (छ.ग. राज्य की मुरिया जनजाति के विशेष संदर्भ में)–डॉ० ममता रात्रे 890
स्वामी विवेकानन्द : सामाजिक विचारक के रूप में–प्रेमलता 893
संस्कृत नाट्यशास्त्र पर कालिदास की शैली का प्रभाव–डॉ० अवधेश कुमार यादव 895
पितृसत्तात्मक व्यवस्था और नारी : अप्प दीपो भव–डॉ० जागीर नागर 898
समाज में निरन्तर दोयम दर्जे की अनुभूति–डॉ० प्रदीप कुमार सिंह 903
पंजाब नाटशाला : नाट्य मंचन का राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय रंगमंच–डॉ० सुनीता शर्मा 909
विद्यार्थियों में परीक्षा दबाव को कम करने में योग व ध्यान की भूमिका–शैली गुप्ता; डॉ० मंजू शर्मा 914
शोभाकरेण अलङ्कारसर्वस्वखण्डनं जयरथमतमण्डनञ्च–डॉ० प्रीतम रुज 916
हिंदी आलोचना का समकालीन परिदृश्य–अमित डोगरा 921
प्रेमचंद पूर्व कहानियों की परम्परा–डॉ० नारायण 924
स्वातंत्र्योत्तर भारत के सामाजिक एवं राजनीतिक पुनर्जागरण में लोकनायक जयप्रकाश नारायण की संपूर्ण क्रांति का अवदान–डॉ० आरती कुमारी 929

भूमंडलीकरण के दौर में भारतीय भाषाओं की भूमिका–डॉ० गीता सहाय 932
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० गवित माधव हरि; गोपाले यशवंत काशीनाथ 934
नई शिक्षा नीति और प्रक्रिया उम्मीद : चिकित्सक अध्ययन–डॉ० कविता सालुंके 936
नई शिक्षा नीति 2020–डॉ० बबीता बी० शुक्ला 939
शिक्षा पर डॉ. बाबासाहेब अम्बेडकर के बुनियादी विचार–डॉ० नागोराव शालिग्राम डोंगरे 943
नए श्रम कानून का सामाजिक प्रभाव–डॉ० माधव के० वाघमारे 946
नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020: एक दृष्टिक्षेप–श्रीमती थोरात अनिता भास्कर 949
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020–डॉ० रंजना राजेश सोनावने 952
चिकित्सकों के बीच भावनात्मक बुद्धि में लिंगभेद का अध्ययन–डॉ० साहेबराव यू० अहिरे; डॉ० जी० बी० चौधरी 955
नई शिक्षा नीति - 2020 और नए श्रमिक कानून: नई शिक्षा नीति 2020 का डी. एड्. व बी. एड्. कोर्सेस पर प्रभाव: एक अनुशीलन–डॉ० अमोल शिवाजी चव्हाण 959
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का शिक्षको को सक्षम बनाने मे योगदान–प्रताप भाऊसाहेब आत्रे 964
चित्रा मुद्गल कृत उपन्यास 'एक जमीन अपनी' में नारी जीवन (विज्ञापन जगत के सन्दर्भ में)–डॉ० शशी पालीवाल 967
भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ग्रामीण पर्यटन का प्रभाव–अनूप कुमार सिंह 971
श्रीलाल शुक्ल कृत उपन्यास अज्ञातवास में ग्रामीण एवं शहरी जीवन : एक अध्ययन–डॉ० अखिलेश कुमार वर्मा 974
परमार अभिलेखों में संदर्भित स्थलाकृतियों से सम्बन्धित स्थलनाम एवं उनका अभिधान–डॉ० रागिनी राय 977
मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री अस्मिता : एक दृष्टि–डॉ० शिवा श्रीवास्तव 981
वित्तीय समावेशन की ग्रामीण रोजगार में भूमिका : एक दृष्टि–उज्ज्वल चतुर्वेदी 985
न्यू मीडिया की नजर से कोविड-19 से जूझते परिदृश्य में शिक्षा जगत का बदलता परिदृश्य–डॉ० शैलेश शुक्ला 988
चार्वाक दर्शन–डॉ० सरोज राम 993
असगर वजाहत व्यक्तित्व-कृतित्व–रमेश नारायण; डॉ० सविता तिवारी 997
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रकृति का स्थाई अस्तित्व–डॉ० मधु दीप सिंह; जितेंद्र सिंह 1002
भारत में अपार्टमेन्ट संस्कृति की यात्रा : समाजशास्त्रीय पाठ–डॉ० विमल कुमार लहरी 1010
आदिवासी विमर्श–डॉ० नसरीन जान 1014
राजस्थान मे बढ़ती किसान आत्महत्या के कारण व निवारण: एक अध्ययन–डॉ० मंजु यादव; राजेन्द्र कुमार मीणा 1016
राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में मानवाधिकार–डॉ० मौहम्मद अबीर उद्दीन 1019
स्ववित्तपोशित सहशिक्षा एवं महिला शिक्षा संस्थानों में कार्यरत महिला अध्यापिकाओं की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन –अखिलेश कुमार मौर्य 1022
निजी और सरकारी स्कूलों के शिक्षकों में नौकरी संतुष्टि और शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य पर कार्य दबाव के प्रभाव –अलका तिवारी; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1026
ब्रज चौरासी कोस यात्रा : आधुनिक परिपेक्ष में–डॉ० अम्बिका उपाध्याय 1029
आदिवासी देवी अंगारमोती : ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में–कु० शोभना देवी सेन; डॉ० बन्सो नुरूटी 1033
हिंदी कहानी में वृद्ध विमर्श–डॉ० भगत गोकुल महादेव 1039
भारत की जनजातियों मे जीवन साथी चुनने की विधियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० हरिचरण मीना 1041
स्ववित्तपोशित एवं अनुदानित शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षणरत प्रशिक्षुओं के सांवेगिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन–कृपा शंकर यादव 1044
उच्चतर माध्यमिक स्तर के कक्षा 11 के विद्यार्थियों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता का अध्ययन–कुसुम देवी 1050
भारत और नेपाल संबंध–डॉ० वंदना वाजपेयी 1053
महाभोज : परत दर परत टूटता विश्वास–विनोद कुमार; प्रो० डॉ० मिन्तु 1057
अरुण कमल की कविताओं में नव युगबोध–मिथिलेश कुमार मिश्र 1060
अनाथ व सनाथ छात्रों के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक समस्याओं और शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन –कुलदीप; डॉ० कालिंदी लाल चंदानी 1063
पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र' के साहित्य में सामाजिक चेतना–मुरली सिंह ठाकुर; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1068

उच्च माध्यमिक स्तर के महिला शिक्षकों में जीवन कौशल के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन–प्रो० मंजू शर्मा; मधु देवी 1072
वीर रानी के रूप में रुद्रमा देवी का मूल्यांकन–प्रो० देवेंद्र कुमार गुप्ता; सुमिति सैनी 1078
हिन्दू परिवार में आधुनिक परिवर्तन : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० प्रियंका नीरज रूवाली; वन्दना सिंह 1081
अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के लिए किए गये सरकारी प्रयास एवं वर्तमान स्थिति–अच्युत कुमार यादव 1086
असमिया साहित्य में रोमांटिसिज्म के प्रभाव (चंद्रकुमार आगरवाला के कविताओं के विशेष संदर्भ में)–दिगंत बोरा 1090
असाध्य वीणा का सामाजिक पाठ–डॉ० आकाश वर्मा 1094
कोरोना महामारी काल में पुस्तकालयों में डिजिटल तकनीकों का महत्व और उपयोग–डॉ० संजय डी० रायबोले 1098
असम का लोकनाट्य: पुतलाभिनय या पुतला नृत्य–डॉ० परिस्मिता बरदलै 1101
भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री–डॉ० आकाश वर्मा 1104
"स्माल सिनेमा" बनाम "मालेगांव का सिनेमा"–डॉ० मनीष कुमार मिश्रा 1110
विश्वशांति बनाए रखने में विभिन्न धर्मों की भूमिका–डॉ० सुनिता कुमारी 1115
दलित चेतना का प्रतीक झलकारी बाई: एक अनुशीलन–बबली कुमारी 1118
भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में जनसंचार की भूमिका–देवेन्दु आलोक 1122
चम्पारण के नील संघर्ष में गांधीजी की भूमिका: एक ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन–धीरज कुमार 1126
रबीन्द्रनाथ टैगोर और महात्मा गांधी: एक शैक्षणिक स्थिति से शिक्षा पर उनके प्रभाव–गुड्डू कुमार सिंह; डॉ० अलका कुमारी 1131
भूगोल में फेनोमेनॉलॉजी : एक चिन्तन फलक–डॉ० श्री कमलजी 1138
बदलते परिवेश में मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श के विविध आयाम–प्रोफेसर लता सुमन्त; प्रमोद कुमार सिंह 1140
नासिरा शर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व–प्रोफेसर लता सुमन्त; राजेश कुमार पटेल 1146
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में चित्रित नारी की राजनीतिक चेतना–डॉ० महेन्द्र कुमार त्रिपाठी; नीलम देवी 1151
बुद्ध दर्शन और पश्चिमी मनोविज्ञान–डॉ० मनोज कुमार 1154
गांधीजी का स्वराज एवं सत्याग्रह : रंग-भेद नीति के विरूद्व निर्णायक शस्त्र–निवेदिता कुमारी 1158
मुगल काल में इतिहास लेखन–डॉ० राघवेन्द्र यादव 1162
प्राचीन बिहार के बौद्ध महाविहार ओदन्तपुरी: एक शैक्षणिक अवलोकन–राहुल कुमार झा 1165
बिहार के पुराने गया जिले के क्षेत्र में नक्सलवादी गतिविधि–सचिन कुमार 1169
भारत की नई शिक्षा नीति - 2020 : आवश्यकता, प्रभाव एवं चुनौतियां–संजय हिरवे; आशुतोष पाण्डेय 1173
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में सुभाष चंद्र बोस की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–तौकीर आलम 1177
प्राचीन बिहार में राजतंत्र एवं गणतंत्र की अवस्थाएँ–डॉ० संजीव 1181
''जनहित याचिका'' मानवाधिकारों का संरक्षक : एक अध्ययन–दीपक कुमार कोठरीवाल 1183
प्रगतिशील आंदोलन की जागृति–डॉ० आशा तिवारी ओझा 1186
भारत में बाढ़ की समस्या और समाधान–डॉ० सीमा सहदेव 1189
भारत सहित अन्य देशों पर कोरोना वायरस का (कोविद-19) प्रभाव–श्रीमती मीनाक्षी 1195
रत्न आभूषण उद्योग : एक भू-आर्थिक विश्लेषण–अक्षय राज 1201
जीएसटी अवलोकन - भारत में माल और सेवा: जीएसटी आईटीसी–डॉ० अनामिका तिवारी; डॉ० संजय कुमार सिंह 1205
छत्तीसगढ़ कानून, नीतियां और न्यायिक दृष्टिकोण, पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण–आकांक्षा गर्ग अग्रवाल; डॉ० (प्रो०) जे० के० पटेल 1210
अष्ट चामुण्डा - अग्निपुराण के विशेष सन्दर्भ में–प्रो० प्रभात कुमार; कल्पना देवी 1216
पाणिनि अष्टाध्यायी में वर्णित जनपदीय कृषि का विवेचन–डॉ० प्रशान्त कुमार; डॉ० दुर्वेश कुमार 1221
रीति काल के अग्रदूत: महाकवि केशवदास–सोमबीर 1227
कार्यशील महिलाओं में प्रसव सम्बंधी निर्णायक क्षमता का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० सुशीला; कु० आरती 1230
भारतीय लोकतंत्र के संदर्भ में संसदीय सरकार की उपयोगिता–डॉ० जगबीर सिंह 1238
भारत में राजनीति के अपराधीकरण की समस्या–मुकेश देशवाल 1241
भारत में दो स्तर पर शासन की त्रिस्तरीय लोकतांत्रिक संरचना–सूर्यभान सिंह 1244
अलवर जिले में बदलता सिंचाई स्वरूप एवं उसका कृषि पर प्रभाव (2011 से 2018 तक)–जितेश कुमार घोरेठा; डॉ० राजेन्द्र प्रसाद 1250

भारत में संसदीय गरिमा का अवमूल्यन–महेश कुमार 1256
प्रधानमंत्री मोदी के तहत भारतीय विदेश नीति: निरंतरता और परिवर्तन–डॉ० जय कुमार झा 1259
मानव जीवन में भावनात्मक और संवेगात्मक मनोविज्ञान से जुड़े तथ्यों एवं सिद्धांतो की महत्ता: समीक्षा
–डॉ० जया भारती; डॉ० संदीप कुमार वर्मा 1262
भारत में जल संसाधन एवं जल संरक्षण की परम्परागत विधियों का शोधपरक अध्ययन–कविता 1266
मानवाधिकार : साहित्य की समग्र दृष्टि–डॉ० रूपेश कुमार चौहान 1271
निधर्नता उन्मूलन में मनरेगा कार्यक्रम की भूमिका : अनुसूचित जातियों के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० प्रियंका एन० रूवाली; उपमा द्विवेदी 1275
''उच्च शिक्षा स्तर पर महाविद्यालयी शिक्षा में ई-लर्निंग की प्रभावशीलता का अध्ययन''–प्रीति शर्मा; डॉ० मंजू शर्मा 1279
युवा एवं पंचायती राज संस्थाओं का शिक्षा और महिलाओं के सामाजिक विकास में भूमिका–श्वेता पांडेय; डॉ० मंजू शर्मा 1283
भारतीय राष्ट्रीय जागरण में स्वामी दयानन्द का योगदान–विकास 1287
आजादी के बाद के भारत में महिलाओं की स्थिति–डॉ० अनिल कुमार तेवतिया 1290
टेलीविजन संस्कृति और सामाजिक प्रतिबद्धता के अंतर्विरोध–डॉ० मधु लोमेश 1295
प्रगतिशील समाज में अवरोधित महिला शिक्षा–प्रो० (डॉ०) मंजू शर्मा; रुकमणी हसवाल 1298
विवेकी राय कृत उपन्यास शवेत-पत्र: एक ऐतिहासिक दस्तावेज–विभा रीन 1303
हिन्दी गद्य साहित्य में महिला लेखन का महत्त्व–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मंडल 1306
सुशासन की अवधारणा एवं व्यवहार : भारतीय शासन व्यवस्था के विशेष संदर्भ में–डॉ० सत्येन्द्र कुमार 1309
ग्रामीण सामाजिक परिवर्तन एवं विकास में पंचायतराज की भूमिका–डॉ० जयराम बैरवा 1312
प्राचीन भारतीय समाज में शिक्षा का महत्व–डॉ० विनय कुमार मिश्र 1317
अनामिका के उपन्यासों में स्त्री-जीवन की अभिव्यक्ति–स्वर्णिम शिप्रा 1322
पूर्वमध्यकाल में जातीय प्रगुणन–प्रवीण पाण्डेय 1326
पश्चिमी राजस्थान की हस्तशिल्प कला का संग्रहालयों में योगदान–अजीत राम चौधारी; डॉ० महेन्द्र चौधरी 1329
भारत में सामाजिक न्याय के निर्वचनकर्ता के रूप में मानव जीवन के विकासात्मक पहलुओं पर सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका
–असीम कुमार शर्मा 1332
भारतीय साहित्य की एकता में बाधक तत्व–डॉ० नवनाथ सर्जेराव शिंदे 1336
पं. दीनदयाल उपाध्याय का सांस्कृतिक राष्ट्रवाद–डॉ० हरबंस सिंह 1339
क्षेत्रीय विकास, सतत विकास एवं राजनीति - उत्तराखण्ड के लोगो के जनजीवन के विशेष संदर्भ में–सुनील सिंह 1341
किशोर छात्र-छात्राओं की चिंता का उनके कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
–महेन्द्र कुमार; डॉ० जीतेन्द्र प्रताप 1346
पर्यावरण का सामाजिक पक्ष और केदारनाथ सिंह की कविताएं–डॉ० पूर्णिमा आर 1352
सतनामी संप्रदाय और बाबा जगजीवन दास–डॉ० अनिता सिंह 1356
ऑनलाइन एवं ऑफलाइन खरीददारी में उपभोक्ता संतुष्टि के मध्य तुलनात्मक अध्ययन
(बिलासपुर शहर के उपभोक्ताओं के विशेष संदर्भ में)–डॉ० अनामिका तिवारी; अंकिता पाण्डेय 1360
समकालीन विमर्शों के समक्ष चुनौतियाँ–संजय सिंह यादव; डॉ० विनोद कुमार 1374
स्वामी सुन्दरानन्द जी : निम के प्रथम विद्यार्थी–गीता आर्या 1377
दार्शनिक चिन्तन की प्रक्रिया – मूल्यान्वेषण या सत्यान्वेषण–डॉ० रेखा ओझा 1381
इच्छाशक्ति और संघर्ष की दास्तान ('मुर्दहिया' के संदर्भ में)–डॉ० विलास अंबादास सालुंके 1386
हिंदी उपन्यासों में चित्रित किन्नर विमर्श–डॉ० दायक राम 1388
भारत में मातृभाषा का महत्व एवं चुनौती : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० सोनू कुमार 1392
भारत में किसानों का दशा एवं दिशा : एक अध्ययन–डॉ० राकेश रंजन 1396
छत्तीसगढ़, पर्यटन और नक्सलवाद–डॉ० काजल मोइत्रा; डॉ० रत्नेश कुमार खन्ना; रेखा शुक्ला 1401
दलित महिलाओं के शोषण के विभिन्न आयाम : एक ऐतिहासिक अध्ययन–कुमारी संगीता कुशवाहा 1405
भारत में महिलाओं को प्रदत्त संवैधानिक अधिकार (सैद्धांतिक व व्यावहारिक विश्लेषण)–आशा नागर 1408

पूर्वमध्यकालीन समाज का सामाजिक एवं आर्थिक आधार–डॉ० मनोज सिंह यादव 1414
ज्ञान के विकास के नवाचार का महत्त्व–रजनी कुमारी 1417
न्यायवैशेषिकदर्शनाभिमत मोक्षस्वरूपविमर्श (कौण्डभट्ट विरचित पदार्थदीपिका के विशेष सन्दर्भ में)–डॉ० विश्वेश 'वाग्मी' 1419
सिक्ख दार्शनिक : डॉ. वजीर सिंह का जीवन तथा उनका शैक्षणिक कार्य–हरदीप कौर 1423
संजीव की कहानियों में समकालीन परिदृश्य–डॉ० मधुलता बारा; हेमलता पटेल 1425
शिक्षा के बुनियादी सरोकार और गाँधी-दर्शन–डॉ० किरण कुमारी 1428
अमीरी और गरीबी सैद्धान्तिक प्रक्रिया मानने वाले प्रज्ञा श्री के धनी श्री श्रीलाल शुक्ल–डॉ० मुक्ति मिश्रा 1432
वैश्वीकरण से भारत के चुनावी प्रक्रिया पर पड़ने वाला प्रभाव–विकास रंजन 1439
विज्ञान एवं अध्यात्म–डॉ० रमाकान्त पाण्डेय 1443
फनिश्वर नाथ रेणु की 'मैला आंचल' उपन्यास का नया परिदृश्य–डॉ० हरिकिशोर यादव 1447
भारत का कपड़ा उद्योग: एक अवलोकन एवं स्वास्थ्य समस्याये–डॉ० हितैषी सिंह 1453
भारत में शिक्षक शिक्षा का विकास : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–विक्रम बहादुर नाग; डॉ० अज़ीज़ुर्रहमान खान 1456
मध्यकालीन कृषि व्यवस्था में उत्पादन तकनीकी विशिष्टता की महत्ता–अश्वनी कुमार; किशोर कुमार 1460
भारत में दलीय लोकतन्त्र की बदलती भूमिका–डॉ० ब्रह्म प्रकाश 1465
परसाई के साहित्य में भाषा का सौन्दर्य–अजय कुमार मिश्र 1468
बौद्ध धर्म के प्रमुख केन्द्र के रूप में कौशाम्बी : एक पुनरीक्षण–अनामिका मौर्या 1471
गोदान - कृषक-वेदना का दस्तावेज–डॉ० सुरजीत कौर 1474
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में स्त्री विमर्श–डॉ० कविता मीणा 1477
भारतीय युवाओं में बढ़ती आपराधिक वृत्तियाँ- एक बहुआयामी विश्लेषणात्मक अध्ययन–रजनी रंजन सिंह; त्रिलोकी सिंह 1480
ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव–विपिन सहरावत 1491
ऊना के लोकगीतों में वैज्ञानिक व विद्युत वाद्य यंत्र उपकरणों की भूमिका–ममल धीमान; डॉ० परमानन्द बंसल 1494
आर्थिक विकास में उच्च शिक्षा का महत्व–डॉ० गुलाब फलाहारी 1497
इंटरनेट पर उपलब्ध हिन्दी ई-संसाधन, सूचना स्रोत एवं उपकरण: एक सूचनात्मक अध्ययन–डॉ० गौतम सोनी 1499
शहीद भगतसिंह–कुसम राय 1504
जीवन कौशल शिक्षा: एक नया दृष्टिकोण–डॉ० कविता सालुंके; प्रा० ज्योति लष्करी 1506
आधुनिक इतिहास में पुतर्गाल का सागरीय नियंत्रण : राजनैतिक व आर्थिक परिणाम–डॉ० नीलम 1509
मानव जीवन में योग–डॉ० पूजा कुमारी 1514
भारत में बेरोजगारी एवं निर्धनता निवारण-एक जटिल प्रक्रिया–डॉ० अशोक कुमार मिश्र 1517
अवसाद व रोग प्रतिरोध का हथियार है योग–डॉ० सीमा सिंह 1519
स्वामी विवेकानंद की दृष्टि में शिक्षा का वास्तविक अर्थ–डॉ० अपराजिता जॉय नंदी 1525
उच्च माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के किशोरावस्था के विद्यार्थियों में मूल्य सम्बन्धी समस्याओं का अध्ययन–डॉ० विष्णु कुमार 1527
भगवद्गीता का दर्शन और महात्मा गाँधी–डॉ० स्मिता कुमारी 1532
शिक्षा में कंप्यूटर का महत्व–आलोक तुली 1537
सामाजिक कार्य व्यवसाय में लोक-जीवन एवं उनकी विधियों की प्रासंगिकता–अमित कुमार 1541
आर० के० अर्चना सदा सुमन टुदी–डॉ० रविन्द्रनाथ शर्मा 1541
चौरी चौरा जनक्रांति और ब्रिटिश साम्राज्य की द्वेशपूर्ण न्यायिक प्रक्रिया–डॉ० अजय कुमार सिंह 1545
21वीं शताब्दी भारतीय परिपेक्ष्य में आत्मनिर्भरता अभियान–डॉ० गरिमा सक्सेना 1548
बस्तर संभाग में विद्युत उत्पादन के पारंपरिक स्त्रोतों की संभावना–जितेन्द्र कुमार बेदी; डॉ० काजल मोईत्रा 1551
भारत में विदेशी व्यापार की प्रवृत्ति, संरचना एवं दिशा का अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल 1554
प्राचीन भारतीय वेशभूषा (प्रारम्भ से गुप्तकाल तक)–पीयूष पाण्डेय 1558
विचित्र नाटक में छंद योजना–मनिंदर जीत कौर 1562

समकालीन भारतीय समाज में वृद्धों की स्थिति का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० हेमलता बोरकर वासनिक 1565
आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यासों की नारी पात्रों में निहित लोककल्याण की भावना–प्रतिभा झा 1572
हरियाणा की चुनावी राजनीति में मतदान व्यवहार का निर्धारण–राजीव वर्मा; डॉ० तिलक राज आहुजा 1575
कबीर की विचारधारा और उनकी जन-पक्षधरता–डॉ० धनंजय कुमार दुबे 1580
श्रीमद्भगवद्गीता तथा मनुस्मृति में सदाचार अनुशीलन–प्रवीण कुमार 1586
सगुण कवि तुलसीदास के काव्य - सिद्धान्त–मधु अरोड़ा; अर्चना कुमारी 1590
महावीरचरिते तात्कालिक – समाजसंस्कृती–अनिता कौशिक: 1594
गरुड पुराणे कुष्ठ रोग: एकं विवेचनम्–संजय: कुमार: 1599
सिक्कों की उत्पत्ति, विकास एवं उनका महत्त्व–अंजू मलिक 1602
शक्तिपात विद्या की दार्शनिक रूपरेखा–मनीष कुमार; डॉ० बिमान पॉल 1605
स्मृति विकास में योग दर्शन की भूमिका–प्रमोद कुमार; डॉ० पारन गौड़ा 1609
पं. बस्तीराम के काव्य में मानवतावाद–पूनम 1612
हरियाणवी लोकगीतों में यथार्थ-चित्रण–सुमन 1616
प्रवासी महाकवि हरिशंकर 'आदेश' के महाकाव्यों में सौंदर्य-चित्रण–डॉ० मनोज कुमार; डॉ० विकास कुमार 1619
प्राचीन भारत में 'युद्ध एवम् शांति' नैतिकता या अनैतिकता के संदर्भ में–डॉ० आरती यादव 1622
शारीरिक फिटनेस तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन : कुमाऊं क्षेत्र के जनजातीय तथा शहरी छात्रों के सन्दर्भ में–डॉ० रश्मि पंत 1625
सोशल मीडिया और फेक न्यूज का जम्मू के युवाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–अरविंद 1630
कौटिल्य का राजनीतिक दर्शन–संतोष कुमार साह 1634
राजस्थान के लोकजीवन में लोकनृत्य की परंपरा एवं स्वरूप–नारायण सिंह 1637
साठोत्तरी हिन्दी प्रमुख ऐतिहासिक एकांकीयाँ–रमेश चौहान; डॉ० एस०के० पवार 1641
मिथिला की लोक कला 'सिक्की' एक परिचय–शंभू कुमार गुप्ता 1645
भारतीय आर्थिक नियोजन में उपेक्षित किंतु प्रासंगिक : एकात्म अर्थचिंतन–धीरज कुमार पारीक 1647
मीरा कांत के नाटक : द्वन्द्व के संदर्भ में–गुरप्रीत कौर 1651
यात्रा साहित्य में हिमाचल : संदर्भ और प्रवृत्ति–डॉ० सुनीता शर्मा; श्वेता शर्मा 1653
कुण्ठा : बद्री सिंह भाटिया के कथा-साहित्य के संदर्भ में–सुषमा देवी 1658
प्रयाग, कुंभ एवं भारतीय समाज–पूजा 1661
तीन एकांत : कहानी और नाट्य रूपांतरण–चन्दन कुमार 1664
मानवीय संघर्ष की महागाथा ...रंगभूमि–डॉ० अमिता तिवारी 1668
राजस्थान मे जनशिकायत निवारण-तंत्र और ई-गवर्नेंस–विनोद कुमार 1671
पूर्वोत्तर का यथार्थ : वह भी कोई देश है महाराज–स्वाति चौधरी 1680
योगोपनिषदों में उद्धत प्रणव: एक विवेचन–नम्रता चौहान; डॉ० शाम गणपत तिखे 1682
मासिक धर्म के पूर्व योगाभ्यास का महत्व: एक अध्ययन–नेहा सैनी; डॉ० शाम गनपत तीखे 1688
स्वप्रबन्धन में चित्तशुद्धि की भूमिका: महर्षि पतंजलि एवं महत्मा बुद्ध के संदर्भ में–अखिलेश कुमार विश्वकर्मा 1693
चित्रा मुद्गल की कहानियों में चित्रित नारी-जीवन : स्वरूप, संघर्ष और अस्मिता की खोज–दीक्षा कोंवर 1697
भाषाविज्ञान का अन्य ज्ञान- विज्ञान से संबंध–डॉ० वंदना शर्मा; डॉ० वीरेंद्र सिंह 1700
कश्मीरी विद्वानों का संस्कृत साहित्य को योगदान–मीना देवी 1703
कृषि-क्षेत्र में तकनीकी परिवर्त्तन हेतु विभिन्न समस्याओं का अध्ययन–अरुण कुमार 1706
राष्ट्र निर्माण में भारतीय संसद की भूमिका: एक अवलोकन–डॉ० सुनीता मंगला; डॉ० निवेदिता गिरि 1709
राहुल का बौद्ध दर्शन और मानवतावादी सन्दर्भ–सत्य प्रकाश पाण्डेय 1715
प्रवासी मजदूरों का अपने घर की ओर हो रहा पलायन: इससे निर्मित चुनौतियां एवं अवसरों का अध्ययन–डॉ० लक्ष्मीकांत शिवदास हुरणे 1719
भारत में प्रवासी श्रमिकों का वैश्विक महामारी के दौरान पलायन : चुनौतियाँ एवं रणनीति–डॉ० संजू चलाना बजाज 1723
सार्वभौमिक शिक्षा दर्शन : श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन–डॉ० अनिता जोशी; सुनीता जोशी 1727

छत्तीसगढ़ के नवगीतकारों के नवगीतो में राजनीतिक विडम्बनाएँ–डॉ० स्वामीराम बंजारे; शैलेन्द्र कुमार साहू 1732
बौद्ध दर्शन में ध्यान का स्वरूप–धनंजय कुमार जैन; डॉ० संतोष प्रियदर्शी 1736
भविष्य के भारत में प्राचीन भारतीय विज्ञान की भूमिका–डॉ० विजय कुमार 1741
भारत में कृषि पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों का भौगोलिक अध्ययन–चिरन्जी लाल रैगर 1745
भारतीय हिंदी साहित्य में किसानों की त्रासदी–होशियार सिंह 1750
इन्टरनेट और मोबाइल के व्यसन से मुक्ति में योग की उपयोगिता–कृष्णाबेन संजयकुमार ब्रह्मभट्ट; डॉ० बिमान पॉल 1753
1857 की क्रांति के कारणों का विश्लेषणात्मक अध्ययन–अमित कुमार; राजेश कुमार 1757
'भोलाराम का जीव' व्यंग्य-रचना में अभिव्यक्त सामाजिक विसंगतियाँ–चुन्नीलाल 1761
चंद्रकांता उपन्यास ''कथा सतीसर'' में कश्मीर समस्या के विविध आयाम–सुखबीर कौर 1764
बिहार का कृषि रोड मैप: किसानों के समग्र विकास का प्रतीक–दीपक कुमार झा 1766
मानसिक स्वास्थ्य के संवर्द्धन में संगीत की भूमिका: शिक्षकों के विशेष सन्दर्भ में विवेचनात्मक अध्ययन–अलका सिंह 1772
किसान अस्मिता का संकट और 'फाँस'–डॉ० बिजेन्द्र कुमार 1777
ध्रुवस्वामिनी: प्रसाद की नयी संकल्पना–डॉ० बिजय रवानी 1781
आर्थिक विकास और पर्यावरण–श्रीमती कविता 1785
नई शिक्षा नीति, 2020 के आधार पर उच्च शिक्षा में परिवर्तन–डॉ० रवींद्र कांबले 1789
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में नयी तालीम के तत्व अनुसार स्कूली छात्रों में व्यवसाय शिक्षा के लिए सेवांतर्गत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम का उपयोजन–श्रीमती भावना पाटीलबुवा राजनोर; डॉ० संजीवनी राजेश महाले 1792
नई शिक्षा नीती 2020 के साथ पढेगा भारत–डॉ० दयाराम दुधाराम पवार 1798
वंचना से विकास की ओर शैक्षणिक संदर्भ में विविधता का अध्ययन : एक नीतिगत समझ–मांडवी दीक्षित 1801
प्राचीन मूर्तिशिल्प में पार्वती: विश्लेषणात्मक अध्ययन–राजेश कुमार जाट 1805
गरासिया जनजाति की धार्मिक अलौकिक शक्तियाँ: एक विवेचन–गोगराज चौधरी 1810
लोक-नीति और राष्ट्र निर्माण: भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मूल्यांकन–मोहम्मद राशिद खान 1814
वर्तमान परिदृश्य में महिला सशक्तिकरण- बाधाएँ एवं सुझाव–डॉ० उमाशंकर त्रिपाठी 1819
संस्कृत नाट्य शास्त्र में वर्णित नायक-नायिका और महाकवि कालिदास की रचनाओं पर उसका प्रभाव–तरूण कुमार सिंह 1822
भारत में चुनाव, लोकतंत्र और मीडिया–प्रतिभा सिंह 1825
मानवता के सरोकार और अज्ञेय का काव्य–माधुरी शर्मा 1827
भारतीय योग परम्परा एवं नाथपंथ : एक तुलनात्मक अध्ययन–कुँवर रणंजय सिंह 1833
छत्तीसगढ़ के लोक गीत और नारी सशक्तिकरण–डॉ० तृषा शर्मा; डॉ० सुधीर शर्मा 1836
कुलिश की दृष्टि में राजनीति और पत्रकारिता–डॉ० जितेन्द्र द्विवेदी 1839
हिंदी साहित्य में काल क्रमानुसार अभिजात्य एवं लोक का संबंध–सचीन्द्र नाथ 1842
नाट्यशास्त्र में वर्णित संगीत का स्वरूप–अशोक बैरागी; डॉ० दीपिका श्रीवास्तव 1845
मेहरुन्निसा परवेज के उपन्यासों में नारी जीवन–राधा शर्मा; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 1848
हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रधर्म: एक विमर्श–सूर्य प्रकाश मिश्र 1852
कोविड-19 संक्रमण एवं संतुलित आहार–डॉ० स्नेह लता 1854
महिलाएँ एवं सामाजिक न्याय - एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० दिलीप कुमार सोनी 1858
माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि पर प्रभाव: एक अध्ययन–विमला कुर्रे; डॉ० सुनील कुमार सेन 1862
इक्कीसवीं सदी की कहानियों में चित्रित वर्त्तमान परिदृश्य–डॉ० पठान रहीम खान 1869
राजस्थान में पशुपालन का महत्व: एक भौगोलिक मूल्यांकन व विश्लेषण–नीलू चतुर्वेदी 1873
हिन्दी लघुकथा में वृद्ध संवेदना का चित्रण–सरिता कुमावत 1878
रीवा सम्भाग में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजातियों में पर्यावरण चेतना: एक भौगोलिक अध्ययन–अरूणेन्द्र बहादुर सिंह; सितेश भारती 1882
मानव जीवन मे आकांक्षा एवं आकांक्षा स्तर की उपदेयता–विनोद कुमार; डॉ० कुमुद त्रिपाठी 1886

प्रवासी जीवन की अभिव्यक्ति के सन्दर्भ में उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य में परम्परा और प्रगति का अध्ययन–सोनी यादव 1890
नरेश मेहता द्वारा रचित धूमकेतु और अरण्या का विवेचनात्मक अध्ययन–अशोक कुमार यादव 1893
''वर्तमान सन्दर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता की उपादेयता''–डॉ० बन्दना सिंह 1896
काशीनाथ सिंह की कहानियों में यथार्थवाद का चित्रण–देवव्रत यादव 1899
उच्च शिक्षा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० ममता मणि त्रिपाठी 1902
नैषधीयचरितम् महाकाव्य में नल के व्यक्तित्व का मनोवैज्ञानिक अध्ययन–डॉ० अमृत कौशल 1905
मीनाक्षी स्वामी के उपन्यास 'भूभल' में स्त्री चेतना–विजय कुमार पाल 1909
डॉ० नगेन्द्र द्वारा रस निष्पत्ति के सम्बन्ध में मौलिक विचारों का अध्ययन–विशाल मिश्र 1913
हिंदी साहित्य में स्त्री -विमर्श–डॉ० दिनेश श्रीवास 1916
राजस्थान के बाढ़ सम्भाव्य पूर्वी मैदानी कृषि जलवायु प्रदेश में फसल प्रतिरूप परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन–अमिता बाई यादव 1919
जैन-तीर्थ-स्थलों से जुड़े प्रबन्धन में स्वार्थ-परक राजनीति का प्रवेश–पवन कुमार जैन 1926
कुसुम अंसल साहित्य में पारिवारिक रिश्तों का बदलता स्वरूप–डॉ० विक्रम सिंह; डॉ० सुनीता 1928
"मुरैना जनपद के मन्दिरों में प्रतिबिम्बित प्राचीन भारतीय मन्दिर स्थापत्य का विकासक्रम"–प्रो० प्रभात कुमार; गौरव सिंह 1930
कोरोना संकट का भारतीय अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव–डॉ० संतोष कुमार लाल 1934
सूर्यबाला की कहानियों में वृद्ध और आधुनिकता के व्यंग्यात्मक पहलू–नरेंद्र कुमार स्वर्णकार 1937
अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम में 'जेण्डर पाठ्यक्रम' की आवश्यकता क्यों–वन्दना शर्मा; प्रो० वन्दना गोस्वामी; डॉ० अजय सुराणा 1940
व्याकरण शास्त्रे प्रमाणम्–डॉ० सुभाषचन्द्र मीणा 1943
एक राष्ट्र एक चुनाव: एक विश्लेषण–गुलशन कुमार; डॉ० मानसी सिन्हा 1947
आधुनिक शिक्षा प्रणाली का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन–डॉ० सुशील कुमार सिंह 1950
तुलसीदास के काव्य में लोकमंगल–डॉ० राम टहल दास 1954
हठयोग: आधुनिक संदर्भ में प्रासंगिकता–ज्योति शर्मा; प्रो० गणेश शंकर गिरि 1959
कृष्णा सोबती का अंतिम उपन्यास 'चन्ना': विश्लेष्णात्मक अध्ययन–पूजा मिश्रा 1962
नासिरा शर्मा के उपन्यासों में स्त्री जीवन की समस्या–सूर्यकांत एम०बी० 1966
हरियाणा की प्रतिनिधि हिंदी कहानियां–डॉ० ओम प्रकाश सैनी 1969
भारतीय संदर्भ में आतंकवाद के कारण: एक अध्ययन–सुरेन्द्र प्रसाद 1973
योगिता यादव की कहानियों 'अनहोनी' तथा 'भेड़िया' मे नारी अस्मिता का मुद्दा–प्रेम सिंह 1977
आनंदमठ उपन्यास की समीक्षा–डॉ० प्रीति राय 1980
मधुकर अष्ठाना के नवगीतों में यथार्थबोध–डॉ० प्रीति राय; हरकेश कुमार 1983
सामाजिक परिवर्तन के वाहक बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर एक अवलोकन–सुरेन्द्र सिंह 1988
डॉ० भीमराव आम्बेडकर का राष्ट्रवाद–डॉ० चन्द्रशेखर आजाद 1992
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जल संग्रहण की प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन–हरिओम; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 1995
योगिता यादव के कथा साहित्य में मानवीय मूल्यों की अनुभूति एवं अभिव्यक्ति–सुमन 1997
हरियाणा पर्यटन:- चुनौतियां एवं सुझाव–राजेश कुमार; डॉ० प्रदीप कुमार शर्मा 2000
नागरिकता (संशोधन) अधिनियम 2019–डॉ० अविनाश कुमार लाल; श्रीमती अविंदना जॉन 2005
"वैदिक मनोविज्ञान"–अनामिका वर्मा 2010
गोंड जनजातीय महिलाओं की स्थिति का ऐतिहासिक विश्लेषण (कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० बन्सो नुरूटी 2013
देवेन्द्र कुमार बंगाली की कविताओं में जनपक्षधरता–डॉ० राम पाण्डेय 2019
गदल का प्रासंगिक-विमर्श–डॉ० रमेशकुमार टण्डन 2022
भारतीय संविधान के निर्माण में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर का अवदान–डॉ० विजय कुमार 2025
दलित स्त्री-अस्मिता का कोरस : सुशीला टाकभौरे की कविताएं–कार्तिक राय 2029
कविता के आइने में थर्ड जेंडर–डॉ० शबाना हबीब 2032
उत्तर प्रदेश की राजनीति में महिला सहभागिता–डॉ० प्रमिला यादव 2038

दलित-विमर्श और रामचरितमानस–प्रो० प्रदीप श्रीधर 2042
लैंगिक (जेण्डर) परिप्रेक्ष्य में अर्थशास्त्र पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण–जयंती; डॉ० ज्योति कुमारी 2047
आयु वर्ग एवं लैंगिक भेद का इन्सेफ्लाइटिस से सम्बन्ध : उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जनपद के विशेष सन्दर्भ में –अमरनाथ जायसवाल; डॉ० साधना श्रीवास्तव 2058
भारतीय विदेश नीति में बदलाव व उभरती चुनौतियाँ–चेतन बहोत 2062
विश्व में बढ़ता प्रवासी हिंदी साहित्य का योगदान–डॉ० सुमन फुलारा 2066
अवध की प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप (19वीं शताब्दी)–गणेश कुमार 2068
विभाजन के केंद्र में गुजरात पाकिस्तान से गुजरात हिंदुस्तान–निधि वर्मा 2071
पंजाब में विधायी नेतृत्व के राजनीतिक लक्ष्य (1997-2017)–डॉ० सुनीता रानी 2074
वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में भारतीय महिलाओं की दशा एवं दिशा–रक्षा सिंह; प्रो० अमिता सिंह 2079
मनरेगा: गाँवों में रोजगार सृजन का सुलभ साधन–राकेश कुमार वर्मा; डॉ० राम सेवक सिंह यादव 2084
संस्कृति, परंपरा और लोक: समकालीन अर्थगत विश्लेषण–प्रवीण कुमार जोशी 2088
हरियाणा की त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी व शैक्षणिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन –सुरेन्द्र; डॉ० तिलक राज आहुजा 2091
प्रशासन, शहरीकरण और प्रदूषण–रामावतार आर्य 2098
पूर्वी उत्तर प्रदेश तराई में अनुसूचित जनजाति जनसंख्या की आर्थिक संरचना–डॉ० संजीव कुमार सिंह; सीमा सिंह; डॉ० अभिषेक सिंह 2100
इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासों का कथात्मक वैविध्य–दीप्ति यादव 2107
बिहार में महिलाओं की प्रशासनिक भागीदारी का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० अनिल झा 2111
शिक्षकों में हास्यवृत्ति और उनकी शिक्षण प्रभावकता–प्रो० वन्दना गोस्वामी; रेखा बागङा 2115
दीनदयाल उपाध्याय और मीडिया माध्यम–राजकुमार भारद्वाज 2117
जे. कृष्णमूर्ति की दृष्टि में शिक्षकों, छात्रों तथा समाज के प्रति विद्यालयों की भूमिका का अध्ययन–डॉ० चन्द्रावती जोशी 2121
भारतीय नारी मुक्ति के संदर्भ में महात्मा गाँधी का योगदान–सुनिता कुमारी 2126
'मोरचे' का समीक्षात्मक अध्ययन (सुषम बेदी के विशेष संदर्भ में)–संगीता यादव 2129
शिक्षक और मूल्य शिक्षा: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–रफत फातिमा; डॉ० नलिनी मिश्रा 2132
यशपाल का स्त्री चिंतन–डॉ० अभिषेक मिश्र 2136
समाज के सजग साहित्यकार जयप्रकाश कर्दम–श्रीमती पंकज यादव 2140
शिवपुराण में अरण्यवासी एक विवेचना–डॉ० गोपेश कुमार तिवारी 2142
छतीसगढ के कुष्ठ आश्रम और इसकी पुनर्वास योजना का ऐतिहासिक विश्लेषण (धमतरी जिले की शांतिपुर कुष्ठ आश्रम के विशेष संदर्भ में)–रणजीत कुमार; डॉ० बन्सो नुरूटी 2145
छत्तीसगढ़ में बैंको द्वारा प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में वितरित ऋणों का विश्लेषण: "कृषि ऋणों" के विशेष संदर्भ में –श्रीमती भूमिका शर्मा; डॉ० अर्चना सेठी 2150
करोना काल में बालकों के सामाजिक व शैक्षणिक कौशल विकास में ऑनलाइन कक्षाओं के दुष्प्रभावों का मनोसामाजिक अध्ययन (रीवा जिले के शहरी बालक-बालिकाओं के संदर्भ में)–डॉ० सुनीत कुमार तिवारी; श्रीमती निर्मला तिवारी 2155
कुँवर नारायण की कविताओं में जीवन-बोध–कुमार सौरभ 2161
राजा राम मोहन राय के धार्मिक, सामाजिक सुधार एवं वर्तमान में हिन्दुत्व की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन –डॉ० श्याम शंकर प्रसाद गुप्ता 2165
मोती लाल साकी का कश्मीर साहित्य को योगदान–परवेजा अखतर 2170
शिक्षक ही समाज का शिल्पकार और मार्गदर्शक–डॉ० कल्पना जैन; डॉ० रत्नेश कुमार जैन 2173
हिमाचल की कहानियों में अवसरवादिता और प्रशासनिक तंत्र में भ्रष्टाचार –डॉ० ममता 2178
रामायण में प्रकृति–डॉ० मौमिता भट्टाचार्य 2182
''जनपद चम्पावत में ग्रामीण व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन''–सन्तोष कुमार सिंह 2185
हिन्दी व्यंग्यालोचन की परंपरा और डॉ. सुरेश माहेश्वरी का योगदान–श्रीमती आँचल श्रीवास्तव; श्रीमती मीतू बरसैंयॉ 2189
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में परम्परागत बिरसू का अध्ययन–गोपाल शर्मा 2192

बक्सर से प्राप्त प्राक् मौर्यकालीन मृण्मूर्त्ति कला–मंदीप कुमार चौरसिया 2196
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्राचीन भारतीय शिक्षा की चौसठ कलाओं का समावेश–डॉ० श्री प्रकाश मिश्र 2200
'मेरा बचपन मेरे कंधों पर' में चित्रित जीवन-संघर्ष–डॉ० राम किशोर यादव 2205
हिन्दी सिनेमा के गीतों में सावन और बारिश–डॉ० अनुपमा श्रीवास्तव 2209
पटना महानगर के पूर्वी भाग में आवासीय भूमि उपयोग की गतिशीलता: एक भौगोलिक विश्लेषण–नीता कुमारी झा 2217
कला में अमूर्तन की सीमा: बनारस के सन्दर्भ में विजय सिंह के चित्र का संक्षिप्त अवलोकन–शशि कला सिंह 2223
प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं भारतीय विदेश नीति: एक अवलोकन–डॉ० अलका चतुर्वेदी 2227
अज्ञेय के उपन्यासों में व्यक्तिवादी पात्रों की भाषा शैली–डॉ० रानी बाला गौड़; गरिमा वर्मा 2229
'शिवमूर्ति के कथा साहित्य में बदलते समकालीन ग्राम्य जीवन का परिदृश्य'–डॉ० रानी बाला गौड़; मनीष कुमार 2232
मध्यकालीन भारत में भक्ति का वास्तविक और व्यावहारिक पथ और आधुनिक समाज में इसकी प्रकृति और प्रभाव
–मिथिलेश कुमार मौर्य; डॉ० अजीत कुमार मिश्रा 2234
सुल्तानपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन
–शशि मिश्रा; डॉ० अखिलेष कुमार श्रीवास्तव 2237
फर्रुखाबाद जनपद के ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि
का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० रमाशंकर 2241
समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-पुरुष संबंध–सोवनी मईड़ा 2244
मधु काँकरिया के 'सलाम आखिरी' उपन्यास में अभिव्यक्त वेश्या जीवन–कुमारी पूनम चौहान 2249
अहिंसा एवम् सत्याग्रह का गांधीवादी दर्शन और युवा–डॉ० अरविंद कुमार 2252
रविन्द्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों का एक अध्ययन–डॉ० विजय कुमार 2255
छत्तीसगढ़ी कविता की आलोचना में डॉ. बलदेव का प्रदेय–श्रीमती वंदना जायसवाल; डॉ० स्नेहलता निर्मलकर 2258
हल्बा जनजाति के जन्म संस्कार में गतिशीलता एवं परिवर्तन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन
(छत्तीसगढ़ के उत्तर बस्तर कांकेर जिला के विशेष संदर्भ में)–डॉ० प्रीति शर्मा; दूजराम टण्डन 2265
स्त्री "मुक्ति" की अवधारणा, "झूला नट" उपन्यास के संदर्भ में–प्रीति 2269
'पिंजरे की मैना' आत्मकथा में चित्रित स्त्री जीवन का यथार्थ–डॉ० निशा मुरलीधरन 2275
वर्तमान भारत में मानवाधिकारों का नारी संदर्भ (उत्पीड़न एवं विधिक संरक्षण)–रजनीकांत दीक्षित 2278
हिंदू मंदिर : अंग, संरचना तथा कार्य प्रणाली–आशुतोष पाण्डेय 2282
हिन्दी कविता में अभिव्यक्त गांधी दर्शन के विविध आयाम–डॉ० वीरेन्द्र सिंह 2285
पटना में बाल श्रमिकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का अवलोकन: एक भौगोलिक अध्ययन–रंजीता कुमारी 2292
बलराम अग्रवाल की लघुकथाओं में कथ्य की विविधता एवं शिल्पगत नवीनता–चन्द्रेश साहू; डॉ० प्रभात रंजन 2299
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 सीखने का समग्र वातावरण–डॉ० अर्चना मिश्रा 2302
ग्राम सभा एवं ग्रामीण महिला सशक्तिकरण–डॉ० क्रान्ति प्रकाश 2306
भारतीय परिप्रेक्ष्य में व्यावसायिक शिक्षा की नई नीति 2020–डॉ० प्रिया सोनी खरे; सुनन्दा सिंह 2308
परिवार समाज और राष्ट्र के निर्माण में स्त्री शिक्षा की उपादेयता–डॉ० नम्रता जैन; डॉ० सुगंधा जैन 2312
पर्यावरणीय पर्यटन: सिद्धांत और अभ्यास–ईरा भारद्वाज 2316
गाँधी चिन्तन में सामाजिक रूपान्तरण का नैतिक आधार–महेन्द्र सिंह 2320
भारतीय काव्यशास्त्र में काव्य रूप–डॉ० राजेश कुमार गर्ग 2325
आदिवासी साहित्य में नारी अस्मिता–गौरव सिंह 2328
बौद्धकालीन शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि–सरोज कुमारी 2333
मोदी काल में भारत का विदेश नीति: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सरिता कुमारी 2339
नई शिक्षा नीति 2020 : शिक्षक शिक्षा के लिए एक चुनौती–शाजिया सुल्तान; पायल शर्मा 2343
राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की बुनियादी या बेसिक शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता–विनय कुमार; धर्मेंद्र सिंह 2347
भरतपुर रियासत की जनजागृति में यातायात साधनों की भूमिका–नीतू जेवरिया 2351

स्त्री विमर्श के संदर्भ में प्रभा खेतान का उपन्यास 'छिन्नमस्ता'–सरिता कुमारी 2355

विन्ध्याचल के पण्डे: व्यावसायिक एवं धार्मिक पक्ष–प्रिया चौरसिया 2359

महात्मा गांधी की ग्राम विकास दृष्टि–डॉ० विकास यादव 2363

ग्रामीण विकास में पंचायती राज संस्थाओं की भूमिका - महिलाओं के उत्थान के सन्दर्भ में–डॉ० कृष्णदेव कुमार भारती 2366

छत्तीसगढ़ की लोकसंस्कृति में डॉ० रमाकांत सोनी के साहित्यों का अध्ययन–सरोजनी डडसेना; डॉ० रेखा दुबे 2369

माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता का अध्ययन–डॉ० समर बहादुर सिंह 2376

कुसुम अंसल के उपन्यासों में विविध विभिन्न समस्याओं से ग्रस्त नारी चरित्र का विश्लेषण–नारायण रमण चौधरी 2379

हठयोग परम्परा में वर्णित चारित्रिक तथा व्यवहारिक उत्कर्ष के साधन (वशिष्ठ संहिता तथा घेरण्ड संहिता के विशेष सन्दर्भ में)–पवित्रा देवी; डॉ० गोविन्द प्रसाद मिश्र; डॉ० सुखबीर सिंह 2382

हिंदी समाचार पत्रों के संपादकीय विषय वस्तु का विश्लेषण (दैनिक जागरण एवं नवभारत टाइम्स दिल्ली के विशेष संदर्भ में) –बिमलेश कुमार 2386

पारिजात उपन्यास में सांस्कृतिक मूल्य–डॉ० दीपिका विजयवर्गीय 2391

विवादों को कम करने के लिए तनाव मुक्त कार्य संस्कृति की आवश्यकता–सुश्री कंचन शेखावत 2393

कैदियों की चिन्ता स्तर पर प्रेक्षाध्यान के प्रभाव का अध्ययन–डॉ० निर्मला भास्कर; राजेश भयाना; डॉ० अशोक भास्कर 2395

राष्ट्रीय राजनीति में पर्यावरणीय मुद्दों पर बदलती विश्व सहमति–डॉ० नलिनी लता सचान 2398

अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार–डॉ० पुष्कर पाण्डेय 2401

ग्रामीण युवाओं पर वैश्वीकृत जनसंचार माध्यमों का प्रभाव–विमला देवी 2404

भारतीय संस्कृति और योग–डॉ० सितेश कुमार 2408

भारत-इजरायल : कृषि सहयोग–मनीष कुमार सिंह; डॉ० रामकृष्ण सिंह 2412

भारतीय समाज में नारी की भूमिका–डॉ० स्मिता जायसवाल; डॉ० आर० के० पाण्डेय 2416

अध्यापक शिक्षा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–डॉ० बृजेश कुमार पाण्डेय 2418

बाबा रामदेव जी का योग एवं दर्शन–डॉ० प्रियंका शुक्ला 2421

वायुपुराण में दर्शन-तत्त्व–डॉ० गंगेश गुंजन 2424

भारतीय समाज - विकलांगता के परिप्रेक्ष्य में–सुमित्रा महरोल 2427

प्राच्य एवं पाश्चात्य शिक्षण पद्धतियों में समन्वय की आवश्यकता–सुनील कुमार उपाध्याय 2429

मौर्य काल से गुप्तकाल तक परिवर्तित होती न्याय व्यवस्था–डॉ० शरदेन्दु कुमार त्रिपाठी 2431

समग्र ग्रामीण विकास की अवधारणा एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–विवेकानन्द सिंह; प्रोफेसर राम गणेश यादव 2434

सुमित्रानन्दन पंत एवं महादेवी वर्मा के काव्य में प्रकृति के विविध रूप का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० श्रवण राम 2437

डॉ० भीमराव अम्बेडकर का निरीश्वरवाद–डॉ० संजय कुमार मिश्र 2441

शाक्त तंत्र की दृष्टि में ध्यान और उसके सहायक अंग–ममता चौधरी; डॉ० उपेन्द्र बाबू खत्री 2444

भारतीय शिक्षा में एनी बेसेण्ट का अवदान–डॉ० के०डी० तिवारी 2447

बिलासपुर शहर के झुग्गी झोपड़ी निवासरत् लोगों को मिलने वाले शासकीय योजनाओं का अध्ययन–कु० आरती तिर्की; डॉ० ऋचा यादव 2452

'चाक' उपन्यास में नारी विमर्श–श्रीमती गीता सतीश पोस्ते; डॉ० सन्मुख नागनाथ मुच्छटे 2457

शिक्षण के विकास मे तकनीकी और संचार का योगदान–डॉ० दिनेश कुमार 2460

सिद्धियों की वर्तमान में प्रासंगिकता–डॉ० मनोज कुमार टाक 2463

संत आंदोलन के परिप्रेक्ष्य में संत रैदास–राजेश कुमार यादव 2466

गांधी के राजनैतिक विचार–माया यादव; डॉ० संध्या जायसवाल 2470
मानवीय उत्कर्ष निमित्त योगासन शिक्षण/प्रशिक्षण की अवधारणा (हठयोग परम्परा के विशेष सन्दर्भ में)–जयदेव 2474
स्मार्टफोन के उपयोग का किशोर विद्यार्थियों के शैक्षिक प्रदर्शन पर प्रभाव–तुलसी राम; डॉ० चंद्रकांत शर्मा 2477
सोशल मीडिया की तर्कसंगिकता का एक वस्तुनिष्ठ अध्ययन–डॉ० सेवा सिंह बाजवा 2482
मॉरीशस में हिंदी व गिरमिटिया मजदूरों की स्थिति–अमित कुमार गुप्ता; प्रो० कनुभाई निनामा 2486
भारतीय समाज और राजनीति में महिलाओं की स्थिति–डॉ० सुषमा कुमारी 2489
औपनिवेशिक बिहार में तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा–रश्मि कुमारी 2491
समासे पूर्वनिपाततत्त्वम्–डॉ० अनुप कुमार रानो 2496
बाबासाहेब डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं मानवाधिकार–कन्हैया प्रसाद 2501
कृष्णा अग्निहोत्री के कथा साहित्य में सामर्थ्यवान नारी–प्रोफेसर (डॉ०) राजिन्द्र पाल सिंह जोश; अनुराधा कुमारी 2504
बाल साहित्य में कहानी -उपन्यास का योगदान–डॉ० सुषमा कुमारी 2507
समाधि सिद्धि निमित्त प्राणायाम की उपादेयता - एक समीक्षा–मोहित आर्य 2510
हिंदी साहित्य में छायावाद काव्य: प्रकृति का काल्पनिक एवं प्रेमपूर्ण चित्र–अरविन्द कुमार दीक्षित 2513
भारतीय दर्शन में योग का महत्त्व–संजय कुमार 2517
उषा प्रियंवदा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–अमिता शुक्ला; डॉ० ममता पंत 2520
अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्त्व–डॉ० नवल किशोर बैठा 2524
डिजिटल मार्केटिंग: व्यापार और मार्केटिंग का बदलता स्वरुप–डॉ० साद बिन हामीद; डॉ० तनवीर अहसन निज़ामी 2527
दर्शनभेदा:–प्रो० प्रसून दत्त सिंह 2529
पण्डिताक्षमारावमहोदयाया: कथामुक्तावल्या: समाजिकविश्लेषणम्–श्री० विश्वजित् वर्मन 2531
मलयालम के लोक गीत और केरल की संस्कृति–डॉ० सीमा चन्द्रन 2535
दृश्य-श्रव्य सामग्री प्रयोग कौशल–डॉ० सविता राय 2538
वर्तमान समय में गुरुकुलीय शिक्षा की प्रासङ्गिकता–डॉ० श्याम कुमार झा 2544
स्थानीय दलों में महिलाओं की राजनीतिक प्रतिनिधित्व–अभिषेक कुमार 2548
श्री नरेश मेहता के खण्डकाव्यों में चेतना–श्रीमती सुमित्रा यादव 2551
ग्वालियर घराने के प्रमुख स्तम्भ: पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी का व्यक्तित्व व कृतित्व–चाँदनी; डॉ० लोकेश शर्मा 2556
'इन्हीं हथियारों से' उपन्यास में सामाजिक चित्रण–किरण देवी 2561
अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला मानवाधिकार एवं उनकी स्थिति–पूनम यादव; प्रो० रणबीर सिंह गुलिया 2565
हरियाणा के प्रसिद्ध सांगी चंद्रलाल भाट की गुरु शिष्य परंपरा–रेखा; डॉ० मुकेश कुमार 2568
प्रो० अभय मोर्य कृत 'त्रासदी' उपन्यास में चित्रित समाज–रीतू; डॉ० सुमन राठी 2572
हरियाणा की सांग कला में श्री खीमचन्द स्वामी का अवदान–योगेश कुमार 2575
कौटिल्य अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों पर याज्ञवल्क्यस्मृति का प्रभाव–डॉ० इशरत सुल्ताना 2579
अयोध्या सिंह उपाध्याय का भाषायी चिन्तन–डॉ० अनिल कुमार 2584
पर्णशबरी : प्रकृति का चिकित्सकीय स्वरूप–पूजा सिंह 2588
आधुनिक हिंदी साहित्य में नारी विमर्श–निशु सिंहा; प्रो० अजय कुमार 2593
समाज में लैंगिक असमानता का स्वरूप एवं महिलाओं के सामने आनें वाली चुनौतियों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन –सीमा सिंह; प्रो० बन्दना गौड़ 2595

कवि अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रयुक्त विविध काव्य रूप–जसप्रीत कौर चावला–डॉ० राजेन्द्र सिंह 'साहिल' 2603
जनसंख्या का भू-जोतों के आकार एवं संख्या पर प्रभाव: प्रयागराज जनपद का एक प्रतीक अध्ययन–वेद प्रकाश वेदी 2609
इलाहाबाद जनपद में गंगा और यमुना नदी में प्रदूषण का स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन–वृजेश कुमार 2615
स्वतंत्रतापूर्व आदिवासी उन्नति के लिए ईसाई मिशनरियों का कार्य–डॉ० शशिकांत गोकुळ साबळे 2619
मुगलकालीन समाज और राजस्व व्यवस्था के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी: जमींदार वर्ग–रंजु कुमारी 2622
भारतीय संस्कृति और नई शिक्षा नीति–अशोक कुमार वर्मा 2625
सर्वोदय: महात्मा गांधी–के० एम० छाया 2628
अथर्ववेद में जादू, टोना और टोटका मंत्र–डॉ० राजकुमार 2631
महात्मा गाँधी और स्वदेशी आन्दोलन–रितेश कुमार 2636
हिंदी कथा साहित्य में आदिवासी अस्मिता विशेषकर महाश्वेता देवी का उपन्यास–समीर कुमार 2639
अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति की ग्रामीण बालिकाओं की शैक्षिक समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन–शक्ति सिंह 2643
मायानन्द मिश्रक काव्यमे चित्रित समाज–पुष्पम ज्योति 2646
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का विलय : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–नंदिता राय 2650
गृहविज्ञान विषय की छात्राओं का दृश्य विज्ञापनों के प्रति विचारों का अध्ययन–डॉ० प्रतिभा पाल 2654
भारत की आंतरिक सुरक्षा - समस्याएं और समाधान–डॉ० हिमांशु यादव 2656
हिंदी मीडिया का समाजिक सरोकार: एक भाषिक विश्लेषण–डॉ० राकेश कुमार दुबे 2660
वेद एवं चार्वाक दर्शन : आधुनिक जीवन शैली के सन्दर्भ में–डॉ० विद्यापति गौतम 2664
संप्रेषण के लिए शब्द ही माध्यम–डॉ० माला मिश्र 2667
पुराणोल्लिखत दशावतार वर्णन में मानव के आनुवांशिक विकास की प्रतीकात्मकता एवं वैज्ञानिकता–डॉ० अनीता 2670
काश्मीर शैवदर्शन में सृष्टिप्रक्रिया : तत्त्वमीमांसीय दृष्टिकोण–डॉ० प्रदीप 2674
भारतीय दर्शन में प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप–डॉ० श्रीप्रकाश तिवारी 2678
महादेवी की विराट प्रेमानुभूति–डॉ० वर्षा अग्रवाल 2681
साम्प्रदायिकता और साहित्य–बृजेश कुमार 2684
छात्राध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन–प्रज्ञा सिंह 2686
भारत में सुशासन: पहल, चुनौतियाँ एवं सुझाव–डॉ० शैलेश कुमार राम 2691
इतिहास-लेखन और राजेन्द्र प्रसाद का दृष्टिकोण: एक अध्ययन–डॉ० माया नन्द
चक्रवर्ती का वैभव–डॉ० समणी संगीतप्रज्ञा 2702
उत्तराखण्ड, हिमांचल व जम्मू कश्मीर राज्य के गूजर पशुचारकों का राजनैतिक क्षेत्र में तुलनात्मक अध्ययन–गौरव कुमार 2709
भारतेन्दु और उनके मण्डल के नाटककार–डॉ० राजेश कुमार; डॉ० गिरीश चन्द्र जोशी 2713
हिंदी नाट्य-साहित्य का इतिहास–डॉ० गिरीश चंद्र जोशी 2716
चंद्रकांता के उपन्यासो में नारी चित्रण–पूजा सिंह 2720
बौद्ध परम्परा में स्वास्थ्य एवं चिकित्सा-विज्ञान–डा० पार्थ सारथी 2723
खाने की विकार में मीडिया की भूमिका महिलाओं के संदर्भ में–डॉ० सरिता कुमारी 2728
युग प्रवर्तक मुंशी प्रेमचंद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन–डॉ० हेमन्त सिंह कंवर 2732
नगा समस्या: आंतरिक सुरक्षा के विशेष संदर्भ में–डॉ० मनीष कुमार साव 2737
मानव अधिकार और भारतीय प्रजातंत्र–डॉ० आशुतोष पाण्डेय; संदीप कुमार सोनी 2740

कुरान में निहित शैक्षिक विचार एवं मूल्यों का अध्ययन–प्रभु दयाल 2743
माता-पिता के पालन-पोषण शैलियों के प्रभावों का अध्ययन, परिणाम और निष्कर्ष–मो० सैफ 2746
भारत में केन्द्र-राज्य संबंध: एक विश्लेषण–कुमार राजीव रंजन 2751
कौटिल्य अर्थशास्त्र: नीतिशास्त्र के संदर्भ में–इन्द्र जीत; डॉ० मो० मेराज अहमद 2754
बिहार में आंदोलन एवं दलित महिलाएं–श्वेता कुमारी 2757
दलित विमर्श: साहित्यिक परम्परा की प्रासंगिकता–डॉ० साधना 2760
समकालीन हिन्दी कविता: संवेदना और शिल्प की कसौटी पर–डॉ० आर०पी० वर्मा 2763
स्वतंत्रतापूर्व महात्मा गाँधी एवं अन्य पुरुष समाजसुधारकों का महिलोत्थान एवं स्त्रीवादी आंदोलनों पर प्रभाव एवं परिणाम: एक विवेचना–डॉ० प्रशांत द्विवेदी 2766
भारत में श्रमिक सुरक्षा और प्रमुख श्रम अधिनियम : एक विश्लेषण–डॉ० पुष्पराज गौतम 2769
उत्तराखण्ड में जाति व्यवस्था का विकास व वितरण–कु० बबीता आर्या 2773
"सद्गुणाधारित नैतिक चिन्तन की धारा में अरस्तू के सद्गुणाधारित नीतिशास्त्र का उद्भव एवं विकास"–अपर्णा शुक्ला 2776
'अथश्री प्रयाग कथा-युवाओं की व्यथा-कथा'–डॉ० जयश्री भण्डारी; कु० मीना 2780
औपनिषद परम्परा में ब्रह्म का स्वरूप तथा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति में उपमान प्रमाण की उपादेयता (महर्षि दयानन्द सरस्वती के विशेष सन्दर्भ में) –उमेश कुमार; डॉ० अरुण कुमार सिंह 2782
भारत के नागरिकता संशोधन अधिनियम 2019 के वैश्विक प्रभाव–डॉ० पूजा गुप्ता 2790
भारत में मीडिया परीक्षण पर न्यायिक दृष्टिकोण–भारतेन्दु चौधरी; सर्वेश सोनी 2794
सूचना का अधिकार: वर्तमान परिदृश्य एवं न्यायिक दृष्टिकोण–डी. डी. मिश्रा 2798
राही मासूम रजा के उपन्यासों में राजनीतिक चेतना–डॉ० रेनू दीक्षित; प्रदीप कुमार 2801
'अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में लोकगीत'–डॉ० रेनू दीक्षित; ईश्वर चन्द्र 2805
जनसंख्या के भौगोलिक वितरण में समरेखा जनसंख्या विभव मानचित्रण पद्धति का अनुप्रयोग–नरेन्द्र कुमार; ऋचा; पृथ्वीराज मीणा; एल.पी. लखेडा 2810
न्यायिक दार्शनिकता में लोक अदालतें–मंकेश पाण्डेय 2818
भारत में प्रेस और मीडिया की स्वतंत्रता के संबंध में संवैधानिक दृष्टिकोण–डॉ० अमित बंसल; गिरीश पाल 2821
भक्ति साहित्य का प्रादुर्भाव–डॉ० विश्वनाथ द्विवेदी 2825
स्त्री मन के विश्लेषक: गिरीश कारनाड–डॉ० नमस्या 2828
मोदी सरकार की विदेशनीति का रिपोर्ट कार्ड–डॉ० अरविन्द नेत्र पाण्डेय 2832
भारत और नयी वैश्विक व्यवस्था रूस के संदर्भ में–डॉ० धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय 2834
अशोक कुमार के कहानी संग्रह 'खाकी में इंसान' में आतंकवाद–पिंकी देवी 2837
'भाग्य पर नहीं परिश्रम पर विश्वास करें' पुस्तक की प्रमुख विशेषताएं–प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना 2839
बुद्धकालीन समाज में क्षत्रियों की स्थिति–अर्चना वत्स 2842
राजा मानसिंह (आमेर) के सांस्कृतिक योगदान का विश्लेषणात्मक अध्ययन–भगवान सिंह शेखावत 2845
कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी चित्रण–रितु रानी 2848
निरूपमा सेवती के साहित्य में मध्यवर्गीय नारी पात्रों की संघर्षशीलता–डॉ० नम्रता जैन 2850
भारतीय सामाजिक संरचना में नैतिक शिक्षा का महत्त्व–निकी कुमारी 2852
भारत में मनरेगा कार्यक्रम की सामाजिक सुरक्षा योजना–ओंकार नाथ झा 2856
कामाग्नि में दहकती मित्रो–रचना तनवर 2862
भारत में न्यायिक सक्रियतावाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० शकुन्तला 2867

प्रतापकुंवरिबाई की भक्ति भावना–नवनीत आचार्य 2870
भारतीय आधुनिक चित्रकला में अवनीन्द्रनाथ टैगोर का योगदान–प्रवीण कुमार 2873
उच्च प्राथमिक स्तर पर हिन्दी बाल-साहित्य का अध्ययन करने वाले एवं अध्ययन न करने वाले विद्यार्थियों की भाषा विकास का अध्ययन –डॉ० धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० निदा खान 2876
राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की स्थापना एवं वर्तमान कार्य-एक आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ० सोनिका 2881
सुशासन एवं ई-गवर्नेस–मूर्ति देवी 2884
भारतीय आदिम जनजातियो के संरक्षण में मानवाधिकार विधायन का एक अध्ययन–डॉँ० विनोद कुमार मीना 2886
मानव अधिकारों का एक विशलेषाणात्मक अध्ययन: भारत के संदर्भ में–डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार मुसा 2890
आर्यासम्राट डॉ. जगन्नाथ पाठक का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–शहनाज कुरैशी 2896
भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख चुनौतियां–डॉ० प्रमोद कुमार त्रिपाठी 2899
बुद्धकालीन राजगृह के पुरास्थल का अध्ययन–किशोर कुमार 2901
लोक-मिथकों में रामकाव्य का स्वरूप–वीरेन्द्र 2905
छत्तीसगढ़ी का अनूदित साहित्य–श्रीमती अलका यादव; डॉ० (श्रीमती) रेखा दुबे 2908
नरेश मेहता के काव्य में आधुनिक चेतना-'शबरी' के विशेष संदर्भ में–मधु सिंह; दामोदर मिश्र 2913
साम्प्रदायिकता का प्रश्न और हिंदी कथा साहित्य–डॉ० राकेश कुमार सिंह 2918
वैदिक साहित्य में मूल्यों की अभिव्यक्ति–डॉ० हनुमत लाल मीना 2924
मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों में अभिव्यक्त स्त्री विमर्श–रीना 2927
बदलते परिपेक्ष्य में महात्मा गांधी के विचारों की प्रांसगिकता–स्वदेश सिंह 2931
पारिभाषिको बलाबलत्वविमर्श:–ज्वलन्तकुमार: 2934
वाक्यपदीयकाराभिमतो वाग्विज्ञानविमर्श:–सचिन: 2937
पत्रकार प्रेमचंद : भारतीय साहित्य का मुखपत्र 'हंस'–अहमद रजा 2941
मुर्दहिया: दलित जीवन की गाथा–ज्योति 2946
विकास भट्टाचार्य के चित्रों पर यथार्थवादी एवं अति यथार्थवादी प्रभाव विश्लेषणात्मक अध्ययन–शोभना 2949
पंचायती राज में महिलाओं की दशा एवं दिशा–डॉ० के०एल० टाण्डेकर; डॉ० प्रदीप कुमार जाम्बुलकर; डॉ० आशा चौधारी 2952
पंचायती राज व्यवस्था एवं सहकारिता में समन्वय से ग्रामीण विकास–अंकित कुमार गुप्ता 2955
आर्थिक परिप्रेक्ष्य में मधुबनी नदियों का अभिशाप एवं वरदान–श्वेता 2958
डॉ० जगन्नाथ मिश्र का शैक्षणिक चिंतन व कार्य: एक संक्षिप्त अवलोकन–नीतू कुमारी 2963
बिहार कांग्रेस में श्री रामलखन सिंह यादव की भूमिका–सिकन्दर कुमार 2967
गणित, विज्ञान और तकनीकी के विकास एवं संचार में प्राचीन भारत का योगदान–संघर्ष मिश्र 2975
बिहार में डॉ० अल्तेकर एवं उनके कार्यक्षेत्र से संबंधित अन्य पुरातत्वविद्–अराधना झा; प्रो. (डॉ०) नवीन कुमार 2978
भारत में पंचायती राज का इतिहास: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–डॉ० मौ० उजैर; डॉ० आर० के० ठाकुर 2981
अष्टाध्यायीसंरचनायां योगविभागप्रक्रियाया उपादेयता–प्रभातकुमार: 2986
अष्टाध्याय्यां विभक्तिविपरिणाम:–दिव्यरंजन: 2990
मधुसूदनमहाभागानां छन्दशास्त्रप्रयोजनविमर्श:–मनीष: 2992
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के संदर्भ में डिजिटल प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय–विजय कुमार भारती 2994
उत्तराखण्ड में औपनिवेशिक राज्य की स्थापना एवं प्रभाव–डॉ० शरद भट्ट; रोहित पाण्डेय 2998

'लोहित' उपन्यास और असम का राजनीतिक जीवन–संजीव मण्डल 3000
भ्रमर गीत का काव्य सौष्ठव एवं विप्रलंभ श्रृंगार–डॉ० एम यशोदा देवी; पी० सोमा शेखर 3006
राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 और बहु -विषयक पाठ्यक्रम की उपयोगिता–डॉ० नाहर सिंह; डॉ० नविन्द्रा बाई 3008
भारतीय शिक्षा तंत्र एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–डॉ० रश्मि शर्मा 3012
ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी विमर्श–महेन्द्र कौर 3016
राजेंद्र अवस्थी के उपन्यासों में राजनीतिक परिवेश–नीतू कुमारी; डॉ० जयकरण यादव 3019
हिंदी साहित्य का विश्व में प्रचार-प्रसार–डॉ० प्रवेश कुमारी 3022
'चाक' उपन्यास के ग्रामीण जीवन में नारी का संघर्ष–सुमन कुमारी 3025
प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी की दशा–कलवीर कौर 3027
केशर कस्तूरी: ग्रामीण स्त्री-अस्मिता का सशक्त स्वर–किरन मिश्रा 3030
बिहार में पंचायती राज एवं महिला सशक्तिकरण–उषा कुमारी 3036
इन्हीं हथियारों से उपन्यास में लोक जीवन के दृश्य–डॉ० विजय बहादुर त्रिपाठी; कृष्ण कुमार 3040
विनोद कुमार शुक्ल के कथा साहित्य के राजनीतिक सरोकार–अनीता; प्रो० प्रदीप के० शर्मा; प्रो० रामजन्म शर्मा 3044
हिन्दी एवं कन्नड अनुवाद का परस्पर सम्बन्ध की दशा दिशा–डॉ० श्रीधर हेगडे 3046
जनवादी आन्दोलन में जनकवि नागार्जुन की भूमिका–डॉ० अंबुजा एन् मलखेडकर 3050
भारत में खाप पंचायतें - एक सामाजिक अवलोकन–डॉ० जितेन्द्र कुमार 3053
काका कालेलकर: जीवन दर्शन–डॉ० विशेष कुमार राय 3058
पिछड़े वर्ग के सामाजिक उत्थान में काका कालेलकर का योगदान–डॉ० हरेन्द्र कुमार 3062
हिमाचल प्रदेश, उत्तर पश्चिम हिमालय के आदिवासी क्षेत्रों में भूकंप, भूस्खलन और बाढ़ के खतरों जैसी आपदाओं के साथ रहना –राजेन्द्र कुमार; प्रोफेसर संजीव कुमार महाजन 3068
भारत में ऑटोमेशन और महिला रोजगार–डॉ० शम्मी कुमारी 3072
प्रेमचंद के साहित्य में नवजागृति का संदेश ('कर्मभूमि उपन्यास' के विशेष संदर्भ में)–जयश्री काकति 3075
आचार्य भानुदत्त एक परिचय–डॉ० सुजाता चतुर्वेदी; विष्णुकान्त गुप्ता 3077
धर्मवीर भारती के साहित्य में सांस्कृतिक चेतना–सरोज देवी 3079
संगीत सीखने वाले व न सीखने वाले विद्यार्थियों मे तनाव : तुलनात्मक अध्ययन–विन्ध्या शुक्ला; डॉ० चारू व्यास 3083
मध्ययुगीयासमप्रान्तेषु संस्कृतचर्चा–डॉ० सुबोध कुमार मिश्र भागवती 3088
भारतीय जीवन बीमा निगम की विनियोग नीति का मूल्यांकन–नितेश ग्रेवाल 3092
वर्तमान परिवेश में महिला श्रम की बदलती भूमिका–अनिल 3095
ब्रिटिश भारत का प्रथम लिखित संविधान: रेगुलेटिंग एक्ट दोष एवं महत्त्व–रवि 3101
पंचायती राज संस्थाओं की महिला सशक्तिकरण में भूमिका: आलोचनात्मक मूल्यांकन–सचिन 3104
सूरदास का 'भ्रमरगीत' विरह में प्रेम की चरम उत्कृष्टता है–डॉ० संजय नारायण दास 3110
संगीत में स्वर, लय, ताल और रस का सम्बन्ध: एक विवेचन–डॉ० प्रेम चन्द्र कुशवाहा 3112
स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की भूमिका–डॉ० हरिश्चन्द्र अग्रहरि 3117
गाँधी और अम्बेदकर के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन (दलित समस्या के संदर्भ में)–डॉ० विजय कुमार 3120

दृष्टिकोण

भारत में पंचायती राज-व्यवस्था का ऐतिहासिक अवलोकन–मदेश कुमार तिवारी 3123

शिवानी के उपन्यास में स्त्री विमर्श–डॉ० श्रवसुमी कुमारी 3126

कोरोना संक्रमण: एशिया में शक्ति ध्रुवीकरण की नई प्रवृत्तियाँ–डॉ० आर०बी०सिंह बघेल 3129

महिला सशक्तीकरण में केन्द्रीय योजनाओं की भूमिका–डॉ० पुष्पा मद्धेशिया 3132

शुंगकालीन कला में कमल–राकेश कुमार गुप्त 3135

मजबूत भारत के मजबूर किसान–डॉ० दयाशंकर सिंह यादव 3138

उत्तराखंड राज्य सरकार की मानव सुरक्षा के आर्थिक एवं खाद्य सुरक्षा आयाम से सम्बंधित योजनाओं एवं चुनोतियों की व्याख्या (2019-2021) –मंजरी भट्ट 3142

निर्वाचन प्रक्रिया में भ्रष्टाचार और सुधार - भारत के विशेष सन्दर्भ में–डॉ० वेद प्रकाश उपाध्याय 3145

समकालीन उपन्यासों में आदिवासी विमर्श–शीतला प्रसाद सिंह 3148

वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत-अमेरिका संबंध–डॉ० यतेन्द्र सिंह 3151

बागेश्वर का धार्मिक अध्ययन–डॉ० पुष्पा दानू 3155

जोधपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक स्तर के संगीत विषय के किशोर विद्यार्थियों पर अभिभावक शैली का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० सुनीता श्रीमाली 3159

समकालीन समाज में कबीर: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण–रमेश कुमार; दीपक कुमार खरवार 3164

भारतीय संस्कृति में एकात्मक मानव दर्शन एक समीक्षा–डॉ० सरला शर्मा 3168

आद्य शंकराचार्य का शिक्षा दर्शन एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता–डॉ० अल्पना राय 3170

सन 1943 ईसवी के बंगाल के दुर्भिक्ष को मूर्तिमान करता 'महाकाल'–निशा तिवारी 3173

भारत में ग्रामीण पर्यटन की संभावनाएं और चुनौतियाँ–डॉ० अनुपमा सिंह 3176

चन्द्रशेखर - समाजवादी व्यक्तित्व–डॉ० नवीन चन्द्र गुप्ता; लक्ष्मी कान्त जायसवाल 3181

शिक्षा में नवाचार–डॉ० राकेश कुमार सिंह 3184

सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में कमलेश्वर कृत कहानी 'राजा निरबंसिया'–भावना 3187

माध्यमिक स्तर के छात्रों की आकांक्षा के स्तर और उपलब्धि के बीच संबंध–आराधना राय 3189

नारीवादी विचारधारा में परिवर्तनों का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन; दीक्षा 3198

हायर कक्षा के विद्यार्थियों के समायोजन पर विद्यालयीन पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन–धनलाल जायसवाल; डॉ० राकेश कुमार डेविड 3200

मानवीय मूल्यों से अनुगत अध्यापक शिक्षा की आवश्यकता–सुनिता यादव; डॉ० प्रियंका रमेश रावडाफरे 3203

शिक्षाशास्त्री लोकमान्य बालगंगाधर तिलक की शैक्षिक अवधारणाऐं–वंदना सिंह; डॉ० रेखा नरेंद्र जिभकाटे 3207

बौद्ध धर्म और महिला: एक संक्षिप्त विश्लेषण–डॉ० नीता लखैयार 3211

बुद्धकालीन सामाजिक जीवन व धार्मिक प्रवृति: एक संक्षिप्त अवलोकन–डॉ० कविता लखैयार 3214

स्वतंत्रता बाद भारत में जनजातीय महिलाओं का उत्थान–रेणुका पाठक 3216

एन0 सी0 ई0 आर0 टी0 पाठ्यक्रम का बदलाव: एक समीक्षात्मक अध्ययन–धीरज कुमार 3220

प्लेटो का न्याय सिद्धान्त–डॉ० सुबोध कुमार 3224

आभार भावना-विभिन्न दृष्टिकोन: मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्षिय अध्ययन–प्रा० डॉ० एन.एस. डोंगरे 3226

वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के व्यवसायिक तनाव का उनकी लिंग भिन्नता एवं विद्यालय के प्रकार के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० प्रमिला मलिक; सुमन 3230

महर्षि अरविन्द का शिक्षा दर्शन–डॉ० यशवन्ती गौड़; मोनिका 3234
नवउदारवाद के दौर में सामाजिक न्याय की अवधारणा एवं भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण–डॉ० इकबाल इमाम 3236
परसाई के निबंधों में व्यंग्य के अनुशीलन–डॉ० कुसुम सिंह; दिनेश कुमार पटेल 3240
आओ माँ हम परी हो जाएँ : पितृसत्ता की पीड़ा से मुक्ति के प्रयास–रश्मि 3243
सामाजिक परिवर्तन: आर्थिक परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की बदलती भूमिका–डॉ० ललिता यादव 3245
जलवायु परिवर्तन: राजस्थान के संदर्भ में–डॉ० बबीता 3253
योगदर्शन में वर्णित पञ्चक्लेशों का विवेचन–डॉ० समय सिंह मीना 3255
हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के सामुद्रिक चुनौतियां एवं विकल्प–राजीव रौशन कुमार 3259
कोविड का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव: एक आलोचनात्मक अध्ययन–डॉ० मनोज कुमार अग्रवाल 3262
मार्कण्डेय के समकालीन कथाकारों की कथा-साहित्य में जीवन-मूल्य–सुनील हिमांशु बर्थवाल; प्रो० (डॉ०) शिव कुमार प्रसाद 3267
कल्हण का जीवन-वृत्त–विवेक कुमार रजक; प्रो० (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल 3270
विनम्र, औसत और मुखर छात्रों के बीच उनकी व्यावसायिक आकांक्षा के संबंध का एक अध्ययन–हुस्ना बानो; डॉ० संजीव कुमार 3273
भारत - अमेरिका संबंध–डॉ० हर्षेन्द्र प्रताप सिंह 3278
भारत में महिलाओं के विरुद्ध बढ़ते अपराधों के कारण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–नितिन कुमार; डॉ० संध्या तिवारी 3282
राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों का योगदान–मोना केंवट; डॉ० राम नरेश टण्डन 3285
मानव जीवन एवं वनस्पतियों से टूटता नाता-डॉ० राजेश कुमार पाल; अमित कुमार सिंह 3288
राजनीति में महिला प्रतिनिधित्व एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि: राजस्थान की चौहदवी विधानसभा का एक अनुभवमूलक अध्ययन-बालूदान बारहठ 3290
'मधुमेह' रोग में आवश्यक चिकित्सकीय परीक्षण का अध्ययन–वन्दना सिंह यादव 3294
योगिता यादव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक विवेचना–मुकेश कुमारी 3297
हरियाणा विधानसभा चुनाव 2019 के जनादेश का विश्लेषणात्मक अध्ययन–आशा रानी 3300
'भक्तिकाल' और 'नयी कविता' के संदर्भ में नामवर सिंह और मुक्तिबोध का आलोचनात्मक चिंतन
–डॉ० रत्नेश कुमार यादव; डॉ चन्द्र प्रकाश यादव 3302
वर्तमान समय को चित्रित करती कहानियाँ–वंदना पाण्डेय; डॉ० विश्वजीत कुमार मिश्र 3305
संस्कृत-साहित्य में मार्गत्रय की उद्‌भावना एवं बृहत्त्रयी के महाकाव्य–पिंकी निशा 3308
छत्तीसगढ़ के ग्रामीण कृषकों में ऋणग्रस्तता का अध्ययन–डॉ० सपना शर्मा सारस्वत; अल्का डड़सेना 3311
भारतीय राजनीति में अटल बिहारी वाजपेई का योगदान–उदय भान द्विवेदी; डॉ० इफ्तिखार अहमद अंसारी 3314
उपन्यास 'हुजूर दरबार' का समीक्षात्मक अनुशीलन–डॉ० हिमांशु कुमार 3318
वैज्ञानिक सृजनात्मकता के संदर्भ में परम्परागत शिक्षण विधि के सापेक्ष आगमन चिंतन प्रतिमान की प्रभावशीलता का अध्ययन
–डॉ० सरोज जैन; विन्देश्वरी प्रसाद सिंह 3321
भारत में ग्रामीण विकास योजनाओं पर एक अध्ययन–मनजीत सिंह 3325
हिन्दी भाषा का वैश्विक स्वरूप–रीना रानी 3330
''किशोरावस्था के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण एवं मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन''–नेहा श्रीवास्तव 3334
बिखरते परिवार तथा टूटती मान्यताएँ: नौकरी-पेशा, माता-पिता और बच्चों की देखभाल एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन
–डॉ० अतुल कुमार मिश्रा; डॉ० निखिल विक्रम सिंह 3339
सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन
–आशुतोष कुमार दूबे; डॉ० (श्रीमती) मधुबाला राय 3343
कोविड महामारी का भारत में रोजगार पर प्रभाव एवं सुझाव–डॉ० प्रशांत अग्रवाल 3347
प्राथमिक शिक्षकों के व्यावसायिक प्रतिबद्धता का तुलनात्मक अध्ययन–राघवेन्द्र वीर सिंह; डॉ० अखिलेश चन्द्र 3350
आजमगढ़ जनपद के प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के पर्यावरणीय मूल्य का तुलनात्मक अध्ययन–रेनू देवी; डॉ० अखिलेश चन्द्र 3354

दृष्टिकोण

प्राचीन भारत में सती प्रथा की समस्या: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–भगवान दास 3357
कश्मीर का ऐतिहासिक परिपेक्ष्य में विवेचन (अनुच्छेद 370 एवं 35 ए के संदर्भ में)–डॉ० सुधीर कुमार शुक्ल 3360
झुन्झुनूं जिले के कृषि विकास में संस्थागत वित्तीय स्रोतों का योगदान (मार्च 2016 से मार्च 2020)–कमलेश कुमार मूण्ड; प्रो० (डॉ०) मदन मोहन 3362
वैष्णव धर्म में अवतारवाद की संकल्पना–पंकज कुमार सिंह; डॉ० शशि सिंह 3369
वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी विवेकानंद–चेतन राजपूत 3373
पंडित दीनदयाल उपाध्याय का शिक्षा दर्शन–गुंजेश गौतम 3376
कवि केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में मार्क्सवादी प्रभाव का विश्लेषण–रतिभान 3380
रविदास एवं तुलसीदास के साहित्य में ज्ञानयोग की प्रधानता–जयकान्त; डॉ० बाला मोहन नाग कुमार 3383
कोविड-19 का बेरोजगार युवाओं के करियर, व्यवहार पर प्रभाव (एक समाजशास्त्रीय अध्ययन)–कु. काजल; डॉ० रीना शर्मा 3386
संविधान सभा के अध्यक्ष के रूप में सच्चिदानन्द सिन्हा की भूमिका–राकेश कुमार; प्रो० (डॉ०) रण विजय कुमार 3391
गुरु तेग बहादुर जी: मानवीय अस्तित्व–डॉ० हरबंस सिंह 3394
डॉ० रमेश पोखरियाल 'निशंक' का व्यक्तित्व एवं कृतित्व–किरन बिष्ट 3397
झारखंड अंचल के उत्थान में बिरसा मुंडा का योगदान–डॉ० रामरतन साहू; संजय कुमार शर्मा 3401
फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास और नारी विमर्श–डॉ० संजू कुमारी 3405
रणेन्द्र के उपन्यास गायब होता देश में आदिवासी जीवन–डॉ० शिखा श्रीधर 3408
भूमण्डलीकरण का महिला शिक्षा पर प्रभाव–डॉ० साधना श्रीवास्तव; सारिका सिंह चौहान 3410
व्यक्तित्व का सम्प्रत्यय एवं प्रकार–अमित कुमार दूबे; डॉ० अखिलेश चन्द्र 3415
''शिक्षित तथा अशिक्षित अभिभावकों के बच्चों के विद्यालय समायोजन क्षमता का अध्ययन''–डॉ० कल्पना सैंगर; अंकश्री भार्गव 3418
वैश्विक आतंकवाद: संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रभावशीलता–डॉ० राहुल कुमार 3422
ऐतिहासिक नगरी राजगृह - एक अध्ययन–डॉ० रूबी तबस्सुम 3425
योग साधना के परिप्रेक्ष्य में आसनों की उपादेयता - एक समीक्षा–डॉ० पारुल कुमार 3428
आधुनिक और समकालीन हिंदी काव्य प्रवृत्तियों का तुलनात्मक विवेचन–डॉ० अरविंद सिंह 3431
भारत में प्रजातांत्रिक प्रशासन–डॉ० रमाकान्त पाण्डेय 3435
भारतीय राजनीति के समकालीन बहस–सरफराज अहमद 3439
अज्ञेय काव्य में काव्यगुणों का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० नितिन सेठी 3443
महाविद्यालय में अध्ययनतर विद्यार्थियों की सूचना के अधिकार के प्रति जागरूकता एवं भ्रष्टाचार निवारण में भूमिका–डॉ० श्रीमती सरला आत्राम 3446
कारक विचार–डॉ० चित्रा भारद्वाज 3449
वर्तमान परिवेश में पर्यावरण और विकास की राजनीति: एक अध्ययन–मोनिका कुमारी 3453
आरक्षण के माध्यम से दलित सशक्तिकरण–डॉ० रामबचन कुमार 3456
पवित्र ध्वनि ओउम (ऊँ) के वैज्ञानिक विश्लेषण की समीक्षा–युद्धवीर; एन.पी. गिरी 3459
"दिव्यांग विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एंव समायोजन का सह संबंधात्मक अध्ययन"–डॉ० (श्रीमती) अनीता श्रीवास्तव; सरोज बोरकर 3465
चौधरी चरण सिंह का राजनीतिक चिन्तन का संक्षिप्त विश्लेषण–डॉ० ममता शर्मा; गीता 3469
औद्योगिक संसाधन एवं पर्यावरणीय अवनयन: बेगूसराय जिला का एक भौगौलिक अध्ययन–डॉ० अशोक प्रसाद; दीपक कुमार 3474
औद्योगिक विकास एवं नगरीकरण: आरा नगर के विशेष संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० सैयद गुलाम मोहीउद्दीन; सुजाता सिंहा 3477
कोविड-19 के परिपेक्ष्य में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन–सुषमा दुबे; मधु नायक 3479
समकालीन हिन्दी कविता का वर्तमान स्वरूप–डॉ० शीला मिश्रा; इन्द्रसेन यादव 3484

कृषि के अन्तर्गत नवीन तकनीकों का उपयोग एवं कृषकों की आय पर उसका प्रभाव: मेरठ जनपद का एक भौगोलिक अध्ययन–ओम प्रकाश 3488
समावेशन की राह में बाधा- 'अभिभावक, शिक्षक एवं समाज की मनोवृत्ति के सन्दर्भ में'–डॉ० मोनिका सरोज; सुधीर कुमार रंजन 3494
सोशल मीडिया का आज की युवा पीडी पर प्रभाव–सविता देवी; डॉ० सुमन 3498
भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रधान मंत्री आवास योजना: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शक्ति शंकर कुमार 3500
राष्ट्रीय आन्दोलन और जवाहर लाल नेहरू - एक संक्षेपण–डॉ० श्रुति कुमारी 3504
भारत में गाँवों के विकास के लिए कृषि की उन्नति वर्तमान आवश्यकता–ओंकार यादव 3507
हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान–डॉ० कनुभाई बिछिया भाई निनामा; ओमप्रकाश 3510
'गुड़िया भीतर गुड़िया': स्त्री अस्मिता की एक खोज–पूनम जायसवाल 3514
बस्तर में आदिवासियों का परलकोट विद्रोह: एक ऐतिहासिक पुनरावलोकन–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ईश्वर लाल 3517
मराठा कालीन छत्तीसगढ़ की सामाजिक स्थिति का ऐतिहासिक पुनरावलोकन (सन 1741 से 1818)–डॉ० डिश्वर नाथ खुटे; ममता ध्रुव 3525
भारतीय चिन्तन परम्परा में तर्कस्वरूप–मीरा द्विवेदी; जोरावर सिंह 3534
संस्कृतसाहित्ये श्रीबोधिसत्त्वचरितस्य महत्वम्–मधुसूदन सती 3538
महाविद्यालयीय विद्यार्थियों में धर्मनिरपेक्षता एवं सामाजिक चेतना के मध्य सहसम्बन्धात्मक अध्ययन–डॉ० प्रेम चन्द यादव; राजीव सिंह 3540
भारत में शिक्षक शिक्षा: कुछ नीतिगत मुद्दे और चुनौतियाँ–कमल चन्द्र गहतोड़ी; डॉ० कल्पना पाटनी लखेड़ा 3544
समाज वैज्ञानिक शोध में सामाजिक सर्वेक्षण का महत्व–डॉ० हरबीर सिंह डागुर 3550
जगदीप दुबे हुन्दे 'तितलियां' क्हानी संग्रैह् च प्रयुक्त अंग्रेजी ते फारसी शब्दावली–शगुफ्ता चौधरी 3556
ग्रामीण भारत का शैक्षिक एवं आर्थिक पिछड़ापन–बलभद्र बिरुवा 3557
काव्यप्रकाश की लीला टीका एवं उसकी पाण्डुलिपियां–भारतेन्दु पाण्डेय; गिरिराज 3560
कुमाऊँ का अनुपम जलस्त्रोत: नौला (भूतल के जल)–हंसा वर्मा; डॉ० सरोज वर्मा 3565
बेरोजगारी समस्या के समाधान हेतु मनरेगा कार्यक्रम–सुनीता कुमारी 3570
माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक-प्रभावशीलता का कार्य संतुष्टि से सम्बन्ध का अध्ययन–ज्योति विजय; डॉ० चंद्रकान्त शर्मा 3576
भारतीय संसदीय लोकतंत्र का बदलता स्वरूप: एक विश्लेषण–मनीषा 3580
कारू नाडु (उत्तरी कर्नाटक) को पृथक राज्य बनाने की मांग (उत्तरी कर्नाटक से विश्वासघात की कहानी)–सर्वजीत सिंह राणा; डॉ० अखिल गोयल 3583
दुकानों में प्रोसेस्ड पैकेज्ड भोजन के विभिन्न प्रकारों की उपलब्धता का अध्ययन: (पटना क्षेत्र के संबंध में)
–कुमारी सुषमा श्रीवास्तव; प्रो0 (डॉ०) अंजु श्रीवास्तव 3591
ग्रामीण एवं शहरी विद्यालयों के विधार्थीयों की नैतिक मूल्यों पर शैक्षिक उपलब्धि के प्रभाव पर शोध
–श्रीमती मोहनी सिन्हा; डॉ० रजनी डिवाकर राव सिवणकर 3595
महासमुन्द क्षेत्र के हायर सेकेण्डरी स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता अध्ययन–हेमन्त कुमार खटकर; डॉ० रेखा नरेन्द्र जिभकाटे नवखरे 3600
महात्मा फुले की सामाजिक न्याय अवधारणा–मोनिका काकोडिया 3603
असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के मानवाधिकारों के संरक्षण में केन्द्रीय सरकार की भूमिका का एक अवलोकन
–नीतेश कुमार चतुर्वेदी; प्रो० सुदर्शन वर्मा 3607
भारत में प्राकृतिक आपदा के समय राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन संस्थान की भूमिका का अध्ययन–संदीप सेन 3612
पश्चिमोतर भारत में पारसियों का आगमन तथा भारतीय समाज पर उनका प्रभाव–सारिका दुबे 3615
मध्यप्रदेश में भारतीय होटल उद्योग में लागू सेवा गुणवत्ता मॉडल का अध्ययन–डॉ० डी०एन० पुरोहित; श्रीमति शीतल तिवारी 3620
भारत में ग्रामीण शिक्षा को बढ़ावा–रूबी सिंह; डॉ० वी० के० गैलत 3629
दिल्ली सल्तनत में महिलाओं की सामाजिक स्थिति–डॉ० स्वर्ण मणि 3632
भारत और सिंगापुर के सांस्कृतिक संबंध: एक ऐतिहासिक अवलोकन–आशा कुमारी सिन्हा; डॉ० सुनीता शर्मा 3636

इंदौर शहर के संदर्भ में बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटलीकरण का प्रभाव–डॉ० पवन तिवारी 3640
मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में पिछले 5 वर्षों में सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों का व्यावसायिक प्रदर्शन–अंशुल कुमार जैन; डॉ० अमर वतनानी 3651
महाराष्ट्र के पूर्व उपमुख्यमंत्री विजयसिंह मोहिते-पाटिल के व्यक्तित्व के पहलू - एक चिकित्सा अध्ययन
–प्रा० तानाजी हनुमंत जाधव; डॉ० बी० के० मोरे 3659
स्मृतियों में वर्णित न्यायिक प्रशासन की अवधारणा–डॉ० पूनम 3662
सांगातिक क्षेत्र में पखावज वाद्य की वर्तमान स्थिति–ज्योति; डॉ० वन्दना चौबे 3665
बालकों के नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के विकास के अध्ययन हेतु प्राप्त प्रदत्त का विश्लेषण–पवन कुमार 3668
माध्यमिक स्तर के सरकारी एवं गैर सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिव्यक्ति का तुलनात्मक अध्ययन
–संदीप कुमार यादव 3672
माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मूल्यों की शिक्षा : एक अध्ययन–डॉ० आलोक कुमार मिश्र 3677
"वर्तमान शिक्षा प्रणाली के माध्यमिक स्तर पर मानवाधिकारों के तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन"–डॉ० आलोक कुमार मिश्र; विजया रानी वर्मा 3682
चरित्रोपाख्यान: विश्लेषणात्मक परिचय–डॉ० ज्योति कौर 3688
स्त्री विमर्श-वैदिक काल से गुप्त काल तक–कुंवर विक्रम सूर्यवंश 3692
आर्यों का आगमन और ऋग्वेद युग का एक परिचय–डॉ० मो० सरवर अंसारी 3695
वर्तमान परिवेश में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की प्रासंगिकता–डॉ० प्रीति मिश्रा 3699
भारत में नागोपासना: विविध धर्मों में स्वीकारोक्ति–डॉ० अर्चना मिश्रा 3701
भारत-पाकिस्तान परमाणु कार्यक्रम–अर्जुन सिंह सोनकर 3704
जैन धर्म में अहिंसा का स्वरूप–अजीत सिंह; डॉ० बृजेश रावत 3707
बौद्ध दर्शन के सम्प्रदायों का नैतिक दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन–अजीत कुमार 3713
भारत में श्रेणीबद्ध विन्यास के रूप में जाति: एक अवलोकन–डॉ० आलोक वर्मा 3716
भावनात्मक बुद्धि का विकास एवं महत्व–सरोज शुक्ला 3720
शिक्षा में शैक्षिक प्रौद्योगिकी के उपयोग में आने वाली कठिनाइयों का अध्ययन–डॉ० कविता साळुंके; श्री उमेश अमरनाथ कुमावत 3722
छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले एवं बिलासपुर जिले के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं अभिभावकों में बाल अधिकारों के
बारे में जागरूकता का अध्ययन–प्रोफसर रमाकांती साहू 3725
भविष्यपुराण में वर्णित चतुर्मासिक व्रत–लक्ष्मीकान्त त्रिपाठी 3729
गद्दी समुदाय में नुवाले की सामजिक प्रासंगिता–लकेश कुमार 3735
अफगानिस्तान में सिख और हिन्दुओं की वर्तमान स्थिति–डॉ० परविंदर शर्मा 3739
पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की स्थिति (1940-2021)- एक अध्ययन–अविनाश कुमार; प्रो. (डॉ०) दिनेश प्रसाद कमल 3741
दीनदयाल अत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० संगीता विजय; सीमा प्रजापति 3745
भारतीय परिप्रेक्ष्य में मानवाधिकार–कौशल कुमार सैन 3750
प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना: भारत में सामाजिक समावेश की दिशा में कदम–वीर कुमार 3754
उत्तराखण्ड राज्य के सीमान्त जनपद पिथौरागढ के ग्रामीण परिवेश में वन आधारित उद्योगों का अध्ययन–बबीता भट्ट; डॉ० मंजुला चन्द 3759
टेढ़े-मेढ़े रास्ते में चित्रित सामंतवाद–जुली कुमारी 3768
क्रांति का मानचित्रण: भारतीय क्रांतिकारी राष्ट्रवाद और हिंदू लोकाचार–डॉ० कंवर चंद्रदीप सिंह 3771
भौतिकवादी चकाचौंध है मनुष्य की अधोगति का कारण-क्रांतिकारी संत तरुण सागर–डॉ० कमलेश कुमार जैन 3775
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्णित मूल्यांकन के विभिन्न पहलुओं का शालेय पाठ्यक्रम के संदर्भ में अध्ययन–श्रीमती श्वेता सिंह 3778
हिन्दी एवं अग्रेजी माध्यम के पूर्व प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि का अध्ययन–ममता कुमावत 3782
बी.एड. इन्टर्नशिप कार्यक्रम के प्रति छात्राध्यापकों के अभिमत का अध्ययन–डॉ० सुभाष पुरोहित; डॉ० सुनीता मुर्डिया 3786

मानव संसाधन प्रबंधन: मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कम्पनी लिमिटेड के कर्मचारियों पर एक अध्ययन–महेन्द्र कैथवास; डॉ० जितेन्द्र तलरेजा 3792
उत्तरखण्ड के परम्परागत समाज में दलितों की सांस्कृतिक-धार्मिक स्थिति–चरन सिंह 3795
मूक बधिर विशिष्ट विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के व्यक्तित्व का अध्ययन–डॉ० भावना सिंह 3800
दलित साहित्य का उद्‌भव एवं विकास: एक अध्ययन–भानु प्रताप; डॉ० संजय सक्सेना 3808
वर्तमान परिदृश्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षकों पर सोशल मीडिया का प्रभाव–नीरज भारद्वाज; डॉ० धीरेन्द्र सिंह यादव 3813
नव निर्गमन बाजार को अधिक सक्रिय बनाने के उपाय–प्रतिभा सिंह; प्रो० विजय कुमार अग्रवाल 3819
संस्कृत वाङ्मय में दैव की अपेक्षा पुरुषार्थ की श्रेष्ठता–डॉ० बृजेन्द्र सिंह गुर्जर 3823
रागदारी संगीत में सारंग अंग के रागों की महत्ता–कामाक्षी यादव; डॉ० रामशंकर 3827
विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध–विनोद अवस्थी 3831
भारतीय समाज के परंपरागत पृष्ठ्‌भूमि और उसमे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया–डॉ० राजेश अग्रवाल 3834
कमलेश्वर का हिन्दी कहानी में योगदान–डॉ० सविता वर्मा; लक्षमण कुमार पटेल 3837
छत्तीसगढ़ के विशेष पिछड़ी जनजातियां–परिवेश कुमार बर्मन 3839
नई कविता में मानवीय आस्था के मूल्य–मनीष कुमार सिंह 3842
आजादी के बाद भारतीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था का बिखरता मूल्य एवं जंगल तंत्रम् उपन्यास–रविकान्त राय 3846
भारतीय संगीत में राग की विकास यात्रा–कुमारी शालिनी 3849
शहरी माध्यमिक शिक्षा मण्डल एवं ग्रामीण माध्यमिक शिक्षा मण्डल के अंतर्गत पढने वाले विद्यार्थियों के परीक्षा दुश्चिंता एवं अभिभावक सहभागिता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन–डॉ० रीता सिंह 3852
पंचायती राज में महिला जनप्रतिनिधियों की राजनीतिक सहभागिता–प्रियंका शर्मा; डॉ० खेमचंद महावर 3856
आचार्य ओशो के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन–डॉ० सर्वेश चन्द्र 3862
नासिरा शर्मा के कथा साहित्य में साम्राज्यवादी विचारधारा का विवेचनात्मक अध्ययन–डॉ० आशीष यादव 3867
किशोरावस्था के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं उनका परिवारिक वातावरण–अंकिता शर्मा; डॉ० (पी.डी.) जय श्री शुक्ला 3870
रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की शैक्षिक अभिवृत्ति का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव –आनंद मसीह; डॉ० राकेश कुमार डेविड 3872
शारीरिक शिक्षा का प्रदेय : आरोग्य–डॉ० प्रेम सिंह मीणा 3877
ग्रामीण विकास में मनरेगा का योगदान: राजस्थान के विशेष संदर्भ में–महेन्द्र चौधरी 3879
ज्ञान चतुर्वेदी के साहित्य में व्यंग्य के विविध आयाम–शर्मिला देवी 3884
मैथिली पत्र - पत्रिका आ पञ्जी प्रबन्धक क्षेत्रमे गजेन्द्र ठाकुरक योगदान–शिव कुमार पासवान 3886
ज्ञान प्रकाश विवेक के कथा साहित्य में नारी संघर्ष–ललिता; डॉ० राजेन्द्र सिंह 3890
हरियाणावी लोकगीतों में अभिव्यक्त नारी: एक अनुशीलन–रेखा 3893
महादेवी वर्मा के काव्य में प्रतीकात्मकता–प्रो० प्रदीप श्रीधर 3898
भारतीय स्टेट बैंक एवं इसके अनुषंगी बैंको के विलय के वित्तीय प्रदर्शन का समीक्षात्मक अध्ययन–उमेश 3900
वैदिक काल में महिलाओं का पत्नी के रूप में विभिन्न क्षेत्रों में योगदान का अध्ययन–दीपक कुमार शर्मा; डॉ० निधि तिवारी 3905
प्राचीन भारतीय ग्रंथों में सैन्य तकनीक एवं वैज्ञानिकता की पराकाष्ठा–डॉ० विनोद मोहन मिश्रा 3907
करम मनुष्य का धरम है सत् भाषे रविदास–निरंजन सहाय 3910
डॉ० अम्बेडकर का आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–डॉ० श्यामदेव पासवान 3915
उच्च शिक्षा के विकास में भारत के विश्वविद्यालयों की भूमिका–शरद चरण वर्मा 3919
हरियाणा के लोक काव्य में भक्ति भावना–डॉ० विनय कुमार 3922

दृष्टिकोण

मौलाना अबुल कलाम आजाद और शिक्षा नीति के प्रगतिवादी दृष्टिकोण–रूखसाना बानो; डॉ० अशोक राम 3924

भारत के मंदिरों में देवदासी प्रथा–डॉ० स्मृति वाघेला 3930

आधुनिक हिन्दू परिवार में द्वन्द्व की समस्या: एक समाज वैज्ञानिक विवेचन–डॉ० प्रदीप कुमार गुप्ता 3932

नेतृत्व शैली का समस्त महाविद्यालय के प्राचार्य पर एक अध्ययन–लतिका ख्रष्ट्रीयान 3937

भारतीय सेनाओं की प्रशिक्षण पद्धति : एक अनुशीलन–नीलम; केशव देव शर्मा 3940

नई शिक्षा नीति में पाठ्यक्रम अधिगमता की महत्ता–माजीद बलोच 3945

शिक्षण में शाखीय अभिक्रम विधि की प्रभावकता का अध्ययन–धर्मेन्द्र कुमार भारतीय; डॉ० समर बहादुर सिंह 3948

अरावली क्षेत्र की पर्यावरणीय समस्याओं का भौगोलिक अध्ययन–चन्द्र शेखर; डॉ० गायत्री यादव 3951

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचार और नारी शिक्षा के उद्देश्य–मनोज कुमार शर्मा; डॉ० दिव्या विजयवर्गी 3954

18वीं शताब्दी के जयपुर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (नगर योजना एवं राजधानी परिवर्तन के विशेष संदर्भ में)–तोसिफ अली 3959

कृषि क्षेत्र में भारतीय महिलाओं की भागीदारी–महिमा बंसल 3964

भारत में MSME उद्योगों का विवेचनात्मक अध्ययन–डॉ० रेनू सिंह राणा 3968

विद्यार्थियों के शैक्षिक आकांक्षा स्तर का उनकी परीक्षा दुश्चिंता पर प्रभाव: एक अध्ययन–डॉ० राहुल कुमार तिवारी 3972

भारत में दहेज प्रथा: एक विश्लेषण–मो० नुरूल्लाह अंसारी 3977

वैदिक कालीन गद्य का एक सामान्य परिचय और विशेषताएँ–सुषमा तिवारी 3981

भारतेंदु युगीन लोकगीतों में तत्कालीन समाज का चित्रण–डॉ० सुरंगमा यादव 3984

''बाजारवाद, एवं भूमण्डलीकरण के युग में युवा वर्ग का संत्राश: ''दौड़'' उपन्यास''–रेणु देवी; डॉ० कल्पना शाह 3987

'निर्गुण' लोक गायन शैली का साहित्यिक अध्ययन–अरविन्द कुमार गुप्ता 3990

दयानन्द सरस्वती के सामाजिक एवं राजनीतिक विचार–डॉ० वीरेंद्र सिंह वर्मा 3993

कैलाश बनवासी की कहानियों में लोक-जीवन–डॉ० बी०एन० जागृत; अनवर खान 3998

भक्त कवयित्री मीराबाई–डॉ० सीमा कुमारी 4001

सामाजिक समरसता: अम्बेडकर और संघ–डॉ० चन्द्रकांता के माथुर 4003

कोविड 19 महामारी के दौरान कुपोषित बालकों का अध्ययन–डॉ० प्रतिभा सदाशिव देसाई 4007

कोविड-19 प्रतिरक्षण और महाविद्यालयीन युवाओं का दृष्टिकोण तथा व्यवहार–डॉ० बालूदान बारहठ 4014

छत्तीसगढ़ में जनसंख्या प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण–शितेन्द्र कुमार साहू 4019

कला एवं विज्ञान विषय के शिक्षक-प्रशिक्षार्थियों के अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन–श्री अनिरबन चौधरी; दिप्ती सिंह राठौर 4024

शिक्षा और राजनीति–माली गीता; सायरा बानो बोरगल 4028

कामायनी महाकाव्य की श्रद्धा : सशक्त नारी का रुप–प्रा० डॉ० भारती बी० वळवी 4030

फकीरचन्द शुक्ला की बाल कहानियों में यथार्थ–अंजू रानी; डॉ० राजकुमार एस.ई. नाईक 4034

महाराष्ट्र, गुजरात और गोवा राज्य के जवाहर नवोदय विद्यालयों में पर्याप्त खेल मैदानों की सुविधा का मूल्यांकन–मोनू; डॉ० बापू एन चौगले 4036

श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित निष्काम कर्मयोग द्वारा समसामयिक समस्याओं का निराकरण: एक ऐतिहासिक अध्ययन–पूनम; डॉ० अंजना राव 4041

अभ्यंग चिकित्सा की रोग निवारण में भूमिका–संगीता 4044

स्वातंत्रयोत्तर भारत में सरकारी व गैर-सरकारी उपागम: एक समीक्षात्मक अध्ययन–बेबी कुमारी 4046

घरेलू हिंसा का महिलाओं पर प्रभाव–प्रो० शैलेन्द्र सिंह; खुशबू यादव 4050

शैक्षणिक उपलब्धि पर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन–गौरी शंकर; डॉ० दिव्या विजयवर्गीय 4055

कुश्ती खिलाड़ियों के शारीरिक प्रशिक्षण का शारीरिक क्षमता के पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का अध्ययन–डॉ० दिलीप सिंह चौहान 4059

भारतीय मृदाओं की समस्याएँ एवं उनके दुष्परिणाम–रीतू 4062

अलवर जिले में कृषि उत्पादकता पर सिंचित क्षेत्र का प्रभाव–जितेश कुमार घोरेठा 4066

जनपद मेरठ के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित बालक-बालिकाओं में संवेगात्मक परिपक्वता के प्रभाव का विश्लेषण–डॉ० स्मृति दानी; नीरू यादव 4071

हिन्दू विवाह में वैवाहिक समायोजन के आधुनिकीकरण–रंजना वर्मा 4076
स्वच्छता का मानव जीवन में महत्व–अमरेश कुमार अमर; प्रो. डॉ. आर. के. पी. रमण 4081
मिथिला में लोक ज्ञान परंपरा–कुमारी निशा सिन्हा 4084
पाकिस्तान आम चुनाव 2018 के प्रति भारतीय मीडिया का दृष्टिकोण–आबिद रेजा 4087
भारत में किशोर न्याय: एक ऐतिहासिक रूपरेखा–शिखा दुबे 4092
औपनिवेशिक काल में बिहार में अफीम उत्पादन–अलका कुमारी 4098
पंचायती राज व्यवस्था में स्वतंत्रता पश्चात् आरक्षण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण–राहुल कुमार 4102
संयुक्त पंजाब में असहयोग आंदोलन की उत्पत्ति के कारण–पूनम; डॉ० अजमेर सिंह पुनिया 4105
रायपुर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में संस्थागत वातावरण का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–शुभा तिवारी; डॉ. शीतल दिनकरराव अडगावंकर 4109
शिक्षा का अधिकार अधिनियम के प्रति माध्यामिक विघालय के शिक्षकों की सोच पर एक अध्ययन–शिरीष तिवारी 4115
माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा का तुलनात्मक अध्ययन–नीलम साहू; डॉ० प्रियंका रमेशराव डफरे 4117
पं० दीनदयाल उपाध्याय की राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की यात्रा तथा लेखनी व पत्रकारिता–अवधेश कुमार जैन; डॉ० महेश चन्द्र शर्मा 4121
म्यांमार में लोकतंत्र का विकास–श्री कर्मचन्द यादव 4124
माध्यमिक स्तर के विद्यालयी किशोरों एवं किशोरियों के व्यक्तित्व के संदर्भ में विवाह के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन–संजय शर्मा 4127
वर्तमान समय में बढ़ते बाल-अपराध को रोकने में शिक्षा की भूमिका एक अध्ययन –श्रीमती नीलम चौहान; डॉ० शीतल अडगांवकर 4134
छत्तीसगढ़ में व्यावसायिक संरचना का स्थानिक-कालिक प्रतिरूप–नागेश्वरी वर्मा 4138
भगवानदास मोरवाल के रेत उपन्यास मे नारी-अस्मिता–प्रो० (डॉ.) अनुसुइया अग्रवाल (डी.लिट); कुमारी महेश्वरी पात्रे 4143
भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद: एक अवलोकन–अर्चना कुमारी; प्रो० (डॉ०) राजीव रंजन 4146
औपनिवेशिक भारत में महिला और समाज सुधार–पूजा कुमारी; प्रो० कुमकुम कुमारी 4150
बौद्ध दर्शन का अन्य दर्शन पर प्रभाव का विश्लेषणात्मक अध्ययन–रेणु कुमारी 4155
महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता: भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के परिप्रेक्ष्य में–डॉ० अग्निदेव 4159
राजनीतिक व्यंग्य के परिप्रेक्ष्य में शंकर पुणताबेकर के उपन्यास 'एक मंत्री स्वर्गलोक में' का विश्लेषण–डॉ० रविदत्त कौशिश; छिन्दरपाल कौर 4164
सार्वजनिक बैंकों के हो रहे विलय की आवश्यकता, महत्व एवं प्रभाव का अध्ययन–दीपक शर्मा; डॉ. ज्ञानेन्द्र शुक्ला 4168
डॉ. शिवप्रसाद सिंह के ऐतिहासिक उपन्यासों में सांस्कृतिक युगबोध–डॉ. चतुर सिंह 4172
परितोष चक्रवर्ती की कहानी में सामाजिक परिदृश्य–कलमरेखा; डॉ० राजेश दुबे; डॉ० मधुलता बारा 4177
समावेशित शिक्षा के प्रति शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की अभिवृत्ति और जागरूकता का विभिन्न शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में अध्ययन–डॉ० श्रीकांत भारतीय; पंकज सिंह 4180
जय प्रकाश (जे. पी.) का संपूर्णक्रांति दर्शन–डॉ० अनिल कुमार सिंह 4184
स्वदेश दीपक के नाटकों का कथ्य–मुकेश कुमार महतो 4187
सर्वहारा जीवन की अनूठी कृति 'बबूल'–प्रज्ञा सिंह 4194
बिहार के थारु जनजाति में लोकगीत व नृत्य: एक अध्ययन–डॉ० अम्बुज कुमार 4197
पर्यावरण में जन-जागृति की आवश्यकता–डॉ० सुधा सिंह 4201
भारत के संसदीय लोकतंत्र में चुनावी राजनीति एवं मतदान व्यवहार: एक अध्ययन–मेहर सिंह; डॉ० मंजीत 4206
भारतीय समाज एवं संस्कृति पर प्रपंच युद्ध के पश्चात पश्चिमी विचारों का प्रभाव–श्री हरेश राम; डॉ० नीलम आर्य 4209
"बाजारवाद, एवं भूमण्डलीकरण के युग में युवा वर्ग का संत्राश: "दौड़" उपन्यास"–रेणु देवी; डॉ० कल्पना शाह 4212
किन्नर का शब्दकोशीय अर्थ और परिभाषिक स्वरूप–डॉ० विजय कुमार पटीर 4215

दृष्टिकोण

उर्वशी: काम से आधात्मक की यात्रा–प्रिया तिवारी 4221

दौसा जिलें में भूजल स्तर का बदलता स्वरूप–तुलसी राम सैनी; डॉ० जगफूल मीना 4224

लोकतन्त्र में मतदान व्यवहार–डॉ० पूजा शुक्ला 4230

राष्ट्रीयता और बिलासपुर की साहित्यिक पत्रकारिता: एक अध्ययन–अतुल कुमार मिश्र; डॉ० सीमा पाण्डेय 4235

महिला सशक्तिकरण और पंचायती राज–नीलू देवी; डॉ० अजमेर सिंह मलिक 4239

भारत में निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (CSR)–धनसिंह यादव; डॉ. सुधा जैन 4242

मुण्डकोपनिषद् में परा एवं अपरा विद्या का विवेचन–डॉ० भारत वेदालंकार 4246

शिल्प में नारी आभूषण (खजुराहो के कंदरिया महादेव मन्दिर के विशेष सन्दर्भ में)–आकांक्षा विश्वकर्मा 4249

मुगल शासिका 'नूरजहाँ' का मुगल कालीन राजनीति के विशेष सन्दर्भ में–अजय कुमार; डॉ० शशि सिंह 4252

जनजातीय क्षेत्र में अध्ययनरत बालिकाओं की दबाव प्रबन्धन शैलियों का अध्ययन–डॉ० रचना राठौड; वर्षा बिड़ला 4254

मानव पुस्तकालय की आवश्यकता और प्रभाव वर्तमान परिदृश्य में–डॉ० आर के तिवारी; सालिक राम; दिप्ती तिग्गा 4259

महिलाओं को सशक्त बनाने में शिक्षा की भूमिका–उपेन्द्र सिंह; शशि भूषण प्रसाद सिन्हा 4263

असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के बीच संबल योजनाओं की जागरूकता का अध्ययन (इंदौर जिले के विशेष संदर्भ में)
–डॉ० घनश्याम अग्रवाल; श्रीमती रेणुका पाटीदार 4267

वस्तु एवम् सेवा कर के संबंध में जागरूकता का अध्ययन (इंदौर में संचालित लघु उद्योग के विशेष संदर्भ में)
–डॉ० दिनेश अग्रवाल; सुनील कुमार धाकड़ 4274

वैश्वीकरण के कारण हिंदी उपन्यासों में बदलते जीवन मूल्य–सुनीता 4283

भारत में विधिक सहायता - एक दृष्टिकोण–हरिओम गुप्ता 4286

औपनिवेशिक बिहार में सहकारिता आन्दोलन - एक विश्लेषण–डॉ० किरण कुमारी 4289

हिंदी साहित्य में लोकगीतों की पृष्ठभूमि–डॉ० भारती तिवारी 4291

विषय वर्ग (कला, विज्ञान व वाणिज्य वर्ग) के संदर्भ में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की संवेगात्मक बुद्धि का
तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० जय प्रकाश दूबे; विनोद प्रकाश तिवारी 4295

कबीर के काव्य में स्त्री-चिंतन का सन्दर्भ और स्वरूप–डॉ० प्रेमशीला 4300

महिलाओं और बच्चों के विरुद्ध बढ़ते अपराध: आपराधिक विधि संशोधन अधिनियम 2018 के आलोक में
एक आलोचनात्मक अध्ययन–नईमउद्दीन 4305

बिहार में ग्रामीण विकास एवं विश्व बैंक–मितु कुमारी 4308

ज्ञान समाज तथा शिक्षण संस्थानों में परिवर्तन एवं विकास–राहुल कुमार गुप्ता 4312

आत्मनिर्भर भारत के लिए महिला सशक्तिकरण का एक प्रयास–फारुख मोहम्मद;
डॉ० विकास प्रधान 4316

शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन
–राजेश कुमार दुबे; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य 4320

सेवारत् शिाक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा संतुष्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन
–पियाधर सिंह कंवर; डॉ० (श्रीमती) निशि भाम्बरी 4324

बाल मानसिक स्वास्थ्य में संवर्धन और निवारण–जागृति कुमारी 4329

कमार अनुसूचित जनजाति की संस्कृति में निरन्तरता एंव परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन
(छत्तीसगढ़ के गरियाबन्द जिले के विशेष संदर्भ में)–विकास बंजारे; डॉ० श्रद्धा गिरोलकर 4334

नक्सलवाद: भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए चुनौती–डॉ० एम० के० टम्टा 4340

अरुणाचल प्रदेश के आदी जनजाति के लोकगीतों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन–डॉ० अरुण कुमार पाण्डेय–बनश्री पर्तिन 4344

गालो लोककथाओं में स्त्री चेतना–प्रो० हरीश कुमार शर्मा; तुम्बम रीबा 4350

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की व्यवसायिक प्रतिबद्धता एवं आत्म प्रभावकारिता का तुलनात्मक अध्ययन–जूही पीटर; डॉ० शबनम खान 4353
पंजाबी साहित्य में महिलाओं की भूमिका: कृष्णा सोबती की चुनी हुई कृतियों की समीक्षा–पूजा शर्मा 4357
1857 के विद्रोह में जयपुर रियासत की भूमिका–महेश कुमार मीना 4360
भारत की जनसंख्या वृद्धि का आर्थिक विकास पर प्रभाव–दीक्षा उपाध्याय 4363
न्यायिक सक्रियता एवं लोक कल्याण में जनहित वाद का महत्व–अमित कुमार सिंह 4367
विश्व में महिलाएं: अतीत से वर्तमान तक–प्रियंका 4370
हिन्दी सिनेमा का बदलता रूप–कु० सरिता यादव; डॉ० प्रीति राय 4373
सामाजिक एवं वैज्ञानिक परिपेक्ष में संगीत की भूमिका–डॉ० बबली अरुण 4378
'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन में आने वाली चुनौतियां'–लक्ष्मण लाल रेबारी 4381
रूपसिंह चन्देल की कहानियों में पुरुष-विमर्श–डॉ० रहीम मियाँ 4383
भारत में पर्यावरण संबंधी चिंताएँ: समस्याएँ और समाधान–प्रीति अग्रवाल 4387
अवमानना विधि का विकास उद्देश्य एवं संवैधानिक विधि मान्यता–प्रीति वर्मा 4391
सुशासन की चुनौतियों से निपटने में सीएजी की भूमिका: एक अध्ययन–डॉ० पूर्णिमा सिंह 4394
स्त्री शिक्षा–डॉ० रजना गुप्ता 4397
किशोर आयु वर्ग के बच्चों का उनके माता-पिता के साथ सामंजस्य की समस्या : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–अर्पणा रानी 4400
हाई स्कूल स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में व्यावसायिक विषय के चयन का विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन –भास्कर देवांगन 4403
सरकारी सेवाओं में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव–डॉ० मीरा देवांगन; डॉ० भुनेश्वर प्रसाद 4409
छत्तीसगढ़ में जनजातीय विकास: स्थिति एवं वर्तमान चुनौतियां–डॉ० ममता कोशरिया 4411
छत्तीसगढ़ी लोक-गाथाओं में नारी के विविध रूप–डॉ० शारदा सिंह; प्रो0 शैल शर्मा 4414
मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम तथा इंडियन सर्टिफिकेट ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन द्वारा निर्धारित कक्षा नौवीं की हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तक का तुलनात्मक अध्ययन–अंजलि सेन; डॉ० शिवानी श्रीवास्तव 4417
कोविड-19 महामारी के बाद भारत में बाल श्रम और आधुनिक दासता: एक सिंहावलोकन–दीपिका रानी 4421
राष्ट्रभाषा के विकास में नागरी लिपि का योगदान–डॉ० मोती लाल शाकार 4429
मन्नू भंडारी से उपन्यास 'महाभोज' में चित्रित राजनीति–संध्या 4432
स्वनियोजन: श्रीमद्भगवद्गीता की दृष्टि से–केशव 4435
शतपथ-ब्राह्मण का काल, कर्तृत्व और नामकरण–कुशुम 4440
यशपाल के उपन्यासों में नवजागरण–डॉ० कामराज सिन्धु; रीतू रानी 4444
21वीं सदी नारी युग का आरम्भ श्री राम शर्मा के संदर्भ में–पुष्पा शर्मा; डॉ० अलका तिवारी 4447
स्वामी विवेकानंद: एक सच्चे क्रांतिकारी–आशीष राठौर; डॉ० ज्योति राजपूत 4450
किशोरावस्था में शिक्षा का स्वरूप–रहमत उल्लाह अंसारी; डॉ० ज्योति राजपूत 4455
साहित्य में प्रेमचंद की आलोचक दृष्टि–रीना राठौर; डॉ० अलका तिवारी 4458
आधुनिकताबोध के परिप्रेक्ष्य में 'महासमर' का राजनैतिक पक्ष–डॉ० पूनम काजल 4462
हाई स्कूल स्तर पर वैकल्पिक विषय के रूप में व्यावसायिक विषय के चयन का विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति पर प्रभाव का अध्ययन–भास्कर देवांगन 4465
असहयोग आन्दोलन में राहुलजी का योगदान–डॉ० संजय कुमार सिंह 4471
समकालीन लोकतांत्रिक समस्याओं के विभिन्न स्वरूप व समाधान–शालिनी सिंह 4474
तारादत्त विलक्षण के साहित्य में राष्ट्रीयता–कुलदीप शर्मा; डॉ० अनिल कुमारी 4477
बदलता वैश्विक परिदृश्य: भारत-अमेरिका संबंध एक मूल्यांकन–प्रदीप कुमार 4481

'चन्द्रमनोरमीयम्' में गुण-योजना–डॉ० अरुणा शर्मा; ज्योति 4484
विशाखादत्त कृत मुद्राराक्षस में राजा का प्राधान्य–डॉ० ललित कुमार गौड; लक्ष्मी कुमारी 4488
भारतीय समाज में धर्म का स्वरूप, आवश्यकता और प्रासंगिकता–गोपाल लाल सालवी 4491
प्राथमिक विद्यालय स्तर पर प्रभावी अधिगम में अभिभावकों एवं षिक्षकों की सहभागिता–ईश्वर प्रसाद यदु; डॉ० संजीत कुमार साहू 4494
अध्यापक संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण कौशल एवं वृत्तिक विकास के संदर्भ में अध्ययन–डॉ० बृजेश कुमार 4498
अष्टछाप संगीत में प्रयुक्त वाद्यों का स्वरूप–अंकिता मिश्रा 4503
मुद्राओं के आधार पर गुर्जर प्रतीहार राजवंश की आर्थिक स्थिति: एक विश्लेषण–राजेन्द्र प्रसाद मौर्य 4509
साम्प्रदायिकता का दस्तावेज तमस–सत्यप्रकाश 4512
महाभारत काल में - राज्यों के आय के स्रोत का विशलेषणात्मक अध्ययन–राजन कुमार 4516
जनपद कौशाम्बी में वर्ष 2001-02 से 2019-20 के मध्य भूमि उपयोग प्रतिरूप में परिवर्तन का स्वरूप–हृदेश कुमार सिंह; प्रो० अरुणा कुमारी 4520
मातृभाषा में अध्ययन से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाला प्रभाव–डॉ० सुनिता मुर्डिया; टीना जैन 4527
उत्तराखण्ड में व्यापार एवं वाणिज्य: एक ऐतिहासिक अवलोकन–डॉ० सन्तोष कुमार; दीपक कुमार आगरी 4530
केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में किसान, मजदूर व शोषितों की बेबस-लाचार जिन्दगी का चित्रण–रवि शंकर निराला 4533
भारत-बांग्लादेश संबंधों के विभिन्न आयामों का विश्लेषण–डॉ० मनीष 4536
भारत में षड्-दर्शन की वैज्ञानिक परंपरा–डॉ० शीलक राम 4538
आपका बंटी: उपन्यास में आधुनिक नारी का यथार्थ–जावेदखान 4543
भारतीय ग्रामीण समुदाय के सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तन मे अर्जक संघ की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–विनय कुमार सिंह पटेल 4545
पाकिस्तान में राष्ट्रीय एकीकरण की समस्या: विभिन्न आयाम–ममता डांगी 4548
गुप्तकालीन सामाजिक परिदृश्य का अवलोकन : समकालीन साहित्य के विशेष संदर्भ में–आशुतोष पाण्डेय 4552
भारत में दलितों के सशक्तिकरण को सुनिश्चित करने में 73वें और 74वें संशोधनों द्वारा निभाई गई भूमिका पर एक अध्ययन
–रीना कुमारी; डॉ० सोनिका 4558
"पांडुलिपि अंकन में 'मषी' या मसि तैयार करने की विधियां व परिचयात्मक पृष्ठभूमि"–डॉ० राजकुमार जांगिड़ 4563
गुरदयाल सिंह के 'परसा' उपन्यास की बनावट और रणनीति का अध्ययन–बिशम्भर; सोनिया यादव 4566
वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान हेतु गांधीवाद की प्रासंगिकता–अनीता मीणा 4568
वैशेषिकमतानुसारं कालस्य द्रव्यत्वसिद्धि:–विजय कुमार 4571
डॉ० सूरज सिंह नेगी के उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन: वृद्धों के विशेष संदर्भ में–मीनाक्षी; डॉ० प्रवेश कुमारी 4574
नक्सलवाद एक संवेदनशील मुद्दा–सुनीता 4577
सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की अवधारणा- एक विहंगम दृष्टिकोण–डॉ० अजित 4580
रघुवीर सहाय के काव्य में ''जनता'' की अवधारणा–पंकज सिंह 4584
उच्च शिक्षा में चुनौतियाँ: नामांकन, पाठ्यचर्या, शिक्षण, गुणवत्ता, अनुसंधान और नीतियाँ–संतोष कुमार दुबे 4587
भगवद् वाल्मीकि चरितम् महाकाव्य में अलंकार योजना: एक विवेचन–डॉ० जगदीश भारद्वाज; गीता 4591
'भगवद्वाल्मीकिचरितम्' में ध्वनि तत्त्व: एक विवेचन–डॉ० ललित कुमार गौड; निशा 4597
नारी सशक्तिकरण का एक दस्तावेज: आछरी-माछरी उपन्यास–डॉ० सोनी काण्डपाल 4601
फणीश्वरनाथ रेणु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अनुशीलन–मनीषा यादव 4605
1857 ई. के विद्रोह का उत्तर भारतीय रियासतों में सैनिक स्वरूप–डॉ० रघु महेंद्र सिंह 4607
कुशीनगर जिले में अध्ययनरत बी0एड0 के छात्राध्यापकों/छात्राध्यापिकाओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन–डॉ० दुर्गेश पाल; डॉ० अजय कुमार सिंह 4609
वाल्मीकि-रामायण में वर्णित वैदिक स्त्री-देवता–चन्द्रकला 4614
महाभारत में खगोलशास्त्रीय विवेचन–राहुल 4617

धर्मांतरण का मुद्दा और उत्तर-प्रदेश की हिंदी दलित पत्रकारिता–दुर्गेश कुमार देव 4621
आरक्षण नीति का प्रभाव: महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के शिक्षकों का अध्ययन–अजीत सिंह 4624
मशीनी अनुवाद: आधुनिक युग की आवश्यकता–मृणाल ठाकुर; डॉ० विदुषी आमेटा 4629
शिक्षकों में बर्नआऊट और कार्य संतुष्टि के मध्य संबंध का अध्ययन–श्रीमती रंजना पटेल; डॉ० पद्मा अग्रवाल; डॉ० सुमनलता सक्सेना 4633
भारत में राज्य प्रशासन: अर्थ, विकास एवं वर्तमान स्वरूप–मिथलेश कुमारी 4636
विजेंद्र के काव्य में बिम्ब सौन्दर्य–मीना देवी; डॉ० कमला कौशिक 4642
1857 का विद्रोह और ग्वालियर–डॉ० भूप सिंह बल्हारा 4646
शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में मानवाधिकार शिक्षा का अध्ययन–डॉ० नरेश कुमार 4649
प्राथमिक शिक्षा में बालिकाओं के (ड्रापआउट) की समस्या, (बिलासपुर जिले) के विशेष संदर्भ में–लीलावती पटेल; डॉ० नीरज कुमार खरे 4655
अधिगम अक्षम बालको की शिक्षा एवं पुनर्वास को प्रभावित करने वाले कारको का विश्लेषणात्मक अध्ययन
–सुमन प्रतीक्षा; (प्रो०) डॉ० रजनी रंजन सिंह 4664
वामपंथी उग्रवाद: चुनौतियां और प्रतिक्रिया–मनोज कुमार शर्मा 4666
वर्तमान कानून पर हाल ही में निजता के अधिकार के निर्णय का प्रभाव–परमार मनोजकुमार आर. 4669
उपभोक्ता जागरूकता: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, (जनपद देहरादून की ग्रामीण एवं नगरीय महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन)
–डॉ० सविता राजपूत 4675
भारतीय राजनीतिक व्यवस्था एवं भारतीय लोकतंत्र: जाति की विघटनकारी भूमिका–डॉ० अंशु पांडे 4681
शिक्षार्थियों के शैक्षिक मूल्यांकन की उपलब्धि में समावेषन की चुनौती–अभिषेक कुमार; प्रो० (डॉ०) रजनी रंजन सिंह 4686
तिजारा तहसील: सड़क मार्गजाल विश्लेषण–अशोक कुमार खटीक 4691
वैयाकरणसिद्धांतकौमुदी के कालाधिकार प्रकरणगत तद्धित पदों का संस्कृत वाङ्गमय में अर्थप्रयोग–अभिषेक; डॉ० सुरेन्द्र कुमार 4695
परमारकालीन शैव भूमिज मन्दिर स्थापत्य–डॉ० बबीता 4702
वैदिक वाङ्मय में स्त्रियों का योगदान–डॉ० सूरजभान 4709
वृद्धावस्था एक सामाजिक समस्या एवं चुनौती–प्रतिमा सिंह 4711
'दिनकर' के काव्य में विद्रोही स्वर–डॉ० राजेश कुमार; राधा रानी वर्मा 4715
कलौता समाज में राजनीतिक चेतना जागृत करने में पंचायती राज की भूमिका (देपालपुर विकास खण्ड का एक अध्ययन)
–अर्जुन चौहान; डॉ० कुसुमलता निगवाल 4718
त्वरित सुनवाई के लिए बलात्कार के मामलों में विशेष न्यायालयों का गठन : एक आवश्यकता–लताबेन सुरजीभाई मेणात 4724
विकलांगता: भारतीय शिक्षा, समाज और सिनेमा–डॉ० पिन्टू कुमार 4727
भारत में पंचायती राज का स्वरूप एवं संवैधानिक प्रावधान–महेन्द्र प्रताप बॉयला 4730
योग माध्यम से तनाव प्रबंधन और इष्टतम प्रदर्शन–विपुल ए. देसाई 4734
कबीर की भक्ति एवं भक्ति काव्य में कबीर का प्रभाव–सलमा खातुन 4736
दयानन्द सरस्वती एवं रवीन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार जीवन मूल्य एवं शैक्षिक विचार–प्रतीक त्रिपाठी; डॉ० बीनू शुक्ला 4739
राजस्थान के दौसा जनपद के किलों का अध्ययन–महेन्द्र प्रताप सिंह; डॉ० आलोक कुमार 4741
लोकतंत्र और निर्वाचन एक संक्षिप्त अध्ययन–राकेश कुमार 4745
श्रीमद् भागवत में योग-साधना–दिपीका बी० पटेल; डॉ० रीटा एच० पारेख 4750
कानपुर के चौबेपुर विकासखंड में आयोजित गणेश महोत्सव का सामाजिक सांस्कृतिक अध्ययन–पदम नारायण पांडेय 4754
उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली दिव्यांग महिला छात्राओं के मुद्दे और चुनौतियाँ–सरिता बाजपेई 4758
भारत में मानवाधिकार संरक्षण हेतु न्यायिक प्रयास–तरुषी पांडेय 4762
प्राचीन भारतीय साहित्यिक संदर्भों में चारणो का प्रदान–ब्रह्मभट्ट ध्रुवकुमार जयंतकुमार 4766

दृष्टिकोण

हरियाणा में अहीरवाल के नाट्य संगीत के प्रसिद्ध लोक कलाकारज़्डॉ० मुकेश 4770
हरियाणा के सूरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेला का एक अध्ययन–सुनीता अहलावत 4773
ग्रामीण गरीबी में मनरेगा का योगदान–जिज्ञासा पाण्डेय 4779
समाज में शिक्षा से वंचित विद्यार्थियों की सांवेगिक स्थिरता का अध्ययन–डॉ० पंकज कुमार यादव 4784
स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों का एक अध्ययन–डॉ० विजय शंकर यादव 4788
'अरावली' उपन्यास में बोध और अभिव्यक्ति का नवप्रवर्तन–दिनेशभाई एम. चौधरी 4792
संचार कंपनियों के ग्राहकों के क्रेता-व्यवहार पर विज्ञापन के प्रभाव का अध्ययन (कौशाम्बी जनपद के विशेष संदर्भ में)–डॉ० ज्ञानेंद्र सिंह चौहान 4795
प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री-चिंतन–उपासना 4799
रबीन्द्र नारायण मिश्रक उपन्यासमे नारी विमर्श–पंकज कुमार पंडित; डॉ० मीनू कुमारी 4802
कोरोना काल के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना पर प्रभाव–नीरज कुमार 4805
भारत में चुनाव आयोग: स्वरुप व कार्य एवं इसके समक्ष चुनौतियाँ–प्रहलाद कुमार मीना 4810
भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा का योगदान–अनुज कुमार 4814
मृणाल पाण्डे के उपन्यास में समाज के उत्थान में नारी की भूमिका–चौहाण उर्वशीबेन ऐम 4818
लैंगिक समानता के वैश्वीकरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों की भूमिका : एक विश्लेषण–डॉ० गौरव शर्मा 4820
भारत की भू-रणनीतिक महत्वाकांक्षा में अफगानिस्तान का स्थान–निशांत तुराण 4825
जनसंख्या वृद्धि एवं वितरण का क्षेत्रीय प्रतिरूप: सिवान जिला का एक प्रतीक अध्ययन–सुबोध कुमार चौहान 4830
हिंदी उपन्यासों में संवेदना के विविध आयाम–डॉ० संजय भाऊसाहेब दवंगे 4834
तुलसीदास जी के काव्य में लोक कल्याणकारी भावना–प्रा. माने शेषराव सुभाषचंद्र 4837
सतत विकास की अवधारणा सिद्धांत एवं लक्ष्य–श्रीमती अंजना 4840
मोहनलाल महतो वियोगी का व्यक्तित्व और कृतित्व–शालीन साहू 4843
दिनकर के निबंधों में राष्ट्रीय एकता के तत्व–कैलाश कुमार; डॉ० शंकरमुनि राय 4846
74 वें संविधान संशोधन के पश्चात नगरीय प्रशासन–डॉ० श्याम किशोर उपाध्याय 4851
पारिस्थितिकी पर्यटन: सतत विकास का बेहतरीन जरिया–आसीन खाँ 4854
जैन दर्शन में कल्याणक का महत्त्व–विमलेश राम; डॉ० दुधनाथ चौधरी 4859
अन्त: कृद्दशा में वर्णित सांस्कृतिक-जीवन का समीक्षात्मक अध्ययन–विनय कुमार सिंह 4861
जैन एवं जैनेत्तर शिक्षणीय व्यवस्था का दार्शनिक अध्ययन–सुष्मिता सौरभ 4863
द्विरेफकी कहानियों में मनोविश्लेषनात्मकता–श्री रमेश भाई परबतभाई चौधरी 4865
मत्स्यगंधा - गौतम शर्मा - एक अध्ययन–नरेंद्रसिंह सी. गेलोत 4868
मावजीमाहेश्वरी और निबंध 'बोर'–राजपूत लालसिंह चंदनसिंह 4870
भारत-पाकिस्तान जल विवाद का राजनीतिक आयाम–विष्णु शंकर तिवारी 4873
विभिन्न कर बचत उपकरणों पर एक अध्ययन–अनुभव अग्रवाल; अजय कुमार सिंघल; अरुण अग्रवाल 4877
एस्लामी स्थापत्य शैली–पटेल प्रियंकाबेन कीर्तिकुमार 4885
जन चेतना का स्थानीय उभार एवं अगस्त क्रान्ति: बलिया के विशेष सन्दर्भ में–दिलीप कुमार राय; प्रो० संतोष कुमार 4887
हिन्दी साहित्य में उपन्यासकारों का वर्तमान समय में मानवतावादी दृष्टिकोण–जितेन्द्र कुमार मौर्य 4890
बिहार में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के विकास में सरकारी योजनाओं की भूमिका–बिरेन्द्र कुमार 4893
प्राथमिक शिक्षा की प्रगति में समुदाय की सहभागिता एवं सशक्तीकरण–डॉ० अनीता सती 4899
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिका तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० आलोक कुमार सिंह; मनोज कुमार यादव 4904

सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सार्थक प्रयोग–डॉ० दीपमाला गुप्ता; ऋतु मिश्र 4909
अहीरवाल के लोक जीवन में लोक संगीत–डॉ० रविन्द्र कुमार 4912
मध्याहन भोजन योजना: हरियाणा के भिवानी जिले में तोशाम खंड का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सरोज कुमारी; प्रदीप कुमार 4915
आई. सी.टी. का वर्तमान शिक्षा प्रणाली में महत्त्व–डॉ० धीरेन्द्र सिंह यादव 4922
भारत में महिलाओं के विरूद्ध बढते अपराध के कारण–डॉ० अर्चना 4926
ऐतिहासिक स्रोत के रूप में जातक साहित्य–रेशमा खातून 4928
मिथिला: एक वैष्वीकृत कला रूप–आलोक कुमार मिश्र 4930
सोनार किले का एतिहासिक महत्व–पंचाल मायाबेन ए. 4933
डॉ. हरिप्रसाद शास्त्री का ऐतिहासिक शोध में प्रदान–पटेल रसनाबेन के. 4936
कार्मिक प्रशासन की प्रासंगिकता का एक अध्ययन–श्यामल किशोर ठाकुर 4939
अंतरराष्ट्रीय प्रवासन : कारण और सामाजिक प्रभाव–डॉ० जे० पी० भट्ट; कमल कुमार 4942
नीलम राकेश की बाल कहानियाँ: समीक्षात्मक अध्ययन–मीनाक्षी 4947
स्थानीय स्वशासन और स्वच्छ भारत अभियान' (बिरसिंहपुर नगर परिषद् का एक अध्ययन)–डॉ० अनुराधा जैन; पवन कुमार गुप्ता 4951
स्वामी विवेकानन्द का दर्शन और राष्ट्रवाद–अमीत कुमार अमन 4954
'कन्या दिवस' गीत का रसदर्शन–रबारी दिनेश के. 4958
भारत में सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन का संक्षिप्त अध्ययन–डॉ० त्रयम्बकेश्वर कुमार 4964
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग- हरियाणा के संदर्भ में इसके प्रशासनिक संगठन एवं प्रबन्धन का एक भौगोलिक विश्लेषण –डॉ० जोगेन्द्र सिंह खोखर 4968
पत्रकारिता में बाबासाहेब अम्बेडकर का योगदान–डॉ० अनिल विठ्ठल बाविस्कर 4974
रीवा संभाग में वनों का वितरण एवं वन्यजीव संवर्द्धन:- एक भौगोलिक अध्ययन–डॉ० प्रदीप सिंह; सितेश भारती 4977
विवेकी राय के उपन्यासों में भाषा एवं शिल्प पक्ष–डॉ० बबीता देवी 4981
कर्म एवं पुनर्जन्म: एक अनुचिंतन–डॉ० दुधनाथ चौधरी 4985
भट्टिकाव्य में प्रयुक्त प्रत्ययान्त धातुओं की व्याकरणिक प्रक्रिया–ध्रांगी सुरेशकुमार बाबूलाल 4988
अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार एवं वर्तमान परिदृश्य–डॉ० वैशाली देवपुरा 4991
विश्वशान्ति में संस्कृत का योगदान–डॉ० सन्तोष देवी 4996
भारतीय उच्चतम न्यायालय में अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में राजभाषा हिन्दी का स्थान–अरविन्द कुमार गुप्ता 4999
पंडित दीनदयाल उपाध्याय और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन–अंकेश कुमार 5002
स्वामी विवेकानन्द और राष्ट्रवाद - एक अध्ययन–रंजन कुमार 5006
अस्तित्व के आइने में किन्नर: एक विश्लेषण–प्रिया सिंह; प्रोफेसर शार्दूल विक्रम सिंह 5009
जीवन कौशल शिक्षा और शिक्षण विधियों का महत्व–डॉ० संजीव कुमार 5013
बिहार में महिला सशक्तिकरण: एक अध्ययन–नीतू कुमारी; प्रो० मुनेश्वर यादव 5018
खुमाण रासो में वर्णित सामाजिक परम्परा का ऐतिहासिक विवेचन–डॉ० सोनल चौहन 5022
ज्ञानेन्द्रपति की कविताओं का विश्लेषण–नेहा कुमारी 5027
भारत के आर्थिक विकास में महिला श्रमिकों की भूमिका–किरन सिंह 5030
ऋग्वेद में नारी की स्थिति–विशाल मणी 5033
पचायती राज संस्थान में महिला ग्रामीण नेतृत्त्व: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–शीला मिश्रा 5036
बच्चों के जीवन में समाजीकरण के विकास का समाजशास्त्रीय विश्लेषण–सुलेखा झा 5041

दृष्टिकोण

प्राचीन काल में अध्यात्म और विज्ञान: एक संक्षिप्त अवलोकन–डॉ० राजीव कुमार 5045
बालक विकास में वातावरण, शिक्षक एवं अभिभावक की भूमिका–डॉ० बाबू राम मौर्य; निक्की टोप्पो 5048
व्यावसायिक शिक्षा: चुनौतियां और आगे की राह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में–भास्कर देवांगन 5051
विदर्भ में स्वास्थ्य के क्षेत्र में डिजिटल मीडिया की पहुंच–डॉ० रुपाली उ. अलोने 5059
कोविड-19 महामारी के दौर में दूरस्थ शिक्षा–सुहास डफल 5069
वैश्विक परिप्रेक्ष्य में नयी शिक्षा नीति–डॉ० पूजा यादव 5072
छत्तीसगढ़ी लोकोक्तियाँ-गिरीश पंकज के व्यंग्य उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में–नंदिनी तिवारी; शिवांगनी परिहार 5075
पत्र पत्रिकाओं के विज्ञापन का बदलता स्वरूप और स्त्री विमर्श–नंदिनी तिवारी; रश्मि पाण्डेय 5079
जलवायु परिवर्तन: एक विश्लेषणात्मक दृष्टि–डॉ० अर्चना अग्रहरी 5082
घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 एक विश्लेषण–पूनम यादव 5085
हिंद महासागर नीति की नई गतिशीलता एवं भूस्त्रातजिक स्थिति–राकेश कुमार 5088
जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा सुरक्षा–डॉ० सन्तोष कुमार गुप्ता 5091
भारत में स्वास्थ्य की स्थिति एवं विकास–डॉ० कमलेश पाल; सरिता कुशवाहा 5094
भारत जापान अमेरिका त्रिकोणीय सहयोग–डॉ० रामकृष्ण सिंह; सुशील कुमार रावत 5096
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में चित्रित नारी की संवेदनाएँ–श्रीमाली संदिप कुमार मनुभाई 5099
विश्वविद्यालय स्तर के खिलाड़ियों पर योगिक अभ्यास व भौतिक चिकित्सा क्षमता और मानसिक स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० दिलीप सिंह चौहान; विनोद नायर 5103
मुंशी प्रेमचंद के लेखन में रोचकता–डॉ० शालिनी 5107
भारत में भूकम्प एवं बाढ की समस्या का प्रमुख प्राकृतिक आपदा के रूप में भौगोलिक अध्ययन–कृष्ण कुमार 5111
महिलाओं का राजनीतिक विकास–नीरु यादव 5115
जनपद फिरोजाबाद में जल संसाधन: एक भौगोलिक अध्ययन–गरिमा सिंह; डॉ० नेत्रपाल सिंह 5118
जयंत गाडीत के 'सत्य' उपन्यास में गांधीजी का जीवनसंघर्ष–भानोतर नीताबेन ईश्वरभाई 5121
अनुसूचित जातियों पर निर्धनता उन्मूलन के संदर्भ में पंचवर्षीय योजनाओं का क्रियान्वयन और प्रभाव का अध्ययन–डॉ० कुलदीप कुमार द्विवेदी 5124
करौली जिले में जल संसाधान की चुनौतियां एवं समाधान–मनोज कुमार मीणा 5127
जयशेखरसूरी रचित जैनकुमारसम्भव महाकाव्य में काव्य सौंदर्य का वर्णन–पायलबेन मनुभाई प्रजापति 5133
लोकगीत–डॉ० हेतल पी० बारोट 5135
स्त्री-साहित्यिक विमर्षवादी विचारधारा का सृजन और संभावना–प्रकाश यादव 5138
शिव प्रसाद सिंह के कथा साहित्य में अनुभूति–प्रो० डॉ० उर्विजा शर्मा; सीमा यादव 5141
मुक्तिबोध की फैण्टेसी विषयक अवधारणा का विश्लेषण–डॉ० सुधा राजलक्ष्मी 5144
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में चौरी-चौरा घटना का महत्व एवं प्रभाव: पुनर्विश्लेषण–डॉ० ऋषभ कुमार 5148
ग्रामीण विकास में सूचनाधिकार की भूमिका–संध्या सिंह 5151
खेल जगत और वर्तमान शिक्षाव्यवस्था–डॉ० हरेंद्रसिंह पी सोलंकी 5155
दलित जाति का दंश: जूठन आत्मकथा–डॉ० अरविन्द कुमार 5157
गोविन्द मिश्र के कहानियों का युग बोध की दृष्टि से अध्ययन–पंकज मिश्र; डॉ० रानी बाला गौड़ 5161
न्यू मीडिया के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों की मुस्लिम महिलाओं के सामाजिक जीवन में परिवर्तन: एक अध्ययन (भोपाल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों के विशेष संदर्भ में)–डॉ० उर्वशी परमार; तस्नीम खान 5165
मंजुल भगत के कथा-साहित्य में नारी चेतना का मूल्यांकन–डॉ० मधु शर्मा; संगीता यादव 5178
हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री-जीवन की चुनौतियाँ–दिनेशभाई चौधरी 5181
मैत्रेयी पुष्पा के ग्राम-केंद्रित उपन्यासों में स्त्री संघष ('इदन्नमम' और 'चाक' के परिपेक्ष्य में)–झाला दिग्विजयसिंह सी 5183
छतरपुर जिले में सांस्कृतिक भूदृश्य पर्यटन का विकास एवं स्थानीय आर्थिक उन्नति के अवसर–डॉ० राजबहादुर अनुरागी; अंजली सिंह यादव 5185

मानवाधिकारों के संरक्षण के लिए नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता–राजेंद्र कुमार 5190
मृदुला सिन्हा के कहानियों में नारी चेतना–पौल्टी कुमारी; डॉ० आनंद कुमार सिंह 5201
समाजिक वातावरण का छात्रों के समायोजन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन–सुजाता बनकर; डॉ० मुंशी रकीब 5204
फणीश्वरनाथ रेणु के आँचलिक उपन्यासों में सामाजिक चेतना–रेखा टम्टा; डॉ० जगदीश चन्द्र जोशी 5214
मार्कण्डेय की कहानी 'महुए का पेड़' में ग्रामीण परिवेश–डॉ० जयप्रकाश यादव; सुनील कुमार यादव 5218
मध्यकालीन भारत की इस्लामिक वास्तुकला और वर्तमान भारतीय अर्थव्यवस्था में इसका योगदान–शालिनी तिवारी; डॉ० मणि अरोड़ा 5220
संतुलित आहार स्वस्थ जीवन का आधार-एक अध्ययन–अलका सुधा सरोजनी 5224
दुग्ध उद्योग का आर्थिक विकास में महत्व–नविता कुमारी 5226
'हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में नारियों की वर्तमान स्थिति'–डॉ० वर्षा रानी 5228
प्रदर्शन मूल्यांकन प्रणाली और कर्मचारी संतुष्टि पर इसका प्रभाव–डॉ० आशीष कुमार शुक्ला; अनुज कुमार सिंह 5231
नक्सलवाद : एक सामाजिक-आर्थिक समस्या–डॉ० आफताब आलम 5239
पंचायती राज : महिला सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम (बिहार राज्य के संदर्भ में)–डॉ० आफताब आलम 4915
महात्मा गाँधी के पर्यावरणीय विचारो की प्रासंगिकता–प्रो० (डॉ०) प्रभास चंद्र मिश्र; कुन्दन कुमार 5242
'बुल बुल सराय' नाटक में उजागर सामाजिक राजनीतिक विसंगतियाँ–काजी गजालाबानू कुतुबुद्दीन 5244
समकालीन हिन्दी नाटकों में युगबोध–अतुल सिंह; डॉ० कुसुम सिंह 5247
चम्पारण में नील के किसानों का संघर्ष और महात्मा गाँधी–पिंकी कुमारी; प्रोफेसर (डॉ०) मीना सिन्हा 5250
भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में बैंको की भूमिका–स्मिता कुमारी 5253
भारतीय ग्रामीण विकास में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका–सुष्मिता कुमारी 5255
स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूत: शहीद वीर नारायण सिंह–डॉ० अनिल कुमार भतपहरी 5257
मुस्लिम अल्पसंख्यक समुदाय और सामाजिक पिछड़ापन–प्रो० डॉ० मो० शाहिद हसन; मो० हबीब 5259
निराला का काव्य और सामाजिक संदर्भ–प्रज्ञा मिश्रा 5263
केरल में चिकित्सकीय पर्यटन: एक भौगोलिक विश्लेषण–डॉ० शिव कुमार सिंह 5268
गिजुभाई बधेका के त्रिगुणात्मक शिक्षण पद्धति की वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में उपादेयता–रामेश्वरी; डॉ० रानी महतो 5274
जयपुर जिले में कृषि आधुनिकीकरण : आधुनिक सिंचाई एवं कृषि यंत्रों का योगदान–नीरज कुमार जांगिड़ 5278
बारडोली स्वराज आश्रम और इसकी रचनात्मक गतिविधियाँ–हर्षदभाई के. चौधरी 5284
मार्केटयार्ड द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं–वीए परमार 5288
श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन और मूलभूत सिद्धान्त–पूनम यादव 5290
कहानी के बारे में सुरेश जोशी का भाषाकर्मा थिगडू–प्रजापति गिरीशभाई कान्तिभाई 5292
परिवार कल्याण कार्यक्रमों का जनसंख्या वृद्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण–डॉ० कुलदीप सिंह; डॉ० जी० बी० कश्यप 5294
प्रमुख दलित कहानीकारों की कहानियों में दलित चेतना–बबिता सरोज; डॉ० बिजय कुमार रबिदास 5298
भारत में बाल श्रमिक: एक अध्ययन–संजीब कुमार यादव 5302
जैन धर्म में जैन परम्परा का ऐतिहासिक परिदृश्य: एक समीक्षात्मक अध्ययन–धर्मेन्द्र कुमार; डॉ० दुधनाथ चौधरी 5309
अमरकान्त के सूखा पत्ता एवं ग्राम सेविका उपन्यासों का सामाजिक महत्व–बृन्दा यादव 5312
आमेर राज्य में प्राप्त वाद्ययन्त्रयुक्त मूर्तिकला की ऐतिहासिकता (10वीं - 18वीं सदी के परिप्रेक्ष्य में)–महेश कुमार दायमा 5315
श्रीमद्भगवद्गीता में प्रतिपादित कर्मयोग एक विमर्श–श्रीमती डिम्पल जैसवाल 5321
भारतीय ज्ञान-विज्ञान की ऐतिहासिक परम्परा–कविता वर्मा 5326
शिक्षकों के कक्षा-कक्ष प्रबन्ध कौशलों का उनकी संवेगात्मक बुद्धि एवं शिक्षण अभिवृत्ति के सम्बन्ध में एक अध्ययन
–विष्णु पटेल; डॉ० पूजा सिंग 5329
भारत में भूमि सुधार–डॉ० शकुन्तला मीना 5333

भारत, 75 साल की उम्र में, नारकोटिक ड्रग्स में संलग्न है–सौ० फातिमा कबीर 5335
ममता कालिया के आत्मकथा में स्त्री चिंतन–सरोज कसौधन; प्रो० बलराम गुप्ता 5340
हिंदी उपन्यासों में आदिवासी जीवन और विस्थापन–प्रतिभा 5345
मान्यवर कांशीराम जी का सामाजिक-दर्शन–मुकेश कुमार भारतीया 5350
बिहार में ई प्रशासन की भूमिका–अभय कुमार 5353
स्नातक स्तर के विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन–डॉ० ईश्वर चन्द्र त्रिपाठी; उमेश कुमार 5358
छत्तीसगढ़ के जशपुर जिले एवं बिलासपुर जिले के प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों एवं अभिभावकों में बाल अधिकारों के बारे में जागरूकता का अध्ययन–डॉ० धरणी राय; विजय कुमार साहू 5362
भारतीय राजनीति में संघवाद का विकास–मनीषा; डॉ० राजेंद्र शर्मा 5371
संत रविदास की वाणी में सामाजिक चिंतन–सुमित कुमार 5375
भारत में भूजल दोहन: कारण व वैकल्पिक उपाय–डॉ० उर्मिल महलावत; डॉ० प्रभा शर्मा 5378
महाभारत में गृहस्थ धर्म का निरूपण–डॉ० राकेश कुमार 5381
किन्नरों के प्रति संवेदनहीन समाज–प्रिया वर्मा 5384
कश्मीर: अमरीकी परिप्रेक्ष्य (1951-1965)–डॉ० हनुमान सहाय मण्डावरिया 5387
ब्रिटिशकालिन छत्तीसगढ़ और कृषक प्रतिरोध-एक अवलोकन–डॉ० सीमा पाल 5391
ड्रिप सिंचाई: जल के कुशल उपयोग की पद्धति–डॉ० उर्मिल महलावत; डॉ० प्रभा शर्मा 5394
भारतीय संस्कृति में निहित हिंदू-राष्ट्रवाद–डॉ० लाल बहादुर 5397
डॉ० केशुभाई देसाई के उपन्यासों में स्त्री संघर्ष–पार्थकुमार सोमाभाई जोशी आविष्कारक 5400
उच्च माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत संयुक्त और एकल परिवार के विद्यार्थियों की बुद्धि और सामाजिक समायोजन का समीक्षात्मक अध्ययन –शालिनी पाण्डेय 5402
दुर्ग-भिलाई नगरों के कार्यशील महिलाओं की आवासीय दशा एवं स्तर: एक भौगोलिक अध्ययन–शिवेन्द्र बहादुर 5406
मुगल साम्राज्य के पतन में प्रभावी आर्थिक कारण–डॉ० गौरव दीप करौला 5412
शमशेर बहादुर सिंह के काव्य में सामाजिक-यथार्थ–चन्द्रपाल सिंह 5417
अमृता प्रीतम के कथा-साहित्य में नारी विमर्श के मनोवैज्ञानिक पक्ष–ज्योति सक्सेना 5422
जलवायु परिवर्तन के मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव: एक समस्या–रोमित आंतिल 5426
समकालीन कविता और बाजारवाद–डॉ० विवेक शॉ 5430
भारतीय समाज में ट्रांसजेंडर समुदाय की स्थिति: एक विमर्श–डॉ० कंचन; डॉ० सतीश चन्द्र जैसल 5433
योअर्स फेथफुली: प्रतिरोधी चेतना की अभिव्यक्ति–नीतू कुमारी 5436
बिहार की राजनीति में जाति की भूमिका: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–सुबोध चौधरी 5438
स्त्री स्वातंत्र्य के प्रश्न और दिव्या–डॉ० उर्वशी गहलौत 5441
रिलेशन: साइबर स्टाकिंग एंड राइट टू प्राइवेसी–मौ० जाकिर 5444
हरियाणा में लाडली योजना का क्रियान्वयन: जींद जिले के संदर्भ में–प्रीति 5449
नई शिक्षा नीति में शिक्षक शिक्षा का विवेचन–डॉ० सुधा उपाध्याय 5452
पोलिसिस्टिक ओवरी सिंड्रोम: एक परिचय–सुषमा घई; डॉ० सीमा मिश्रा 5456
गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में धार्मिक पक्ष का समाजशास्त्रीय अध्ययन–हरजीत कौर 5462
21वीं शताब्दी की हिन्दी कहानियों में नारी का बदलता धार्मिक दृष्टिकोण–सतवीर कौर 5465
आत्म और नैतिकता: भारतीय राजनीतिक विचार में बौद्ध वैचारिक विकास–तरंग महाजन 5468
हरिशंकर परसाई के व्यंग्य-लेखन का वैशिश्ट्य–मनीष कुमार मिश्र 5474
ऋग्वेदब्राह्मणग्रन्थेषु राज्यस्य उत्पत्ति सामाजिका: आवश्यकताया: आधारेण–डॉ० रेणु सिंह; नीलम तिवारी 5477

गायत्री मंत्र के साथ प्रज्ञायोग व्यायाम का गृहिणियों के तनाव स्तर पर प्रभाव–डिलेश्वरी साहू; डॉ० राधिका चंद्राकर 5479
स्त्री संवेदना को खंगालती अनामिका की कविताएं–डॉ० अफरोज बेगम 5484
महादेवी वर्मा के गद्य साहित्य में सामाजिक समस्याएँ–खेमबाई साहू; डॉ० सविता वर्मा 5487
21 वी सदी के दौर में किसान विमर्श–ईरण्ण. जे. 5490
महात्मा ज्योतिबाफुले का दलित पत्रकारिता के उद्‌भव एवं विकास में योगदान–दुर्गेश कुमार देव 5493
गिजुभाई बधेका एवं डॉ० जाकिर हुसैन के शैक्षिक विचारों की तुलना एवं वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता: एक अध्ययन–शुभम कुमार 5499
बिहार में सुशासन और समावेशी विकास की राजनीतिक संस्कृति के विस्तार में नीतीश कुमार का योगदान–मुकेश कुमार 5504
माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं की विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन–अंजार अहमद 5510
''मुरादाबाद नगर में प्राथमिक स्तर पर कार्यरत् बी0टी0सी0 एवं विशिष्ट बी0टी0सी0 धारक शिक्षकों की समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन''–रजनी यादव 5520
"मुरादाबाद जनपद में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व का अध्ययन"–डॉ० रवि कुमार 5524
संत जांभोजी की समाज सुधार की भावना–प्रवीण कुमार रामावत 5528
जनपद जौनपुर के क्षेत्र की आर्थिक पृश्ठभूमि और भूमि उपयोग में कृषि उत्पादकता का अध्ययन–राकेश कुमार मौर्य 5531
कला व सौंदर्य बोध–डॉ० अभिनव नारायण आचार्य 5534
16वीं लोकसभा के बाद भारत की संघीय प्रणाली का विकास–डॉ० अशोक कुमार यादव 5540
कुमारसंभवम् मे शिव के संज्ञा शब्द चयन–डॉ० विपुलभाई एम० श्रीमाळी; एकताबेन नरसंगभाई चौधरी 5543
अयोध्या जनपद में अवस्थापनात्मक तत्व एवं ग्रामीण विकास: अध्ययन की एक रूप रेखा–पवन कुमार यादव 5549
सातवें दशक के प्रमुख हिन्दी उपन्यासों में प्रगतिशील चेतना–ककला लक्ष्मी रामजीभाई 5554
सौर ऊर्जा की खपत की तुलना में उपभोक्ताओं के बीच सौर प्रणाली की खपत पर एक अध्ययन (पाटन तालुका के बालिसाना गांव के संदर्भ में) –धरतीबेन मनोज कुमार भोजक 5556
पत्रकारिता की अनुत्तरदायी भाषा–डॉ० गणेश शंकर श्रीवास्तव 5560
उत्तर प्रदेश में सिंधी शिक्षा: एक अध्ययन–अक्षर टेकचंदाणी 5563
चम्पारण सत्याग्रह: एक नवोन्मेषी व सर्वतोन्मुखी प्रयोग–डॉ० अरविन्द कुमार सिंह 5569
भारत विजय नाटक का परिचयात्मक विवरण–जोशी दिपीकाबेन प्रविणभाई 5572
प्रगतिवाद–डॉ० हौशिला प्रसाद पाल; छाया देवी 5574
धूमिल के काव्य में आम आदमी का सामाजिक संघर्ष: एक अनुशीलन–डॉ० अनीता रानी 5577
योग के सन्दर्भित ग्रन्थों में अन्तर्निहित 'ध्यानयोग' का परिभाषात्मक स्वरूप–डॉ० लीना झा; दीपक 5582
जन-समाज एवं ग्रामीण सरोकार का कवि: जयप्रकाश मानस ("सपनों के करीब हो आँखें" कविता संग्रह के संदर्भ में)–डॉ० पान सिंह 5600
बी.एड प्रशिक्षुओं में कम्प्यूटर जागरूकता का उनके शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –सरोज शुक्ला; डॉ० रेखा नरेन्द्र जीभकाटे नवखरे 5608
रोहतास जिला (बिहार) में कृषि विकास एवं पर्यावरण: एक भौगोलिक अध्ययन–शशि शेखर सिंह 5613
उतर गुजरात में अनुसूचित जाति में वित्तीय और विकास सहयोग की भूमिका–जयेश सी. परमार 5620
वाजपेयी बैंकबल योजना के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव मेहसाणा तालुका के संबंध में अभ्यास–नायक रिंकूबेन एस. 5624
महिला आर्थिक सशक्तिकरण में सरकार द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं के योगदान का संक्षिप्त मूल्यांकन–डॉ० कविता सक्सैना; शालिनी त्यागी 5627
चन्द्रकान्ता के कथा साहित्य में साम्प्रदायिक सद्‌भाव–साधना मिश्रा 5631
हिंदी की स्त्री आत्मकथाओं में स्त्री विमर्श–लक्ष्मी गोंड 5634
स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता–कु० पूजा 5636
बदलते सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य एवं नरेश मेहता का कथा साहित्य–बबिता पाठक 5641

पुस्तकालय विज्ञान और गूगल ऍप्स–डॉ० क्षमा त्रिपाठी 5643
मॉरीशस में हिन्दी साहित्य उद्‌भव और विकास–कंचन 5656
समग्र शिक्षा- विद्यालयी शिक्षा से सम्बन्धित गुणवत्तापूर्ण एकीकृत शिक्षा प्रणाली–डॉ० क्षमा पाण्डेय; हेमपुष्पा गंगवार 5659
बस्तर का "टाइगर बॉय" चेंदरु मंडावी–मोहन 5663
विदेशी व्यापार और बाजारों का एकीकरण–डॉ० महावीर प्रसाद शर्मा 5666
बीमा कंपनी से जुड़े बीमाधारकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का एक अध्ययन (डिसा शहेर के संदर्भ में)–परमार नेहा शंकरलाल 5669
अरब कवियों और लेखकों के अमेरिका प्रवास के कारण और कारक–तैयबा उम्मी नाजरीन; डॉ० खैरुल अनम समसुद्दीन 5672
ग्रामीण विकास के बदलतें परिदृश्य मे मनरेगा की भूमिका–मुन्नी राम; डॉ० (श्रीमती) मंजु मगन 5674
संतमत एवं शांति का मार्ग–प्रिय रंजन 5678
ग्रामीण क्षेत्र में मनरेगा योजना में शामिल श्रमिकों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन (पाटन तालुका के संदर्भ में)–डॉ० प्रतीक्षा जे० पटेल 5681
बिहार की अर्थव्यवस्था के विभिन्न आयाम और उसके क्षेत्रिय विकास में स्वयं सहायता समूह का योगदान–अक्षय सिद्धान्त 5684
हिन्दी के विकास में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान–डॉ० सुनील यशवंत व्यवहारे 5689
संत कवियों की मानवतावादी जीवन दृष्टि–डॉ० राजेश कुमार चौधरी 5692
भारत में ई-शासन: अवसर एवं चुनौतियाँ–दिव्या; डॉ. राकेश यादव 5696
आधुनिक कलाकार रमेश गर्ग के चित्रों का विश्लेषण–डॉ० मनोज टेलर; मधु पाराशर 5701
भारतीय परिप्रेक्ष्य में संयुक्त परिवार का विघटन–संतोष विश्वकर्मा 5710
वेदों में रचित वर्णित भारतीय मनोवैज्ञानिक संस्कार–डॉ० अभिषेख कुमार पाण्डेय 5714
पर्यावरणात्मक संघर्षों के मुद्‌दे एवं विभिन्न वैचारिक धाराएं–आलोक गुप्ता 5720
कृषि में आंशिक रूप में कृषिश्रमिकों का सामाजिक-आर्थिक अध्ययन (गुजरात राज्य के पाटन तालुका के संदर्भ में)–मेहुल सथवारा 5724
संत रविदास की दार्शनिक विचारधाराओं का अनुशीलन: एक अध्ययन–प्रो० (डॉ०) शिव शंकर मण्डल 5727
"उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों पर व्यवहार प्रारूप के प्रभाव का अध्ययन"–श्रीमती श्रीति मजुमदार 5730
समतावादी विचारों के पोषक कबीर–कुमारी कंचन 5737
कहानीकार 'परेश' और मानव मूल्य–अंजू बाला 5740
सरकारी प्राथमिक विध्यालयों में विलयनीकरण कार्यक्रम में छात्रों और अभिभावकों पर आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का एक अध्ययन (मेहसाणा तालुका के संदर्भ में)–दशरथभाई पी० सोलंकी 5742
उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में इन्टरनेट के ज्ञान एवं प्रयोग का तुलनात्मक अध्ययन–कमलजीत कौर; डॉ० राकेश कुमार डेविड 5745
उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का उनके लिंग, परिवेश एवं संवेगात्मक बुद्धि के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन –मंजुला आनंद; डॉ० संगीता एस० धनाढ्ये 5749
महिला शिक्षा का सामाजिक और आर्थिक विकास और महिला सशक्तिकरण पर प्रभाव: वैश्विक और भारतीय परिप्रेक्ष्य का अध्ययन –आशाबेन आर. राठौड़; डॉ० रोहित जे. देसाई 5752
रायपुर जिले के माध्यमिक स्तर विद्यालयों के शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृति: एक शोध–सुमन भारती; डॉ० जे. एस. भारद्वाज 5755
सूचना का अधिकार अधिनियम: उत्तर प्रदेश राज्य सूचना आयोग का कार्यान्वयन एवं चुनौतियाँ–प्रमोद कुमार गंगवार; डॉ० धर्मेंद्र कुमार सिंह 5761
जनजातीय समाज एवं परिवार नियोजन: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जशपुर जिले के मनोरा विकासखंड के विशेष संदर्भ में) –डॉ० क्रेसेसिया बक्सला 5769
सरकारी प्राथमिक विध्यालयों में विलयनीकरण कार्यक्रम में छात्रों और अभिभावकों पर आर्थिक और सामाजिक प्रभावों का एक अध्ययन। (मेहसाणा तालुका के संदर्भ में)–दशरथभाई पी. सोलंकी 5775
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में उग्रवाद की भूमिका–डॉ० अंशु प्रिया 5778
शिक्षा में आधुनिक तकनीक का प्रभाव एक अध्ययन–माया सोनकर 5781

''नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा-चुनौतियॉ और सुझाव"–प्रो. रमाकांती साहू 5785
अस्तित्व: उपन्यास में अभिव्यक्त किन्नर संवेदना–डॉ० पिंकी पारीक; अनिता कुमारी 5788
'चौबोली' नाटक का स्त्री पाठ–आकांक्षा भट्ट 5791
भारत में बाल-श्रम की स्थिति एवं तत्संबंधी साहित्य का स्वरूप–डॉ० दीपक कुमार 5795
'पितृसत्तात्मक व्यवस्था बनाम शकुंतिका"–सुरजीत 5800
दलित अस्मिता: एक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य–डॉ० सीमा आनन्द 5803
महिला सशक्तिकरण सम्बन्धित भारतीय संवैधानिक प्रावधान–गीता चौधरी; डॉ० मनीष पांडेय 5807
नई कविता में विघटित जीवन मूल्य–मुकेश 5813
चित्रा मुद्गल की कहानियों में महानगरीय बोध–डॉ० नीरज कुमारी 5817
कृषक आंदोलन एवं उनकी आर्थिक स्थिति–बमबम यादव 5820
''माध्यमिक स्तर के सामान्य एवं पिछड़ी जाति के विद्यार्थियों की समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन''– डॉ० हरीश कंसल; निहारिका मिश्र 5824
''बी0एड0, प्रबन्धन तथा अभियान्त्रिकी (इन्जीनियरिंग) पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की व्यक्तित्व का तुलनात्मक अध्ययन''
– डॉ० हरीश कंसल; राजेश कान्त रंजन 5829
"चंद्रकांता के कथात्मक साहित्य में मध्यवर्गीय जीवन की अभिव्यक्ति''– डॉ० कुसुम चौधरी 5834
गिरिराज किशोर के साहित्य में अभिव्यक्त सामंती व्यवस्था का अनुशीलन– डॉ० पूजा चौधरी 5836
वर्तमान परिदृश्य में सोशल मीडिया और हिन्दी भाषा की सार्थकता–डॉ० ध्वनी सिंह 5838
आजादी के समय भारत एवं देसी रियासतों का विलय–संदीप बिश्नोई; डॉ० नीलम जुनेजा 5841
आदिवासी अस्मिता पर संकट–प्रदीप कुमार सौंर 5845
प्राच्य विद्या के रूप में वैदिक संगीत शिक्षा–अंजली शर्मा 5848
साहित्य और इतिहास की परस्परता–डॉ० मनोज कुमार 5850
मीडिया ट्रायल का न्यायपालिका पर प्रभाव–रविंद्र सिंह 5852
नहरों से सिंचाई से कृषि उत्पादन, आय एवं रोजगार पर आर्थिक प्रभावों का एक अध्ययन–प्रह्लाद आर. सुथार 5857
शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता पर आत्मसंकल्पना, संकाय एवं इनकी अंत:क्रिया के प्रभाव का अध्ययन
–राजेश कुमार दुबे; डॉ० संगीता एस. धनाढ्य 5860
कविवर सुशांत कुमार राज के नाटक राष्ट्रं रक्षति रक्षितम का विश्लेषण–डॉ० वीरेन्द्र कुमार जोशी; पंकज कुमार शर्मा 5864
सुलतानपुर जनपद में सेवा केन्द्रों-सामाजिक सुविधाएँ/सेवाएँ एवं कार्य एवं कार्यात्मक वर्गीकरण–शिव रतन गुप्ता 5867
20वीं सदी में भारतीय नारी की सामाजिक क्षेत्र में भागीदारी–श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना; डॉ० ललित मोहन शर्मा 5869
भारत में शिक्षक शिक्षा के विकास का समसामयिक अध्ययन–अरविन्द कुमार यादव; डॉ० कविता गुप्ता 5873
वैदिक काल में महिलाओं की भूमिका और उनकी स्थिति–डॉ० दिनेश कुमार; डॉ० रीतिका विश्नोई 5877
प्रवासी भारतीय का महत्त्व: एक विश्लेषण–डॉ० कुमार प्रभाष 5879
"टोंक जिले में जल संसाधन प्रबंधन व विकास": एक अध्ययन–परवीन महलावत; प्रो० गजेन्द्र सिंह 5883
रामचरितमानस और ग्राम- संस्कृति–डॉ० दयानन्द मसाजी शास्त्री 5886
महादेव टोप्पो की कविताओं में अभिव्यक्त आदिवासी चिन्तन–अमित कुमार चौधरी 5888
हिंदी काव्य संसार को अष्टछाप कवियों का अवदान: एक दृष्टि–डॉ० हेमन्त पाल घृतलहरे 5892
निर्मल वर्मा की कहानियों में अभिव्यक्त अकेलेपन की भावना–डॉ० प्रणीता 5895
हेब्बार की कला का तकनीकी व कलात्मक अध्ययन–नीतू नरवाल 5898
कश्मीर में अनुच्छेद 370 की समाप्ति के बाद सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव–दीपिका कुमारी; डॉ० घनश्याम राय 5901
मदकूद्वीप की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अध्ययन–मनीषा रात्रे; डॉ० रामरतन साहू 5904
भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति-एक अध्ययन–कौशल मणी 5907

जौनपुर के करंजकला ब्लॉक में जनसंचार माध्यम एवं ग्रामीण समाज का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण
–देवेन्द्र कुमार यादव; डॉ० संदीप कुमार यादव 5910
दलित अभिजनों की संगठनात्मक सम्बद्धता का अध्ययन (बुन्देखण्ड क्षेत्र के विशेष सम्बन्ध में)–डॉ० सुनीता त्रिपाठी; डॉ० शक्ति गुप्ता 5918
कोविड -19 और बौद्धिक अक्षमता: प्रभाव, चुनौतियाँ और सुधार–सुश्री प्रियंका सरकार 5923
वर्तमान समय में शिक्षण अधिगम प्रक्रिया एवं जेंडर विभेदीकरण–सुमन कुमार झा; डॉ० नजमा बेबी 5926
माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी विषय के शिक्षण में कम्प्यूटर आधारित शिक्षण पद्धति की भूमिका–मिहिर कुमार पाठक; डॉ० मो० एहसानुल हक 5929
हयाती पत्रिका में प्रकाशित कहानियों में दलित संवेदनाएँ (वर्ष- २०११ से २०२० तक प्रसंग)–आगजा खुशबु नटवरलाल 5931
बनारसी प्रसाद भोजपुरी की दृष्टि में पत्रकारिता–सियाराम मुखिया 5935
भारतीय समकालीन कलाकार संजय कुमार: प्रेरणा स्वरूप भगवान गौतम बुद्ध–राक्षी पासवान; प्रो० पाण्डेय राजीवनयन 5938
चुनावी राजनीति में बिहारी समाज की महिलाएं–डॉ० मुकुल बिहारी वर्मा; संदीप कुमार 5940
डॉ० भीमराव अम्बेडकर एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में राष्ट्रवाद सम्बन्धी अवधारणा–डॉ० जय कुमार झा; अनूप मिश्र 5945
प्रारंभिक विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की प्राप्ति में बाधाएँ–अनामिका कुमारी; डॉ० किरण कुमारी 5949
छात्र जीवन में आत्म सम्मान की भूमिका–फराह नाज; डॉ० अरशद हुसैन 5952
लोकनीति पर सामाजिक आन्दोलनों का प्रभाव–दीपक कुमार राय 5955
उत्तरवैदिक कालीन समाजिक व्यवस्था–प्रो० प्रशान्त श्रीवास्तव; आनन्द सिंह 5958
देहरी का दीया: जीवन-अंधकार में उम्मीद का दीया–मुकेश कुमार मिरोठा 5961
नालंदा जिले में अनुसूचित जाति और सामान्य जनसंख्या के बीच साक्षरता अंतर: एक भौगोलिक अध्ययन–अमित कुमार; डॉ० संतोष कुमार 5965
जायसी के पद्मावत में लोक मर्म–डॉ० सुनीता यादव 5974
केशव चंद्र सेन: राजनीतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–डॉ० कलावती गाडरिया; डॉ० विमल कुमार तिवारी 5978
नकदी रहित भारतीय अर्थव्यवस्था और डिजिटलाइजेशन–मुकेश कुमार 5982
चंपारण सत्याग्रह एवं राजकुमार शुक्ल–खालिक हुसैन 5986
विवेकानन्द विजयम् में वर्णित विवेकानन्द के दार्शनिक विचारों का अनुशीलन–वितेश कुमार 5990
भारतीय इतिहास में मुगलकालीन चित्रकला का स्वरूप एवं भाव–डॉ० उदय कुमार 5993
समाज सुधारक पंडिता रमाबाई का योगदान–डॉ० आलोक कुमार 5996
भूपेंद्र नारायण मंडल और उसके समाजवाद की वर्तमान में प्रासंगिकता–माधव कुमार 6000
भूमि सुधार आन्दोलन - एक अध्ययन–कौशल कुमार 6003
भारत में सामाजिक आन्दोलनों का बदलता स्वरूप: एक अध्ययन–डॉ० सतेन्द्र; पूर्णिमा यादव 6005
भिलाई इस्पात संयंत्र में निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व का विश्लेषण–अब्दुल शाहीद; डॉ० हेमलता बोरकर 6009
"उत्तर प्रदेश के दलित आन्दोलन में बहुजन समाज पार्टी की भूमिका"–अभिषेक कुमार 6019
सूचना तकनीक और परिवार कल्याण–डॉ० ब्यूटी कुमारी 6022
छात्रों के परीक्षा तनाव: प्रभाव, कारण और निवारण में शिक्षक की भूमिका–फरहतुल ऐन तसनीम सबा; डॉ० एम० ए० खान 6024
पर्यावरण शिक्षा के प्रति छात्रों की मनोवृति का पर्यावरण संरक्षण पर प्रभाव–अबुल हसनात अशरफ; डॉ० मसूद आलम खान 6027
छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में आई.सी.टी. की भूमिका–शिव शंकर कुमार; डॉ० नजमा बेबी 6029
"बी.एड. विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का उनकी समायोजन क्षमता पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन''–विवेक दत्त 6032
नई शिक्षा नीति 2020: एक समीक्षा–शिल्पी कुमारी 6036
नवीन शिक्षा नीति में प्राथमिक शिक्षा स्तर पर किए गए परिवर्तनों का उल्लेख–सुनयना कुमारी 6038
बिहार को बंगाल से अलग करने में प्रेस का योगदान–अविनाश कुमार 6042
सांस्कृतिक एवं सांगीतिक परिप्रेक्ष्य में किन्नर समाज का समग्र अवलोकन–डॉ० प्रेम किशोर मिश्र 6045
मलिन बस्तियों की समस्यायें–विशाल कुमार सिंह 6048
डॉ. राधाकृष्णन के शैक्षिक उपागम का अध्ययन–कुमार नवीन दीपक पाण्डेय; डॉ० शुभ्रा ठाकुर 6051

"पाल प्रदेश के आदिवासी: लोकगीतों में शिक्षा के संदर्भ"–डॉ० सीमा राठौर 6055
लोक साहित्य की अवधारणा–डॉ० रत्ना सदाशिव गौडा 6058
राजस्थान में पुलिस-जनता सम्बध: एक सामान्य विश्लेषण–डॉ० राजेन्द्र प्रसाद सैनी 6061
ऑनलाइन शिक्षण प्रशिक्षण के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का अध्ययन–नितेश कुमार आनन्द 6064
"हिंदी दलित आत्मकथा में चित्रित भाषाई समाज: भाषाई भंडार एवं लघु क्षेत्र का अनुशीलन" (मोहनदास नैमिशराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' खंड-1 के विशेष संदर्भ में)–प्रा० राजेंद्र ज्ञानदेव ननावरे; प्रो० डॉ० शाहू दशरथ मधाळे 6072
"उत्तर प्रदेश राज्य के सीतापुर जनपद के शासकीय एवं शासकीय अनुदानित माध्यमिक विद्यालयों में शारीरिक शिक्षा विषय के क्रियान्वयन का अध्ययन"–चन्द्रकेश वर्मा; डॉ० मोहम्मद शारिक 6078
भारत में पर्यावरण शिक्षा और इसका महत्व–विभा कुमारी 6082
वैश्विक महामारी कोविड-19 का महिलाओं पर प्रभाव–डॉ० प्रभात कुमार चौधरी; रूपम कुमारी 6086
सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा और शिक्षक की भूमिका–डॉ० दयाशंकर तिवारी 6090
भाषा, साहित्य, संस्कृति और समाज के सम्बन्ध सूत्र–रीना मलिक 6092
प्राचीन भारतीय इतिहास लेखन का परिवर्तित स्वरूप: एक अवलोकन–डॉ० अबेन्द्र पासवान 6094
"स्वयं प्रकाश के कहानियों में मध्यमवर्ग जीवन"–पटेल सुनिलकुमार अजितभाई 6097
बौद्धिक विकलांग बच्चों में व्यावसायिक कौशल: एक अध्ययन–शोभा चौधरी; डॉ. पवन कुमार 6099
प्राचीन भारत में नारी शिक्षा की स्थिति: एक अवलोकन–डॉ० बृजकिशोर राम 6102
प्राचीन भारत के इतिहास में दिक्पालों की अवधारणा: एक अध्ययन–डॉ० अश्वनी कुमार 6106
राष्ट्रनिर्माण में युवाओं का योगदान–डॉ० ललिता शर्मा 6113
मध्यमवर्गीय नारी की अस्मिता: प्रेमचंद के उपन्यासों के संदर्भ में–राखी 6116
भारतीय संघ में राज्यपाल के पद की चुनौतियाँ एवं विकल्प (सुझाव)–डॉ० अरुण कुमार वर्मा; हिमांशु चौरसिया 6120
आधुनिक भारत में महिला शिक्षा एंव महिला शिक्षा हेतु उठाए गए कदम–डॉ० मनीषा कुमारी 6123
उत्तराखण्ड के अस्थाई राजधानी गैरसैण में जनसंख्या का बदलता स्वरूप–मोहन लाल; कमलेश कुमार; बबीता नेगी 6127
कृषि विकास में भूमि उपयोग पैटर्न और फसल तीव्रता का विश्लेषण (उत्तरप्रदेश के महाराजगंज जपनद के संदर्भ में)–सूरज प्रकाश मिश्रा 6133
छत्तीसगढ़ की मुरिया जनजाति में कृषि आधारित तीज-त्यौहारों का आर्थिक महत्व–सुनीता सोड़ी; प्रो. अशोक प्रधान 6137
प्राचीन भारत में वार्ता का महत्त्व–डॉ० पुनम कुमारी 6141
भारत में धर्म और समाज–डॉ० अशोक कुमार 6144
भारत नेपाल सीमा पर पुनर्वास और आंतरिक सुरक्षा के लिए सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम (बीएडीपी-एमएचए भारत सरकार) के क्रियान्वयन में सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) के योगदान की भूमिका–विजय शंकर अग्निहोत्री 6150
"मीर महबूब अली और धर्मनिरपेक्षता" (रज़ाकार आंदोलन)–डॉ० राजश्री पी मोरे 6155
वृद्धों की समस्याओं को दूर करने में समाज का दायित्त्व–कंचन कुमारी; डॉ० मो0 शाहिद हसन 6157
राष्ट्रवाद का परिवर्तित स्वरूप एक विश्लेषणात्मक अध्ययन–कुमारी अर्चना 6161
प्राचीन संस्कृत साहित्य में पर्यावरण चिंतन की परंपरा–डॉ० मिन्टू कंवर 6165
किशोरावस्था के छात्रों की आत्म-अवधारणा के संबंध में कैरियर निर्णय परिपक्वता–डॉ० सुनीता आर्या 6167
जालंधर के शिक्षा महाविद्यालयों में दो वर्षीय बी.एड पाठ्यक्रम के छात्रों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता का एक अध्ययन–मुकेश कुमार 6173
गायत्री महामंत्र एवं भ्रामरी प्राणायाम का छात्रों के तनाव स्तर एवं शैक्षिक चिंता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन –सत्यम तिवारी; डॉ० राधिका चंद्राकर 6176
भागीरथ मिश्र की 'जानगुरु': आदिवासी-बाउरियों के जीवन और उनकी रोशनी की खोज की कहानी–डॉ० निर्मल दास 6183
शक्ति चटर्जी की 'हेमंतेर अरण्ये एम पोस्टमैन': अलगाव की भावना–तपन कुमार विश्वास 6186
विभाजन से मिले जख्मों पर मरहम लगाने का प्रयास करने वाला नाटक: जिन लाहौर नई वेख्या ओ जम्याइ नई–डॉ० अमित कुमार मिश्रा 6188
मधुकर सिंह के कथेत्तर साहित्य (भिखारी ठाकुर की जीवनी के संदर्भ विशेष में)–सीमा कुमारी; डॉ. इन्द्रनारायण सिंह 6191

महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता एवं राजनीतिक चेतना (उत्तर प्रदेश के रायबरेली जिले के डलमऊ पंचायत समिति के संदर्भ में) –प्रज्ञा सिंह; डॉ० सतेन्द्र 6194
शिक्षक प्रभावकारिता की सैद्धांतिक रूपरेखा–मो० मंसूर आलम; डॉ० एम० ए० खान 6204
मैथिलीक आरंभिक कथा में नारी-विमर्श–श्वेता कुमारी 6208
"चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में संघर्ष"–ईला बहन कड़वा भाई रावल 6214
''स्वतन्त्र भारत में उच्च शिक्षा''–डॉ० राजेश कुमार यादव 6216
जनसंख्या वृद्धि के आधार पर वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक–तबस्सुम आरा 6219
समकालीन हिन्दी कहानियों में समाज के विभिन्न पक्ष–सुनीता सिंह 6225
1857 के स्वतन्त्रता आन्दोलन में मुजफ्फरनगर की महिलाओं की भूमिका–डॉ० अमरीश कुमार 6229
भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली में चुनौतियाँ–किरण प्रकाश चिकाटे 6232
भारत की युवा-पीढ़ी पर सोशल मीडिया का प्रभाव–गोल्डी कुमारी; डॉ० गोपी रमण प्रसाद सिंह 6235
आर्थिक स्थिति की प्रासंगिकता: धूमिल के काव्य के संदर्भ में–प्रीती तिवारी; डॉ० संतोष कुमार पांडेय 6239
रंग केसर एक कलात्मक अभिव्यक्ति–डॉ० संजय कुमार 6243
रामदरश मिश्र के उपन्यासों में ग्रामीण सांस्कृतिक जीवन के युगीन प्रभावों के कारण बदलती संस्कृति की परिणति का विश्लेषणात्मक अध्ययन –डॉ० अभिलाशा शुक्ल 6247
भारत में शिक्षक शिक्षा में नवाचार प्रथाएं–खुशबू कुमारी; डॉ० पुष्पा श्रीवास्तव 6250
''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति दिल्ली के सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों के विचारों का अध्ययन''–डॉ० अरुणा कुमारी 6255
मनोवृत्ति निर्माण में सोशल मीडिया की भूमिका: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ० राजीव कुमार 6260
योगसूत्र में ईश्वर की अवधारणा–डॉ० अजित कुमार 6263
भारत में लैंगिक न्याय के लिए प्रतिबद्धता–राम सुबाष वर्मा 6268
स्कूली शिक्षा में ट्रांसजेंडर बच्चों का समावेशन: समस्या और समाधान–विशाल कुमार गुप्ता 6270
ज्ञानरंजन एवं रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ: साम्य एवं वैषम्य–शिखा उमराव; डॉ० गीता अस्थाना 6274
पंजाब के लोक साहित्य–अंजली छाबड़ा 6276
भारतीय इतिहास की बीसवीं शताब्दी में विभिन्न महिला संगठनों की भूमिका का संक्षिप्त मूंल्याकन–मधु; डॉ० अर्चना सिंह 6280
मानवाधिकार एवंमहिलासशक्तीकरणहेतु संचालित योजनाऐं–मोहित जोशी; डॉ० जे० पी० त्यागी 6285
प्राचार्यों की योजना निर्माण में नेतृत्व गुणों की जागरूकता एवं क्रियान्विति के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन –डॉ० सुनीता मुर्डिया; देवेन्द्र कुमार जोशी 6289
बौद्ध धर्म का सांस्कृतिक योगदान–डॉ० नीरजा शर्मा; डॉ० शैलजा शर्मा 6293
एनआरएलएम योजना का ग्रामीण विकास पर प्रभाव: महिला स्व सहायता समूह के सदस्यों का सामाजिक-आर्थिक निर्धारण एक समाजशास्त्रीय अध्ययन (जशपुर जिले के बगीचा विकासखण्ड में संचालित स्व सहायता समूह के विशेष संदर्भ में)–वीणा कुजूर; डॉ० संजय चंद्राकर 6297
प्राचीन भारतीय वाणिज्य-व्यापार एवं व्यवसायिक संगठन–कोमल गुप्ता 6302
बाल विवाह और ठाकोर समाज–मुकेशजी बी. ठाकोर 6305
सामाजिक परिवर्तन में स्वच्छता की भूमिका–सुरेन्द्र कुमार पंडित; डॉ० मंजू झा 6308
बिहार में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की समस्याओं और संभावनाओं पर अध्ययन–नगेश्वर राम 6312
सनातन राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक: भारत या इन्डिया–डॉ० आकाँक्षा दुबे 6317
किशोर विद्यार्थियों में जोखिम उठाने की क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन–डॉ० वर्षा नालमे 6320
सिवनी जिले में पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की राजनैतिक सहभागिता का अध्ययन–दीपक कुमार बरकड़े; डॉ० अनामिका रावत 6324
कृष्णा सोबती के कथा-साहित्य की भाषिक संरचना–पूजा सरोज 6330
वैदिक साहित्य में धर्मार्थ विवेचन–डॉ० सीमा कुमारी 6334
प्रेमचंद युगीन आर्थिक परिस्थितियाँ–डॉ० सुमित्रा कुमारी 6338
अनुसूचित जनजातियों के विकास हेतु कृषि भूमि की स्थिति (धार जिले के बाग विकासखण्ड के संदर्भ में)–डॉ० देवेन्द्र मुझाल्दा; मडिया डावर 6342
भारतीय इतिहास में नारी- एक अध्ययन–डॉ० सुरेन्द्र कुमार 6345

भारतीय इतिहास में नारी- एक अध्ययन

डॉ० सुरेन्द्र कुमार

सह आचार्य, इतिहास विभाग, वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

शोधालेख सार- भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में सदैव नारी का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्राचीन भारतीय धर्मग्रन्थों में नारी साक्षात् शक्ति या देवी का रूप माना गया है। वह अपने विभिन्न रूपों मां, पत्नी, बहन के तथा पुंजी में सदैव पूजनीय रही है। सैन्धव सभ्यता के पुरास्थलों के उत्खनों से प्राप्त स्त्रियों की अत्यधिक मूर्तियां एवं मातृदेवी की मूर्तियां इस तथ्य का प्रतीक है, इस सभ्यता में नारी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। वैदिक युग से पुष्यभूति वंश तक भारतीय समाज में नारी को सम्मान जनक स्थान प्राप्त था। परन्तु मध्यकला एवं ब्रिटिशकाल में नारी की दशा में तेजी से गिरावट आई। परन्तु 19 वी शताब्दी से ही अनेक समाज सुधारकों-राजाजराम मोहनराय, केशवचन्द्र सेन, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, जयोतिबा फूले सावित्रिबा फूले, पं. दीन दयालु वाचस्पति, सिस्टर निवेदिता एवं श्रीमां इत्यादि ने महिलाओं की दशा में सुधार किया। उन्होनें महिलाओं को शिक्षित करने हेतु अनके शिक्षण संस्थानों को खोलने में अग्रणी भूमिका निभाई। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय जीवन मूल्यों के आधार पर नारी का विकास करने की आवश्यकता है।

संकेतक शब्द- अर्थववेद, स्कन्दपुराण, गरिमामयी स्वामी विवेकानन्द, मातृदेवी, काठियावाड, थियोसोफिकल सोसायटी, गोरखपुर, रामकृष्ण मिशन, स्वामी दयानन्द।

भूमिका-भारतीय इतिहास एवं संस्कृति में नारी को सर्वोपरि माना जाता है। भारतीय धर्मगन्थों, दर्शनशास्त्रों एवं साहित्य में नारी को साक्षात् शक्ति के रूप में दिखाया गया है। नारी अपने विभिन्न रूपों- मां, पत्नी, बहन तथा पुत्री में सदैव पूजनीया तथा श्रद्वा का पात्र रही है। प्राचीन समय से ही समस्त भारतीय ग्रन्थों में मां को अद्वितीय शक्ति मानी गयी है। अर्थववेद में 'माता भूमिः पुत्रोंहं पृथित्याः' अर्थात यह भूमि मेरी माता है।''[1] वेदों में भूमि को माता और दुध पिलाने वाली कहा गया है। महर्षि मनु ने लिखा है कि,''

उपामयायान्दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।

सहस्त्रं तु पितृन्याता गौर वेणातिरिच्यते।।[2]

अर्थात एक उपाध्याय से आचार्य दस गुणा अधिक श्रेष्ठ है। एक आचार्य से पिता सौ गुणा अधिक गौरवमय है, और एक पिता से माता सहस्त्र गुणा अधिक गौरवमयी है। उपनिषदों में भी ''मातृ देवा भव, 'पितृ देव भव'' का उल्लेख करके मां को प्रथम स्थान प्रदान किया गया है। महाभारत के आदिपर्व में वर्णित है, ''गुरूण्य चौव सर्वेषा माता परम को गुरु[3] अर्थात समस्त गुरुजनों में माता को परमगुरु माना गया है। मनुस्मृति में कहा गया है कि ''यत्र नार्यस्तु पूजयन्तें रमन्ते तत्र देवताः।'' पूज्यन्ते सर्वास्त्राफलाः क्रियाः।। अर्थात जहां नारियों का सम्मान व पूजा होती है, वहां देवता निवास करते है और जहां इनका सम्मान नहीं होता है, वहां सारी क्रियाऐं विफल हो जाती है।

पुराणों में भी माँ को सर्वश्रेष्ठ गुरु माना गया है। स्कन्दपुराण एवं मत्स्य पुराण में वर्णित है, पतिता गुरु वस्त्या माता च न रूप। गर्भधारणंपोषाभ्यां तने माता गरीयसी।।[4] अर्थात ''पतित गुरु भी त्याज्य है परंमाता किसी प्रकार भी त्याज्य नहीं है। गर्भकाल में धारण पोषण करने के कारण माता का गौरव, गुरूजनों से भी अधिक है।

प्राचीन भारतीय धर्मगन्थों मे भारतीय नारी को लक्ष्मी, दुर्गा एवं सरस्वती के रूप मे वर्णन किया गया है। महाभारत मे हमें उल्लेख मिलता है कि जब यक्ष ने युधिष्ठर ने अत्यन्त सरल भाव से उत्तर दिया। माता से बढ़कर कुछ नही है। रामायण एवं महाभारत में उल्लेखित माता सीता, माता अनुसूया माता कुन्ती एवं माता गान्धारी से अभिप्रेरित होकर कोई भी सामान्य जन अपना जीवन सार्थक कर सकता है।

वर्तमान समय में भी अनेक भारतीय राष्ट्रपुरूषों ने माता को सर्वोपरि बताया है। स्वामी रामकृष्ण परमहंस ने कहा है कि ''हे भगवान् में किस नाम से आपको सम्बोधित करूं? मानव के शब्द कोष में माँ से बढ़कर पवित्र शब्द कोई दूसरा नहीं है। जिससे मैं आपको पुकारू। अतः मैं शिशु के समान आपको माँ, माँ कहकर पुकारता हूँ। स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि भारत मे स्त्री जीवन का आरम्भ और अन्त मातृत्व से होता है। विश्व में माँ नाम से अत्यधिक पवित्र और दूसरा नाम कौन सा है।''[5] उन्होनें नारी की दशा को किसी भी राष्ट्र का थर्मामीटर बतलाया है''[6] स्वामी रामतीर्थ ने अमेरिका में अपने भाषण के दौरान कहा, ''माँ निष्काम कर्मयोग की मूर्ति है।'' भारतीय शास्त्रों में नारी को सखा, अर्धांगिनी, सहचारिणी, सहकर्मी एवं भार्या के रूप में दिखाया गया है। प्रकृति द्वारा किया गया नर-नारी भेद शरीरगत ह न कि आत्मागत। विवाह भारतीय समाज एवं संस्कृति का एक पवित्र संस्कार है, जिसे 16 संस्कारों में से 13 वां संस्कार माना जाता है।

भारत में विभिन्न युगों में नारी की दशा में परिवर्तन देखने को मिलता है। भारत की सबसे प्राचीन सैन्धव सभ्यता में नारी को उच्च स्थान प्राप्त था। सैन्धव पुरास्थलों से नारी की मूतियाँ सर्वाधिक मात्रा में प्राप्त हुई है और उसे इन मूर्तियों में मातृदेवी एवं उर्वरा के प्रतीक के रूप में पूजा जाता था।[7] वैदिक काल में नारी की दशा उत्तम थी। नर एवं नारी दोनों के समान अधिकार होते थे। ऋग्वेद में पत्नी को जायदेस्तम भी कहा गया है, जिसका अर्थ है पत्नी ही गृह है।[8]

वैदिक काल में लड़कियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त था। अपाला, घोषा, लोपमुद्रा, विश्वरा, सिकता एवं निवानरी इत्यादि इस काल की प्रमुख विदुषियाँ थी। जो उच्च शिक्षित थी एवं अधिकांश ने वैदिक मंत्रों तथा श्लोकों की रचना की थी।[9] वैदिक युग में नारियों की दशा एक समान नहीं रही। शिक्षा के क्षेत्र में नारी का दायरा शनैः शनैः सीमित होने लगा। उसका पति ही नारी का शिक्षक अथवा गुरु बनकर रह गया।

सुत्रकाल में नारियों की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध लगने लगे। बाल्यकाल में पिता उसकी रक्षा करता है, यौवनावस्था में पति तथा प्रोढाघ्वस्था में पुत्र उसकी रक्षा करता है।[10] सुत्रकार शंख ने कहा, ''पति के कोढ़ी, पतित, अंगहीन या बीमार होने पर भी पत्नी पति से द्वेष न करे, स्त्रियों के लिए पति देवता है।'' छठी शताब्दी ई. पू. में भारत के उत्तर पश्चिम से ईरानी, ग्रीक, युनानी, इण्डोबैक्टिरियन, इण्डो-पार्थियन, शक, कुषाण तथा हुणो ने आक्रमण किये जिसके फलस्वरूप भारत में नारी की दशा ओर भी दयनीय हो गई। समाज में नियोग एवं पुर्नविवाह की प्रथाए बंद हो गई और सती प्रथा का चलन बढ़ गया। मुसलमानों के आक्रमणों के पश्चात् भारतीय समाज में बाल-विवाह, बहुपत्नी विवाह, एवं पर्दा प्रथा का प्रचलन हुआ। मुस्लिम काल में लाखों स्त्रियों एवं बच्चो को मुसलमान बनाकर दासों के रूप में बेचा गया।[11] मुगलकाल में उनके हरम में हजारों की संख्या में महिलाएँ होती थी। अकबर के समय में दिल्ली मे मीना बाजार जैसी घृणित व्यवस्था आरम्भ हुई। जहाँगीर शाहजहां अपनी भोग विलासिता के लिए प्रसिद्व थे।

राजपुतों में नारियों को विशेष रूप से माता को विशेष स्थान प्राप्त था। मुस्लिम आक्रमणकारियों से बचने के लिए अनेक भारतीय माताओं, बहनों एवं पुत्रियों ने अपनी सात्विकता की रक्षा हेतु प्राण न्योछावर किये थे। इनमें सुरजदेवी, परमिलदेवी रानी पद्मिनी, देवल देवी, रानी दुर्गावती इत्यादि प्रसिद्व है। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के समय में भी भारतीय महिलाओं की दशा शोचनीय थी। कन्या वध, बाल-विवाह एवं पर्दा प्रथा इत्यादि कुप्रथाऐं बढ़ गई थी। बनारस, काठियावाड तथा कच्छ के राजपूतों, जोधपुर के राठौरों, जयपुर के कच्छवाहों, जालन्धर के बेदीयों, तथा मेवात के मुसलमानों में कन्या वध बड़े पैमाने पर चलन में थी।[12] विधवा विवाह निषिद्व होने पर हिन्दू विधवाओं की जनसंख्या में अभिवृद्वि हुई। एक प्रमुख विद्वान पी.एन. बोस ने 5 वर्ष से 30 वर्ष की विधवाओं का सर्वेक्षण किया।[13] ब्रिटिश काल में सती प्रथा मुख्यतः राजपूताना तथा बंगाल में प्रचलित थी। मुगल शासक अकबर, सिक्ख गुरु अमरदास तथा मराठा पेशवाओं ने सती प्रथा को रोकने के प्रयास किए थे। देवदासी प्रथा का भी चलन बढ़ गया था। महिलाओं को शिक्षा से भी वंचित रखा जाता था।

भारत में महिलाओं की दशा में सुधार करने हेतु 18 वीं शताब्दी के उतार्ध में अनेक सामाजिक संस्थाओं ने अग्रणी भूमिका निभाई। इनमें सर्वप्रथम नाम राजाराम मोहनराय तथा उनके द्वारा स्थापित ब्रह्म समाज का आता है। 1811 ई. में उनके बड़े भाई जगमोहन की मृत्यु के बाद जबरदस्ती उसकी पत्नी अलकमंजरी को सती कराया गया तो उन्होंने सती प्रथा के विरूद्व अपना अभियान आरम्भ किया। आमतौर पर यात्रा के साथ चलते हुए लोग 'राम नाम सत्य है' बोलते है, लेकिन वे 'सतीप्रथा बन्द हो' का उच्चारण करते थे। राजा राम माहेनराय के अथक प्रयासों से ही 4 दिसम्बर 1829 ई. को सती प्रथा निषेध का नियम पारित हुआ। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के अथक प्रयासों से 1 जुलाई 1856 ई. में विधवा-पूर्न विवाह बिल प्रस्तुत किया गया, जो अतिशीघ्र कानून बना। पहला विधवा पुर्नविवाह 07 दिसम्बर 1856 ई. को ईश्वर चन्द्र विद्यासागर के एक मात्र पुत्र नारायण चन्द्र का विवाह भावसुन्दरी नामक महिला से हुआ। केशवचन्द्र ने बाल-विवाह, विधवा, पुर्नविवाह, अर्न्तजातीय विवाह कराने तथा बहु विवाह पर रोक लगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।[14]

भारत में महिलाओं की दशा में सुधार लाने हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती एवं आर्यसमाज में भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होनें विधवा पुर्नविवाह का समर्थन, विवाह एवं अन्य अवसरों पर फिजूल खर्ची को रोकने तथा कन्यावध का सशक्त विरोध किया। आर्यसमाज ने नारी शिक्षा पर भी बल दिया। 1890 ई. में जालन्धर में कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई। पंजाब के लेफिटनेंट गर्वनर सन् माइकेल ओड्वायर ने 1916 ई. में कन्या महाविद्यालय की 'विजिट बुक' में लिखा था। ''जालन्धर एक ऐतिहासिक स्थल है, लेकिन कन्या महाविद्यालय ने इसे सम्पूर्ण भारत में विख्यात बना दिया हैं।''15 1882 ई. में मद्रास के अहयार में थियोसोफिफल सोसायटी की स्थापना हुई। इसके अन्तर्गत एनी बेस्फट ने भारत में महिलाओं की दशा को सुधारने का कार्य किया। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया। उनका कहना था कि, ''भारत संसार के देशों में तब तक अपना स्थान नहीं पा सकता जब तक इस देश की माताऐं, जिनके घुटनों पर उनके बच्चे बड़े होते है, शिक्षा प्राप्त नहीं कर लेती। जब तक इन स्त्रियों को शिक्षा नहीं मिलती जिसके आधार पर वे घर को सुन्दर बना सकें। तब तक कोई कैसे आशा कर सकता है कि भारत उन्नति करेगा।''[16] 'उन्होनें कन्याओं को प्राचीन साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, भूगोल एवं शक्ति की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। इस कार्य हेतु उनके नेतृत्व में बनारस, कानपुर, श्रीनगर, गोरखपुर, अड्यार इत्यादि स्थानों पर स्कूल तथा महाविद्यालय स्थापित किये गये। उन्होंने अपने उद्बोधन कहा कि, ''तुम अशिक्षित माताओं द्वारा देशभक्तों तथा वीरों की जाति नहीं बना सकते, ये भारत की माताऐं ही थी, जिन्होंने भारत के अतीत को बनाया।''[17] स्वामी विवेकानन्द ने मानव जाति की सेवा हेतु 1 मई 1897 को बेलूर में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने महिलाओं की दशा को सुधारने हेतु सार्थक प्रयास किये। उनका मानना था कि ''धर्म को आधार बनाकर स्त्री शिक्षा का प्रचार करना होगा। धर्म के अतिरिक्त अन्य शिक्षाऐं गौण होगी। धर्म शिक्षा, चरित्र-गठन तथा ब्रह्मचर्य पालन इन्हीं के लिए तो शिक्षा की आवश्यकता है। क्या तुम अपने देश की महिलाओं की दशा सुधार सकते हो? ताकि तुम्हारी कुशलता की आशा की जा सकती है। नही तो तुम ऐसे ही पिछड़े पड़े रहोगे।[18] स्वामी विवेकानन्द ने अपनी आत्यात्मिक पुत्री के नाम से प्रसिद्व सिस्टर निवेदिता (मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल) के भारत आगमन से पूर्व एक पत्र में उसको लिखा था कि, अपने देश में नारी उत्थान की मेरी निश्चित योजना है। मैं राष्ट्रीय स्तर पर बालिकाओं की शिक्षा के लिए एक संस्था चलाना चाहता हूँ जिससे न केवल भारतीय पत्नियों व माताओं का अपितु ऐसी ब्रह्मचारिणों का भी निर्माण हो, जो अपनी जाति का उत्थान करें। ऐसी महिलाओं की आवश्यकता है यह संभाल ले।[19] निवेदिता ने भारत में 13 नवम्बर 1898 ई. को कलकता में एक छोटा सा विद्यालय शुरू किया, जो वर्तमान में भारत की महिलाओं को शिक्षित करने में अग्रणी भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

श्रीमती मिर्स अल्फासा रिर्चड, जिन्हें महर्षि अरविन्द ने 'श्रीमाँ' का नाम दिया था ने भारत में बालिकाओं की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया। उन्होनें शिक्षा के क्षेत्र में महिला की मातृत्व की भूमिका को अहम् बताया। उन्होंने कहा कि वर्तमान परिस्थितियों को बदलने की क्षमता रखने वाली आध्यात्मिक शक्तियों को अभिव्यक्त करें।[20] भारत में महिलाओं को शिक्षित करने में श्री ज्योतिराव गोविन्द राव फूले द्वारा स्थापित सत्यशोधक समाज ने भी अग्रणी भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी अर्धागिंनी सावित्री बाई फूले को शिक्षित किया। जिन्हें भारत की प्रथम शिक्षिका के रूप में जाना जाता है। सर सैयद अहमद आगा खां, जो

एक मुस्लिम समाज सुधारक के रूप में प्रसिद्ध थे। उन्होंने मुस्लिम महिलाओं के जीवन को सुधारने के उद्देश्य से बहुपत्नी विवाह प्रथा एवं सरलता से तलाक का प्रबल विरोध किया। पंजाब के क्षेत्र में सिंह सभा ने 'आनन्द विवाह' को कानूनी मान्यता दिलाने के लिए प्रयास किये तथा महिलाओं के लिए संस्थाऐं खोली गई।[21] हरियाणा में झज्जर के पं. दीन दयालु द्वारा स्थापित सनातन धर्म सभा ने भी विवाह के अवसर पर फिजूल खर्ची की कटु आलोचना की तथा विधवा पुनर्विवाह का प्रबल समर्थन किया।

संक्षेप में हम कह सकते है कि भारत में नारी का माता, बहिन तथा पुत्री के रूप में सदैव आदर किया गया है। वैदिक युग में भी स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे का प्रतिरूप बताया गया है। मध्यकाल एवं ब्रिटिश शासन काल में नारी की दशा में गिरावट आई परन्तु भारतीय समाज सुधारकों एवं धार्मिक, सामाजिक आन्दोलनों महिला सशक्तिकरण में अहम भूमिका निभाई। वर्तमान परिस्थितियों में भारतीय नारी का विकास हजारों वर्षों के भारतीय जीवन मूल्यों के आधार पर करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. अर्थवेद, 12.1.12: डॉ. राधा कुमुद मुखर्जी, नेशन लिज्म एण्ड् हिन्दू कल्चर (संसोधित संस्करण, 1995, दिल्ली) पृ. 12
2. मनुस्मृति, 2.145
3. महाभारत, आदि पर्व, 195, 96
4. स्कन्दपुराण, कौमारिका खण्ड्, 6.7: मत्स्यपुराण 227.50
5. स्वामी विवेकानन्द, विवेकानन्द साहित्य, भाग-1, (अदैत आवक कोलकाता, 1789 पृ. 309)
6. वहीं, पृ. 324
7. डा. राजबलि पाण्डेय, भारत का सांस्कृतिक इतिहास, उतर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, द्वितीय संस्करण, 1983, पृ.सं. 27
8. सतयकेतु विद्यालेकार, मौर्य साम्राज्य का इतिहास, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2017, पृ.सं. 16
9. डॉ. डी.सी चौबे एवं प्रोफेसर रजनी मीणा, भारत की संस्कृति की धरोहर, जयपुर, 2015, पृ.सं. 370
10. डॉ. कैलाश चन्द्र जैन, प्राचीन भारतीय सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाऐं, मध्यप्रदेश, हिन्दी अकादमी ग्रन्थ, भोपाल, 1987, पृ.सं. 40
11. डा. आर्शीवादी लाल श्री वास्तव, भारत का इतिहास (1000-1707) आगरा, 1961 पृ.सं.302
12. सतीश चन्द्र मितल, भारत का सामाजिक-आर्थिक इतिहास (1758-1957) नई दिल्ली, 2005 पृ. 19
13. पी.एन. बोस, ऐ हिस्ट्री ऑफ हिन्दू सिविला ई जेरान इ.पूरिंग द ब्रिटिश कब, भाग-दो
14. के.के. दत्र, ए सोशल हिस्ट्री ऑफ मान्डर्न इण्डिया (नई दिल्ली, 1975) पृ. 356-366
15. ए युसुफअली, द मेकिग आफ इण्डिया (लन्दन 1925, पृ. 285
16. एनीबेसन्ट, इसैनशैल्स आफ एन इण्डियन एजुकेशन (अडयार)
17. एनीबेसन्ट, बर्थ आफ एनेशन (अदयार, 1917) पृ. 102
18. विवेकानन्द साहित्य 2905 - पृ. संख्या -186
19. डा. सतीश चन्द्र मितल, हिन्दुत्व से प्रेरित विदेशी महिलाएं (नयी दिल्ली, 2014) पृ. 6
20. श्रीमां, आदर्श माता-पिता, अध्यापक और बालक पृ. 11-12
21. द ट्रिब्यून, 9 अप्रैल 1909

International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 04, April 2022
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

MANAGERIAL SKILLS ROLE IN AN ORGANIZATION

Dr. Promila Dahiya

Director cum Assistant Professor SFS, Vaish College, Bhiwani

Abstract

The purpose of this study is to investigate the value of the relationship of prediction of management effectiveness in the four dimensions of management skills (technical skills, management skills, human skills, and civic behavior). Therefore, you want to find the reason why the value relationship of these Aspects of the experience differs according to the type or degree of organization. A multiple moderate regression and l ' analysis of the weight in are used to test the' hypothesis of relation. Using results from various sources, these results show that the four dimensions of the skills of leadership were the predictors very relevant to the management of the performance - . The skills human was a little more important than the experience technology and the attitudes of the citizens, while the skills of management in overall were the most relevant. Gender was not a regulator meaning of the "equation of effective capacity, but the organization level was to allow the heads to choose improvement or positioning the manager to take into account the four measures of capacity. In addition, special attention should be paid to skills management and this concentration should increase in the corporate hierarchy of managers. Although the investigation earlier had suggested that the value of the various functions of management, this analysis is the first to provide the "evidence empirical evidence of this type of ability to predict the actual effectiveness of the management of an aid for the analysis of relevant statistics." Evaluate the relative importance of these capacity dimensions.

Keywords: managerial skills, capacity management key, efficiency management, capacity management, efficient management of relative importance.

© Associationof Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

INTRODUCTION

In a serious worldwide economy, it is uncommon for organizations to understand that the principle wellsprings of benefit are their assets, particularly those in the management field. Abilities - Management has been the sultriest theme for the most recent few years Ten and the estimation of the exhibition - management is one more appealing and fascinating territory of investigators and experts. It is broadly perceived that supervisors are the fundamental instruments utilized by countries, associations, and foundations to address the world's issues. The power long haul of an association relies upon the relational abilities, the information, the demeanor positive and the conduct of bosses. The management successfully has been concentrated by one extraordinary number of CEOs and procedure master during the previous many years.

It is widely believed that management training provides a valuable link between monetary development, management performance and the representation of people at their relationship level. Directors have to play an important and increasingly more important role in the overall performance of their organizations and in the progress of their countries in this regard.

The company management has merged in many ways the standard modern and has reorganized the content to educate their members. The administration of the preparation is the basic essential to improve the ' efficiency of management'. Almost inevitably, several variables influence the effectiveness of management and attract one approach special for all the parts of the management of the learning in the world. Training in the management of the market situation is a central task under the direction of the manager. The management training has triggered one series of competitions that traditionally acts the leader of the market and the management of activities democratized in this direction.

From one of the company's funds for the development of knowledge, skills and competencies , and a lot of things that the lead company, as well as people in need of management - education. These schools of commerce have provided to workers and executives in sectors as different as finance, transportation and accounting speaker in skills related to business and the practical business. Business managers are necessary for managers to be financially successful. For the managers of today, the need for knowledge specialized for longer handle multiple companies with the skills well trained is essential. The management of the performance is now many peaks in teaching.

A being only suppliers of frame, the schools of commerce should be able to create the managers qualified and morally reliable, and preparation for leadership is one point potential for the performance manager. This test is directed to the fact, the benefits of shape physically with and without structure prepared by the combination.

Despite the fact that these more intangible and multifaceted capabilities are at the heart of modern organizations, particularly those operating on a global scale, there appears to be an oversimplification of leadership and soft-skills training. Theory-based research, with its general exemption from time-

based constraints and its lack of emphasis on practice-based application, has also come under fire for its shortcomings. Increased scholarly research is of little interest to practitioners and has become a "vast wasteland" of insignificance, disconnected from the pace, pressure, complexity, and challenges of today's business environments.

As a result, much research has been conducted without regard to the essence of a practicing profession, and instead has pursued important latent and theoretical interests. A more focused focus on research relevance without sacrificing rigour would at the very least increase the usefulness of research and make theory much more appealing to those who work in the field of medicine. At the end of the day, researchers and educators must work together to ensure that students not only understand theory, but also develop pragmatic managerial behaviours that are essential to their success in the marketplace. There is evidence that the relevance of business domains and specific competencies nested within broader generic taxonomic categories may change over time as a result of technological advancements and social progress.

The importance of the skills directives

Nonetheless, the improvement of the economy and soundness requires one head adequately human - one hand - to work with the abilities and capacity to put resources into the economy. A conveyance Human Capital reached out to amounts significant for the efficiency of the work and the exercises business, which advances the financial plan of improvement. They are not counsel on the best way to more readily create the knowledge. As NR Narayana Murthy said, the justification the absence of progress in numerous imaginative nations isn't an absence of assets, yet an absence of involvement and uprightness in management.

On the off chance that we are skilled and productive in our work, we can utilize our land resources: human experience, monetary assets, creative mind, and live and distant - the construction, to name only one few. This is on the grounds that an equipped individual owes their responsibility not to an association or association, but rather to their vocation. The fantasy about making India a main part in globalization might not have been conceivable without Jawaharlal Nehru thought of extending a few foundations, for example, the India Institute of Technology (IIT) and the Indian Institute of Management - (IIM). ,

The Center for Research nuclear Bhabha (BARC) and the Institute of India in Sciences Medical, The organization India should have the ability to development abroad, in the event that you are hanging tight for occupations holding up in the expert world. Management (and the economy) is viewed as a fundamental power for change, advancement and success. In the

' circumstance today of management - the experts have one major obligation regarding, being the' India forcefully, that the interest for management and management - preparing is getting more quick.

Due to the consistent improvement of its articles, governments, species, economies, rivalry and the inventiveness of unions analyzed. With these advances, the pioneers desire to react with better ways to deal with exploration and yield. The accomplishment of an association in accomplishing its objectives and furthermore their obligation social depends in huge measure on its individuals. In the impossible occasion that the individuals take care of their work competently and the association that has understood its destinations. The affiliation means to utilize its scholarly ability to prevail amidst today's business world.

Related Literature

Sarita Chaudhary et al (2011) According to them, if management profession and practise are considered and moulded as "art" rather than "science," its educational programming avoids the pitfalls of structure, formalism, and standardization; creativity, subjectivity, flexibility, and informality replace the conscripted mode of training and development in management; and, finally,

Adarsh Preet Mehta (2014) The lack of a corporate governance system at management colleges is one of the key causes for the decline in the quality of management education. Corporate governance should be included in the accreditation process. He has come to the conclusion that management education must be comprehensive, targeted, and customized with the goal of closing the gap that exists between industry requirements and academic curriculum, with a focus on attitude, grooming, corporate awareness, and the development of managerial skills being the primary objectives.

Kumar K. Ashok et al (2013) The undergraduate programmes supplied by universities and postgraduate programmes offered by institutions of management to recent graduates do not provide the participants with appropriate practical experience. These students earn experience only after they have completed their degree and have begun working for an organization.

Sanjeev Kumar et al (2011) Management education must be integrated, targeted, and customized with the goal of closing the gap that exists between industry requirements and

academic curriculum, with a particular emphasis on corporate awareness, grooming, attitude, and the development of managerial skills being the primary focus.

Gautam G. Saha (2012) We have entered the third millennium and that India's management education is undergoing a significant transformation. Internationalization, strategic alliances, cross-cultural communication, partnership, and mergers are the newest trends in management education and training programmes. But where do we stand in relation to the United States and Japan? One of the most crucial reasons for Japan's ascent to the top of the industrial world's ladder is their belief in "developing people before things are developed," and it is critical for Indian management education to adopt this philosophy as well.

RESEARCH METHOD

The scientific methodology is utilized to methodically pass the examination stage. The fundamental goal of this section is to clarify the idea of the examination and the philosophies utilized for the investigation. It additionally incorporates the pursuit cycle, the inquiry structures, models, information assortment strategies, the nature of the substance and configuration, usability, maker of the product and information assortment, as the strategy technique utilized in the example.

The dispersion of the ' hand by and large of the offer - work that is coordinated to the advancement of the market when numerous economies Westerners to manage the impacts of the maturing and, now and again, of a lessening in the labor force. 'Magnum opuses. The number of inhabitants in these nations is overpowering. The number brimming with workers in China, and India is higher than that of Europe, the "United States and Japan joined. It is normal that the ' Indian labor force in the following 20 years of age (2010-30) to 31% development. In 2050 l ' India is that 19% of its populace more than 60, concerning 39%, 53% and 67% more than 65 in the part states, including Germany and Japan (successfully hand of work by Accenture (Learning Transition , Business Today).

RESULTS

This part portrays the aftereffects of the information survey. The investigation was led among 506 representatives from four prestigious banks situated in NCR - Delhi, India. The perusing and the exchange, l ' association of the design and the' key compelling were the factors that are incorporated. The survey of the information, including the assessment of the administration abilities scale set up in the primary period of this examination, the acknowledgment of the social styles of different banks and, at last, the audit of the hypotheses proposed for the report.

The discussion starts in the initial segment from the presentation of quantitative insights regarding the examination. The subsequent zone clarifies the degree of fitness in the administration of EPT, CFA and the legitimacy and viability of the actions utilized in this investigation for each model. The third section looks to know the “model of the corporate culture 2 bank structures remembered for the examination. The fourth section manages the investigation of hypotheses through straight relapse. The fifth and last portion recognizes the "examination of the investigation of the resistance of spezifischen structure. The investigation information was led in with SPSS 21 and MASTERS 20.

- **Type of organization**

shows that 90 percent of the respondents work in the manufacturing sector, whereas only 10 percent work in the service industry, as a summary.

Type of organization

		Frequency	**%**
	Manufacturing	455	90
Valid	Service	51	10
	Total	506	100.0

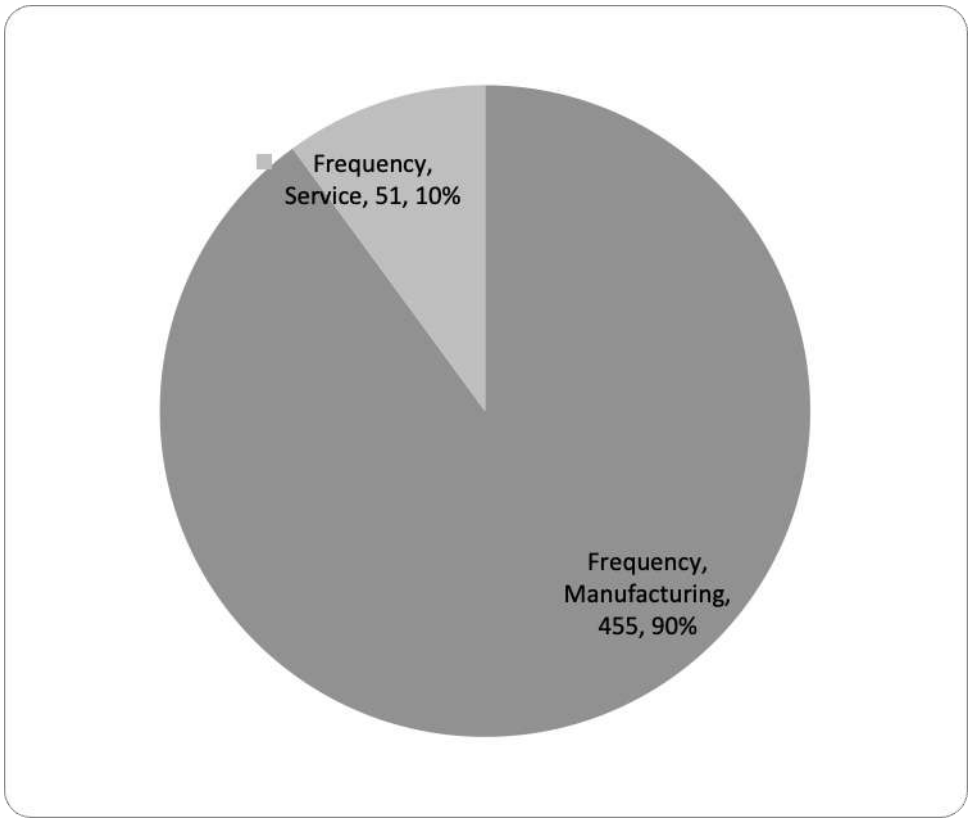

Type of organization

- **Classification of the organization**

shows that 27 percent of respondents work in major industry, whereas 73 percent work in medium industry, which can be characterized as

Classification of the organization

		Frequency	%
	Large	137	27
Valid	Medium	369	73
	Total	506	100.0

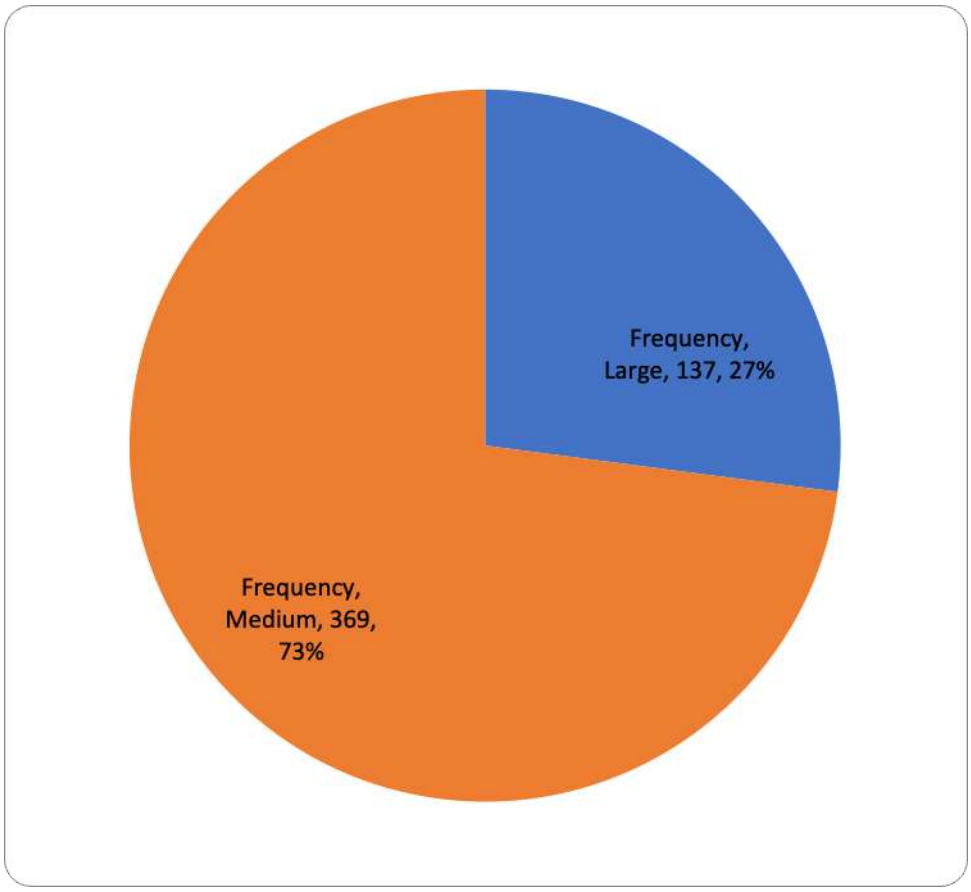

Classification of the organization

CONCLUSION

The executives preparing in India has functioned too, on account of the vision of previous mindful government officials to build up IIM as good examples. Presently we need to incorporate and comprehend the different associations to make their assumptions days so understudies get something of significant worth, just as of his own greatness. The instruction the board in India has encountered one sort of advancement that is more the preparation proficient who has been found in the previous many years. India Council of Technical Education (AICTE), which manages specialized instruction in India is persuaded that no has not been the circumstance to guarantee that is has made expansion of the business colleges around the country, in spite of than trust that he can. In any case, the ' exercises of the program ought to urge these understudies to be rehashed. You need to with the most recent assets and weapons to prepare, to get any new situation to make you handle right now to survive. Other than that, it should enable them to foresee issues such that they can be tended to and settled before they occur.

REFERENCE

[1]. Tsui, S. J. Ashfor R d L . St - Clair, one and K .R. Xin, - d for the email of a ghost Ling h disco repent expectations: Adaptation of strategies and effective management , ‖ Academy of Management - Journal, December 1995 pp. 1515-1543 ..

[2]. Analoui, F. (1993), Management - skills in Cusworth, JW and the franc, SI (ed) of the project - management in developing countries, Longman Scientific and Technical, United - Kingdom - United - Kingdom.

[3]. Analoui, F. (1997) The leaders superiors and their effectiveness, Aldershot, Avebury, United - Kingdom.

[4]. Analoui, F. (1998), human resources - Management - problems in developing countries, (edited by) Ashgate, Aldershot, United - Kingdom.

[5]. Analoui, F. (1999). Eight parameters of efficiency of management: one survey of executives in Ghana. Management Development Magazine, 18 (4), 362-389.

[6]. Analoui, F. (2007). Strategic management of human resources. London: Learn Thompson.

[7]. A r -to- say Y. L and the victory, John W.M Inton- D and I r mining ogoneo too netion of a l and f fandc tivyn and s s: anothandr appearance , and one of the order of days for research management science - 1986a

[8]. Babcock, DL, Engineering and Management Technology: An Introduction to Management for the Engineer. 2nd edition, Prentice Hall, New Jersey, 1996.

[9]. Badawy, MK, Leadership Development Among Engineers and Scientists. John Wiley & Sons, NY, 2nd edition, 1995.

[10]. Chaudhary, Sarita et al., (2011) "Emerging Issues in Management Education in India", VSRD International Journal of Business & Management Research.

PAPER 57

ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 6.03

Volume 9, Issue 12, December 2022

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects

e-ISJN: A4372-3088
p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study

Published By: SK Publisher *(www.skpublisher.com)*

An Investigation of the Vedic Theories on Death and Death Rituals

Dr. Surender Kumar
Research Scholar, IMSAR
MDU, Rohtak, Haryana, India.

DOI: Available on author(s) request.

Abstract: ***Death, being the ultimate reality of human existence, has long captivated scholars and interests alike. Culture, history, health, and emotion are all intricately entangled with it, and its interpretation and evaluation have varied considerably across cultural contexts. Brahmaṇism asserts that death represents the ultimate end of human existence and the deepest source of anguish in the human experience; it signifies the culmination of corporeal existence. Death is not regarded as an isolated notion in Brahmanism; rather, it is considered an inevitable element of the perpetual samsara cycle. Two discrete perspectives on mortality are presented in early Brahmanical texts: medical and non-medical. Death is portrayed in non-medical texts as a preternatural or daiva phenomenon, whereas causal explanations for death are found in medical texts like the Susruta Samhita and Caraka Samhita. Susruta Samhita posits that mortality is an unavoidable consequence of the human condition. In contrast, Caraka Samhita recognises the influence of karma on an individual's well-being but upholds the conviction that a premature demise can be averted by maintaining optimal health. The perception, comprehension, and awareness of death throughout history have not been the focus of comprehensive scholarly investigation. The field of death-related research predominantly adopts an archaeological or philosophical approach, allocating relatively little attention to societal perspectives on death, specifically beliefs concerning the afterlife and their historical contexts. An innovative piece of literature, The History of Death by Michael Kerrigan, illustrates how death can be historically analysed and how societal changes reflect the impact of those changes on the death culture. Furthermore, it examines the profound influence of death on the domain of entertainment and transforms it into a subject worthy of literary attention. Following the earliest phases of human civilization to the present day, A Brief History of Death by W.M. Spellman traces the historical influence of death culture in virtually every region of the world. Spellman examines the business ramifications of mortality and illustrates how concerns about death diminish in tandem with advancements in modern medical science and a decline in the global mortality rate. This literary work explores the manner in which specific cultures idealise or enchant mortality.***

Keywords: Death Culture, Death Rituals, Vedas, History of Death.

Content

The ultimate truth of human existence is death. Ever since the dawn of human civilization, there has been an insatiable human curiosity concerning the enigmatic nature of mortality. Beyond being a natural occurrence, death is also intertwined with culture, history, health, and emotion. Death has been perceived and analysed differently across diverse cultural contexts. Conversely, certain cultural groups have ascribed dangerous connotations to death, while others have portrayed it as a gateway to an eternal realm that never ceases to expand. Diverse conceptions of mortality exist across all religious traditions. Consensus

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

among theologies is that death is malevolent and calamitous. Brahmaṇism posits that the final destination of human existence is death, or MŐtyu. Death signifies the culmination of the corporeal or ordinary existence that commences with one's birth. Additionally, death is regarded as the most profound source of sorrow in the human experience. In Brahmanism, death is not a singular concept; it has been explicated in a variety of ways. In addition to being a source of anguish and a negative portent, it is also perceived as a muddled experience. Death is considered an unavoidable component of the perpetual samsara cycle, according to Brahmanism. In his autobiography, Rabindranath Tagore described mortality as a natural occurrence comparable to the emergence of the sun or the changing of the seasons in the realm of human existence. A momentary encumbrance of the cadence of life by the black spectre of death ensues, but this transient state is brief, as life promptly reverts to its former splendour. Numerous other concepts, including rebirth, heaven, purgatory, the soul, and numerous others, are integrated with the notion of death in Brahmanism. These concepts revolve around the central idea of death.

Two distinct viewpoints on death can be found in early Brahmanical texts. There exists a medical aspect and a non-medical aspect to consider. Early Brahmanical medical texts, such as Susruta Samhita and Caraka Samhita, provide causal explanations for death. Conversely, the majority of non-medical texts depict death as a supernatural or daiva occurrence. While the Susruta Samhita (1/24/7) explicitly precludes the influence of karma on mortality or illness, it does contain an independent segment that examines the impact of daivabalapravṣtta, which refers to ominous and extraterrestrial elements, on human health. Susruta Samhita considers mortality to be an inevitable outcome of the human condition. While Caraka Samhita (1/1) acknowledges the impact of karma on an individual's health, it maintains the belief that one can prevent an untimely demise through the attainment of good health. This investigation will centre on the non-medical Brahmanical texts and the various ways in which they depict mortality. In recent years, numerous historical aspects of Indian culture have been examined, but mortality has never been a prevalent subject in Indian historical academia. In recent years, numerous facets of death-related culture have remained undisturbed by scholars. An attempt will be made to shed light on those unexplored facets of Brahmanical death-related culture in the course of this study.

Death-related historical perception, comprehension, and awareness have not been the subject of the most extensive research. Limited exhaustive research has been conducted on this particular aspect. Death-related research is typically conducted from an archaeological or philosophical standpoint. Archaeology-focused research on death primarily emphasises burial practices and culture, while societal perspectives on death, particularly beliefs about the afterlife and their historical contexts, have received relatively little attention. In this regard, The History of Death by Michael Kerrigan is a groundbreaking work. The author demonstrates in this book how death can be analysed historically and how societal transformations reflect the influence of those changes on the death culture. Additionally, he demonstrates how funerary practices evolve periodically as a result of social and cultural developments. Additionally, Kerrigan demonstrates how in some societies, death is occasionally celebrated, and how the beliefs of that society regarding the afterlife reflect its mentality. Furthermore, it exposes the impact of mortality on the realm of entertainment and elevates it to the status of a literary topic. An additional work of this genre that merits mention is A Brief History of Death by W.M. Spellman. This literary work endeavours to delineate the lineage of death culture from its earliest stages of human civilization to the present day. Spellman attempts to trace the historical influence of death culture in virtually every region of the globe in this book. Additionally, Spellman addresses the business implications of death. Additionally, he demonstrates that as contemporary medical science advances and the global mortality rate declines progressively, so too does the apprehension towards death diminish. Additionally, this book investigates how certain cultures romanticise or fantasise about mortality.

In the context of India, the narrative of mortality is among the most uncharted territories. Very few original works have been published in this field of study. As has been previously stated, the majority of death-related research focuses on philosophical issues. Extensive archaeological research has been conducted on the burial customs of different regions of India; however, evaluations of death culture based on textual evidence are scant, and the majority of these investigations have been

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

conducted from a religious slant and lack empirical support. Certain scholarly works authored in the West, including Hindu Religion, Customs, and Manners by P. Thomas and Hindu Manners, Customs, and Ceremonies by A. Dubois, contain accounts of Brahmanical death rites. Additionally, a number of Thomas Colebrook's essays include modern accounts of Brahmanical death rituals. Despite the fact that these writings are occasionally enlightening, they are typically quite biassed due to an imperialistic superiority complex. The majority of Brahmanical customs are portrayed as superstitious and backwards, and this included death customs. Life Beyond Death by Swami Abhedananda could be classified within this particular genre. It is an extremely popular piece. While not written from a historical perspective, the author has endeavoured since an early age to trace the development of death-related philosophy. Abhedananda also endeavoured to provide scientific explanations for the concepts of life after death, the potential for immortality, and souls.

P.V. Kane was the initial individual to endeavour at empirically compiling the Brahmanical death rites. A meticulous effort was expended in the fourth volume of his renowned treatise, The History of Dharmashastras, to revise numerous scriptural prescriptions concerning sraddha and asauca. To reconstruct the historical account of Brahmanical funeral rituals, he examined texts such as the Rigveda to the early 17th century CE, including the Vedas, Puranas, Grhya Sutras, Srauta Sutras, Smrtis, and others. He extensively referenced early and late mediaeval Smṛti texts in order to situate the dynamic evolution of the Brahmanical ritual. Furthermore, his research demonstrates how the integration of immigrants, particularly Muslims, into Indian society resulted in significant modifications to the Brahmanical funeral rites. His exhaustive investigation, however, neglects to examine other facets of the history of mortality. The afterlife's context is notably absent from the majority of his research. The research fails to investigate the manner in which death came to be associated with divinities or the enduring consequences that death has on modern society. Gian Motyu: Concept of funeral in Indian Tradition by Giuseppe Filippi is widely regarded as a seminal work in the field of Indian funeral history. Filippi diligently endeavours to delineate the historical progression of notions pertaining to mortality in India. Additionally, he endeavours to offer a psychological and scientific interpretation of Indian funeral rites. However, the primary deficiency in his work is that Filippi accepts as true the myth and beliefs surrounding death in Indian culture without tracing their social and historical origins.

The Hindu Book of the Dead by Trinath Mishra is an additional exemplary discourse concerning the Hindu belief system's traditions pertaining to death and the afterlife; however, this literary work lacks appropriate historical methodology. In this context, Wendy Doniger O'Flaherty's two novels may be mentioned. An Investigation into the Origin of Evil in Hindu Mythology is the initial publication. As an antagonist in Indian mythology, Flaherty examines the context of mortality in this book. Karma and Rebirth in Classical Indian Tradition is the title of the second volume. Anthology of essays pertaining to the viewpoints of rebirth as presented in Brahmanical, Buddhist, and Jain theologies, this book is an edited volume. Ed. David M. Knipe A compilation of essays on sraddha ceremonies and their outcomes, The Hindu Rite of Entry into Heaven and Other Essays on Death and Ancestors in Hinduism comprises the aforementioned topics. The central thesis of this literary work is derived from an exhaustive field investigation conducted in the scorching ghats of Benares. Jonathan Parry's Death in Benares is an exemplary scholarly work that explores the evolution of self-immolation from a practice of pilgrimage to a highly lucrative enterprise, the advent of Benares as a sacred destination for atonement through death, and the progressive transformation of this practice into a thriving industry.

Prior studies, including those of Michael Kerrigan and W.M. Spellman, have been conducted using appropriate historical methodologies; however, these studies have not been conducted within the specific context of India. S. Settar and P.V. Kane have conducted the most eminent research in the Indian context, despite the fact that P.V. Kane's research only partially addresses this subject and Settar has approached his research from a Jain standpoint. Although written within a Brahmanical framework, the works of Trinath Mishra and Gian Giusupe Filippi lack appropriate historical methodology. Despite its immense popularity, Swami Abhedananda's book is written entirely from a religious standpoint. David M. Knipe's edited volume attempts to illuminate certain aspects of Brahmanical funeral customs. In the same way, Karma and Rebirth in Classical Indian

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

Tradition, an edited volume by Wendy Flaherty, touches upon a few aspects of Buddhist, Jain, and Brahmanical eschatological studies; however, it is important to note that this work does not provide a comprehensive analysis. The book by Jonathan Parry attempts to illuminate the economic aspect of the funerary industry in colonial Benares. The scholarly contributions of William Borman, Bindu Pandit, and Kusum P. Merh are adequately documented and touch upon various facets of Brahmanical death-related culture to some extent. Death culture in Vaisavism has been the subject of research conducted by Bankim Sen and E.H. Rick Jarow. Conversely, B.C. Law's monograph presents a commendable effort to depict the concept of existence beyond mortality through the lens of Buddhism. The lack of such exhaustive research has resulted in numerous unexplored domains; the current investigation will therefore delve into those uncharted regions.

References

1. Colebrook, Thomas., Miscellaneous Essays (Vol. I), 1837, London.
2. Dubois, A., Hindu Manners Customs and Ceremonies, 2007, New York.
3. Kerrigan, Michael., The History of Death: Burial Customs and Funeral Rites from the Ancient World to Modern Times, 2007, Amber Books.
4. Spellman, W.M., A Brief History of Death, 2014, Reaktion Books.
5. Tagore, Rabindranath., Rabindra Rachanabali (Vol - XI), 1989, Kolkata.
6. Thomas, P., Hindu Religion, Customs and Manners, 1971, D.B. Tarapoorwala.
7. Weiss, Mitchell G., ‘Caraka Saṁhitā on the Doctrine of Karma’, Karma and Rebirth in Classical Indian Tradition,1980, London.

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

PAPER 58

ISSN: 2394-3122 (Online)
ISSN: 2394-6253 (Print)
Impact Factor: 6.03

Volume 9, Issue 9, September 2022

SK International Journal of Multidisciplinary Research Hub

Journal for all Subjects

e-ISJN: A4372-3088
p-ISJN: A4372-3089

Research Article / Survey Paper / Case Study

Published By: SK Publisher *(www.skpublisher.com)*

A Research Review on Akbar's Relation with Non-Sufi Saints

Dr. Surender Kumar
Associate Professor of History,
Vaish College, Bhiwani,
Haryana, India.

Abstract: ***By virtue of his unorthodox religious views, Akbar, the progenitor of the Mughal empire, ruled India for close to three centuries. Dissenting from caste and religion, he maintained cordial relationships with all sectors of society. Later, during his succeeding sojourns in Ajmer in 1526 A.D., Akbar entered into matrimony with further Rajput princesses, including Man Bai. The magnolia regale granted these Rajput princesses unimpeded entry to observe their religious devotions. Within the imperial residence, havans were conducted. All religious followers were treated equally by Akbar. Non-Muslims were exempt from the "Jiziya," or pilgrimage tax, which was abolished in 1564, and the tax imposed on Hindus in Mathura was eradicated in 1563. Ibadat Khana was built by Akbar between 1575 and 1576 with the explicit purpose of amassing knowledge concerning a multitude of religions. Subsequently, invitations were extended to scholars of diverse faiths, such as Jati Sewara, Sunni Shia, Jewish, and Zoroastrian, in addition to the initial restriction of participation to Muslim jurists. Dusshera, Diwali, Shivratri, and Rakhi were among the Hindu religious observances that Abkar attended. In the end, Babur solicited benevolence from Guru Nanak, who exhorted Babur to free all prisoners within his nation. A single condition was embraced by Babur: the Guru was required to bestow blessings and ensure the perpetuation of his dominion across generations. Humayun encountered Guru Augad while en route from Hindustan to Lahore, whereupon he appealed to him for favours. Following a certain interval of time, the Guru guaranteed that he would reclaim his supremacy. Contemporaries of Guru Amar Das, Guru Ram Das, and Guru Arjan Deo, Karbar maintained cordial relations with the Sikh Gurus. He appointed his youngest son, "Arjan," as the heir apparent of Guru Ram Das. The Adi Granth, regarded as the sacrosanct scripture of the Sikh religion, is attributed to Guru Arjan for its compilation. Birthplaced in a village situated four miles from Delhi, Surdas, a celebrated saint poet of Vallabha Sampradaya, was summoned to Akbar's court by his soldiers. Upon Surdas's arrival at the court, Akbar bestowed reverence upon him.***

Keywords: Akbar, Non-Sufi Saints, Mughal Empire, Medival India, Sikh Guru.

Content

In reality, Akbar was the progenitor of the Mughal empire, having so firmly established his dynasty's foundation in India that it endured for nearly three centuries. This was made possible through his adoption of a liberal religious stance. Akbar upheld amicable relations with every segment of society, regardless of caste or religion. Marriage to a Rajput princess (Raja Baharmal's daughter, Man Bai) during his first visit to Ajmer in 1526 A.D. demonstrated his liberalism. He subsequently wed additional Rajput princesses. The regal palace provided unrestricted access for these Rajput princesses to practise their faith. Havans were performed within the imperial residence. Akbar treated adherents of all faiths with equal regard. Akbar eliminated the pilgrimage tax imposed on Hindus in Mathura in 1563. Akbar eliminated "Jiziya," the tax imposed on non-Muslims, in 1564. With the intention of acquiring knowledge pertaining to various religions, Akbar constructed Ibadat Khana between 1575 and 1576. Initially, participation in the Ibadat Khana was restricted to Muslim jurists; however, Akbar subsequently extended

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

invitations to scholars of various faiths, including Sunni Shias, Brahmanas, Jati Sewara, Jews, Zoroastrians, and others. Similar to Sultan Muhammad bin Tughluq, Abkar observed Hindu religious celebrations such as Dusshera, Diwali, Shivratri, and Rakhi. Hughis participated in the Hindu festival of Holi.

Under Akbar's direction, a considerable quantity of Sanskrit literary works, including the Mahabharata, Ramayana, Kalila-wa-Dimna, Nal-o-Daman, Singhsan Battisi, and many others, were translated into Persian. At the Mughal Court, Akbar fostered an environment conducive to the assimilation of diverse religions and cultures. He maintained cordial relationships with erudite individuals of various faiths. Abul Fazl records that "sages of various religions gathered at the court," while Badaoni states that "large groups of erudite individuals from different nations and sects, along with sages representing diverse religions and traditions, visited the court and engaged in scholarly dialogues." He engaged in dialogue with the Brahmins and Jogis, expressing interest in their religious beliefs and rituals. Akbar additionally forbade the slaughter of cows, a sacred animal in Hinduism. He held the sentiments of his people in high regard. Outside the city of Agra, Akbar constructed Dharampura and Khairpura, two locations for nourishing impoverished Hindus and Muslims, and jogipura, a third location intended for jogis. In addition, coins featuring the image of Sawastika and the figures of Rama and Sita were also issued by Akabr. Akbar made every effort to incorporate every segment of society into his empire. Raja Man Singh of Amber was elevated to the highest nobility rank, and Raja Todarmal was designated as the realm's finance minister (Diwan). Daswanth and Basawan were two of the court painters under his patronage, while Tansen and Ramdas served as court musicians.

One of Akbar's closest companions, Raja Birbal, was murdered at the north-west frontier; Akbar was profoundly disturbed by this development. Numerous Hindi poets were supported by Akbar, including Narhari, Gang, Manohar, and Holrai, among others. The establishment of an atmosphere of religious tolerance in India can be attributed to Akbar. Terry states, "In this context, every man is free to profess his own religion." Akbar maintained amicable relationships with the non-Sufi saints of his era, especially with the Bhakti saints of various sects, with whom he maintained especially cordial relations. His relations with Jains, Jogis, Zoroastrians, and others were also cordial.

It is said that Guru Nanak encountered the first Mughal emperor Babur en route to the conquest of India. Babur attacked Sayyidpur while Guru Nanak was present in the city. The town's inhabitants were subjected to mass executions and looting, while the Guru and his disciple Mardana were confined in prison despite escaping harm. Babur, moved by Guru Nanak's remarkable deeds while incarcerated, secured his release and intended to offer him gifts; however, the Guru declined all offerings and instead demanded the release of the prisoners. Babur, at the behest of the Guru, freed the detainees and reinstated their property. After that, Guru Nanak paid Babur another visit and performed hymns that he had composed. Following his profound admiration for the Guru's hymns, Babur requested the Guru's companionship for a period of time. Babur ultimately beseeched the Guru to show him benevolence. Once more, the Guru urged Babur to release every prisoner in his nation. Babur consented to a single stipulation: the Guru must guarantee the continuation of his dominion through the generations and bestow blessings. Your empire, said the Guru, would endure for a time. Subsequently, Babur executed every prisoner. According to an additional account in "Dabistan-i-Mazahib," Nanak, dissatisfied with the Afghans, invited the Mughals into the region, which resulted in Babur's triumph over Ibrahim Lodi. However, Babur fails to mention Guru Nanak or his encounter with him in his memoirs. Upon conducting an analysis of various Janam Sakhis (documents detailing Guru Nanak's biography), W.H. McLeod posits that the possibility of Guru Nanak and Babur meeting is not entirely implausible; in fact, it seems highly probable. Guru Anged succeeded Guru Nanak as the second Sikh Guru, carrying on the Guru's mission. During his journey from Hindustan to Lahore, Humayun encountered Guru Augad and beseeched him for his favours. The Guru assured him that he would reclaim his dominion after a period of time. Subsequently, upon reestablishing his Indian empire, Humanyun expressed his gratitude to the Guru. Very cordial were Akbar's relations with the Sikh Gurus. Akbar lived contemporaneously with Guru Amar Das, Guru Ram Das, and Guru Arjan Deo, three Sikh Gurus.

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

During one of his sojourns in Lahore, Akbar made the deliberate choice to convene with Guru Amar Das. Govindwal was where the Guru was at the time. Akbar endeavoured to meet the Guru at his residence, whereupon he discovered that in order to do so, he was required to partake in the Guru's "langar" (free cookery), a customary practice for visitors. It has been reported that Emperor Akbar dined and sat with commoners. Akbar subsequently engaged in conversation with Guru Amar Das. His admiration for the Guru's spirituality prompted him to propose a land grant in his behalf; however, the Guru declined, stating that his confidence was placed in God. However, Akbar persisted and ultimately bestowed the land upon Bibi Bhani, the daughter of Guru. Akbar was subsequently bestowed with a garment of distinction by the Guru. Akbar was once informed by the Brahmins of Govindwal that Guru Amar Das had forsaken the social and religious practices of the Hindus and eliminated caste distinctions. Following the Guru's accusation, Akbar resolved to summon the Guru to his court. Guru Amardas, in adherence to the emperor's invitation, dispatched Bhai Jetha, his son-in-law, to serve as his representative. Akbar cordially greeted Bahi Jetha and inquired about the Guru's well-being. The Khatris and Brahmans appeared in court and restated their accusations. It was asserted that the Guru's endeavour to sway the populace away from the traditional faith could have potentially precipitated political unrest within the nation. Akbar summoned Bhai Jetha in an effort to refute the accusations. Upon being introduced to Jetha's compositions and knowledge, the Khatris and Brahmans were both astounded and humiliated. Subsequently, Akbar rendered his verdict, asserting that both the individual in question and his compositions did not harbour any animosity towards Hinduism. Rather, he claimed that the Brahmins and Khatris were adversaries of the truth, thereby causing unnecessary irritation. Disgracefully, the Brahmans and Khatris withdrew from the court. Following this, Akbar instructed Guru Amardas, via Bhai Jetha, to undertake a pilgrimage to the Ganges as a means of averting the Hindus' wrath. Additionally, he stated that Guru's party would not be subject to any taxes while on his voyage. In accordance with Akbar's recommendation, the Guru departed for Haridwar. Guru Amar Das designated his son-in-law, Bhai Jetha, as his successor, bestowing upon him the appellation Guru Ram Das, in the final days of his life.

Throughout his lifetime, Guru Ram Das designated "Arjan," his youngest son, as his heir apparent. Guru Arjan is credited with the compilation of the Adi Granth, which is considered the sacred text of the Sikh faith. Arjan Dev's eldest sibling, Prithia, developed feelings of envy in response to his designation as Guru. Constantly, he endeavoured to demean the Guru. Prithia influenced the Qazis and pandits to lodge a complaint with Emperor Akbar regarding the publication of Guru Arjan's book, which contained disparaging remarks about Hindu deities, Muslim prophets and leaders, and Guru Arjan. During that period, Akbar was situated in Punjab. Akbar was presented with the complaint by Diwan Chandu Shah, an additional adversary of Guru Arjun, upon his arrival in Gurdaspur. Akbar issued the directive that Guru Arjun and his granth be brought before him. In lieu of accompanying Bhai Budha and Bhai Gur Das to the Mughal court, the Guru delegated them there. According to the Qazis and Pandits, this hymn was chosen specifically for the emperor. The emperor then personally turned the pages of the granth over, indicated a specific page, and requested that Gur Das read it. It was the hymn "O incomprehensible servant of God." Akbar was delighted. However, according to Chandra Shah, Gurdas recited this from memory. Sahib Dayal, a man brought by Than Chandu who was fluent in Gur mukhi, the scriptural language of the granth, was present. At this juncture, Chandu flipped the granth's pages over and requested that the man peruse it. Upon beinghold this hymn, Akbar was profoundly enlightened by the granth's teachings and enraged at his adversaries. With the exception of affection and devotion to God, he declared that he had found no merit or fault in this grant thus far. This volume merits profound reverence. Subsequently, Akbar presented the granth with fifty-one gold muhars, bestowed honorific costumes upon Bhai Budha, Bhai Gur Das, and Guru Arjun, and assured the Guru of his company during his return voyage from Lahore. Akbar subsequently paid Guru Arjun a visit in Govindwal. In response to his inquiry, the Guru advised him as follows: "The well-being and contentment of monarchs are contingent upon the esteem they bestow upon their subjects and the execution of justice." A monarch shall attain pleasure in this life and glory, distinction, and acclaim in the next. A severe famine afflicted the Punjab in that specific year; therefore, Akbar remitted the revenues of the Punjab for that year as a gesture of gratitude to the Guru.

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

Surdas was one of the renowned saint poets of Vallabha Sampradaya. His magnum opus, Sursagar (Sur's Ocean), was renowned for its extensive composition comprising over one lakh verses, also known as "Padas," which were ascribed to Krishna. An account of Surdas' life and his encounter with Akbar can be found in "Chaurasi Vaishnavon Ki Varta." (discussion among four to eight Vaishnavas). As per the Varta, Surdas was born in a village situated at a distance of four miles from Delhi. His father was a destitute Sarasvat Brahmin. Surdas penned poetic works extolling Krishna and performed them oratoriously using his melodious voice. His compositions gained widespread acclaim among the populace. Surdas relocated to "gaughat," a leisure location along the banks of the river Jamuna, between Mathura and Agra, when he was eighteen years old. A considerable congregation assembled at this location to adhere to him, and Surdas himself encountered Vallabhacharya and subsequently became one of his disciples. Around the world, Surdas' Padas (poems) are sung. Tansen Sang, a musician at Akbar's court, was once considered one of the "Padas of Surdas." Akbar was anxious to meet the poet and composer SurdasPada after hearing him perform, and he inquired about him. Tansen apprised Akbar that Surdas, a resident of Braj, is the author of this Pada. Akbar, who had arrived in Agra a few days prior from Delhi, instructed his couriers to collect intelligence on Surdas. Surdas was dispatched by Akbar's soldiers to his court. Upon Surdas's arrival at the court, Akbar bestowed upon him reverence. The sovereign informed Surdas that he had already listened to something poetic after having composed numerous poems for Vishnu. A poem was recited by Surdas in "Rag Bilawal." Akbar was exceptionally content with this couplet. The emperor then desired to put Surdas to the test by stating that he ruled a vast kingdom and was universally praised; if Surdas sang in his praise, he would be rewarded with a great deal of wealth and anything else he desired. However, Surdas lauded Krishna in a poem, in which he stated that his only acquaintance was his deity. Akbar was profoundly impressed by the piety and compositions of Surdas. Subsequently, the emperor extended a gift of four villages and a sum of money to Surdas; however, Surdas declined and requested that they not cross paths again. Upon his arrival in Agra, Akbar issued a directive for the gathering of Surdas padas and declared that individuals who brought such padas would be rewarded with rupees and gold mohars. The compilation of these "Padas" was rendered into Persian by him. A Pandit Kavishvar once brought a couplet (Pada) claiming to have been composed and created by Surdas. However, Akbar asserts that the Pandit had misappropriated this couplet for financial gain only, and that it was not Surdas' couplet. Subsequently, the Pandit inquired of Akbar how he had ascertained that the couplet in question did not originate with Surdas. Then Akbar put the couplet of Surdas to the test by submerging it in water; however, it remained unsinkable, whereas Pandit K. Kavishvar's couplet submerged.

References

1. Abdul Qadir Badaoni, Muntakhab-ut-Tawarikh, ed. by Maulvi Ahmad Ali, Calcutta, 1865, vo-lI.
2. Abul Fazl, Ain-i-Akbari, Eng. Trans., Blockmann, LPP, Delhi, 2002, vol-I.
3. Abul Fazl-Akbarnama, ed. M Abdul Rahim, Asiatic Society of Bengal, Calcutta, 1879, vol-II.
4. Edward Terry in Early Travels in India. (1583-1619) ed. by William foster S. Chand & Co. Delhi, 1968.
5. Macauliff, The Sikh Religion ; L.P.P. Delhi Reprint, 1993, vol-I.
6. Nizamuddin Ahmad-Tabaqat-i-Akbari, Eng. Trans. by Rajendra Nath De., Low Price Pub. Delhi, 1992, vol-II.
7. See, Andrew Liddle, Coinage of Akbar, Kapoori Devi Charitable Trust, Gurgaon, 2005.

© 2022, SK Publisher All Rights Reserved

WORK-LIFE BALANCE AND JOB SATISFACTION AMONG TEACHERS: A GENDER DIFFERENCE

Sonal Shekhawat
Guest Faculty, Dept. of Psychology, Chaudhary Bansilal University, Bhiwani, Haryana
Email-sonusonalrathore787@gmail.com

Dr. Harikesh
Assistant Professor, Vaish college, Psychology Department, Bhiwani, Haryana
Email-harikeshpanghal@gmail.com

Abstract

The study was planned to explore the difference of sex on the work-life balance and job satisfaction of teachers. Further it was also intended to examine the relationship between work-life balance and job satisfaction among teachers. Hayman's (2005) Work-Life Balance Scale and Job Satisfaction Scale for Teachers given by Dr. S.K.Saxena were used to assess work-life balance and job satisfaction of teachers. These scales were administered to 120 teachers having equal number of male and female selected on the basis of convenience sampling from different schools of Bhiwani, Dist. of Haryana. Results indicate sex has found significant difference on work – life balance and job satisfaction. Study also revealed that there is a very high positive correlation between work-life balance and job satisfaction

Keywords-: Work-life balance, job satisfaction, teachers, sex, school

Teaching has been considered as an important profession since ancient times and teacher has given very important place in the society. And this has been the reason that teaching has been the central point of educationist and educational psychologist. But for the last few decades, the profession of teaching has been facing many huge challenges, in which the most important is the factors related to job and their personal life. From the very beginning work-life balance and job satisfaction have been considered afocal point in the academic literature (Hayman, 2005. Moore ,2007., Pocock, 2005). We can use word work-life balance in place of work-family balance. Both have the same concept (Hill, Hawkins, Ferris and Weitzman, 2001. Quick Henley & Quick, 2004. Reiter, 2007). Work life balance refers to the absence of conflicts in work and family/Personal life (Frone,2003.,Quick etal,2004).Work-life balance is a degree by which a person is able to balance both work and family duties in respect to their emotions and behavioral at the same time (Hill et al.2001). Work-life balance is an adjustment and balance between your official and personal work and don't let any of your personal problems affecting your work and working environment. Work-life balance is a multi-dimensional approach, which many individuals over look, relates to what individuals do for themselves. The success of work life balance is always sustained with achievement along with enjoyment.

Job satisfaction is an important component in any profession and organization. It is a positive emotional state in which the job offered fulfill all its respective values. Job satisfaction refers to the extent to which a staff member and employee has a favorable or positive view or thoughts of his work or working environment (De Nobile, 2003).

Some approaches to improve WL Band Job - Satisfaction:

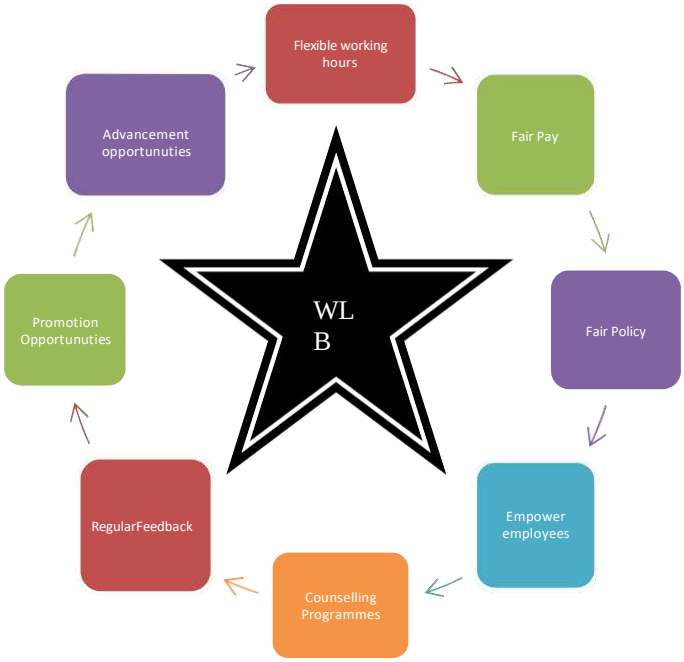

Figure-1Showingworklifebalanceandjobsatisfactionrelatedapproaches.

In ancient time, teachers were enjoying their teaching with dignity and good social status, but now the situation has changed. Today along with teaching, the teachers is engaged in other task as well. He is also given administrative works, community projects, election duties, census, welfare related work, counseling etc. (Siddique, Malik, Abbass 2002).These observations have also been documented by (Ahsan, Abdullah, Fie, and Alam,2009) in their study on teachers own feeling and emotion towards their job. Work life balance is an important factor linked to job satisfaction (Orkibi & Brandt,2015). In present the younger generation has to choose their profession keeping in view of demographic factors like gender, economic status, family values and life style etc. (Keeton, Fenner, Johnson and Hayword (2007). However recent studies have shown that work-life balance plays a crucial role in increasing general job satisfaction (Atheyetal., 2016, Skaalvik & Skaalvik, 2014). Good work-life balance and low work-life balance conflicts are also linked to job satisfaction, organizational commitment, organizational citizen ship behavior etc. (Allen, Herst, Bruck & Sutton, 2000.,Balm forth & Gardner, 2006.,Waltman & Sllivan, 2007). Malik et al (2021) suggested that all facets of work-life balance have positive relationships with one another and satisfaction also. Results of the study also indicate that work-life balance plays a crucial role to provide satisfaction. Saeede et al. (2014) also examined the relationship between work-life balance and job satisfaction among university teachers and findings of his study revealed that there is relationship between job satisfaction and work – life balance.

Objectives

1. To examine their relationship between work-life balance and job satisfaction among teachers.
2. To compare the Work-life balance and job satisfaction of teachers on the basis of their gender.

Hypotheses

1. There is no significant relationship between Work-life balance and Job Satisfaction.
2. There is no significant difference in work-life balance and job satisfaction of teachers on the basis of their gender.

METHOD

Design

Correlation and t-test were used to achieve the objectives of the study.

Sample

The sample of the study was selected on the basis of convenient sampling consisted of 120 teachers, which includes 60 from private job(30male and 30 female)teachers and 60 from govt. job(30 male and 30 female) taken from different schools of Bhiwani, districts of Haryana.

Tools

Work-Life Balance Scale by Hayman (2005)

Hayman's work-life balance scale was used to measure work-life balance. This scale consists of three dimensions: Work in dereference with personal life (WIPL., e.g., personal life suffers because of work), Personal life interference with work (PLIW .,e.g., personal life drains me of energy of work), and Work /Personal life enhancement (WPLE., e.g., personal life gives me energy for my job).The scale consists of 15 items and is measured on a five–point Liker scale Ranging from 1(not a tall) to 5 (almost all of the time). The WIPL and PLIW sub-scale items with higher means on indicate lower level of work-life balance. However, higher means on the WPLE sub-scale indicate higher levels of perceived WLB. The cronbach‟ s alpha coefficient in the sample for WIPL (.79), PLIW (.84), and WPLE (.80) were comparable to those reported by Hayman.

Job Satisfaction Scale for Teachers given by Dr.S.K.Saxena

The job-satisfaction Questionnaire is a self-administering questionnaire. The questionnaire consists of 29 highly discriminating,, yes-no ‟items. These items were classified into four different aspects of job satisfaction in teaching. These included:1). Satisfaction with work (2). satisfaction with salary, security , and promotion policies (3). Satisfaction with institutional plans and policies and (4). satisfaction with authority including Higher Secondary Authority, college's principal and the management. All the item sex except 4 and 29 are positively worded. All these items are given a score of 1 for positive responses except for items 4 and 29 in which case reverse in applicable (i.e.0). The total score varies from 0 to 29, showing lowest job satisfaction to highest job satisfaction for the subject. The split-half and test-rate streliability of the scale is. 86 and.78 respectively .The face to face validity of the measures is very high.

Procedure

All participants were informed of the nature of study. The tests were administered uniformly to all participants. After completion of the each test it was taken back and ensured that participants have responded each and every item in the prescribed way. Scoring was done according to scoring procedure. Obtained data were analyzed by using correlation and t-test.

RESULTANDDISCUSSION

The data were analyzed by using descriptive as well as inferential statistics, and the result are given in Tables 1,2& 3. Work- life balance scale measure the three dimension WIPL, PLIW AND WPLE, and Job satisfaction questionnaire for teachers measure work, salary, security, promotion related policies etc.

Table:-1 Mean and SD of male and female teacher's scores in different areas of Work-life balance and Job satisfaction.

AREA	MALE(N=60)		FEMALE(N=60)		TOTAL(N=120)	
	Mean	SD	Mean	SD	Mean	SD

WIPL	12.23	3.35	15.61	2.30	13.92	3.35
PLIW	11.43	1.80	15.30	2.73	13.36	3.01
WPLE	16.36	2.58	17.91	1.52	17.14	2.25
WLB	40.03	5.93	48.83	4.60	44.43	6.89
JS	16.03	2.33	18.85	1.98	17.44	2.57

Table 1 depicts mean and SD of male and on WLB and Job Satisfaction, in which high score on WIPL and PLIW sub-scales indicate lower level of work-life balance and high score on WPLE sub scale shows higher levels of perceived work-life balance. Similarly high score on job satisfaction revealed high job satisfaction.

Table:-2 Inter-correlation matrix of teachers among different area of Work-Life Balance and Job Satisfaction.

		WIPL	PLIW	WPLE	WLB	JS
WIPL	Pearson Correlation	1	.670**	.399**	.908**	.323**
	Sig.(2-tailed)		.000	.000	.000	.000
	N		120	120	120	120
PLIW	Pearson Correlation		1	.201**	.828**	.492**
	Sig.(2-tailed)			.000	.000	.000
	N			120	120	120
WPLE	Pearson Correlation			1	.608**	.112
	Sig.(2-tailed)				.000	.222
	N				120	120
WLB	Pearson Correlation				1	.408**
	Sig.(2-tailed)					.000
	N					120
JS	Pearson Correlation					1
	Sig.(2-tailed)					
	N					120

******correlationissignificantatthe0.01level.

*****correlationissignificantatthe0.5level.

Present study was assessed to examine the relationship between work-life balance (WIPL,PLIW&

WPLE) and job-satisfaction. All correlation values in table 2 indicated a positive relationship with job satisfaction. WIPL & PLIW sub-scales had a positive relationship with job satisfaction as indicated by the inter-correlation matrix, 0.32 and 0.49 respectively. But WPLE had not a significant relationship withjobsatisfaction.Overallwork-lifebalanceandjobsatisfactionhavealsoapositivecorrelationvalue i.e.0.40.Thus it can be seen that null hypothesis of the study was rejected.

Table:-3t-valueof male and female on Work-Life balance and job satisfaction.

Gender	Work-life Balance			Job Satisfaction		
	Mean	SD	t-value	Mean	SD	t-value
Male	40.03	5.93	9.076**	16.03	2.33	7.123**
Female	48.83	4.6		18.85	1.98	

*****significantat.01level

That-testing table3reveals that male and female teachers differsignific ant yon work-life balance and job satisfaction (t=9.076,p<.01.,t=7.123,p<.01) respectively., wherein the female teachers scored high means cores on both work life balance and job satisfaction (mean=48.83&18.85)respectively.

Results of the study provide a significant evidence of relationship and gender differences in work-life balance and job satisfaction within a sample of school teachers of Bhiwani district in the state of Haryana, India. The results of the study revealed positive correlation between work-life balance and job satisfaction. It means work-life balance is an important determinant of intrinsic aspects of job satisfaction. We can say that a fixed syllabus, regular performance outcomes of the students through exams, job security, increments, yearly award ceremony for teachers by management, good salary package and other activities motivates the teaching facilities which enables them to maintain balance between work and personal life demand and attain job satisfaction. In work-life balance and job satisfaction the mean score of female teachers is significantly higher than their counter parts. If one look sat the contemporary scenario in education, work place and in job we see the maximum number of women, it means women are satisfied with their job by balancing their personal and professional life well. Females are quite satisfied and view that some what they look education sector as a good place to work. They are very comfortable with their job. The reason for this can be having a participative environment and satisfactory working hours at workplace and having supportive behavior of family members, due to which she is able to make proper adjustment in her personal and professional life. On the other hand males are more ambitious and they keep trying to get much better in their job and also keep political factors involved in their work environment. Second, in our Indian culture, there is a difference between boys and girls from the very beginning that is boys are not involved in much work, they focus on one task, whereas along with studies, girls also do work in kitchen. This is the reason that the habit of creating

Balance is developed in females from the very beginning rat her males are not able to do this.

Findings of the present study are in tuned with the earlier studies related to work-life balance and job satisfaction etc. conducted by Aghaetal. 2017, MALIK etal., 2021 and Arifet. al., 2014, reporting hat all dimensions of WLB have positive relationship with job satisfaction of teachers. These empirical evidences provide support that WLB is directly related to job satisfaction. The observation of the present study also indicates that work-life balance is strongly correlated with job satisfaction. Solanki & Mandaviya (2021) also supported the findings of the study by stating the result that male respondents have more health relate dissues compared with females dueto job stress and imbalance in work life.

CONCLUSION

Thus, we can safely conclude that work and personal life need to be integrated in a smooth manner and should not be left impact on each other in a negative way. This balance and imbalance is likely to affect the overall performance of the teachers as well as the performance of the organization. Moreover, the findings of the study need to be generalized cautiously owing to the sample size and only a small area specific sample. But the findings clearly indicate that it is a very important area where the teachers, students, parents and the policy planner shave to work together and come out with specific program and policies. Our policy maker should ensure that teachers the nation builders in order to make them more productive by reducing work and family related stress and keeping hem satisfied with their job and life.

REFERENCES

- Arif,B., & Farooqi, Y.A. (2014). Impact of Work Life Balance on Job Satisfaction and Organizational commitment among university teachers: A Case Study of University of Gujrat, Pakistan. *International Journal of Multidisciplinary science and engineering,5*(9),24-29.
- Bae.J.et.al .(2019).Compassion Satisfaction Among Social Work Practitioners: The Role of Work-Life Balance. *Journal of Social Services Research,* ISSN: 0148-8376,1540-7314.
- Bell. A.S. Rajendran, D.S., Theiler. S. (2012). Job Stress, Well being, Work life Conflict Among Australian Academics Electronic. *Journal of Applied Psychology,Vol.8,*No.1,25-37.
- Delina .G. Raja. R.P. (2013). A Study On Work life Balance In Working Women. *International Journal Of Commerce, Business & Management,* ISSN:2319-2828.
- Ealias. A. (2012). Emotional Intelligence And Job Satisfaction: A Correlation Study. *Research Journal Of Commerce & Behavioral Science, Vol.1,*No.4,37-42.
- Gorsy.C.,Panwar.N. (2016).Work-Life Balance, Life Satisfaction and Personality Traits among Teaching Professionals. *International Journal In Management And Social Science,Vol.4,*No.2,98-105.
- Hafeez. U.S., Akbar.W. (2015). Impact of Work-life Balance on Teachers of 21STCentury. *Australian Journal of Business & Management Research, Vol.4, No.11, 25*-37.
- Maharjan.S (2012).Association Between Work Motivation and Job Satisfaction of College Teachers. *Administrative and Management Review, Vol.24, No.2, 45*-55.
- Maeran.R., Pitarelli.F., Cangiano.F. (2013).Work-life Balance and Job Satisfaction among Teachers. *International Disciplinary Journal of Family Studies, Vol.18,* No.1, 51-72.
- Malik.A.,Allam.Z. (2021).An Empirical Investigation of Work and Satisfaction among The University Academicians. *Journal of Asian Ainanee, Economics and Business, Vol.8.*No.5, 1047-1054.

- Othman.A.,Hieng.M.C. (2009). Relationship Between Quality of Work Life and Job Satisfaction: A Case Study Of Enterprise "XYZ" In Malacca. *International Conference On Human Capital Development ISBN*, 978-967-5080-51-7.
- Padma.S.S., Reddy.M.S. (2014).Work life Balance and Job Satisfaction among School Teachers. *AStudyIUPJournalofOrganizationalBehavior, Vol.13, No.1,51*.
- Saeed.K., Faroogi.Y.A. (2014). Work life Balance, Job Stress and Satisfaction Among University Teachers (A Caste Of University Gujarat).*International Journal Of Multidisciplinary Science And Engineering*, Vol.5, No.6, 9-15.

Rex Journal ISSN 2321-1067 Renewable Research Journal

Access of Electronic Information Resources by Faculty and Research Scholars in Jawhar Lal Nehru University Delhi

Mangat Ram Research Scholar
Shri J.J.T.University
Email- Librarianvcbwn@gmail.com

Dr.Khatik Rashid, Guide
Shri J.J.T.University

Abstract:-The main objective of University Library System is to support the university in the development of learning and provide facility to student and faculty member to enhance their knowledge and complete their research work. At the time of ancient era when the library concept was emergence the library is considered as the backbone or heart of any organization.The libraries are now considered as the knowledge resource center it works like Robot 24/7 without having break in a day. A Research Scholar and Faculty member access the resource without any physical barrier because libraries are now provide theseservices on a single window.During the Covid-19 period libraries play animportant role in keep the scholars up to date in their respective field. The finding of this research paper would be useful in framing the effective polices, in respect of Electronic Information Resources.

Key Words:- E-Resources, University Library, Information Services.

INTRODUCTION:-Nowadays everyone needs information instantly and it possible only with the help of internet. Today‘s users fulfill their information needs by online library resources, and services via networks or authentication methods at any time. In order to exploit the current information explosion, familiarity and use of electronic information resources in the libraries are necessary and important for rapid development. Electronic information resources can be used for efficient retrieval and meeting information needs. This is very important for academic libraries since most of them call for more and more research work. In the digital era the commonly available electronic resources such as CD-ROM databases, online databases, online journals, OPACs and Internet, are replacing the print media.

Electronic information resources have many advantages. First, these are more versatile than paper publications. Second, using full text or key word indexing, these provide excellent searching capabilities. Unlike paper publication, these formats allow simultaneous user access. In addition, information can be accessed from remote locations, such as office and home. This technology enhances the collections of management libraries by providing patrons with access to information that is not available in, or is more accessible through, hard copy. Therefore most

Scanned with OKEN Scanner

libraries have embraced this technology. Electronic resources have bridged information gap in Indian universities with their counterparts in developing countries. With Information Communication Technologies, Indian universities now provide global information resources to their students and academic staff in order to enhance their learning, teaching and research.

SCOPE OF THE STUDY:-The study would explore the areas and scope of training needed by library users to utilize e-resources efficiently and effectively. The study would examine to recommend training needs and strategies for library professionals in collection development of e-resources, various formats of e-resources, preservation of e-resources, consortium, DELNET, UGCINFONET, INFLIBNET. The study would examine the current state-of-the-art electronic information resources in ***Jawhar Lal Nehru*** University in Delhi. It would examine the present condition of electronic information resources in ***Jawhar Lal Nehru*** University in Delhi and suggest possible solutions for the effective and efficient use of e-resources. There has not been any research conducted on the Electronic Information Resources in this university

The findings of this study would be useful in framing effective policies, in respect of electronic information resources, in university library, which in turn would help library users, to use libraries facilities in an effective and friendly manner. The study would be useful for making infrastructure for digital library. The findings of this study would also assist libraries in India to develop strategies and policies that could make better use of electronic information resources and its services.

OBJECTIVES

1. to examine the current status of electronic information resources in university libraries in Delhi and to identify issues and problems faced by post graduate students, researchers and faculty members, in the use of electronic information resources;
2. to examine the availability of various electronic resources through consortia to study search strategy used by library users while using online databases;
3. to study the impact of electronic information resources on the academic work of students, researchers and faculty members.

LITERTURE REVIEW

Breeding (2004) discussed the fundamental aspects to managing electronic resources in his study "The Many Facets of Managing Electronic Resources". According to him there are two fundamental aspects to managing electronic resources: back-end acquisition functions and front-

Scanned with OKEN Scanner

end content delivery. Back-End Management Tools for Library Staff includes Traditional Online Catalog Approach, E-Journal Holdings Data Services, and Electronic Resource Management Applications. Whereas Front-End Management: Delivering Access to Users includes Links from the Online Catalog, E-Journal Locator Resources, Linking to Full Text, Open URL-Based Link Resolvers.

Kennedy (2004) studied the Dreams of Perfect Programs: Managing the acquisition of electronic resources and found that more than a decade, academic libraries have been wrestling with the thorny issue of managing the acquisition of electronic resources. He had a look at several in-house initiatives around the country, commenting on the successes and failures of the homegrown programs built to track, update and manage the acquisition and behind-the-scenes maintenance of electronic resources. Realizing that libraries are now well equipped to identify what dream programs should entail, this paper also comments on how we can prepare for the future of electronic resource management.

Micalla (2003) conducted a study to encouraged students? use of the library, and particular of its electronic resources and what factors encourage students to seek out information in the library setting. A pilot survey was conducted a class of student taking in "introduction to psychology" at Baruch College, City University of New York. That survey had a number of open ended questions through statistical analysis, Micalla found that use of the library correlated to the students, use of the library's electronic resources and also found out that. Students who express an interest in learning about the library's electronic resources will be more likely to have higher self efficiency.

Rehman and Ramzy (2004) conducted a questionnaire based survey of health professionals affiliated with three teaching faculties of Kuwait University. It was conducted to find out the nature and extent of use and the reasons of low use of these resources. Responses were received from 70.9% of the faculty members. They reported that time constraints, lack of awareness, and low skill level were among the primary constraints they experienced.

Dadzie (2005) conducted a study to investigate the use of electronic resources by students and faculty of Ashesi University, Ghana, in order to determine the level of use, the type of information accessed and the effectiveness of the library's communication tools for information research. A questionnaire-based survey was utilized. It consisted of 16 questions to determine level of use, type of information accessed, assessment of library's communication tools,

Scanned with OKEN Scanner

problems encountered when using electronic resources and ways to improve the provision of electronic information in the community.

Kumbar, Raju and Praveen (2005) conducted a study that electronic resources have become the vital part of human life in 21st century. It is clear from the study that how electronic resources are useful to research scholars and also problems in accessing and utilizing of electronic resources. 92. 86% of respondents use e-resources for the purpose of their research work. 97.21 % of use internet as an e-resource. The majority (45.71%) of the respondents use FST A database. 75.11 % of the respondents opened that access to current information in only through electronic resources. 52.86% of respondent stated that too much of information retrieved in one of the hindrance in using electronic resources.

Nicholas (2005) conducted a study to find the faculty?s views towards college students about open web resources. Questionnaire method is used for collecting data of 90 faculty members of 40 colleges. The finding of the study reveals that 60% of respondents said that college subscribed online resources according to the need of the students. Only 70% colleges allocate significant funds to subscribe to online data bases and journals. Most faculty members said that students used the open web resources for quick search of materials and carrier development. Search engines were used for searching web resources.

Prem Chand and Others (2005) explained the use of electronic journals available under UGC INFONET consortium in University libraries. The concept of Electronic Journals, Electronic Publishing, Electronic Serials, Online Journals and Electronic Periodicals is stated in the beginning. The development of UGC INFONET and their services were discussed in three phases. The UGC INFONET providing access to University libraries to their web. The respective libraries have to provide their IP address in order to access of electronic journals and electronic resources offered by the UGC INFONET. User statistics of these electronic resources is not promising. It is necessary to initiate such steps that could help to encourage the users to use the electronic resources offered by UGC INFONET. In this context, the development of infrastructure and user training played a crucial role.

DATA ANALYSIS :- The purpose of the study was to investigate the study of use of electronic information resources in "***Jawhar Lal Nehru University*".**

1. **General characteristics of the population**

Scanned with OKEN Scanner

For the purpose of getting required information Research Scholars (PhD students) were selected because they acquired more skills for using electronic information than that of Under Graduates and Post Graduates. The details of Research Scholars (PhD students) were collected from the concerned university. Details of Research Scholars (PhD students) are given below:

Table 1: Details of students

Sr. No	University name	Total students
1	Jawaharlal Nehru University	2183

2. Awareness of the Electronic Resources

Respondents were asked to confirm their awareness of the electronic resources whether they are aware of the electronic resources or not. The responses showed that 100% of research scholars are aware of the electronic resources in JNU University. Details of the responses given below in **Table 2.**

Table 2Awareness of research scholars with the e-resources

University	Awareness of the e-resources		
	Yes	No	Total
JNU	100%(200)	-----	100%

3. Libraries – Use and Familiarity

The investigator asked the respondents to give details about their visits to library; how often do they avail the services of the library, daily, weekly or monthly? Responses from research scholar of JNU university is given below in table 3 and responses shows that 29 % scholar use weekly bases library and 9.5 % scholar uses monthly bases library.

Table 3. Frequency of use of library by the research scholars

University	Frequencyofuseof library			
	Daily	Weekly	Monthly	Total
JNU	61.50%(123)	29%(58)	9.5%(19)	200

4. Present library use of research scholars

The researcher asked the respondents if their present library usage increased, decreased or is about the same in last 1-3 years. 61% of JNU respondents said that their present library use had

Scanned with OKEN Scanner

increased. It has been noticed that there is overall increase in the usage of library by the respondents across all the universities surveyed.

Table 4:Present library use of research scholars

University	Presentlibraryuse			
	Increased	Decreased	Aboutthesame	Total
JNU	61%(122)	31%(62)	08%(16)	100%(200)

5. Respondents are extremely familiar with Search Engines and Print Sources

In the survey conducted investigator asked the respondents to rate their familiarity with two information sources i.e. search engines and print sources. In JNU 84 % respondents were very familiar with the search engines. and 91% scholar very familiar with print sources.

Table 5: Familiarity of research scholars with the Search Engines and Print Sources

Familiarity	Universities	Familiaritywith…	
		SearchEngines	PrintSources
	JNU	84%(168)	91%(182)
Veryfamiliar			
	JNU	10%(20)	09%(18)
Somewhatfamiliar			
	JNU	06%(12)	----
Notveryfamiliar			
	JNU	----	----

Table 6: Do you face any problem while accessing e-resources

Problems while accessing e-Resources	JNU
Yes	51%
No	49%
Total	100%

Respondents were asked about their problems they faced accessing e-resources or there wasn't any problem at all? Highest numbers of respondents 51 % says "YES"and 49% says "No" among total scholar.

Conclusion:-Life has become fast and to cope-up with it, technology has played a greater role in the lives of people by facilitating their busy time. Information communication technology has promoted the growth of electronic format of the information and gave rise to e-resources. As the time progressed, many things conflicted and many things became easy. Earlier it was not possible to pursue research with easy availability of materials and needed resources.Only the few libraries had accessibility to electronic resources that time but now the whole world of the

Scanned with OKEN Scanner

libraries got changed by the e-resources. In academics, however, the electronic resources, a gift of technology are not thought to be reliable by many. There is the danger possibility that information can be manipulated after the electronic resources are hacked. Students of JNU library are much aware about electronic resources.

References

1. Prem Chand, Murthy, T. V. A. and Chandel, A. S. (2005). Usage of electronic journals under UGC INFONET E-Journal consortium in North Eastern University librarians. In PLANNER (3rd convention). Assam university, Silchar November 2005. INFLIBNET, Ahmadabad, 127-132.
2. Nicholas, G. Tonninto. (2005). Faculty views of open web resource use by college students. Journal of Academic librarianship. 30(6), 550-506.
3. Satish Kannamadi, & Kumber, B.D. (2006). Web based service expected from libraries: a case study of Management institute in Mumbai city. Webology. 3(2)
4. Antelman, K., Lynema, E., & Pace, A.K. (2006). Toward a twenty-first century library catalog. Information Technology and Libraries, 25(3), 128-39.
5. Sajjad ur Rehman., & Vivian, Ramzy. (2004). Awareness and use of electronic information resources at the health sciences center of Quwait University. Library Review. 53(3), 150-156.
6. Levine-Clark, Michael. "Electronic Books and the Humanities: A Survey at the University of Denver." Collection Building 26, no. 1 (2007): 7-14.
7. Kwadzo, Gladys. "Awareness and Use of Electronic Databases by Geography and Resource Development Information Studies Graduate Students in University of Ghana." Library Philosophy and Practice (e-journal), March 2015. Accessed July 12, 2015. http://digital commons.unl.edu/libphilprac/1210.
8. Breeding, M. (2004). The Many Facets of Managing Electronic Resources. Computers in Libraries. 24 (1), Retrieved on 22, November, 2011, from http://www.infotoday.com/cilmag/jan04/breeding.shtml
9. Bruce, C. S. (1990). Information skills coursework for postgraduate students: investigation and response at the Queensland University of Technology. Australian Academic & Research Libraries. 21(4), 224-232.
10. Carol, Tenopir. (2003). Use and user of Electronic Library Resources: an overview and analysis of recent research studies. Council of Library and Information Resources. 8(3), 72.

Scanned with OKEN Scanner